1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-4, अंक-6, जून-जुलाई 2021, ₹50/-

सांस्कृतिक यात्रा के 24 वर्ष पूर्ण...

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

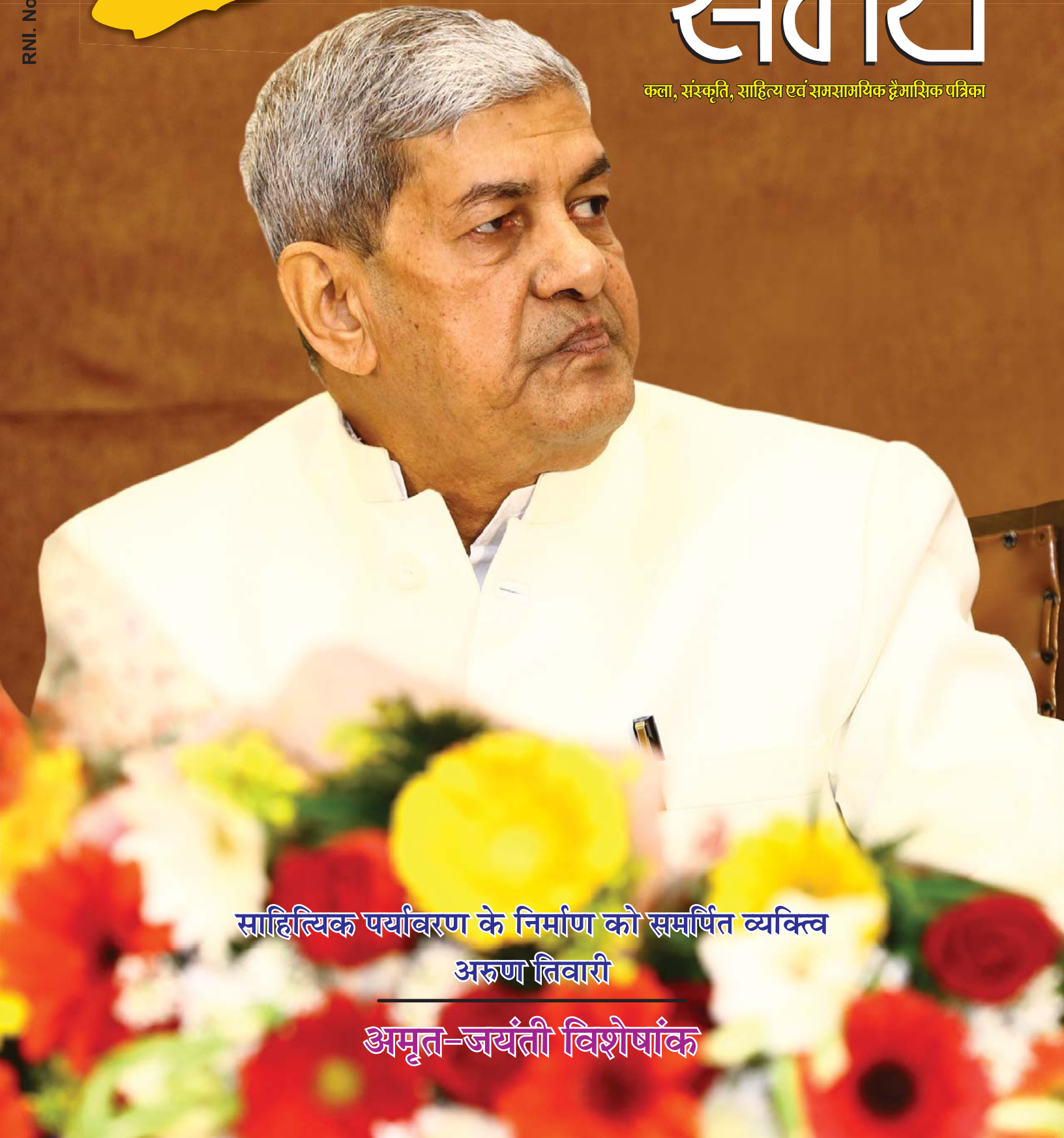

साहित्यिक पर्यावरण के निर्माण को समर्पित व्यक्तित्व

अरुण तिवारी

अमृत-जयंती विशेषांक

फुल टाइम. पार्ट टाइम. एनी टाइम !

कमाइए, सीखिए और प्रगति कीजिए
भारत की विशालतम जीवन बीमा कंपनी के साथ.

- अपने समय के अनुसार काम कीजिए
- विस्तृत बेनिफिट पैकेज
- पुरस्कार और सम्मान
- फुल टाइम या पार्ट टाइम करियर... आप तय कीजिए

एजेंट के रूप में एलआईसी के साथ जुड़ने के लिए SMS करें 'Agent City-Name'
(Agent space City-Name) जैसे कि 'Agent Mumbai' और भेज दें 56767474 पर या
हमारी वेबसाइट www.licindia.in के माध्यम से रजिस्टर करें
या नज़दीकी एलआईसी शाखा से संपर्क कीजिए.

Follow us : YouTube LIC India Forever

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

LIC/02/16-17/12/HIN

IRDAI Regn No.: 512

ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी.

'मध्य क्षेत्र, भोपाल'

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)
(वर्ष : 20+04=24) पूर्णांक-111
वर्ष-4, अंक-6, जून-जुलाई-2021, मूल्य : ₹50/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरू सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
ललित शर्मा
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

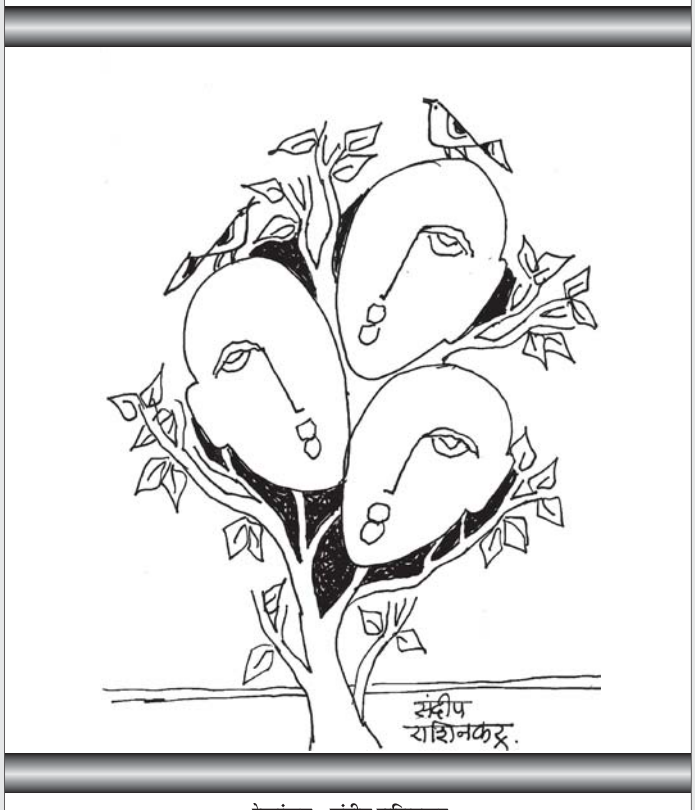

रेखांकन : संदीप राशिनकर

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
साहित्य
हरीश श्रीवास
कला
डॉ. मुक्ति पाराशर
संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

सदस्यता सहयोग राशि:

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 120/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास

प्रतिष्ठापूर्ण अंक में इस बार :

- **अतिथि संपादक की कलम से**
  - अरुण तिवारी अमृत जयंती विशेषांक... / बलराम गुमास्ता 5
- **संपादकीय**
  - पत्रकारिता के प्रकाश स्तंभ – अरुण तिवारी / भँवरलाल श्रीवास 7
- **मित्रों, लेखकों, पाठकों की दृष्टि में अरुण तिवारी :**
  - अरुण तिवारी की बेमिसाल साहित्यिक पत्रकारिता / धनंजय वर्मा 9
  - अरुण तिवारी : प्रेरणा के पर्याय / कमल किशोर गोयनका 17
  - भरपूर ज़िन्दगी का जीवंत शाहनामा / मुकेश वर्मा 20
  - दिल के अपने शहर का एक इंसान और कुछ बातें / लीलाधर मंडलोई 32
  - कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती / शशांक 33
  - अरुण तिवारी – मृदु व्यक्तित्व / डॉ. करुणा पांडे 35
  - एक पॉजिटिव थिंकर की छवि / महेश दर्पण 39
  - अरुण तिवारी: साहित्यिक पत्रकारिता के सिरमौर / प्रमोद भार्गव 49
  - आयु के 75 वर्ष पूर्ण करना ही महत्वपूर्ण नहीं है / महेश श्रीवास्तव 53
  - अरुण तिवारी: दृष्टि सम्पन्न शख्सियत / किरण अग्रवाल 54
  - अरुण तिवारी संकटग्रस्त मानवीय मूल्यों के प्रतिनिधि / शैलेन्द्र शैली 56
  - बहुकोणीय व्यक्तित्व / महेश सक्सेना 57
  - रचनात्मकता परिदृश्य के सामने / नवल शुक्ल 58
  - अरुण तिवारी: एक सृजनधर्मी / अमिताभ मिश्र 60
  - शोर शराबे से दूर रहकर ठोसकार्य / डॉ गंगाप्रसाद बरसैंया 66
  - प्रेरणा पत्रिका के नए आयाम / राजाराम भादू 67
  - साहित्यिक पत्रकारिता के प्रेरणा पुरुष / सूर्यकांत नागर 68
  - फौलादी इरादों वाला आदमी– अरुण तिवारी / माताचरण मिश्र 70
  - प्रेरणा द्वारा प्रेरणात्मक कार्य / जया रावत 72
  - शब्द–जुलाहा / राधेलाल बिजघावने 73
  - दृष्टि संपन्न संपादक अरुण तिवारी / दामोदर दत्त दीक्षित 79
  - हिन्दी साहित्य में अनुकरणीय योगदान / दिलीप भाटिया 80
  - बाजारवाद में भी साहित्य की मशाल थामे एक कर्मयोगी / जगदीश द्विवेदी 81
  - मूल्यांकन अवसर पर / सदाशिव कौतुक 82
  - तीन– तीन मोर्चों पर अद्भुत कार्य ! / गिरीश पंकज 95
  - अरुण तिवारी : एक अविरल साहित्य पुरोधा / जनार्दन मिश्र 96
  - 'प्रेरणा' के संपादक, लेखक और आलोचक / हीरालाल नागर 97
  - ज़रूरत नहीं मील के पत्थरों की / अनिरुद्ध सिन्हा 99
  - श्री अरुण तिवारी : समर्पित व्यक्तित्व / प्रभु त्रिवेदी 101
  - संपादक और पत्रिका दोनों ने ही अपने नाम को सार्थक किया / ज़ाहिद खान 102
  - वह बरसों बाद हुई आत्मीय आवाज के चेहरे से मुलाकात / संदीप राशिनकर 111
  - 'प्रेरणा' प्रदाता – अरुण जी / हरेराम वाजपेयी 112
  - अरुण तिवारी : सादगी का प्रतिरूप / राजुरकर राज 113
  - सतत् सक्रियता और संवेदनशीलता का सागर समेटे अरुण तिवारी / युगेश शर्मा 114
  - अरुण तिवारी : एक स्वच्छंद व्यक्तित्व / के.सी. बघेल 116
  - अरुण तिवारी : एक प्रेरणा का अभिनंदन / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय 117
  - अरुण तिवारी : मध्य प्रदेश और इसके समाज के लिए समर्पित एक स्व अनुशासित मानव व्यक्तित्व / प्रमोद वैद्य 122
  - मेरे मित्र, मार्गदर्शक और गुरु / भीमसिंह मोहनिया 125
  - साहित्य की मशाल उठाए हैं अरुण तिवारी / नरेश कुमार 'उदास' 132
  - सौम्यता के साढ़े सात दशक / दिनेश प्रभात 134
  - सृजन का समकालीन परिदृश्य और अरुण तिवारी / लक्ष्मीनारायण पयोधि 136
  - छोटे बयान का बड़ा रचनाकार : अरुण तिवारी / मोहन सगोरिया 137
  - आत्मप्रशंसा से विमुख सर्जक : अरुण तिवारी / डॉ. राजेन्द्र परदेसी 139
  - अरुण तिवारी : अप्रतिम व्यक्तित्व / विवेक सत्यांशु 140
  - 75वें सोपान पर कदम ! अरुण तिवारी / भँवरलाल श्रीवास 142
  - कविता : कलम हथेली पर लेकर / प्रदीप नवीन 147
- **परिवार की दृष्टि में अरुण तिवारी :**
  - यादों का क़िस्सा खोलो तो यादें बहुत दूर तक ले जाती हैं / अभिनव तिवारी 118
  - हमारे मार्गदर्शक व प्रोत्साहक / आराध्य तिवारी 119
  - दूरदर्शिता एवं इच्छा शक्ति की मिसाल / अनिमेष तिवारी 120
  - 'प्रेरणा'–स्मृति–संकलन / सूर्यकांत शर्मा 121
- **प्रेरणा परिवार के सदस्यों के आत्मीय उद्गार :**
  - 'प्रेरणा' वाले सर अरुण तिवारी / सुरेन्द्र डांगे 144
  - आत्मविश्वास और दृढ़ता की अनूठी मिसाल / मनोज माकोड़े 144
  - कोरे कागज की तरह साफ–सुथरा व्यक्तित्व अरुण तिवारी / सुशील दीक्षित 145
  - शिक्षा और साहित्य का अद्भुत संगम / नीरज राय 145
  - मेरे प्रेरणास्त्रोत / मनोज पालीवाल 146
  - मेरे सच्चे गुरू / सोहन मालवीय 146
  - मुझे सही राह दिखाने वाले गुरु / सीताराम मालवीय 146
- **साक्षात्कार**
  - वरिष्ठ साहित्यकार, संपादक अरुण तिवारी से डॉ. लता अग्रवाल की वार्ता 23
- **अरुण तिवारी जी के स्तंभ :**
  - आत्मकथ्य : अपनी यात्रा 12
  - कहानी : मुखौशे 37
  - आलेख : साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य 42
  - आलेख : वरिष्ठ नागरिक हमारी धरोहर 61
  - कहानी : अंतहीन.... शुरूआत 104
  - आलेख : मुक्तिबोध : यथार्थ के लेखक 128
- **चित्र वीथी**
  - अरुण तिवारी जी के जीवन के कुछ छायाचित्र 83
- **आलेख**
  - मध्यभारत की कुछ अचीन्हीं चित्र शैलियां: अछूते दृष्टि उत्सव / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय 148
- **अद्वैत–विमर्श**
  - आदि शंकराचार्य : अद्वैत दर्शन की महाविभूति / रमेश दवे 151
- **पुस्तक समीक्षा**
  - पंडित रविशंकर पर एकाग्र 'संगना' / मंजरी सिन्हा 155
- **स्मृति शेष**
  - पद्म भूषण से सम्मानित पंडित राजन मिश्र को शिष्यों की आदरांजलि 158
  - विश्वविख्यात् संगीत–मनीषी डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग 163
- **संस्मरण**
  - सितार के जादूगर उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ / जगदीश कौशल 167
- **समय की धरोहर / जगदीश कौशल** 169
- **विश्व कविता**
  - मणि मोहन 170
- **समवेत** 171

कला समय का 'धरोहर के संग्राहक और शिल्पकार' केन्द्रित विशेषांक का लोकार्पण / डॉ.धर्मेन्द्र पारे को नानाजी देशमुख सम्मान / ध्रुवपद–गायिका डॉ. मधु भट्ट तैलंग की पुस्तक ''भारतीय ललित कलाएँ: समसमायिक अनुशीलन'' प्रकाशित एवं विमोचित

शब्द संयोजन एवं आकल्पन – गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** – अरुण तिवारी जी के सौजन्य से | **छायाचित्र** –मनीष सराठे, सुनील सेन
रेखांकन – संदीप राशिनकर | **सहयोग** – धन सिंह, लता श्रीवास | **इस अंक के अतिथि संपादक** – बलराम गुमास्ता, वरिष्ठ कवि | **आवरण सज्जा** – मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

अतिथि संपादक की कलम से...

अरुण तिवारी अमृत जयंती विशेषांक...

श्री अरुण तिवारी जी से मेरी पहली मुलाकात आज से 30 साल पहले नरसिंहगढ़ में हुई थी । उन्होंने मुझे कविता पाठ के लिए बुलाया था, तब वह 45 वर्ष के थे और मैं 40 का पहली ही मुलाकात में तिवारी जी के व्यक्तित्व ने बहुत प्रभावित किया और वह दोस्ताना और रचनात्मक संबंध पिछले 30 सालों से अनवरत जारी है।

4 फरवरी 2021 को तिवारी जी का 75 वां जन्मदिन था, जिसे धूमधाम से मनाने का विचार था, मगर कोविड-19 के चलते उसे संक्षिप्त रूप में मनाया गया, आयोजन की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार श्री मुकेश वर्मा ने की ,मुख्य अतिथि थे वरिष्ठ कथाकार श्री शशांक, कामरेड शैलेंद्र शैली, श्री तिवारी को अपनी शुभकामनाएं देने उपस्थित थे श्री पलाश सुरजन, वरिष्ठ पत्रकार युगेश शर्मा जी जो आज हमारे बीच नहीं हैं ने विस्तार से श्री तिवारी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

शहर की संस्थाएं और पत्रिका समूह, 'वनमाली सृजन पीठ' भोपाल, 'कला समय', 'राग भोपाली', पहले पहल और आईसेक्ट प्रकाशन तथा प्रेरणा परिवार ने आयोजक की भूमिका निबाही, श्री तिवारी जी के पुत्र श्री अभिनव, श्री आराध्य एवं श्री अनिमेष तिवारी तथा 'कला समय' के संपादक श्री भँवरलाल जी श्रीवास ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्री भंवरलाल जी का यह मानना था कि, श्री अरुण तिवारी जी का व्यक्तित्व कृतित्व और प्रेरणा पत्रिका की रचनात्मक भूमिका इतनी व्यापक है और इसका लेखक और पाठक समुदाय पूरे देश में फैला है, तिवारी जी के इस अमृत प्रसंग में सभी की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, कला साहित्य और विचारों की समावेशी चर्चित पत्रिका 'कला समय' का अमृत जयंती विशेषांक निकाला जाए और इसके अतिथि संपादन का कार्य मुझे सौंपा गया।

'कला समय' द्वारा इस महत्वपूर्ण 'अमृत जयंती' विशेषांक के प्रकाशन और मुझे अतिथि संपादक का गौरव प्रदान करने के लिए, मैं श्री भंवरलाल श्रीवास जी का आभार व्यक्त करता हूं।'कला समय' का यह विशेषांक हमें कवि, कथाकार, विचारक, आलोचक और साहित्यिक पत्रकारिता के प्रादर्श, प्रेरणा के संपादक श्री अरुण तिवारी जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और रचनात्मक पर्यावरण के निर्माण के लिए अपने सीमित साधनों के साथ, किये जा रहे उनके संघर्ष तथा रचनात्मक अवदान के बारे में जानने का अवसर प्रदान करता है।

श्री तिवारी जी ने साहित्यिक पत्रकारिता, जो मूल्य आधारित हो, साहित्यिक ,सामाजिक सरोकारों, भाषा के जटिल सवालों और समसामयिक विषयों पर, प्रेरणा के माध्यम से हमेशा सार्थक हस्तक्षेप किया, विगत 23 वर्षों में प्रेरणा के 51 अंक प्रकाशित हुए, जिनमें 24 विशेषांक थे, वरिष्ठ रचनाकारों, कथा, कविता वरिष्ठ लेखकों, ज्वलंत विषयों पर केंद्रित थे सराहे गए।

बहुतावादी समाज और विचारों के प्रति समावेशी दृष्टि, प्रगतिशील, प्रजातांत्रिक मानवीय मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता के चलते प्रेरणा ने एक प्रतिष्ठा अर्जित की। समग्रता में जीवन देखने वाले श्री अरुण तिवारी जी ने बच्चों के लिए 'इंटेलीजेली' जैसी महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित बाल पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया, तो देश में (एकमात्र) वरिष्ठजनों के लिए 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स'।

अभी तक श्री तिवारी जी की, साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य ,स्मृतियों के शिलालेख, अपनी बात, पहाड़ों की पगडंडियों से शहर में (कविता संग्रह में कविताएं) और सृजन का समकालीन परिदृश्य, पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इतना ही नहीं मुखौशे ,स्मृतियों के झरोखों से, और समकालीन ग़ज़ल का स्वरूप पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

विशेषांक के लिए ,श्री तिवारी जी के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा रचनात्मक योगदान और प्रेरणा की साहित्यिक पर्यावरण के निर्माण में भूमिका को लेकर रचनाकार मित्रों, दोस्तों, प्रेरणा के आत्मीय पाठकों से आलेख आमंत्रित किए गये, आप सभी ने उत्साह पूर्वक जो योगदान किया उसके लिए मैं आप सभी आत्मीय लेखकों का हृदय से आभारी हूँ।

श्री तिवारी जी के तीनों बेटों अभिनव, आराध्य और अनिमेष एवं उनके परिवार के सदस्यों का आभार जिन्होंने श्री तिवारी के पारिवारिक जीवन से हमें परिचित कराया।

विशेष आभार उन वरिष्ठ 75 पार आदरणीय रचनाकारों का जिन्होंने अपनी अस्वस्थता के चलते भी विशेषांक को गरिमा प्रदान करने और महत्वपूर्ण बनाने अपना योगदान किया। आदरणीय डा.धनंजय वर्मा, डा.कमल किशोर गोयनका जी, श्री महेश श्रीवास्तव जी, श्री महेश सक्सेना जी, श्री सूर्यकांत नागर जी, श्री माताचरण मिश्र जी, श्री राधेलाल बिजघावने जी, श्री सदाशिव कौतुक जी तथा हरेराम वाजपेयी एवं श्री गंगा प्रसाद बरसैंया जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता, श्री युगेश शर्मा जी को नमन।

इस अवसर पर ,आप सब आत्मीय मित्रों, लेखकों, पाठकों, और मैं अपनी ओर से श्री अरुण तिवारी जी के 75 वें जन्मदिन और अमृत प्रसंग पर प्रकाशित 'कला समय' के 'अमृत-जयंती विशेषांक' के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं कि आपका जीवन स्वस्थ, सुंदर और रचनात्मक हो, आप शतायु हो।

- बलराम गुमास्ता
वरिष्ठ कवि
104 ,न्यू चौकसे नगर, लामाखेड़ा, भोपाल 462038
मो. - 96692 69151

■

संपादकीय

पत्रकारिता के प्रकाश स्तंभ - अरुण तिवारी

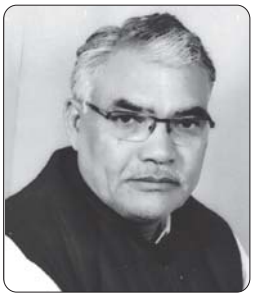

''पथ की सरलता देखकर
दो चार डग जब बढ़ गया
तब दृष्टि-पथ के सामने
आकर हिमालय अड़ गया
पग के अथक अभ्यास पर,
विश्वास बढ़ता ही गया!''

-डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

अगर व्यक्ति के विचार पवित्र हैं तो उसके कर्म, भी उतने ही पवित्र और कल्याणकारी होंगे। अर्थात् कर्म करने वाला व्यक्ति निष्क्रिय रहने वाले से श्रेष्ठ है। दरअसल सत्कर्म केवल मनुष्य के खुद के जीवन को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि समाज पर भी असर करता है।

साहित्य एक ऐसा पक्ष है जो लेखक की गंभीरता, चिंतनशीलता और गहन अध्ययनशीलता की ओर संकेत करता है। विवेकशील साहित्यकार की प्रतिभा संपन्न चेतना, विविध रूपों में अभिव्यक्त होती है। सृजनशील साहित्यकार मानव-मूल्य सांस्कृतिक विरासत, नैतिक संपदा को सुरक्षित करते हुए भावी पीढ़ी के सुखमय भविष्य हेतु अनेकानेक प्रयत्न अपनी लेखनी, भाव एवं संवेदना के द्वारा करता है। मानव है तो समाज है, समाज है तो साहित्य है, मानवीय संवेदना है तो साहित्य में उर्वरता है। साहित्य की इसी धरोहर को अरुण तिवारी ने भी अपनी रचनाधर्मिता से विपुल किया है। वे लब्ध प्रतिष्ठित कलमकार सम्पादक हैं।

ध्येयनिष्ठ जीवन के धनी सही मायने में प्रेरणा पुरुष हैं अरुण तिवारी! मैंने ईश्वर को धरती पर नहीं देखा पर हाँ अगर है तो वह सतपुरुष और उसके सतकर्म में आज भी देखा जा सकता है। अरुण तिवारी जी से मैं जब से जुड़ा हूँ। उनके हर कदम और निर्णय ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'' के लिये समर्पित है। वे अपने तेइस वर्षों की पत्रिकारिता में बच्चों, युवा और वरिष्ठ नागरिकों के लिये सोचते हुए उन्हें शुद्ध साहित्य के माध्यम, इन्टेली जेली, प्रेरणा पत्रिका तथा प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाईम्स जैसे प्रतिष्ठापूर्ण प्रकाशन से सर्वहारा वर्ग के ज्ञान चक्षुओं को एक दिशा देने में कामयाब हुए हैं। 'कला समय' का यह प्रतिष्ठापूर्ण अंक उनके अमृत-महोत्सव के अवसर पर हमारा छोटा सा उपक्रम है जो सूर्य को दीपक दिखाने भाव का प्रतीक है।

मेरी दृष्टि में सीमित शीशे में श्री अरुण तिवारी जी जैसे दिखाई देते हैं उससे वे बहुत उज्जवल और विशाल हैं। श्री तिवारी जी को पच्चहत्तरवीं वर्षगाँठ के अमृत-महोत्सव के शुभ अवसर पर उनके बहुआयामी कृतित्व और सर्व समावेशी व्यक्तित्व का आत्मीय अभिनंदन करते हुए हम आनन्द और गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

हमें बताते हुए हर्ष है कि 'कला समय' का यह महत्वपूर्ण दस्तावेज अंक के अतिथि संपादक वरिष्ठ कवि, साहित्यकार श्री बलराम गुमास्ता जी ने कृपा पूर्वक हमारे आग्रह को स्वीकार कर इस अंक को गौरव प्रदान किया है। हम उनकी उदारता के प्रति कृतज्ञ हैं। श्री गुमास्ता जी ने अपनी अस्वस्थता के बावजूद यह

उपक्रम करने का साहस कर 'कला समय' को अपनी दृष्टि से नवाज़ा उन्हें प्रणम्य है।

हम आभारी हैं सभी सहयोगी रचनाधर्मी साहित्यकारों, मित्रों, परिवार के जिनके रचनात्मक सहयोग से यह विशेषांक बहुमूल्य बन पड़ा है। हमारे आग्रह पर पचास से अधिक शुभचिंतकों ने हमें अपने सृजन से उपकृत किया है। यह हमारे लिये और आदरणीय तिवारी जी के लिये अपने पत्रकारिता जीवन में कमाई हुई पूँजी और स्नेह है। हम सभी रचनाकारों का हृदय से अभिवादन करते है। स्वाभाविक है कि इस अंक के कारण कुछ सामग्री हम इस अंक में सम्मिलित नहीं कर पा रहे हैं। पत्रिका की सीमा इसका मुख्य कारण है। उन्हें हम आश्वस्त करते हैं कि आगामी अंकों में ससम्मान स्थान देंगे आपके रचनात्मक सहयोग की पूर्व की भाँति आकांक्षा हैं।

हम गौरवान्वित हमारे पाठकों और रचनाकार लेखकों का जिनके सहयोग से 'कला समय' पत्रिका ने अपने जीवन की निरन्तरता के चौबीस वर्ष पूर्ण कर लिये हैं। यह एक सांस्कृतिक पत्रिका के लिये आपका प्यार भरा स्नेह और सहयोग का ही परिणाम है कि 'कला समय' आगामी अंक (अगस्त-सितम्बर 2021) का अंक रजत वर्ष का प्रवेशांक होगा जो वरिष्ठ फिल्मकार, साहित्यकार, आलोचक, संस्कृति कर्मी प्रो. राजाराम के कृतित्व और व्यक्तित्व पर केन्द्रित विशेषांक ''प्रो. राजाराम-स्मरण'' पर आधारित होगा। इस अंक में भी आपके सहयोग की अपेक्षा है।

आप जानते ही हैं कि 'कला समय' एक अव्यवसायिक सांस्कृतिक पत्रिका है जो विगत चौबीस वर्षों से निरन्तर शोध परक सामग्री के साथ निकल रही है। आप इस तथ्य से परिचित होंगे कि इस तरह की पत्रिका निकालना बड़ा ही दुष्कर और श्रमसाध्य कार्य है। विगत कुछ वर्षों में मुद्रण, टंकण, कागज इत्यादि की लागत में असामान्य बढ़ोत्तरी हुई है। ऐसे में पत्रिका के नियमित प्रकाशन को आप तक पहुँचाने के लिए सदस्यता सहयोग शुल्क में इसी अंक से वृद्धि करना अपरिहार्य हो गया है। आप सभी सुधीजनों से अनुरोध है कि पूर्व की भाँति आपका सहयोग आगे भी इसी तरह मिलता रहेगा।

श्री अरुण तिवारी जी के भागीरथ प्रयास को मेरा नमन! माँ शारदा इन्हें आयुष्मान करे और ये हर कार्य में विजय प्राप्त करते रहें।

अमृत-महोत्सव के शुभ अवसर पर 'कला समय' परिवार की ओर से हार्दिक मंगल कामनाएँ स्वीकार करें।

हमेशा की तरह आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

बहुत आदर सहित पुनः आदरणीय तिवारी जी, बलराम गुमास्ता जी, सभी लेखक, परिवार के सदस्य और पाठकों को इस अपार सहयोग के लिये हम आभारी हैं।

''सुमन जी'' के शब्दों में-

चाहे न पूर्णता मैं पाऊँ, चलते-चलते ही मिट जाऊँ
पत्थर पर दूँ पद चिन्ह बना, मुझमें है इतना भरा जोश!

- भँवरलाल श्रीवास

■

मित्रों, लेखकों, पाठकों की दृष्टि में अरुण तिवारी :

अरुण तिवारी की बेमिसाल साहित्यिक पत्रकारिता

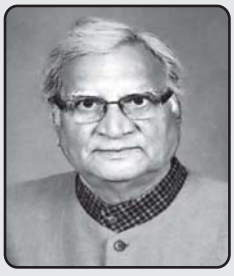

धनंजय वर्मा

समकालीन लेखन के लिए समर्पित त्रैमासिक पत्रिका 'प्रेरणा' के संपादक अरुण तिवारी से मुलाकात पहले-पहल शायद पिपरिया में हुई थी। हरिशंकर अग्रवाल और अरुण तिवारी ने मिलकर यह आयोजन किया था, जिसमें चन्द्रकान्त देवताले और जितेन्द्र कुमार भी शामिल हुए थे। इस मुलाकात का ज़िक्र अरुण तिवारी बड़ी शिद्दत और खुलूस से करते हैं। वे पेशे से इंजीनियर रहे हैं लेकिन अपनी मानवीय संवेदनशीलता, रचना शीलता और सामाजिक सरोकारों की प्रतिबद्धता के चलते कवि, कहानीकार और संपादक हैं।

इनसे दूसरी मुलाकात बरसों बाद 1997 में भोपाल में हुई। मैं 1995 में सेवानिवृत्ति के बाद पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे अपने लेखन को एकत्र कर उनके पुस्तकाकार संपादन संयोजन में व्यस्त था और लगभग एकांतवास में था। वे बलराम गुमास्ता के साथ घर आए। 'प्रेरणा' के लिए रचनात्मक सहयोग का आग्रह किया। मैंने उन्हें अपनी असमर्थता और उसकी वजह बताई। 'नवभारत' (दैनिक) में सतीश जायसवाल का 'नियमित वेद पाठ करता एक मार्क्सवादी आलोचक' शीर्षक एक इंटरव्यूनुमा संक्षिप्त लेख छप चुका था तो तिवारी जी को लगा कि मैं आध्यात्म की शरण चला गया हूँ। बहरहाल, तय हुआ कि वह मेरा एक लम्बा साक्षात्कार रिकार्ड करेंगे और वही 'प्रेरणा' में प्रकाशित होगा। 'आकाशवाणी' या 'दूरदर्शन' पर लिए गए साक्षात्कारों की तरह यह भी तय हुआ कि बिना किसी पूर्व तैयारी के तत्काल प्रस्तुत विषय-दर-विषय और प्रश्न-दर-प्रश्न बातचीत होती चलेगी और उसे यथावत पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

और दूसरे दिन अरुण और बलराम टेपरिकार्डर के साथ आए और बातचीत शुरू हो गई। ''सृजन का समकालीन परिदृश्य''। बातचीत खासी तवील हुई और साहित्यिक मुद्दों को समेटती पूरे अट्ठाईस पृष्ठों में प्रकाशित हुई।

'प्रेरणा' के अगस्त 1998 अंक में इस बातचीत पर 'आपकी कलम' स्तम्भ में जो पत्र-प्रतिक्रियाएँ छपी उन्हें कृपापूर्वक रेखांकित कर पत्रिका के परामर्शदाता बन्धु मुकेश वर्मा मुझे दे गए। कुछ सड़सठ (67) पत्र छपे थे। इनमें से इक्यावन (51) लोगों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की थी। सैतालीस (47) लोगों ने इसे पसंद किया था। चार लोगों ने नापसंदगी का इजहार किया था। डॉ. रमेश उपाध्याय (दिल्ली) के पत्र का यह हिस्सा मुझे काबिले कबूल लगा - ''इंटरव्यू को टेप से कागज पर उतार कर यथावत छपवा देना उचित नहीं। बोलते समय आदमी अपनी बातें बहुत सचेत और व्यवस्थित रूप में नहीं कहता, इसीलिए बोली गई बातों को लिखित रूप में प्रस्तुत करते समय संपादित करना और प्रकाशित कराने से पहले उस व्यक्ति को दिखा लेना चाहिए जिससे बात की गई हो। मुद्रण के माध्यम को दृश्य श्रव्य माध्यम की नकल क्यों करनी चाहिए जिनमें ऐसे संपादन और संशोधन की गुंजाइश नहीं होती? मुद्रित शब्द की अपनी गरिमा और गंभीरता होती है उसे बनाए रखना चाहिए।'' मुझे यह सुझाव अच्छा लगा। अरुण तिवारी ने बातचीत को कागज पर उतार कर मुझे दिखाया ज़रूर था और तब आग्रह यह था कि बोले गए शब्द की सत्ता को बरकरार रखा जाए और उसे यथावत छापा जाए मैंने भी अपनी सहमति दे दी। डॉ. रमेश उपाध्याय का सुझाव मुझे दमदार लगा सो मैंने इस बातचीत को अपनी पुस्तक 'आलोचक का अंतरंग' (साक्षात्कार 2005) में प्रस्तुत करने से पहले उसका संपादन और संशोधन कर दिया।

15 फरवरी 1999 को अरुण तिवारी के संयोजन में नरेश मेहता से उनके निवास 'फाल्गुनी' में मेरी और ओमप्रकाश मेहरा की बातचीत 'प्रेरणा' के खण्ड दो, अंक दो 1999 में प्रकाशित हुई। इस बातचीत का ऐतिहासिक महत्व इसीलिए भी है कि इसमें नरेश मेहता ने कई मुद्दों और अज्ञेय, मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह और निर्मल वर्मा पर बड़ी बेबाकी से अपनी राय जाहिर की है।

इसके बाद 'प्रेरणा' के अंक मुझे नियमित मिलने लगे। गाहे-ब-गाहे कुछ अंकों में मेरा लेखन भी प्रकाशित होता रहा...। अपनी बढ़ती उम्र और अपनी और पत्नी की लगातार अस्वस्थता के

कारण हम लोग अक्सर ही अपनी छोटी बेटी निवेदिता के घर उज्जैन में रहने पर विवश हो गए। यहां अपने सागर विश्वविद्यालय विद्यार्थी जीवन के साथी डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य के अलावा कवि कथाकार डॉ. प्रमोद त्रिवेदी से भी पारिवारिक अंतरंगता विकसित हुई। 2013 में उन्होंने मेरा पहला साक्षात्कार लिया। उनके द्वारा संपादित और प्रभात कुमार द्वारा संपादित 'समावर्तन' तथा डॉ. रमेश सोनी द्वारा संपादित 'रिसर्च लिंक' (इन्दौर) के संयुक्त तत्वाधान में मुझ पर एकाग्र पुस्तक में वह शामिल हुआ। 2015 में अस्सी वर्ष पूरे होने के अवसर पर 'समावर्तन' में मुझ पर एकाग्र सामग्री प्रकाशित हुई। उसमें प्रमोद त्रिवेदी द्वारा मेरे साक्षात्कार की दूसरी किस्त प्रकाशित हुई। उनके स्नेहाग्रह से फिर तीन किस्तों में साक्षात्कार सम्पन्न हुआ। त्रिवेदी जी का आग्रह था कि साक्षात्कार की पांचों किस्तें कहीं एक साथ प्रकाशित हों, तब बात बने। इसी सोच विचार के दौरान मुझे अचानक अरुण तिवारी जी की याद आई। मैंने उनसे बात करने की बजाय सीधे पत्र लिखा। सुखद आश्चर्य, तिवारी जी ने तुरन्त अपनी सहमति दे दी। उन्होंने –पचहत्तर पार रचनाकार' योजना के अंतर्गत 'प्रेरणा' के वर्ष 3, अंक 4, जुलाई–सितम्बर 2018 में वह साक्षात्कार 'बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी' और मुझ पर प्रमोद त्रिवेदी का लेख और मेरा प्रमोद त्रिवेदी पर लेख एक साथ प्रकाशित कर दिए। 'प्रेरणा' के पृष्ठ 25 से पृष्ठ 165 तक पूरे एक सौ चालीस पृष्ठों की एक किताब की शक्ल में वह साक्षात्कार प्रकाशित हो गया।

'प्रेरणा' के 'आपकी कलम' स्तम्भों में उस पर लगभग बीस पत्र–प्रतिक्रियाएँ प्रकाशित हुई। डॉ. श्रीराम निवारिया का आलेख भी प्रकाशित हुआ। इस पूरे प्रसंग में मेरे प्रति अरुण तिवारी की संवेदनशीलता, स्नेह–सम्मान, सद्भाव और सदाशयता के लिए मैं प्रणत भाव से आभारी हूँ और अपने शेष जीवन भर उनके प्रति कृतज्ञ रहूँगा।

अरुण तिवारी की चिन्ता और सामाजिक सरोकारों की प्रतिबद्धता की एक और मिसाल उनके द्वारा शुरू किया गया 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' अखबार भी है। यह वरिष्ठ नागरिकों के लिए समर्पित देश का पहला अखबार है। इसमें एक नियमित कॉलम लिखने का आग्रह उन्होंने मुझसे किया था। मैंने 5 जुलाई 2019 के अंक में एक संक्षिप्त लेख लिखा। मैं उसे नियमित नहीं कर पाया। बहरहाल अरुण तिवारी के सामाजिक सरोकारों में बच्चों की चिंता भी शामिल है। अंग्रेजी में प्रकाशित 'इंटेलीजेली' पत्रिका इसकी मिसाल है।

'सृजन का समकालीन परिदृश्य' श्रृंखला के अंतर्गत उपर्युक्त दो बातचीतों के अलावा कमलेश्वर से अरुण तिवारी, राजेश जोशी से अरुण तिवारी, बलराम गुमास्ता और अमिताभ मिश्र तथा कमला प्रसाद से अरुण तिवारी और बलराम गुमास्ता की बातचीत भी प्रकाशित हुई। अब ये पाँचों समवेत रूप में भी प्रकाशित हो गई है। नरेश मेहता से लेकर राजेश जोशी तक की पीढ़ी के कवि लेखकों के अवदान और उनकी भूमिका के अलावा इन बातचीतों में समकालीन साहित्यिक परिदृश्य भी उभर कर आता है। इनकी अहमियत दस्तावेजी तो है ही वे एक धरोहर की मानिन्द महत्वपूर्ण भी है।

'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य' में अरुण तिवारी ने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के ऐतिहासिक विहगावलोकन के साथ उसकी समृद्ध परम्परा का स्मरण किया है। वे समकालीन प्रिन्ट मीडिया में साहित्य की क्रमशः गुमशुदगी से चिन्तित तो है ही, संचार माध्यमों के वर्चस्व से साहित्यिक पत्रकारिता पर आए दबावों के बीच भी उनकी मूल्यवत्ता की भरसक रक्षा भी उनका जेहनी सरोकार है।

'अपनी बात' अरुण तिवारी के 'प्रेरणा' में संपादकीय लेख का संग्रह है। यह सारे आलेख हमारे समकालीन जीवन को प्रभावित और किसी हद तक निर्धारित करती सामाजिक और आर्थिक, राजनैतिक और प्रशासनिक समस्याओं पर अरुण तिवारी की सोच और दृष्टि को व्यक्त करते हैं। इनसे उनके वैचारिक क्षितिज और सरकारों की व्यापकता का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

'प्रेरणा' के नए जनवरी–मार्च 2021 अंक में –पचहत्तर पार रचनाकार' के अंतर्गत एक साथ पन्द्रह रचनाकारों पर सामग्री संकलित की गई है। इस पर एक लेखक बन्धु ने नरेश मेहता के फ़िकरे का इस्तेमाल करते हुए शिकायतन कहा –''वो मंडवे तले कइयों को निपटाना' है। कमलकिशोर गोयनका और धनंजय वर्मा पर तो आपने पूरे–पूरे अंक निकाले, लेकिन इसमें एक साथ 15 रचनाकारों को निपटा दिया। इस अंक में शामिल रचनाकारों की उम्र का जायजा लिया जाए तो इसमें सत्तानवें वर्षीय रामदरश मिश्र से लेकर अठहत्तर वर्षीय चित्रा मुद्गल तक शामिल है। इन पर यदि पूरे पूरे अंक निकाले जाने की योजना बनती तो वर्ष में तीन अंक के लिहाज से एक पूरी पंचवर्षीय योजना होती। 'अपनी बात' में इसका संकेत भी है। प्रसंगवश इसमें एक दिलचस्प वाक्य भी है – 'धनंजय वर्मा की आवाज से समझ में नहीं आता कि आवाज की बुलंदी

युवावस्था में थी या वर्तमान में है।' यह वाक्य अरुण की मेरे प्रति स्नेहातिरेक की ही अभिव्यक्ति है। बहरहाल ....

'प्रेरणा' के अंकों का यदि समग्रता में अवलोकन किया जाए तो यह बात साफ होती है कि उनमें प्राप्त सामग्री का संकलन भर नहीं है उनमें संपादक की चयन दृष्टि और रचनात्मक संयोजन का परिप्रेक्ष्य भी नुमायाँ है। एक रचनाकार के कुशल संपादन का साक्ष्य उसके हर अंक में मिलता है।

अरुण तिवारी के अमृत महोत्सव पर, मैं उनके स्वस्थ और सुदीर्घ रचनात्मक जीवन की कामना करता हूँ। वे शताधिक वर्षों तक जियें और निरन्तर 'प्रेरणा' के संपादक से हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को समृद्ध करते रहें।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार आलोचक हैं।
डॉ. निवेदिता वर्मा, एफ-2/31 आवासीय परिसर,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन 456010,
मो.: 9425019863, 8234003886

अरुण तिवारी के अमृत महोत्सव का सफल आयोजन

4 फरवरी 2021 को होटल कोर्टयार्ड मेरियेट भोपाल में ,साहित्यिक पत्रिका प्रेरणा के संपादक श्री अरुण तिवारी जी का 75वां जन्मदिन उनके अमृत महोत्सव के रूप में बड़े उत्साह और भव्यता के साथ मनाया गया।

श्री तिवारी की हाल प्रकाशित पुस्तकें, अपनी बात, सृजन का समकालीन परिदृश्य, प्रेरणा के नयेअंक और प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स न्यूजपेपर का लोकार्पण किया गया, इस अवसर पर पैलेस आर्चर्ड रहवासी समिति एवं वरिष्ठ सदस्यों, परिवारिक मित्रों, प्रेरणा परिवार और प्रतिष्ठित लेखकों ने बड़ी संख्या में भागीदारी की। सभी ने तिवारी जी के रचनात्मक अवदान को सराहा और उन्हें हार्दिक बधाईयां देते हुए उनके स्वस्थ, सुंदर जीवन के साथ शतायु होने की कामनाएं की ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार मुकेश वर्मा निदेशक वनमाली सृजन पीठ भोपाल ने की, मुख्य अतिथि श्री अरुण तिवारी जी के साथ विशेष अतिथि थे वरिष्ठ कथाकार श्री शशांक एवं सानिध्य रहा कवि, मार्क्सवादी विचारक श्री शैलेंद्र शैली जी, और कवि ,पत्रकार श्री युगेश शर्मा जी का।

संचालन और समन्वय वरिष्ठ कवि श्री बलराम गुमाश्ता ने किया। अमृत महोत्सव के सफल आयोजन में अपनी सद्भावना और सहयोग के साथ जो शामिल हुये उनमें, कला समय, राग भोपाली, पहले पहल, प्रेरणा परिवार, पैलेस आर्चर्ड रहवासी समिति, सीनियर सिटीजन फोरम, विश्वरंग, वनमाली सृजन पीठ, आईसेक्ट प्रकाशन और सरोकार सहकारिता , तिवारी परिवार की ओर से श्री अभिनव, श्री आराध्य ,श्री अनिमेष तिवारी तथा कला समय के संपादक श्री भंवरलाल श्रीवास जी ने सभी मेहमानों ,संस्थानों और अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आत्मकथ्य

अपनी यात्रा

अरुण तिवारी

अपनी यात्रा के लिखने के बारे में बहुत पीछे जाना होगा, कुछ चीजें स्मृति में होंगी, कुछ नहीं फिर भी प्रयास है कि संक्षिप्त में महत्वपूर्ण बातें आ जाएं। मां के गर्भ में नौंवें माह में था कि पिता जी चल बसे। बताते हैं उनकी जन्मपत्रिका में था कि वे पुत्र को नहीं देख पाएंगे। बहरहाल महत्व इसका नहीं कि क्या था या नहीं, सही था नहीं परंतु मैं पिताजी की छत्रछाया से वंचित रहा, साथ ही मां की इस दुविधा में खंडित प्यार पा सका कि मेरे कारण उनके पति का निधन हुआ है फिर भी उन्होंने बड़े जतन से पाला–पोसा, भरसक प्रयास किये कि मैं पिताजी की कमी महसूस न करूं पर कभी–कभी उनकी दुविधा समझ में आती थी। पिता जी के दो विवाह हुए थे, पहले विवाह से एक पुत्री थी तथा दूसरी अर्थात मेरी मां से एक पुत्री और एक पुत्र हुआ। पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात ही उन्होंने विवाह किया था। बड़ी बहिन का उस समय के अनुसार काफी कम उम्र में विवाह हो गया था परंतु कम उम्र के कारण गौना नहीं हुआ था कि जीजाजी चल बसे। इस तरह उन्होंने बाल विधवा का जीवन जिया। मां ने उन्हें अपने पास ही रखा। उनका भरपूर स्नेह और लाड़ दुलार मुझे मिला। वे बहुत अनुशासित थीं जो उन्हें पिताजी के संस्कारों से मिला था। मुझे बहुत कुछ धार्मिक ज्ञान व सामाजिकता उन्हीं से मिली। वे बहुत अध्ययन शील थीं। अध्यात्म और धर्म का उन्हें अच्छा ज्ञान था। पिता जी के जाने के बाद जमीन जायदाद और जेवर के लोभ में रिश्तेदारों ने भरसक कोशिश की कि उन्हें वारिस बना दिया जाए। मां और बड़ी बहन जिन्हें हम जिज्जी कहकर बुलाते थे। ये चीज समझती थीं और ये भी समझती थीं कि वे इस लालच में मुझे नुकसान पहुंचा सकते हैं अत: उन्होंने मेरे साथ बहुत सतर्कता बरती। तभी एक और हादसा हुआ, उस समय राष्ट्रीयकृत बैंक नहीं होते थे, प्रायवेट बैंक ही होते थे। जिस बैंक में पिता जी के पैसे जमा थे, उसके मालिक ने अपने को दिवालिया घोषित कर दिया अत: सभी पैसे डूब गये। समस्या आर्थिक कमी के रूप में आने लगी परंतु खेती किसानी से आय और जेवर बिक्री से प्राप्त पैसों से गृहस्थी चलने लगी। इसके बाद एक और झटका लगा, कुछ जमीन मामाजी के गांव में थी वे प्रति वर्ष बराबर उसमें उत्पन्न अनाज लाते थे, उन्होंने लाना बंद कर दिया और कहा कि अब कोई जमीन तुम्हारी नहीं है, हमारी है, कुछ नहीं मिलेगा। बहरहाल जहां राहें बंद होती हैं, खुलती भी हैं जिस बैंक में पैसे जमा थे, उस पर दबाव डलवाया गया, उन प्रकरणों का जिक्र किया गया जिसमें पिता जी ने उनकी मदद की थी, उससे शायद उनमें नैतिकता जागी और उन्होंने प्रति माह निश्चित राशि देना शुरू की। ये सब बहुत व्यक्तिगत बातें हैं, यात्रा में इसलिए लिख रहा हूं कि बचपन से ही मैंने लोगों के अपने वालों के, रंग बदलते चेहरे देखे थे और उनसे सीख ग्रहण की जो जीवन में हमेशा काम आई। हालांकि जब गर्मियों की छुट्टियों में गांव जाता था, एक अलग ही माहौल मिलता था। अपना मकान गांव में सबसे बड़ा होने के कारण दरोगा साहब की बाखर कहलाता था। छोटे बड़े सभी मिलने आते थे और पुरानी प्रचलित परंपराओं के अनुसार सम्मान देते थे। तब लगता था कि पिताजी ने वहां क्या पोजीशन बनाई थी। गांव के छिटपुट झगड़े तो मां ही सुलझाती रहती थीं।

अब आगे पढ़ाई बिना किसी व्यवधान के चल रही थी, पढ़ने का शौक बचपन से ही था संभवतया जिज्जी के दिये संस्कारों की वजह से। पड़ोस में जिला पुस्तकालय के लायब्रेरियन रहते थे, उन्होंने राह दिखाई और रोज लायब्रेरी जाने लगा। वहां से उस समय निकलने वाली बाल पत्रिकाएं चंदा मामा, बालक, नंदन, बाल भारती की जिल्द घर लाने लगा। लायब्रेरी में पिछले 6 माह की पत्रिकाओं को एक जिल्द में बाइडिंग करा लिया जाता था। वे सब पढ़ने के पश्चात अन्य पुस्तकें भी पढ़ने लगा। प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकें वहां थीं। हायरसेकंडरी तक आते–आते अधिकांश पुस्तकें पढ़ डाली थीं। इसी बीच उस समय विभिन्न संस्थाओं द्वारा संस्कृत और रामायण की परीक्षाएं आयोजित की जाती थीं। संस्कृत की चार परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर 'कोविद' की उपाधि मिलती थी। मैं दो ही कर पाया। रामायण की पांच परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर 'आचार्य' की

उपाधि मिलती थी, उसकी भी दो ही कर पाया क्योंकि उसके बाद पढ़ने बाहर जाना पड़ गया।

हमारे मोहल्ले और आसपास के लड़कों की हॉकी टीम थी, हम लोग शहर की अन्य टीमों से मैच खेलने लगे। अंत में प्रतिस्पर्धा में दो ही टीम बचीं। दूसरी टीम खेलने में जितनी अच्छी थी, उतनी लड़ाकू भी थी। अंतत: दोनों टीम में समझौता हुआ और दोनों के खिलाड़ियों को मिलाकर दो टीम बनाई गईं और शहर में हम लोगों का एक छत्र साम्राज्य हो गया परंतु एक नुकसान जबर्दस्त हुआ, हम लोगों की गिनती भी लड़ाकुओं में होने लगी अत: अभिभावकों ने सोचा, इन बच्चों का यहां रहना ठीक नहीं अत: पढ़ने बाहर भेज दिया जाए। इस तरह अपने शहर से दूर बाहर आ गये। मन लगाकर पढ़ाई की, पढ़ाई पूरी होते होते नौकरी लग गई। उस समय सिविल इंजीनियर की बहुत मांग थी। पहले एक विभाग में, उसके लगभग आठ-दस माह बाद एक और विभाग से ऑफर आया। पहले वाले विभाग को छोड़कर सिंचाई विभाग में आ गया। यहां भी विभाग की प्राय: सभी शाखाओं में काम करने का मौका मिला। लघु परियोजनाएं, नलकूप विभाग, वृहद परियोजनाएं, उदवहन सिंचाई, सर्वेक्षण एवं अनुसंधान विभाग, विश्वबैंक परियोजनाएं, नर्मदाघाटी विकास विभाग, बांध सुरक्षा विभाग, चालन एवं रखरखाव उसके अतिरिक्त मंत्रालय में भी काम करने को मिला। अन्य विभागों में, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग में ग्रामीण यांत्रकीय सेवाओं में तथा उद्योग विभाग में भी काम किया। नौकरी के साथ-साथ लगता था कि इंजीनियरिंग के अलावा हिंदी भी पढ़ता तो शायद लेखन में परिपक्वता आए अत: साहित्य विशारद, साहित्यरत्न तथा हिंदी में एम ए की भी पढ़ाई की। बेटा पूना में सर्विस में था, एमबीए कर रहा था मैंने भी एमबीए करने का सोचा, आंशिक ही कर पाया था कि बेटे का ट्रांसफर हो गया अत: आगे नहीं कर सका जिसका अफसोस अक्सर होता है कि आलस नहीं करता तो शायद पूरा कर लेता। अवकाश ग्रहण करने के उपरांत भी विभाग में सेवा का अवसर मिला परंतु बेटों ने मना कर दिया कि पापाजी बहुत कर लिया, अब तो अब साहित्य जो आपके लिए महत्वपूर्ण था, जो नहीं कर पा रहे थे उस पर ध्यान दीजिए और उन्होंने प्रेसकाम्प्लेक्स में एक बढ़िया ऑफिस बनवा दिया जहां मैं आज भी काम करता हूं।

कॉलेज समय से ही जो विचार मन में आते थे, कागज पर उतार लेता। जीवन में इतने सारे कटु और कुछ अच्छे अनुभव मिले थे जिन्होंने कहानी लेखन में सहायता की और जो समझ आया, कहानी के रूप में लिखने लगा। मेरी शुरूआती पोस्टिंग एक कस्बाईनुमा शहर में हुई वहां चंद्रकांत देवताले जी कॉलेज में हिंदी के सहायक प्राध्यापक थे। उन्होंने वहां के उदीयमान रचनाकारों का ग्रुप बनाकर प्रति सप्ताह गोष्ठी की शुरूआत की। मैं भी वहां जाने लगा पर मुख्यत: गोष्ठी कविताओं पर ही केंद्रित होती थी। पहले वे कविता के बारे में बताते, सब अपनी-अपनी रचनाएं सुनाते। उन पर समीक्षात्मक विचार रखे जाते। मेरी वहां एक तरह से श्रोता की ही हैसियत थी क्योंकि मैं कविताएं नहीं लिखता था। देवताले जी ने कहा कि चाहो तो कहानी के साथ-साथ कविता लिखने का प्रयास करके देखो। मैंने भी कविताएं लिखना शुरू की और गोष्ठी में पढ़ना शुरू किया। कुछ कविताएं सराही भी गईं। लगभग एक डेढ़ वर्ष बाद देवताले जी ने मेरी एक कविता को 'लहर' पत्रिका में भेजने हेतु कहा। इस समय 'लहर' साहित्यिक पत्रिकाओं में शीर्षस्थ थी। अन्य समकक्ष पत्रिकाएं ज्ञानोदय, कल्पना, माध्यम, वातायन थीं। 'लहर' में कविता भेजने के लगभग दो माह बाद वहां से पत्र आया। अति उत्साह और प्रसन्नता से लिफाफा खोला तो पाया कि काली स्याही से लिखी कविता अधिकांशत: नीली स्याही से कटी थी मात्र कुछ पंक्तियां शेष थी, साथ में एक स्लिप थी कि कविता विस्तार नहीं कसावट मांगती है, जो बात कुछ पंक्तियों में कही जा सकती है तो इतना फैलाव क्यों ? अच्छा हो आप कहानी पर केंद्रित करें। मन खिन्न हो गया, देवताले जी को पत्र दिखाने पर वे हंसने लगे, मुझे कुछ अजीब लगा, बोले मेरी रचनाएं चार वर्ष तक लगातार 'लहर' से लौटी हैं अत: निराश न हों, रचना में दम होगी तो अवश्य छपेगी, फिलहाल तुम एक वर्ष तक कहानी पर ध्यान दो। मैं एक चुनौती के साथ कहानी में जुट गया और कई कहानियां लिख डालीं। एक-डेढ वर्ष बाद देवताले जी को दिखाई, बोले ये कहानी 'लहर' में भेजो। मैंने कहा कि नहीं छपेगी, ये भी लौट कर आएगी, बोले भेजो तो। उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया और मैंने धड़कते दिल से वो कहानी 'लहर' में भेज दी। एक माह बाद ही 'लहर' से पत्र आ गया। लिफाफा खोलते समय कोई उत्साह नहीं था फिर भी धड़कते दिल से खोला, उसमें कहानी का स्वीकृत पत्र ही नहीं था बल्कि कहानी की प्रशंसा भी की गई थी, वह कहानी थी 'मुखौशे' जो मेरी पहली प्रकाशित कहानी थी। प्रकाशित होने के पश्चात वह कहानी बहुत चर्चा में आई, क्योंकि उस समय के हिसाब से इस कहानी का विषय और कथ्य नया था जो पाठकों को चौंका गया। उसी अंक में पंजाब यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ इंद्रनाथ मदान की रचना भी छपी थी। उन्होंने उस कहानी पर अपनी यूनिवर्सिटी में चर्चा कराई। उस

कहानी की बदौलत ही उस समय के नेपाल नरेश का पत्र आया कि आप यहां एक माह का आतिथ्य स्वीकारें। इसके पश्चात तो आत्मविश्वास बढ़ गया और कहानियां अन्य पत्र पत्रिकाओं में छपने लगी। इस तरह पहचान में वृद्धि हो रही थी।

तभी विवाह हुआ, डेढ़-डेढ़ वर्ष के अंतर से तीन पुत्र हुए। इनको लड़की न होने की हमेशा कसक रही। लिखना पढ़ना तो विवाह के बाद बंद हो ही गया था फिर, बच्चों को बड़ा करने की जिम्मेदारी, नौकरी की व्यस्तताएं जिससे समय ही नहीं मिल पाता था। दरअसल में बचपन से पिता का प्यार न मिल पाने के कारण और एकलौता पुत्र होने के कारण एक अकेलेपन और रीतेपन का अहसास होता रहता था और जब विवाह हुआ, बच्चे हुए तो लगा कि मुझे वह सब मिल गया जिसकी हमेशा से आकांक्षा रही और उसी में डूबता चला गया और कुछ सोचा ही नहीं या सोच नहीं पाया। बहरहाल मैं अपने जीवन से संतुष्ट था पर इनको हमेशा ये मलाल रहा कि शायद लेखन से दूर होने में उनकी भूमिका है। वैसे मैं पत्रिका आकंठ के संपादक मंडल में था और कहानी व समीक्षा पक्ष देखता था पर जब वे दोनों स्तंभ बंद हो गये तब पत्नी ने प्रेरित किया कि अब वहां से मुक्त होकर नई पत्रिका स्वयं के अनुसार निकालना चाहिए और इस तरह 'प्रेरणा' का प्रार्दुभाव हुआ।

जब प्रेरणा निकालने का सोचा तो यह विचार आया कि पत्रिका कुछ अलग हटकर हो और उसमें ऐसी सामग्री हो कि आम पाठक भी उससे जुड़ सके तब पत्रिका की परिकल्पना इस प्रकार की गई कि वह अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं की भांति रचनाकारों द्वारा प्रकाशित, रचनाकारों द्वारा लिखित तथा रचनाकारों द्वारा ही पठित न हो बल्कि उसमें सामान्य पाठक की भी भागीदारी हो जिससे साहित्य जन-जन तक पहुंचे। वर्ष 1992 में प्रथम अंक का प्रकाशन हुआ। पत्रिका पुन: आरंभ करते समय कई लोगों द्वारा हतोत्साहित किया गया। कई प्रकार की कठिनाइयां गिनाईं। बलराम गुमास्ता जी आरंभ से ही साथ में थे। उन्होंने काफी सम्बल दिया और पत्रिका निकलना प्रारंभ हुई। पांच वर्ष के अंतराल के पश्चात वर्ष 1997 से नियमित प्रकाशित हो रही है। अभी तक 51 अंक प्रकाशित हुए जिनमें 24 अंक विशेषांक आए हैं।

पहले कंपोजिंग टाइप सेटिंग से एक-एक अक्षर जमाकर होती थी अत: इन्होंने हिंदी टाइपिंग सीखकर और टाइप राइटर खरीदकर पांडुलिपि बनाने तथा पता टाइप करने का काम सम्हाल लिया। प्रेरणा समय के अनुसार परिवर्तित होती रही है। प्रेरणा आने के पहले वे संपादकीय अवश्य पढ़तीं थीं, उस पर चर्चा भी करतीं, आलोचना भी करतीं और सुझाव भी देतीं। मैं मजाक में कहता कि अच्छा है, आलोचक घर में ही मिल गया और उसमें संशोधन हो जाता है। बहरहाल जीवन अच्छा चल रहा था, बच्चे बढ़े हुए, पढ़ने बाहर चले गये फिर उनके विवाह हुए, उनके बच्चे हुए। सौभाग्य से बहुएं हमें बहुत अच्छी मिलीं, शिक्षित तो थीं ही, संवेदनशील भी थीं, हम लोगों का पर्याप्त ध्यान रखतीं।

उनके जाने के कुछ समय पहले से मैं एक बदलाव देख रहा था कि वे काफी पजेसिव होतीं जा रही थीं। कभी-कभी तो मैं खीझ जाता पर वे कुछ बोलतीं नहीं, बस कातरता से देखते रहतीं और चेहरे पर बहुत ही दयनीय भाव आ जाते। वास्तव में वे मुझे अकेले रहने के हिसाब से तैयार करना चाह रही थीं। उन्हें शायद अपने जाने का पूर्वाभास हो गया था। एकाध बार उन्होंने यों ही हंसते-हंसते कहा था कि यदि मैं कहीं चली गई तो इन आदतों से अकेले कैसे रह पाओगे। मैं मजाक समझा, कहा कि अकेले कैसे जाओगी। अभी तक जहां भी गये हैं, साथ-साथ गये हैं तो मैं भी तो चलूंगा। इनका उत्तर बहुत ही मार्मिक था कि यदि ऊपर चली गई तो मैंने कहा था कि ईश्वर से लड़कर वहां भी साथ-साथ जाएंगे। पर जो हुआ, सामने है, काश! उस दिन की बात की गंभीरता को समझ पाता और अच्छे से उतने दिन साथ-साथ बिता लेता पर अब तो बस स्मृतियां हैं और जाने की प्रतीक्षा है कि पता नहीं कब समय आ जाए। यह भी एक सच्चाई है कि जिस उम्र में पति-पत्नी को एक दूसरे की सबसे अधिक आवश्यकता होती है अक्सर उसी उम्र में एक कोई चला जाता है और दूसरा यदि संवेदनशील है और पति-पत्नी के संबंध मित्रवत रहे हों तो अकेलेपन और डिप्रेशन से ग्रसित हो जाता है। यह स्थिति बहुत ही दुखद और आत्मविश्वास को कम करने वाली होती है। किसी भी पुरुष के जीवन में नारी शक्ति का बहुत महत्व है, यह कहने की बात नहीं पर ठोस सच्चाई है कि नारी के बिना पुरुष का जीवन अपूर्ण है। पुरुष भले ही कितना स्ट्रांग हो पर जब वह किन्हीं प्रकरणों में विभ्रम का शिकार हो जाता है और निर्णय नहीं ले पाता है, पत्नी ऐसा सहज और सरल हल सुझाती है कि वह हतप्रभ हो जाता है कि यह विचार मेरे मस्तिष्क में क्यों नहीं आया। संगिनी शब्द पत्नी के लिए बहुत सही उपयोग है क्योंकि पत्नी हर भूमिका में पति का साथ निभाती है। सभी तरह की बातें एक-दूसरे से शेयर कर लेते हैं। यदि कई बार मतभिन्नता की स्थिति बनती भी है पर यदि दूसरे के प्रति समझ और कनविनसिंग अच्छी हो तो स्थिति अप्रिय नहीं हो पाती।

हम लोग 46 वर्ष 3 माह 16 दिन साथ रह पाये। चाहा तो

था कि जब जायें तो साथ-साथ जायें क्योंकि विवाह के बाद हम लोग जहां भी जाते थे, सदैव साथ-साथ ही जाते थे, रिश्तेदार इस बात का मजाक भी उड़ाते थे पर हम लोगों ने चिंता नहीं की, हम लोग अपने आप में मगन थे परंतु चाहा हुआ सदैव पूरा तो नहीं हो पाता और यही हम लोगों के साथ हुआ। जहां तक योगदान की बात है तो शायद मैं पत्नी के बिना कुछ होता ही नहीं क्योंकि हम लोग पति-पत्नी से अधिक मित्र थे और हर बात आपस में शेयर करते थे। कई-कई बार तो ऐसा होता था कि किसी बात के निर्णय पर पहुंचने में घंटों लग जाते थे, कारण उस विषय पर अपने-अपने विचार और फिर किसी एक निर्णय पर पहुंचना।

इस बीच अन्य गतिविधियां भी चलती रहीं। भारत महोत्सव के अंतर्गत ताशकंद, मास्को, लेनिनग्राद, सोची, कीव यूक्रेन की सौजन्य यात्रा हुई। आकाशवाणी और दूरदर्शन से कई कार्यक्रम भी प्रसारित हुए। पिछले दो वर्षों से वरिष्ठ नागरिक पर केंद्रित देश के पहले समाचार पत्र 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' का संपादन भी हो रहा है। पिछले 6 वर्षों से बच्चों की अंग्रेजी पत्रिका 'इंटेली जेली' का प्रकाशन हो रहा है।

इस बीच कुछ पुरस्कार/सम्मान भी प्राप्त हुए जिनमें- माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार', 'हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मान', ''साहित्य गौरव सम्म्मान', 'काव्य केशव सम्मान', 'अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार', 'हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मान', 'डॉ विजय शिरढोणकर सम्मान', मालवा अंचल (झाबुआ, धार, शाजापुर, देवास, इंदौर) पत्रकार संघ का जनसंपर्क विभाग के तत्वावधान में एवं राजगढ़ जिला पत्रकार संघ तथा विभिन्न शहरों की अनेक सामाजिक, साहित्यक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा अभिनंदन एवं सम्मान आदि।

कुछ पुस्तकें जो प्रकाशित हुई जिनमें -साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य (आलेख), अपनी बात (आलेख), सृजन का समकालीन परिदृश्य (बातचीत), स्मृतियों के शिलालेख(आलेख), पहाड़ों की पंगडंडियों से शहर में (कविता संग्रह में) कविताएं हैं।

इनके जाने के बाद बच्चे बहुत चिंतित थे, अकेले यहां छोड़ना नहीं चाहते थे क्योंकि बचपन से लेकर अभी तक उन्होंने मुझे कभी अकेले रहते नहीं देखा था, साथ ही देखा था अत: साथ में ले जाना चाहते थे जहां भी मैं जाना चाहूं। परंतु मैं यहीं पर रहना चाहता था उन्हीं स्मृतियों और अदृश्य उपस्थिति के साथ अंतत: बच्चों को मेरी जिद के आगे मानना पड़ा हालांकि वे यहां सभी व्यवस्थाएं कर गये थे जिससे मुझे परेशानी न हो। बीच-बीच में बच्चे अपने यहां ले जाते हैं और यहां भी चक्कर लगाते हैं। इंदौर वाला बेटा आराध्य औसतन पंद्रह दिन में एक बार आ ही जाता है। बहुएं भी खाना बनाने वाली मेड से संवाद बनाए रखती हैं। दीपावली पर तीनों बेटे परिवार सहित पूजा के लिए एकत्रित होते हैं। गर्मियों में भी सभी एकत्रित होते हैं, पिछले दो वर्षों से कोविड के कारण ये गड़बड़ा रहा है। बड़ा बेटा अभिनव प्रतिदिन दिन भर की गतिविधियों की चर्चा करता है। इस तरह तीनों बेटे यहां नहीं रहते हुए भी प्रतिदिन आपस में एक-दूसरे से चर्चा कर मुझसे जुड़े रहते हैं। बस इसी तरह जीवन चल रहा है।

प्रारंभ में बच्चों के जाने के बाद अकेलेपन के साथ-साथ अवसाद ग्रस्त भी होने लगा था। उस समय यहां के कुछ वरिष्ठजनों ने इन सबसे निकलने में काफी मदद की और शाम को वहां ले जाने लगे जहां लगभग 20-22 वरिष्ठजन एक पार्क में एकत्रित होकर अपना समय व्यतीत करते थे। मुझे लगा कि बैठने के लिए स्थाई व्यवस्था तथा खेल के साधन हों तो हम कुछ लोगों ने रहवासी समिति से संपर्क किया। उन्होंने भवन ही उपलब्ध नहीं कराया बल्कि कैरम, शतरंज, म्यूजिक सिस्टम फर्नीचर आदि की व्यवस्था करा दी। इस तरह 4 वर्ष पूर्व सीनियर सिटीजन फोरम गठित हुआ और अब उसके सदस्य बढ़कर लगभग 64 महिला-पुरुष हो गये हैं। प्रतिदिन शाम को दो घंटे क्लब खुलता है जहां कुछ लोग कैरम खेलते हैं तो कुछ शतरंज, कुछ किताबें पढ़ते हैं, कुछ विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करते हैं। माह में एक बार बैठक होती है जिसमें पिछले माह की गतिविधियों का लेखा जोखा व वर्तमान माह के कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा होती है इसके अतिरिक्त चालू माह में आने वाले वरिष्ठजनों के जन्मदिन मनाए जाते हैं, एक उत्सव जैसा माहौल रहता है, गाने, गजल, कविता, चुटकुले, संस्मरण, अनुभव आदि वरिष्ठजनों द्वारा सुनाए जाते हैं। दो संयोजकों में मैं एक संयोजक हूं अत: सारी व्यवस्थाएं भी सम्हालना होती हैं। हमारे क्लब का वातावरण बहुत ही अच्छा है। एक दूसरे के दुख-सुख में शामिल होते हैं। वर्ष में एक बार बड़े पैमाने पर स्थापना दिवस मनाया जाता है तथा खेल प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है जिसमें कैरम सिंगल, कैरम डबल, शतरंज, चेयर रेस, बेडमिंटन, टेबिल टेनिस आदि हैं। विजेताओं को स्थापना दिवस पर पुरस्कार दिये जाते हैं। इन सब गतिविधियों से हमारे यहां के वरिष्ठजन अपने आपको युवावरिष्ठ समझते हैं। स्थापना दिवस समारोह में तथा वैसे भी रहवासी समिति का भरपूर सहयोग मिलता है।

बेटों को बचपन से ही पढ़ने का शौक था। उस समय आने वाली सभी बाल पत्रिकाएं पढ़ते थे तथा अमर चित्रकथा व कॉमिक्स भी पढ़ा करते थे। आजकल बच्चों की मानसिकता व अभिरुचि देखकर अक्सर परिवार में चर्चा होती कि क्यों न एक ऐसी बाल पत्रिका आरंभ की जाए जिससे बच्चों में पनप रही इलेक्ट्रॉनिक गजेट्स अकेलेपन की प्रवृत्ति दूर हो तथा वे खेलकूद में रुचि लें और परिवार के साथ हंसी खुशी के साथ समय बिताएं व संस्कार भी सीखें। हम लोगों की इस इच्छा को मूर्तरूप दिया छोटे बेटे अनिमेष ने, बचपन से ही उसे लिखने का भी चाव था, उसकी कहानियां भी बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं और इस तरह पूरे परिवार के प्रोत्साहन और अनिमेष की अभिरुचि ने इंटेलीजेसी का शुभारंभ किया, उसने संपादन के साथ-साथ अन्य व्यवस्थाएं भी संभालीं और आज इंटेलीजेली की एक अलग छवि बन चुकी है।

आजकल बच्चे एक तो पत्रिकाएं पढ़ते नहीं है यदि अपवाद स्वरूप कुछ पढ़ते भी हैं तो अंग्रेजी पुस्तकें पढ़ना पसंद करते हैं अत: 6 वर्ष पूर्व अंग्रेजी पत्रिका 'इंटेलीजेली' की शुरूआत हुई जिसमें कॉमिक्स के माध्यम से संयुक्त परिवार, वरिष्ठजनों की महत्ता, खेल कूद में रुचि, विश्वभ्रमण, विज्ञान, माइंडगेम आदि से संबंधित रचनाएं दी गईं। पत्रिका काफी लोकप्रिय हो रही है। विश्व के सबसे बड़े उद्योगपति रिचार्ड ब्रान्सन द्वारा ईमेल के माध्यम से इंटेलीजेली की प्रशंसा की गई। अमिताभ बच्चन का पत्र भी इसी संदर्भ में आया कि पत्रिका बहुत अच्छी है और आराध्या तो हमेशा प्रतीक्षा करती है। इसके अतिरिक्त कई शिक्षाविदों के सराहना पत्र/मेल द्वारा प्राप्त हो रहे हैं। पत्रिका की एक उपलब्धि यह भी रही कि दिल्ली सरकार द्वारा जब आनंद पाठ्यक्रम लागू करने की योजना बन रही थी, इंटेलीजेली' का पाठ्यक्रम स्वीकृत किया गया जो टीचर्स ट्रेनिंग के लिए बनाया गया था। उक्त पुस्तक इंटेलीजेली द्वारा भोपाल से ही प्रकाशित की गई थी। उक्त पाठ्यक्रम लागू होने पर एक सर्वेक्षण के अनुसार 12 लाख से अधिक विद्यार्थियों को लाभ हुआ जहां उनकी इलेक्ट्रॉनिक गजेट्स की लत ही नहीं छूटी, वे बच्चों के साथ पार्कों में खेलने लगे। मां बाप के प्रति उनके व्यवहार में अभूतपूर्व परिवर्तन आने लगा। ये एक छोटी सी उपलब्धि कही जा सकती है। 'इंटेलीजेली' में हमेशा ये प्रयास रहता है कि हरबार कुछ नया हो जिससे बच्चों में पढ़ने की रुचि बनी रहे।

दिन भर ऑफिस की गतिविधियों में व्यतीत हो जाता है। तभी विचार आया कि पूरे देश में वरिष्ठजनों के लिए अलग से समाचार पत्र नहीं है अत: 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' निकाला गया जिनमें, लेखक, संवाददाता आदि सभी वरिष्ठ होते हैं। दो वर्ष से अधिक हो गये हैं, पेपर काफी सराहा जा रहा है। पेपर का मुख्य उद्देश्य वरिष्ठजनों में सकारात्मकता को बढ़ावा देना है।

तीनों बच्चों की बड़ी इच्छा थी कि हम लोगों की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ तथा मेरा 75वां जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाएंगे पर शायद नियति इससे सहमत नहीं थी तो 50वीं वर्षगांठ आ ही नहीं पाई पर उनकी दूसरी इच्छा अवश्य पूरी हुई। उन्होंने मुझे सरप्राइज देते हुए 75वें जन्मदिन का आयोजन काफी बड़े स्तर पर आयोजित किया। इमसें बलराम गुमास्ताजी का भरपूर सहयोग मिला और उस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय उन्हीं को है।

इस बीच भंवरलाल श्रीवास जी जो 'कला समय' के संपादक हैं, उन्होंने मुझ पर केंद्रित एक अंक की योजना बना डाली। मैंने उनसे कहा भी कि मैं इस योग्य नहीं हूं कि इस तरह का अंक आप निकालें। इस बीच वे बलराम गुमास्ता जी को इस अंक का अतिथि संपादक बना चुके थे। अत: अब टाल-मटौल करने की गुंजाइश ही नहीं बची थी।

मुझे अपने जीवन में, प्रेरणा पत्रिका में बहुत लोगों का स्नेह, सहयोग, सदभावना मिली। मैं इन सबके प्रति आभारी हूं। अलग-अलग नाम नहीं ले रहा हूं पर उन सबका मेरी इस यात्रा में बहुत महत्व रहा है। प्रेरणा पत्रिका को सहयोग करने वाले लेखकों व पाठकों का भी आभारी हूं कि उन सबके कारण ही प्रेरणा की एक अलग छवि है। हमारा स्टाफ भी एक परिवार की तरह कार्य करता है, उन सबको भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

भविष्य में भी आप सभी लोगों का स्नेह, सहयोग, सद्भावना तथा आशीर्वाद इसी तरह मिलता रहेगा, ऐसा विश्वास है।

मैंने अपना पूरा जीवन स्वाभिमान के साथ जिया, कभी किसी के आश्रित नहीं रहा। यूं भी कहा जा सकता है कि स्वनिर्मित व्यक्ति रहा। अब यही अंतिम इच्छा है कि जब भी जाऊं तो उसी स्वाभिमान के साथ जाऊं और किसी का आश्रित न होना पड़े। शायद ईश्वर यह इच्छा पूरी करे।

- लेखक कवि, कथाकार, आलोचक हैं।
संपादक- प्रेरणा, साहित्यिक पत्रिका
ए-74, पैलेस आरचर्ड, फेज-3, सर्वधर्म के पीछे,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)-462042
मो.: 09617489616

■

अरुण तिवारी : प्रेरणा के पर्याय

कमल किशोर गोयनका

अरुण तिवारी पचहत्तर के हो रहे हैं। स्वागत है, और चाहता हूं कि वे जब मेरी उम्र के हो तब भी मैं उनका स्वागत करूं। हम बचपन में सोचते हैं, कब बड़े होंगे और जब 75 वर्ष के होते हैं तो सोचते हैं कि इतनी जल्दी हो गये। यही जीवन का सच है, सबको बचपन से बड़ा होना है और बड़ा होते समय बड़े काम भी करते जाना है। मैं समझता हूं, मेरे मित्र, मेरे साहित्य यात्रा के एक विश्वसनीय साथी 75 के हो रहे हैं और बखुशी हो रहे हैं और आगामी 15 वर्षों की योजना बना रहे हैं तो मैं सुंदर पुष्प माला से उनका स्वागत करता हूं। उनका स्वागत मैं ही क्या हिंदी साहित्य प्रेमी कर रहे हैं और बखुबी कर रहे हैं।

अरुण तिवारी से मेरा परिचय उनकी पत्रिका 'प्रेरणा' के माध्यम से हुआ। मैंने जब 'प्रेरणा' को पहली बार देखा तो देखता रह गया, इतनी सुन्दर, इतनी साहित्यिक तथा इतनी महत्वपूर्ण सामग्री से युक्त तथा इतनी तटस्थता से निकलने वाली पत्रिका से मैं कैसे अपरिचित रह गया। यह शायद 2001 के आसपास की बात होगी और आज मैं कह सकता हूं कि मैं लगभग 20 वर्षों से 'प्रेरणा' का नियमित पाठक हूं, उसका प्रशंसक हूं तथा उसका लेखक भी हूं। मुझे यह 'प्रेरणा' साहित्यिक पत्रिकाओं में सर्वोत्तम लगती है और लगती ही नहीं मानता भी हूं। यह अपने कलेवर में, अपने गेटअप में, अपनी सामग्री तथा प्रस्तुतीकरण में हिंदी की सर्वोत्तम पत्रिका है, इसमें कोई संदेह नहीं।

अरुण तिवारी की आजीविका हिंदी से नहीं चलती, वे सिविल इंजीनियर रहे, एम बी ए (आंशिक) किया और हिंदी साहित्य भी पढ़ा और उच्च डिग्री प्राप्त की, लेकिन ऐसा कांबीनेशन आपको कम ही मिलेगा कि इंजीनियर हो और साहित्य को समर्पित हो गया हो। ईश्वर बड़ा चमत्कारी है, वह विरोधों को एक साथ मिला देता है, जैसे एक ही आदमी में धर्म और अधर्म मिला देता है और प्रकाश और अंधकार को मिलाकर संध्या बना देता है। इस प्रकार अरुण तिवारी हिंदी साहित्य के लिए एक चमत्कार और वरदान दोनों हैं। आपने चमत्कार तो देख लिया कि कैसे गंगा और यमुना मिलकर संगम का रूप ले लेती हैं और एक रूप बनकर आगे की यात्रा तय करती हैं और तिवारी जी भी दो भिन्न अनुशासनों को आत्मसात करके हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रिका के नायक बन जाते हैं। इस दुर्लभ संयोग का हमें स्वागत करना चाहिए।

अरुण तिवारी हिंदी के लेखक भी हैं, जिसकी कम को जानकारी होगी। मैं भी इसकी पूरी सच्चाई से वाकिफ नहीं था और शायद इसके मूल में तिवारी जी का व्यक्तित्व भी कुछ जिम्मेदार है। वे नितांत संकोची, पूर्णत: शांत और कम बोलने वाले और अपने बारे में तो बिल्कुल चुप रहने वाले और अपने साहित्यिक कर्म के प्रचार प्रसार से दूर रहने वाले प्राणी हैं, जो इस कालखंड में दुर्लभ हैं। वे 'प्रेरणा' जैसी पत्रिका के संपादक हैं, लेकिन उनके नाम से उनकी पत्रिका का नाम ज्यादा प्रचलित है। संभव है, मैं ग़लत हूं पर मेरे मन पर यही अंकित है कि वे अपने को नहीं अपनी पत्रिका को आगे रखते हैं, अपने को नहीं अपनी पत्रिका को लोकप्रिय बनाना चाहते हैं और अपने रचे साहित्य को नहीं दूसरों के रचे साहित्य को प्रकाश में लाकर पाठकों तक पहुंचाना चाहते हैं। यह लक्ष्य, यह मनोभाव तथा यह पत्रिका के लिए समर्पण क्या उन्हें महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, अज्ञेय तथा धर्मवीर भारती जैसे संपादकों की श्रेणी में स्थापित नहीं कर देता ? यह करता है और आज के आत्मकेंद्रित तथा यश के लिए पागल संपादकों के बीच तो उन्हें और विशिष्ट बनाता है। अरुण तिवारी ऐसे ही हैं और ऐसे ही रहेंगे।

अरुण तिवारी की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं–कविता है, आलेख हैं, संस्मरण हैं, कहानी हैं और हिंदी गजल तक पर उनकी आलोचनात्मक पुस्तक है। इस प्रकार वे कई रंग में रंगे हैं और कई पतवारों से साहित्य की नाव को खे रहे हैं और उसमें 'प्रेरणा' नामक यात्री उनका 23 वर्षों से साथी है और वे नाव को खेते जा रहे हैं, खेते जा रहे हैं। उनका एक बड़ा लक्ष्य है, साहित्य को लेखक और पाठक के साथ जोड़ना, अर्थात साहित्य–लेखक–पाठक का संगम करना और इसके लिए 'प्रेरणा' निकालना और साहित्य को पाठक के लिए

उपयोगी और आवश्यक बनाना तथा साहित्य का संस्कार पैदा करना। उन्होंने पाठक मंच (आपकी कलम से) तथा हिंदी पत्रिकाओं का परिचय (लघुपत्रिका अभियान) देकर साहित्य की बड़ी सेवा की। इसलिए वे 23 वर्ष में 24 विशेषांक निकालते हैं और प्रेमचंद, निराला, मुक्तिबोध जैसे बड़े बड़े लेखकों पर निकालते हैं और मुझ जैसे छोटे लेखक पर निकाल कर यह बता देते हैं कि साहित्य में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, इसका फैसला उसका साहित्य और उसकी मौलिकता तथा संवेदनात्मक ज्ञान के विकास की क्षमता तय करती है। वे नये विषयों पर विशेषांक निकालते हैं और अभी उन्होंने पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकारों पर विशेषांक निकाला है और इसमें मुझे भी शामिल कर लिया है और मेरे बारे में संपादकीय में जो लिखा है, उसे अपनी तारीफ के लिए नहीं उनके मनोभाव के लिए दे रहा हूं कि वे खुद कितने लोगों को आगे बढ़ा रहे हैं और पत्रिका अपने लिए नहीं, दूसरों को मंच देने के लिए निकाल रहे हैं, जबकि हिंदी में काफी पत्रिकाएं संपादक केंद्रित होती हैं। तिवारी जी लिखते हैं, '83 वर्षीय कमल किशोर गोयनका ने केंद्रीय हिंदी संस्थान में रहते हुए उसे नया आयाम दिया व आजकल लेखन में सक्रियता के साथ-साथ दूसरों की भलाई करने व प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।' तिवारी जी तो खुद ही 23 वर्षों से सबको साथ लेकर चल रहे हैं, और उनका महत्व मुझसे ज्यादा इसलिए है कि मेरे पास सरकार के साधन थे जबकि तिवारी जी कबीर के वंशज हैं जो अपने पास का सब कुछ बांटते जा रहे हैं। मेरा अनुभव है, यदि आपके पास सरकार का साथ है और आप कुछ ईमानदारी से कुछ करना चाहते हैं तो बाधाओं के बावजूद आप कुछ न कुछ कर सकते हैं। मेरे कार्यकाल (सितंबर, 2014 से फरवरी, 2019) में हिंदी की 8 पत्रिकाएं निकलीं, हिंदी की 50 पत्रिकाओं को 50 हजार रुपये वार्षिक अनुदान दिया गया, लगभग 90 कर्मचारियों की तनख्वाह में 350/- की बढ़ोतरी की, शिलांग तथा हैदराबाद में भव्य भवन बनवाया, आगरा में सभागार बनवाया तथा छात्रावासों तथा मुख्य भवन का नवीनीकरण हुआ और 14 पुरस्कारों को 26 तथा एक लाख के पुरस्कार को पांच लाख का कराया तथा हिंदी के दलित लेखकों-जयप्रकाश करदम, श्यौराज सिंह तथा रत्नकुमार सांभरिया को पुरस्कृत किया, हिंदी विश्वकोश की योजना को जीवित किया और 3 खंड प्रकाशित हुए तथा हिंदी तथा बोलियों के शब्दकोश तैयार हुए। ये कार्य निश्चय ही उपलब्धि है, परंतु केंद्रीय मंत्री तथा अधिकारियों के सहयोग के बिना संभव न था। मैं दो काम न करवा सका- मुख्य भवन में लिफ्ट तथा सोलर इनर्जी प्लांट, पर जीवन में सब कुछ तो नहीं होता।

अरुण तिवारी का काम बहुत बड़ा है। साहित्य की चिंता है, साहित्यिक पत्रकारिता की चिंता है, लघु पत्रिकाओं की चिंता है, समसामयिक समस्याओं की चिंता है और वृद्धों की चिंता है और सब हल साहित्य से करना है। यह असल भारतीयता है, सर्वत्र भारत है पर मैं कहीं नहीं हूं। यदि 'प्रेरणा' के 51 अंकों के संपादकीयों को देखा जाये तो उनकी समाज और साहित्य के प्रति चिंता और व्याकुलता देखी जा सकती है। यही वह अंश है जहां संपादक अर्थात् अरुण तिवारी से आपकी भेंट ही नहीं मुठभेड़ होती है और आप उनकी चिंतन-दिशा से रूबरू होते हैं और तब आप उनके भारतीय रूप से मुलाकात करते हैं। मैं चाहता हूं, इन संपादकियों का संकलन प्रकाशित होना चाहिए, क्योंकि ये लगभग 25 वर्ष के साहित्यिक परिदृश्य को घेरे हैं जो कई उथल-पुथल से घिरा है और इसे एक लेखक की नजर से देखना महत्वपूर्ण है। (गोयनका जी की प्रेरणा से इन संपादकीयों को संकलित कर पुस्तक 'अपनी बात' का प्रकाशन हुआ है जो शायद उन तक नहीं पहुंच पाई, खेद है, पुस्तक चर्चा में भी है)

अंत में, अरुण तिवारी जी की एक पुस्तक 'सृजन का समकालीन परिदृश्य' पर लिखी अपनी टिप्पणी को यहां देने से पहले मैं इतना और कहना चाहता हूं कि तिवारी जी से मेरी एक या दो बार ही मुलाकात हुई है, पर अपनत्व में गहराई और ईमानदारी का अनुभव हुआ, उनकी शालीनता, उनकी विनम्रता, निश्च्छलता तथा उनकी सहजता ने बहुत प्रभावित किया और वे बहुत ही सीधे सरल व्यक्ति लगे, जो वे हैं। वे मेरे मित्र हैं और साहित्य परिवार के सदस्य हैं, यह सोचकर ही मुझे सुख की अनुभूति होती है। मेरी कामना है, वे जीवन का चौथा चरण 75-100 भी इसी प्रकार आनंद के साथ तथा साहित्य और देश की सेवा करते हुए व्यतीत करें और उसके बाद स्वस्थ जीवन जीयें।

सृजन का समकालीन परिदृश्य - श्री अरुण तिवारी की अभी प्रकाशित पुस्तक 'सृजन का समकालीन परिदृश्य' मेरे सामने है। यह समकालीन पांच लेखकों से लिए गये साक्षात्कारों का संकलन है। ये लेखक हैं-धनंजय वर्मा, कमलेश्वर, नरेश मेहता, राजेश जोशी और कमला प्रसाद। साक्षात्कारकर्ता के अनुसार यह नितांत अनौपचारिक रूप से हुई बातचीत है जिसके लिए पूर्व में कोई तैयारी नहीं की गई, लेकिन इन लेखकों के रचना संसार को जाने बिना ऐसे विद्वतापूर्ण साक्षात्कार नहीं लिए जा सकते। अत: अरुण तिवारी जी ने चाहे इंटरव्यू की तैयारी न की हो, पर वे इन लेखकों की साहित्य यात्रा तथा

वैचारिक प्रतिबद्धताओं एवं सरोकारों से पूर्णत: अवगत रहे हैं। मेरा निजी अनुभव है कि लेखकों से इंटरव्यू चाहे औपचारिक हों या अनौपचारिक, लेखक के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को जाने/ समझे बिना आप इतने गंभीर सवाल नहीं कर सकते। कोई भी इंटरव्यू लेने वाला जब किसी लेखक से उसके जीवन तथा सृजन के अनुभवों को जानना चाहता है तो उसके मन में उसकी एक झांकी होती ही है, अन्यथा न तो तीखे सवाल हो सकते हैं और न उनके सटीक उत्तर ही।

इस ग्रंथ में पांचों लेखक प्रतिष्ठित हैं, तथा अपनी पहचान रखते हैं। ये सभी प्रगतिशील लेखक संघ के सदस्य रहे हैं, ? यद्यपि इनमें से कुछ ने मोह भंग होने के बाद 'प्रगतिशील लेखक संघ' से स्वयं को अलग कर लिया था। सबसे पहले धनंजय वर्मा से लिया साक्षात्कार है और बहुत ही साफगोई से सवाल-जवाब हुए हैं। वे मानते हैं कि वे आज भी मार्क्सवादी हैं, लेकिन उन्होंने माना कि उनका 'प्रगतिशील लेखक संघ' से मोहभंग हुआ, क्योंकि वहां लेखन, लेखन की प्रतिष्ठा या लेखन की इज्जत, उसका मूल्य और लेखक के व्यक्तित्व का सम्मान दोयम दर्जे का है और अन्य बातें महत्वपूर्ण हैं। यह मेरी दुनिया नहीं है, यह अपना संसार नहीं है। धनंजय वर्मा ने 35 सवालों के जवाब में कहानी, आलोचना, आलोचक, प्रगतिशील लेखक संघ, पत्रिका, रचनाकार, समकालीन लेखन आदि पर बड़ी सटीक बातें कही हैं। कमलेश्वर से 51 सवाल किए गये हैं और वे नयी कहानी, वैचारिक प्रतिबद्धता, आलोचना, प्रगतिशील लेखक संघ, दूरदर्शन, फिल्म, पत्रिका संपादन, समूचे साहित्यिक परिदृश्य पर अपने विचार प्रकट करते हैं। वे भी कहते हैं कि प्रगतिशील लेखक संघ में पार्टी लेखन, समर्थन तथा प्रतिबद्धता की बात ज्यादा होती थी। कमलेश्वर ने कभी पुरस्कार नहीं लिया, क्योंकि उनका मत था कि इससे उनके लेखन की गरिमा कम होती है। नरेश मेहता से अरुण तिवारी के संयोजन में धनंजय वर्मा तथा ओमप्रकाश मेहरा बात करते हैं। इसमें सवाल तो काफी लंबे हैं पर नरेश मेहता के उत्तर प्राय: बहुत कम शब्दों में दिए गये हैं। नरेश मेहता के कुछ उत्तर दार्शनीय हैं- कम्युनिस्टों ने जयशंकर प्रसाद को गलत प्रचारित किया। मुक्तिबोध ने प्रसाद को डिफेंड किया, लेकिन कम्युनिस्टों की विशेषता है कि तुम दोस्त जिसके हो, उसका दुश्मन आस्मां कर्मों हो ? नामवर सिंह के बारे में नरेश मेहता कहते हैं, 'नामवर सिंह से बड़ा घटिया आलोचक शायद ही कोई हुआ हो और निर्मल वर्मा कोई बड़े कहानीकार हैं ?, दो कौड़ी के हैं।' वे साहित्य और राजनीति में अंतर करते हैं और कहते हैं कि राजनीति सत्यता को बदलने की बात कहती हैं और साहित्य दुनिया को बदलना चाहता है।

राजेश जोशी और कमला प्रसाद दोनों ही प्रतिबद्ध मार्क्सवादी हैं और उनके उत्तरों में मार्क्सवादी चिंतन छाया रहता है। राजेश जोशी से लगभग 80 सवाल किए गये हैं और समकालीन साहित्य, रचना संसार,लेखक संगठन, प्रगतिशील लेखक संघ तथा उससे मोहभंग होने वाले लेखक,जलेस आदि, दलित साहित्य, मीडिया, मध्यवर्ग, पत्रिका आदि पर विस्तार से अपना मत प्रकट करते हैं। कमला प्रसाद भी वामपंथी हैं और वे आलोचकों में केवल नामवर सिंह, मैनेजर पांडेय, विश्वनाथ त्रिपाठी, खगेन्द्र ठाकुर, परमानंद श्रीवास्तव, नंदकिशोर नवल, धनंजय वर्मा, शंभूनाथ तथा रविभूषण का उल्लेख करके अपना पार्टी धर्म निभाते हैं। जोशी की तरह ये भी मार्क्सवादियों में परस्पर विरोध तथा कई टुकड़ों में बांटने की बात को स्वीकार करते हैं। ये कहते हैं कि वाम बचा है, लेकिन ये सत्य को नहीं देखते और साहित्य में मनुष्यता को खोजते हैं, परन्तु यह नहीं बताते कि इनकी मनुष्यता तो हिंसक क्रांति से स्थापित होनी है। ऐसी आहत मनुष्यता को मनुष्यता कैसे कहा जा सकता है।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के समकालीन परिदृश्य से पांच लेखकों के जीवन, अंतर्मन, रचना संसार तथा सर्जनात्मकता चिंताएं एवं सरोकारों से हमारा परिचय कराकर हमारे ज्ञान के परिदृश्य को विस्तृत किया है और लेखकों की आत्म स्वीकृतियों से हम उनके अनेक अज्ञात तथ्यों की जानकारी ले पाते हैं। अरुण तिवारी का यह आयोजन एक प्रतिष्ठित पत्रिका के संपादक तथा साहित्य जिज्ञासु होने के कारण बहुत ही विश्वसनीय एवं सार्थक बन जाता है। अरुण तिवारी बहुत ही प्रतिष्ठित पत्रिका 'प्रेरणा' के संपादक हैं और साहित्य के प्रति, किसी वाद के प्रति नहीं, प्रतिबद्ध हैं और 23 वर्षों के नि:स्वार्थ भाव से पत्रिका निकाल रहे हैं। मेरे विचार में वे साहित्यिक पत्रकारिता में सर्वाधिक तटस्थ तथा समर्पित संपादक हैं और उनकी यह साक्षात्कार की पुस्तक भी इसका ज्वलंत प्रमाण है।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार तथा पूर्व उपाध्यक्ष केन्द्रीय हिंदी संस्थान हैं।
ए-98, अशोक विहार, फेज़ - 1, दिल्ली -110052
मो.: 09811052469

भरपूर ज़िन्दगी का जीवंत शाहनामा

मुकेश वर्मा

श्री अरुण तिवारी के व्यक्तित्व और कृतित्व को अलग- अलग कर नहीं आँका जा सकता है। यह अनोखी विशेषता है जो बहुत कम लोगों में और उनमें भी ख़ास तौर पर पाई जाती होगी क्योंकि मैंने अपनी ज़िन्दगी में यह कमाल सिर्फऔर एकमात्र अरुण जी में देखा कि उनके व्यक्तित्व में ही उनके कृतित्व का आभामंडल है और उनके कृतित्व की खुशबू उनके प्रियकर व्यक्तित्व में बखूबी झलकती है। एक खूबसूरत सुदर्शन शख़्स के रूप में मुझे उनका परिचय मिला जिसमें चमकता-सा गौर वर्ण, चेहरे पर आत्मविश्वास, चाल में आभिजात्य और होठों पर निश्छल उल्लास, पहली नज़र में प्रभावित करता है लेकिन इन सब से कुछ अलग और विशेष हैं उनकी आँखें जिनमें कविता-सी गहराई और गहन सम्वेदनशीलता का तरल आकार झिलमिलाता है जो एक निश्चिंत आश्वासन प्रदान करती है कि उन पर आँखें मूंदकर भरोसा किया जा सकता है। निदा फ़ाज़ली ने अपनी एक मशहूर ग़ज़ल में कहा है कि ''हर आदमी में होते हैं, दस-बीस आदमी, जिसको को भी देखना हो, कई बार देखना।'' एक बार देखने से समझ में आने वाले नहीं हैं अरुण जी, उनको कई बार और बार-बार देखना ज़रूरी है क्योंकि वे इस जन-समुद्र में उस हिमखण्ड की तरह हैं जो देखने पर सिर्फ एक चौथाई नज़र आता है और तीन चौथाई गहरे अतल जल में ओझल रहता है।

मूल रूप से अंतर्मुखी होने के कारण वे अपने बारे में बहुत कम बात करने में यक़ीन रखते हैं। आज जब यह समय और जमाना अधिक से अधिक आत्म-विज्ञापन करने और अपने आप को साबुन, चाय जैसी किसी कमोडिटी की तरह प्रचारित करने के लिए बहुविध मारकेटिंग की रणनीतियों के जाल-जंजाल-संजाल में, भले लोग गले तक डूबे रहते हैं, अरुण तिवारी ऐसी शख्सियत हैं जो इस कारोबार से कोसों दूर रहते हैं। वे साहित्य और सामाजिक कार्यो के लगभग हर कार्यक्रम में बिना किसी ताम-झाम और अहंकार के मौजूद होते हैं लेकिन उन्हें मंच पर माननीय अतिथि या अध्यक्ष पद पर विराजमान शायद ही कभी देखा गया हो, जबकि हमेशा बड़े पदों पर आसीन महत्वपूर्ण अधिकारी के तौर पर कार्य करते रहने के अलावा 'प्रेरणा' जैसी लोकप्रिय पत्रिका के सम्पादक तथा चर्चित प्रकाशन-समूह के स्वामी होने से उन्हें अपने यश और कीर्ति के आत्म-विस्तार के अनेकानेक अवसर सार्वजनिक जीवन में सहज ही उपलब्ध होते होंगे लेकिन उनकी निगाह इस तरफ कभी गई ही नहीं। हमेशा अपने काम में चुपचाप एकचित्त होकर लगे हुए उन्हें देखा गया है। कर्म के प्रति इस तरह का निष्काम भाव और निर्लिप्त रवैया दुनियादारी से भरी इस दुनिया में बहुत मुश्किल से कहीं कभी-कभार दिख जाए तो बड़ी बात है।

लगभग पच्चीस वर्षों से निरन्तर प्रकाशित 'प्रेरणा' के अनेक ऐसे अंक निकाले जो साहित्यिक और सामाजिक दृष्टि से रोचक, पठनीय और संग्रहणीय हैं जिनमें बेहद महत्वपूर्ण और ज्ञान-वर्धक जानकारी दी गई, ऐसे योग्य लेखकों की रचनाओं को भी छापा जो या तो नये-नवोदित हैं या जिन्हें आज की दबंग पत्रिकाओं ने हाशिए पर फेंक रखा है। सृजन के इस नि:स्वार्थ यज्ञ को वे सदा अपनी सद्भावनाओं औऱ सदिच्छाओं से संचालित करते रहे और बदले में कभी किसी से कोई प्रतिदान, उपकार, अहसान नहीं चाहा और ना ही जमाने से कोई शिकायत या तकलीफ बयान की। यह बड़प्पन और अन्दाज़े-ज़िन्दगी उसी तरह है जैसे एक मशहूर शेर में कहा गया है कि हजारों साल नरगिस जब अपनी बेनूरी पर रोती है तब कहीं जाकर चमन में कोई दीदावर या देखनेवाला पैदा होता है। हम आज ऐसा करिश्मा देख पा रहे हैं, यह हमारे ही बड़े भाग हैं।

अरुण जी ने अपनी जिस जीवन-शैली को अख्तियार किया, उसमें साहित्य और कलाओं के प्रति अपने अप्रतिम प्रेम को एक दृढ़ संकल्प के रूप में केन्द्र में रखा और उसको अपूर्व शक्ति से संधारित किया। इस ध्येय की पूर्ति के लिए बिना किसी मत-मतांतर, सम्प्रदाय, संघ-संस्थान की शरण में जाए, बिना किसी ग्रुप, गुट और गिरोह की राजनीति में खुद को गिरवी रखे हुए और बिना किसी प्रलोभन और संरक्षण की आस किए, अपनी वैचारिकी के आयामों को 'प्रेरणा' के माध्यम से कार्यपालक विस्तार दिया। जिस उदात्त विचार और भावना से उन्होंने 'प्रेरणा' पत्रिका का सूत्रपात किया, उसके आधार में यही नीति निर्धारित की कि पत्रिका कभी किन्हीं संकीर्ण वैचारिक वैमनस्य और दलगत द्वेष-भाव से प्रभावित ना रहे

और साहित्यिक पत्रकारिता में खुद को एक मानक के रूप में स्थापित करने के लिए सतत् प्रयत्नशील हो। यही कारण है कि 'प्रेरणा' कभी भी किसी गुटविशेष की राजनीति की प्रवक्ता नहीं बनी, ना कभी किसी मठाधीश की थोथी महिमा का गायन-वादन किया, ना किसी ख़ास साहित्यिक पंथ का दुमछल्ला बनने के लिए अपने पाठकों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया और ना ही पत्रिका को किन्हीं सनसनीख़ेज़ प्रसंगों में घसीटे जाने का मौका दिया बल्कि 'प्रेरणा' में उच्च कोटि के साहित्यिक और सामाजिक विमर्शों पर खुली चर्चा के अवसर उपलब्ध कराये, हर प्रकार के अकादमिक विचारों और विषयों को बिना किसी भेद-भाव, पूर्वाग्रह और लाग-लपेट के, अपने सम्पादकीय संतुलन के साथ प्रकाशित किये जाने की व्यवस्था की और अपने पाठकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित की। अरुण जी ने ना कभी शासकीय या बड़े संस्थानों के विज्ञापनों या आर्थिक लाभों अथवा सुविधाओं की लालसा में अपने नीति-नियमों को परे रखा और ना ही ऐसी किन्हीं ताकतों के सामने घुटने टेके। इसका यह नतीजा ज़रूर निकला कि पत्रिका लगातार विभिन्न आर्थिक अभावों और अनावश्यक संकटों से जूझती रही और कभी किसी रंग-बिरंगे मनोहारी कलेवर में चमकीली पत्रिका के रूप में प्रस्तुत नहीं हो सकी लेकिन अरुण तिवारी के सच का सीधा-सादा सपना सदा साकार करती रही। उन्होंने अपने पाठकों की सुरुचि और संस्कृति-सम्पन्नता की अभिवृद्धि के विकास और विस्तार पर हमेशा ज़ोर दिया और इसी ध्येय से तमाम लेखकों और रचनाकारों से यही स्थायी अनुरोध तथा आग्रह किया कि 'प्रेरणा' अपने उद्देश्यों की भावनाओं के अनुरूप सभी स्तरीय रचनाओं का स्वागत करती है लेकिन रचनाओं की बुनियादी धारणाओं में सामाजिक सरोकारों की उपस्थिति को आवश्यक रूप से बेहद ज़रूरी मानती है और ऐसे लेखकों को वरीयता तथा महत्ता से छापना अपना सम्मान समझती है।

इसके साथ ही, अरुण जी ने अपने लम्बे सम्पादन के दौरान सम्काल में चल रहे महत्वपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन को नज़रअंदाज नहीं किया, भले ही वे किसी भी प्रकाशन-गृहों से छपकर आई हों। पत्रिका के प्रत्येक अंक में सद्य-प्रकाशित और चर्चित पुस्तकों की समीक्षाओं को अधिक से अधिक जगह दी। भारतीय भाषाओं में संभवत: 'प्रेरणा' ऐसी पहली नियमित पत्रिका है जिसमें किताबों की समीक्षाओं के लिए इतने ज़्यादा पृष्ठ सुरक्षित रखे जाते हैं। पाठकों और लेखकों के बीच पुस्तकों का यह रचनात्मक पुल बनाना 'प्रेरणा' के माध्यम से अरुण तिवारी की निर्मल प्रतिबद्धता को गंभीरता से रेखांकित करता है।

इसी प्रकार उन्होंने पत्रिका में 'आपकी कलम से' के विशिष्ट स्तंभ को स्थान दिया और उसमें पाठकों की प्रतिक्रियाओं को शामिल कर उन्हें विशेष महत्व देकर प्रस्तुत करने की रिवायत डाली। इस प्रक्रिया में वे केवल उन्हीं प्रतिक्रियाओं को नहीं छापते हैं जो पत्रिका की प्रशंसा से भरपूर है जैसा कि आम तौर पर स्वनामधन्य गर्वित-दर्पित सम्पादकों का स्थायी चलन है, बल्कि अरुण जी उन टिप्पणियों को भी निस्संकोच भाव से प्रमुखता से छापते हैं जो निर्मम आलोचना और कटाक्षों से लबालब होती हैं। पत्रिका के सम्पादन में रचनाकारों के अलावा पाठकों की ऐसी सकारात्मक भागीदारी को ना केवल समुचित स्थान देना बल्कि बढ़ावा देना उस सृजनात्मकता का बेहतरीन प्रतीक है जो पैसे या यश कमाने के लिए नहीं अपितु कुछ श्रेष्ठ मूल्यों के संधारण के लिए पत्रिका के प्रकाशन के गुरुतर कार्य के निष्पादन में निहित है।

'प्रेरणा' में 'लघु पत्रिका अभियान' के नियमित स्तंभ के अंतर्गत देश में लघु पत्रिकाओं की नाजुक हालत और उनके संवर्धन की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित करने का समांतर आंदोलन चलाया। उन्होंने 'चिंतन' कॉलम में विभिन्न विषयों पर श्रेष्ठ रचनाकारों की रचनात्मक भागीदारी तो सुनिश्चित की ही, साथ ही, अपने सम्पादकीय 'अपनी बात' से अरुण जी ने निरन्तर समसामयिक मुद्दों पर चर्चा चलाई और दृढ़तापूर्वक अपने विचार रखे जो उनके प्रगतिशील चिंतन और वर्तमान की जर्जर व्यवस्था में तीव्र गति के परिवर्तनों की आकांक्षा और अभिलाषा को प्रतिबिम्बित करते हैं। ग्राम-पंचायत स्तर पर छोटे वाचनालयों की स्थापना को प्रस्तावित किया गया जिस पर शासन स्तर से भी विचार हुआ फलरूवरूप अनुदान दिये जाने की व्यवस्था की गई। इसी तरह निर्वाचन-पद्धति में मतपत्र में 'नोटा' को भी शामिल करने का विचार इसी चिंतन-श्रंखला से आया जो कुछ बदलाव के साथ क्रियान्वित हुआ। ऐसे अनेक सुझाव समय-समय पर उनके सम्पादकीयों में शिक्षा, सहकारिता, करों के निर्धारण, कुटीर उद्योगों के संरक्षण, पर्यावरण, केंसर रोग की रोक-थाम, वरिष्ठ नागरिकों और पेंशनयाता सेवकों की कठनाईयों आदि पर दिए गए जिनमें से कुछ पर यथोचित कार्यवाही हुई, कुछ आधे-अधूरे छूट गए और कुछ एक कान से निकलकर दूसरे कान से निकाल दिए गए। लेकिन इन सब दृष्टांतों से अरुण जी की चेतना का विस्तार और अपूर्व कर्मशक्ति का अंदाज़ भली-भांति लगता है।

यूँ तो अरुण तिवारी ने 'प्रेरणा' में आधुनिक समय में कविता और कहानी के बदलते चेहरे और स्वरूप को लेकर कई विचारोत्तेजक बहसें चलाईं जिससे पत्रिका के बुनियादी आधार और प्रयोजन स्पष्ट हुए लेकिन मैं उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि हिन्दी भाषा के साहित्य में पत्रकारिता को समुचित और सम्मानीय स्थान दिलाये

जाने के प्रभावशाली अभियान की शुरूआत और इस हेतु किए गए विशिष्ट कार्यों को आरंभ करने की पहल मानता हूँ। क्या विडम्बना रही कि जिस साहित्यिक पत्रकारिता से देश के स्वतंत्रता आंदोलन को प्राण-शक्ति मिली और अख़बारी पत्रकारिता के द्वार खुले कि आज प्रिन्ट मीडिया के तौर पर अख़बार सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम बनकर अपनी सत्ता जमाए हुए हैं, वही साहित्यिक पत्रकारिता की पूछ-परख आज सबसे कम है और इस क्षेत्र में काम करने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। अरुण जी ने इस काम को आगे बढ़ाया। उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता के महत्व, उपयोगिता और औचित्य तथा तत्संबंधी सवालों को लेकर 'प्रेरणा' का उल्लेखनीय विशेषांक निकाला जिसमें देश के उत्कृष्ट विद्वानों, विषय-विशेषज्ञों और लेखकों के विचारों को संग्रहीत कर इस मृतप्राय मुद्दे को जीवंत कर विमर्श के केन्द्र में रखने का सफल और सक्षम प्रयास किया। उनकी इस कार्य-चेतना से ही बड़े पैमाने पर प्रबुद्धजन और आम-जन का ध्यान इस ओर गया तथा अब यह एक महत्वपूर्ण विमर्श बन चुका है।

इसी क्रम में उन दो महत्वपूर्ण कामों की ओर ध्यान दिलाया जाना चाहिए जो अरुण जी 'प्रेरणा' के प्रकाशन के अलावा मनोयोग से निरन्तर करते आ रहे हैं। एक तो साहित्यिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक विषयों पर ई-पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण जैसे जटिल संजाल का व्यवस्थापन जो आधुनिक समय की माँग और तकाज़ों को देखते हुए साहित्यिक पर्यावरण के निर्माण और उसके फैलाव के संयोजन के लिए बहुत ही ज़रूरी है। दूसरे, समाज के वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' का सम्पादन जो अपनी तरह से देश का एकमात्र ऐसा अख़बार है जो उन लोगों के लिए नियोजित किया गया है जिन्हें बढ़ती आयु और घटती उपयोगिता के दुनियावी मानदण्डों के मुताबिक हाशिए में डाल दिया गया है। यह एक बड़ी सामाजिक प्रवंचना है कि जिन्होंने जीवन भर संघर्ष कर अगली पीढ़ियों को आत्मनिर्भर बनाया और अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, अब वे सांसारिक जीवन में उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं जबकि आज भी उनकी अपनी चाहतें हैं, उम्मीदें और सपने हैं। वे मरे नहीं हैं, आज भी अपनी तौर पर समाज के लिए उपयोगी और फलदायी हैं। इस व्यथा और पीड़ा को अरुण जी ने बड़ी संजीदगी से महसूस किया और उन लोगों के पक्ष-समर्थन में जो रचनात्मक अभियान प्रारंभ किया उसके पीछे किसी तरह का विरोध या प्रतिशोध का प्रदर्शन नहीं बल्कि समाज के बुजुर्गों को उनके देय सम्मान की सुनिश्चितता स्थापित करने के लिए अपार सम्भावनाओं के द्वार खोलना है ताकि वे देख और दिखा सकें, समझ और समझा सकें कि समाज में उनकी सामयिक उपयोगिता को समर्थ और सशक्त माना जाना आज भी एक सुसंगत तथ्य है जिसे बरकाया नहीं जा सकता। इस उपक्रम के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपयोगी ज्ञानवर्धक जानकारी, समाचार, साहित्यिक सामग्री आदि दी जाती है ताकि उनमें जागरूकता और जीवन में सक्रिय भागीदारी का आत्मविश्वास दृढ़ हो सके।

इसके साथ, इस समय की आवश्यकताओं के मद्दे-नज़र बच्चों के समुचित शिक्षण की ओर ध्यान देते हुए अंग्रेजी पत्रिका 'इंटेलीजेली' का प्रकाशन भी अरुण जी के कृतित्व की सूची में अहम दर्जा पाता है जिसके द्वारा बच्चों को ज्ञान-विज्ञान, खेलकूद, विश्व की सारगर्भित जानकारी, पारिवारिकता, संस्कार और अन्य सांसारिक ज्ञान सरल-सहज भाषा और आत्मीय शैली में उपलब्ध कराया जाता है। मात्र किताबों का पठन-पाठन नहीं बल्कि बच्चों को हमारी दुनिया का अच्छा और सच्चा व्यावहारिक ज्ञान मिलना ज़रूरी है। प्रशिक्षण की इस प्रविधि की प्रशंसा प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के अलावा अनेक गणमान्य विद्वानों और कलाकारों ने की। भारत सरकार ने पत्रिका के प्रयासों की सराहना करते हुए उसको अपने कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण स्थान दिया तथा दी गई सामग्री के विस्तृत प्रचार-प्रसार हेतु आवश्यक व्यवस्था निर्धारित की। 'इंटेलीजेली' का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि अरुण जी ने सिर्फ साहित्य या अन्य सामाजिक विमर्शों पर ही रचनात्मक कार्य नहीं किए, उन्होंने दूरदर्शी सोच और प्रगतिशील सम्वेदनशीलता के साथ आगामी पीढ़ियों के भविष्य और उनके बेहतर रखरखाव के लिए ऐसे कदम उठाये जो उन्हें एक कुशल और योग्य नागरिक बनने में अधिक से अधिक मदद दे सके।

इस प्रसंग में बातें तो बहुत हैं। अरुण जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक पूरी किताब लिखी जा सकती है लेकिन फिलहाल उनके अमृत-वर्ष के मांगलिक अवसर पर यही शुभकामनाएँ देने का मन है कि वे शतायु हों। भारतीय संस्कृति और जीवन-दर्शन के मुताबिक उनके अभी और 25 वर्ष का योग है। उसके बाद उन्हें हम सब मित्रों और शुभचिंतकों की उम्र लगती रहे। सदा स्वस्थ, सुखी और सुरक्षित रहें। यह दुनिया आज जिन हालात से गुजर रही है, अरुण तिवारी जैसी सुगन्धित शख्सियत का हमारे बीच होना इस बात की अश्वस्ति है कि चाहे दुनिया कैसी भी हो, उसे जीने लायक बनाया जा सकता है। उन्हें मेरी सादर अशेष शुभकामनाएँ।

- लेखक वरिष्ठ कथाकार तथा
समावर्तन के प्रधान संपादक एवं वनमाली सृजनपीठ भोपाल के अध्यक्ष हैं।
एफ-1, सुरेन्द्र गार्डन, अहमदपुर, होशंगाबाद रोड, भोपाल
मो. 9425014166

■

साक्षात्कार

वरिष्ठ साहित्यकार, संपादक अरुण तिवारी से डॉ. लता अग्रवाल की वार्ता

हमारी संस्कृति की जड़ें काफी गहरी हैं

वरिष्ठतम साहित्यकार श्री अरुण तिवारी जी एवं उनके द्वारा सम्पादित समृध्द पत्रिका 'प्रेरणा' आज हिंदी जगत में एक जाना पहचाना नाम है। साहित्य की विभिन्न विधाओं के साथ-साथ विभिन्न आयामों में आपकी सक्रिय भूमिका सराहनीय है। अरुण जी एक संवेदनशील, सहज और जमीन से जुड़े बड़े ही सरल इन्सान है। यही वजह है कि जो भी उनके संपर्क में आता हैं उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। साहित्य के प्रति उनकी निष्ठा ही है जो उम्र के इस पड़ाव में तमाम संघर्षों के रहते उन्हें सक्रिय रखे हुए है। कई पुरस्कारों से पुरस्कृत एवं कई देशों की यात्रा करने वाले अरुण जी बेहद विनम्र हैं। कहते हैं जैसा व्यक्तित्व वैसा कृतित्व, तो हमें उनके साहित्य में भी वही झलक देखने को मिलती है। कहानी, कविता, आलेख, आलोचना और समीक्षा के साथ पत्रकारिता लेखन पर भी आपका समान अधिकार है।

ऐसे विनम्र, समाज के प्रति सेवा भावी, कर्मठ व्यक्तित्व को थोड़ा और विस्तार से जानने की दिशा में मेरा छोटा सा प्रयास है आदरणीय अरुण तिवारी जी से उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को लेकर एक साक्षात्कार, जिसके कुछ अंश आपके समक्ष प्रस्तुत करती हूँ।

(4 जून 2021)

- **आप साहित्य समाज और लेखन तीनों से जुड़े हैं, इन तीनों के परस्पर सम्बन्ध को किस रूप में देखते हैं ?**

– कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है, जो कुछ भी समाज में घटित होता है, वह लेखनी के माध्यम से साहित्य का आकार ले लेता है। कहा जा सकता है कि ये सब एक दूसरे के पूरक हैं और जो लेखनी समाज के यथार्थ को लेकर होता है, यह पाठक को अधिक प्रभावित करता है क्योंकि वह कहीं न कहीं उस साहित्य में अपने आपको पाता है। समय, काल और परिस्थितियों के अनुसार समाज में यथेष्ट परिवर्तन होते रहते हैं और वह स्वाभाविक भी है परन्तु साहित्य शाश्वत होता है तभी तो वर्षों पहले लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य आज भी प्रासंगिक है और ऐसा लगता है कि उस समय की परिस्थितियों का स्वरूप भले ही बदला हो पर कमोबेश हालात अब भी वैसे ही हैं। धर्मवीर भारती का 'गुनाहों का देवता' आज भी सर्वश्रेष्ठ रोमांटिक उपन्यासों में गिना जाता है और आज भी चाव से पढ़ा जाता है, भले ही आज बाजारवाद और ग्लोबलाइजेशन समाज पर हावी है, पश्चिमी सभ्यता हमारे यहाँ की सभ्यता का अंग बन चुकी है। भले ही हुक अप संस्कृति हिस्सा बनती जा रही है पर जहाँ भी जब भी रोमांटिसज्म की बात आती है तो भावनात्मक रूप से 'गुनाहों का देवता' आज भी प्रासंगिक है। ऐसी कितनी कृतियाँ है जो वर्षों पूर्व लिखी गई जो समाज सापेक्ष थीं और उनमें दम था, समाज का असली चेहरा था। अत: समाज में ऊपरी तौर पर कितना भी परिवर्तन आया हो, मूलभूत संस्कार वही हैं।

- **नि:संदेह , साहित्य वही कालजयी होता है जो हर युग में प्रासंगिक लगे। आपके लेखन की उम्र काफी लम्बी है, तब और अब के साहित्य में क्या अंतर देखते हैं ?**

– देखिए, पूर्व में साहित्यकार समाज की समस्याओं के तह में जाकर लेखन करते थे, वे सुविधाजीवी नहीं थे, आम आदमी थे। उनकी समस्याएँ भी आम आदमी की समस्याओं से बहुत अधिक भिन्न नहीं थीं। वे लेखन को फैशन के तौर पर नहीं, मिशन के रूप में लेते थे। यदि किसी विषय विशेष के बारे में लिखना हो तो वहाँ रहकर अध्ययन करते थे। कमलादास जब वेश्याओं के बारे में लिख रहीं थीं तब वे उनके एरिया में जाकर महीनों रही थीं तब जा के उन्होंने उस विषय पर लिखा था। बाद में जब उन्होंने यह सब अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया और वे अपने गाँव गई तो लोगों ने उन पर पत्थर फेंके और गाँव में घुसने नहीं दिया। इसके पूर्व वे गम्भीर रूप से अस्वस्थ थीं और हॉस्पिटल में एडमिट थीं तथा उनके बचने की आशा नहीं के बराबर थी, तभी टाइम्स ऑफ इंडिया ने उनको एप्रोच किया और कहा कि ऐसा कुछ लिखें जो किसी को ज्ञात न हो और पाठकों को अचंभित कर दे। क्यों नहीं आप अपनी आत्मकथा के अनछुए प्रसंग लिखें जो तहलका मचा दें और आपको पाठकों का प्यार मिले तब उन्होंने अपनी आत्मकथा को धारावाहिक रूप में लिखना प्रारम्भ किया। जब उनके आर्टीकल पेपर में छपे तो पेपर की बिक्री में अत्यधिक उछाल आया और पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी उन्होंने प्रकाशित की। इसका आश्चर्यजनक प्रभाव ये हुआ कि कमलादास स्वस्थ हो गई।

कहने का तात्पर्य यह है कि पूर्व में लेखक समाज का अंग हुआ करता था इसलिए उसका लेखन प्रभावित करता था। आज का लेखक अपने वातानुकूलित रूम में या घर में बैठकर अपनी कल्पना से लिखता है, वह भले ही कथ्य, शिल्प, प्रवाह आदि के कारण पाठकों को प्रभावित कर ले पर वह अल्पकाल के लिए ही होता है। मेरा आशय यह नहीं है कि सभी लेखक ऐसा करते हैं परन्तु अधिकांश लेखक ऐसा कर रहे हैं।

एक और बुनियादी अंतर यह है कि पहले लेखक पूर्णतया लेखन पर निर्भर होता था और बहुत से लोगों के लिए तो आजीविका वही थी पर आज का अधिकांश लेखक नौकरीपेशा है, लेखन उसके लिए पार्टटाइम जैसा है इसलिए आज का अधिकांश साहित्य पाठकों को अधिक समय तक स्मरण में नहीं रहता। इसका आशय यह नहीं है कि आजकल बिल्कुल भी अच्छा साहित्य नहीं आ रहा है। हर काल में कुछ लेखक अच्छा लिखते रहे हैं और चर्चित भी हुए हैं। यहां सबके नाम गिनाना उचित नहीं होगा। आजकल भी कई लेखक बहुत अच्छा लिख रहे हैं और उनकी रचनाएं चर्चित और लोकप्रिय हो रही हैं।

- **आपने सोशल मीडिया की बात की, आज जो भी लेखन हो रहा है उसमें सोशल मीडिया की क्या भूमिका देखते हैं ?**

– सोशल मीडिया के माध्यम से भी नये लेखक सामने आ रहे हैं, उनमें भी प्रतिभा है। हालांकि यह भी एक पहलू है कि सोशल मीडिया से कुछ लेखक सेल्फ प्रोजेक्शन कर रहे हैं। बाजारवाद के इस समय में मार्केटिंग अनिवार्य अंग बनती जा रही है तो साहित्य अछूता क्यों रहें। बहरहाल तब और अब के साहित्य में अंतर परिभाषित करने के बजाय हर नये का स्वागत करें और आशा करें कि अच्छा और उससे अच्छा होगा। एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखें और भविष्य के प्रति आशान्वित रहें।

- **जी, जानना चाहेंगे कि आज के लेखक समाज से किस तरह के साहित्य की अपेक्षा रखते हैं ?**

इस बारे में मैं तो यह कहना चाहूंगा कि समाज आज के लेखन से क्या अपेक्षा करता है। इलेक्ट्रॉनिक, सोशलमीडिया, इंटरनेट के इस समय में जब पत्रकारिता के मूल्य ध्वस्त होते जा रहे हैं। समाज की लेखक से यही अपेक्षा हो सकती है कि सामाजिक समस्याएं, समाज की विसंगतियां, बढ़ती सामाजिक और आर्थिक असमानता, समाप्त होता जा रहा आपसी सद्भाव, जातिगत और आर्थिक वर्गभेद, मध्यम वर्ग का धीरे–धीरे समाप्त होते जाना आदि के बारे में लेखक सकारात्मक दिशा में प्रयास करें और जहां तक लेखक की समाज से अपेक्षा का प्रश्न है, वे भी यहीं चाहेंगे कि स्वस्थ समाज हो क्योंकि वह भी तो उसी समाज का एक अंग है। समाज की समस्याएं भी तो उसकी अपनी समस्याएं हो सकती हैं अत: लेखक और समाज को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता।

- **सहमत हूं, मूल्यों के लिए आपकी प्रतिबद्धता जाहिर है। प्रजातान्त्रिक भारत में मूल्यों की क्या स्थिति देखते हैं आप ?**

आज प्रजातांत्रिक भारत में मूल्यों का जितना ह्रास हो रहा है और जिस तेजी से हो रहा है, पहले हुआ हो ऐसा नहीं लगता है। हां ये भी सच है कि बाजारवाद, भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारवाद के कारण बहुत परिवर्तन हुआ है, सोच में भी और जीवनशैली में भी, मूल्यों के प्रतिमान बदले हैं पर क्या समाज का अधिकांश वर्ग इससे सहमत है तो शायद नहीं में इसका उत्तर होगा फिर भी चूंकि असहमत वर्ग इतना साधन सम्पन्न नहीं है तो न तो वह इन मूल्यों को आत्मसात करने की स्थिति में होता है और न ही खुलकर विरोध कर पाता है और यथास्थिति को स्वीकारते हुए जीने को विवश है। सभी तरह के

वर्गविभेद में वृद्धि हो रही है। सहिष्णुता जो हमारे देश की पहचान थी, धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है।

- **वाकई चिन्तन का विषय है। वर्तमान समाज से कुछ सवाल, एकल परिवार में बुजुर्गों की क्या स्थिति देखते हैं ?**

– बुजुर्गों की स्थिति एकल परिवार में ही नहीं, संयुक्त परिवारों में भी पहले की अपेक्षा परिवर्तित हुई है। हालांकि आजकल यदि कुछ अपवाद छोड दें तो संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है और अब तो एकल परिवार के स्थान पर भी न्यूक्लियर परिवार का चलन भी बढ रहा है। पति जॉब के सिलसिले में किसी अन्य शहर में और पत्नी किसी अन्य शहर में रहते हैं और महीनों मिल नहीं पाते हैं, शहर की दूरी समस्या बन जाती है। ऐसे समय में बुजुर्गों की स्थिति को सिर्फ एकल परिवार में नहीं समग्र रूप में देखना होगा। आजकल कैरियर बनाने के सिलसिले में बच्चे विदेशों में या उस शहर से बाहर रहने को न चाहते भी विवश हैं और बुजुर्ग अकेले रहते हैं। एकल परिवार में जहां पति-पत्नी दोनों वर्किंग है, बुजुर्ग घर में दिन भर अकेले रहते है और उन्हें समय काटना मुश्किल होता है। बुजुर्ग पति-पत्नी में से जहां एक ही बच जाता है, अकेलेपन और अवसाद से ग्रसित हो जाता है बच्चे चाहकर भी कुछ विशेष नहीं कर पाते क्योंकि उनकी जीवनशैली भी बदली है। बहरहाल इसका आकलन अलग अलग पारिवारिक स्थितियों के अनुसार ही किया जा सकता है। किसी भी स्थिति से बुजुर्गों को स्वयं धैर्य और साहस से निपटना होगा, अपने आपको क्रियाशील तथा सकारात्मक बनाए रखना होगा जिससे भी बहुत सी समस्याओं का निदान स्वयंमेव हो जाएगा।

- **सच कह रहे हैं, इन्सान को भी बहते पानी सा स्वभाव रखना चाहिए। युवा पीढ़ी को कोई सीख कि, वे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील बने ?**

– युवा पीढ़ी को बुजर्गों के प्रति संवेदनशील बनने के लिए यही सीख दी जा सकती है कि वे भी आगे चलकर बुजुर्ग होंगे और वे जैसा आज अपने बुजुर्गों के साथ करेंगे, उनके बच्चे भी यही सब देख सुनकर भविष्य में उनके साथ कर सकते हैं। इसलिए ये सदैव ध्यान रखें कि वे आज जो भी है, जिस स्थिति में हैं, उसमें बुजुर्गों का बहुत बड़ा योगदान है तो इस नाते भी उनका उनके प्रति कर्तव्य तो बनता है और यह भी सत्य है कि ये सब बहुत कुछ दिये गये संस्कारों से भी मिलता है। बुजुर्गों ने अपने बच्चों को जो संस्कार बचपन से दिये होंगे, वे ही आगे चलकर किसी न किसी रूप में सामने आएंगे इसलिए अपने बच्चों के पालन-पोषण में सिर्फ लाड़ प्यार और सुख सुविधाओं के अतिरिक्त अच्छे संस्कार देना आवश्यक है।

- **क्षमा चाहूंगी, बीच में हस्तक्षेप कर रही हूं, मेरा मानना है अधिकांश माता-पिता तो बच्चों को अच्छे संस्कार ही देते हैं मगर बाह्य वातावरण, कुछ हालात भी इसके लिए जिम्मेदार नहीं लगते ?**

– आपने बिल्कुल सही कहा है कि हर माता पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देना चाहते हैं और देने का भरसक प्रयास भी करते हैं पर कुछ परिस्थितियां ऐसी आ जाती हैं कि पर्याप्त प्रयास नही हो पाता जैसे यदि पति-पत्नी दोनों वर्किग हैं तो बच्चे पहले प्ले स्कूल में फिर मेड के भरोसे रहते हैं, माता पिता जब ऑफिस से आते हैं तो इतने थके रहते हैं कि बच्चों से औपचारिक बातें ही कर पाते हैं जबकि बच्चे उन्हें दिनभर की हर गतिविधियां बताना चाहते हैं और बच्चे जो सुकुन और शांति, लाड़ प्यार मां की गोद में पाना चाहते है उन्हें सदैव नही मिल पाता। इससे अलग हटकर एक स्थिति वहां भी निर्मित होती है जहां बच्चों के दादा-दादी साथ रहते है और उनके मां-पिता ऑफिस से आकर उनसे भी थौड़ी सी औपचारिक बातें कर पाते हैं और भी कई तरह के उदाहरण हैं जहां पति-पत्नी की आपस में नोंक-झोंक होती रहती है, वह भी बच्चों के मन मस्तिष्क में अच्छा प्रभाव नहीं डालते इस तरह के बहुत से उदाहरण हैं जहां माता-पिता चाहकर भी वो संस्कार नहीं दे पाते और बच्चों के मन और मस्तिष्क में बचपन से लेकर किशोरावस्था तक ये अंकित हो जाता है वही आगे चलकर उनके स्वभाव में परिलक्षित होने लगता है। यह विषय बहुत ही व्यापक और समसामयिक है जिस पर लंबे विचार विमर्श की आवश्यकता है। वैसे यह भी सही है कि बाह्य वातावरण भी बहुत जिम्मेवार है, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया ने बच्चों को अपनी उम्र के पूर्व ही परिपक्व बना दिया है और उन्हें इन प्लेटफार्म पर हर तरह की सामग्री आसानी से उपलब्ध है जो उनके मन मस्तिष्क पर प्रभाव ही नहीं डालती बल्कि उनकी मानसिकता में भी परिवर्तन ला देती है। कई देशों में इस तरह की सामग्री तो पूर्णतया प्रतिबंधित है। आजकल कम उम्र के बच्चों या किशोरावस्था के बच्चों में जो अपराधिक प्रवृत्तियां व उजड्डता देखने में आ रही है, वो सब इसी की देन कही जा सकती है।

- **हमारे जीवन और कर्म में किसी न किसी का प्रभाव निश्चित होता है। जानना चाहेंगे आपके व्यक्तित्व और कृतित्व ने किनसे प्रेरणा ग्रहण की ?**

– आपने जीवन और कर्म के प्रभाव का मेरे व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रेरणा ग्रहण के बारे में पूछा है। प्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक

माता मांटेसरी की थ्योरी की बात करें तो उनका कहना है कि बच्चे के व्यक्तित्व का विकास और प्रभाव उसकी उम्र के पांचवे वर्ष तक हो जाता है और उसके अवचेतन मन-मस्तिष्क में सुरक्षित हो जाता है। जो उम्र में वृद्धि होने के साथ-साथ प्रकट होने लगता है। यदि इस दृष्टि से देखें तो मेरे ऊपर सबसे अधिक प्रभाव मेरी बड़ी बहिन का रहा। पिताजी की पहली पत्नी की मृत्यु के बाद मेरी माँ से विवाह हुआ था। बड़ी बहन जिन्हें हम जिज्जी कहते थे, वे पहली मां से थीं। उनका उस समय के अनुसार बहुत छोटी उम्र में विवाह हो गया था पर छोटी होने के कारण गौना नहीं हुआ था, तभी जीजाजी का निधन हो गया। इस तरह वे बाल विधवा हो गईं। मां ने उन्हें अपने पास ही रखा। जिज्जी बहुत अध्ययनशील थीं, अनुशासन और सांसरिकता उन्हें पिता जी से मिली थी इसके साथ ही अध्यात्म और धर्म का उन्हें अच्छा ज्ञान था। वे अक्सर मुझे ये सब बचपन से ही बताया करती थीं जिसका प्रभाव आज भी मैं महसूस करता हूं और इन सब बातों का मेरा व्यक्तित्व बनाने में काफी योगदान रहा। जहां तक कृतित्व का प्रश्न है, मुझे बचपन से ही पढ़ने का शौक था। उस शौक को पड़ोस में रहने वाले चन्द्रदत्त चौबे जी जो उस समय जिला पुस्तकालय में लायब्रेरियन थे, पढ़ने के लिए दिशा दी और मैंने हायर सेकेण्डरी तक आते-आते जिला पुस्तकालय की अधिकांश पुस्तकें पढ़ ली थीं जिससे लिखने का शौक भी जागा और कॉलेज में पढ़ाई के समय से ही लिखने लगा। पिता जी के न रहने से बचपन से ही जीवन में इतने कटु अनुभव हुए थे वे सब लिखने में सहायक हुए तो कहानी से ही आरम्भ किया। बाद में चंद्रकांत देवताले जी के सम्पर्क में आया, उन्होंने भी प्रोत्साहित किया तथा समकालीन लेखकों की पुस्तकें पढ़ने को दीं, जिन पर साप्ताहिक गोष्ठियों में चर्चा होती थी। उनका प्रभाव भी मेरे व्यक्तित्व पर पड़ा। मेरी लिखी कहानियां पढ़ने के बाद मेरी एक कहानी उन्होंने उस समय की साहित्य की शीर्षस्थ पत्रिका 'लहर' में भेजने हेतु प्रेरित किया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब कहानी 'लहर' में प्रकाशित हो गई और स्वीकृति पत्र के साथ उस पर आई टिप्पणी ने मेरे लिखने के उत्साह को एक नई ऊर्जा दी। वह कहानी थी 'मुखौशे' जो उस समय अत्यधिक चर्चित हुई थी। उस समय के हिसाब से उस कहानी का विषय और कथ्य एकदम नया था जो पाठकों को चौंका गया, साथ ही कहानी के अंत में कहानी के नायक के कथन ने सबको झकझोर दिया और उस पहली कहानी से ही मेरी पहचान बनने लगी थी।

- **आपने अभी जिज्जी का जिक्र किया, सच 'बाल विधवा' शब्द एक अभिशाप की तरह रहा स्त्री जीवन में। आज स्त्री जाति में विकास के नाम पर काफी बदलाव हुए हैं। आप इस समय बदलाव को किस रूप में देखते हैं।**

– बिल्कुल सही है बाल विवाह और बाल विधवा समाज के बहुत बड़े अभिशाप थे पर यह बात लगभग 90 वर्ष पूर्व की बात है अब तो बाल विवाह होना बंद ही हो गये हैं, परिपक्व अवस्था में विवाह होने लगे हैं जिसके अपने लाभ और हानि भी हैं। वैसे स्त्री जाति में विकास की प्रक्रिया निरंतर चल रही है अब तो मिलिट्री में भी उन्हें स्वीकारा जाने लगा है, अन्य देशों में तो पहले भी थीं। राजनीति में तो गोल्डामेयर,मार्गरेट थैचर, इंदिरा गांधी, भंडार नायके, खालिदा जिया, से लेकर शेख हसीना तक सभी ने अपने आप को सिद्ध किया है और वे पुरुषों से अधिक अच्छी शासक सिद्ध हुई हैं। आज हर क्षेत्र में स्त्री की महत्ता स्वीकारी जाने लगी है और सिर्फ इसलिए नहीं कि वे स्त्री हैं बल्कि हर क्षेत्र में उन्होंने श्रेष्ठ कार्य किये हैं और जहां तक बदलाव की बात है वो तो निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है और इसे चलते रहना चाहिए। प्रेरणा के दो विशेषांक (जुलाई-दिसंबर 2010 एवं जनवरी-मार्च 2011) स्त्री की समग्रता को लेकर आये हैं।

- **जी, अमूमन एक विधा को साधते हैं तो दूसरी का सिरा हाथ से छूट जाता है। आप साहित्य की अनेक विधाओं में सक्रियता ही नहीं रखते अपितु, पत्रकारिता, सम्पादन आदि क्षेत्रों में भी सफल हस्ताक्षर हैं। कोई गुर नई पीढ़ी को भी बताइए।**

– ऐसे कई लेखक हैं जो कई विधाओं में लिखते हैं। इसके लिए यदि रचनाकार का अलग अलग विधाओं में अध्ययन अच्छा है और उसको गंभीरता से लेते हैं तो मेरे विचार से ये उतना मुश्किल भी नहीं है। हां, इतना अवश्य हो सकता है कि वो एक विधा में जितना अच्छा लिख सकता है, अन्य विधाओं में उतना अच्छा नहीं लिख पाते परन्तु कुछ भी लिखने के पूर्व गहन अध्ययन आवश्यक है। कई बार ऐसा होता है कि थोड़ा बहुत अध्ययन करने के पश्चात लिखना आरंभ कर देते हैं और यदि वह प्रकाशित हो गया तो अपने आपको पारंगत समझने लगते हैं और इसी से उनके लेखन में उतना प्रभाव नहीं आ पाता और अधिक समय तक चलता भी नहीं है इसलिये गहन अध्ययन और रचनाएं छपने की मात्रा में नहीं, बल्कि गुणवत्ता में विश्वास होना चाहिए।

- **बिल्कुल, आज छपास की सुविधा के रहते लेखन जिस मात्रा में हो रहा है, उसकी गुणवत्ता को लेकर**

क्या कहना चाहेंगे।

– छपास की ललक तो आरंभ से ही रचनाकारों में रही है और उसमें अच्छी बुरी सभी प्रकार की रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं पर टिक वही पाती हैं जिनमें गुणवत्ता हो। जैसा कि पहले मैंने कहा कि किसी भी रचनाकार को छपास की गिनती की तुलना में गुणवत्ता को महत्व देना चाहिए और आजकल भी बहुत अच्छी रचनाएं आ रही हैं। जो लोग सिर्फ गिनती में विश्वास रखते हैं वे शीघ्र विलुप्त भी हो जाते हैं।

- **वर्तमान में लेखन जितना आसान है, प्रकाशन उतना मुश्किल कार्य है, 23 वर्षों से सतत 'प्रेरणा' पत्रिका का प्रकाशन आप कर रहे हैं, वर्तमान सन्दर्भ को देखते हुए यह साहित्य सेवा की राह कितनी आसान लगती है?**

– किसी भी पत्रिका और विशेषकर लघु/साहित्यिक पत्रिका का सतत प्रकाशन आरंभ से ही जोखिम भरा रहा है। कहा भी जाता है कि इस तरह की पत्रिका निकालना 'घर फूंक तमाशा देखना है' फिर भी पत्रिकाएं निकल रही हैं। कुछ थोड़े समय बाद निकलकर बंद हो जाती हैं यहां तक कि कई व्यवसायिक पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो चुका है। कई पत्रिकाएं कुछ समय तक चलीं, फिर हिम्मत जुटाई, फिर कुछ समय चलीं। प्रेरणा का प्रकाशन मेरे लिए एक जुनून है, उद्देश्य यही है कि अच्छा साहित्य आम पाठक तक पहुंचे। इसके लिए यह भी प्रयास किया गया कि पत्रिका में साहित्य से इतर सामग्री भी जाए जिससे आम पाठक जुड़ सके अत: उसे समसामयिकता से भी जोड़ा गया। पत्रिका में पत्र–प्रतिक्रियाओं के लिए स्तंभ 'आपकी कलम से' में पाठकों को पर्याप्त स्थान दिया जाता है। इससे भी उनकी भागीदारी पत्रिका में बढ़ी। साथ ही पत्रिका किसी विशेष विचारधारा से नहीं बंधी बल्कि तटस्थ रहकर कार्य किया तथा साहित्य की सभी विधाओं को भी पर्याप्त स्थान दिया गया। 'हिंदी कविता का बदलता चेहरा' को लेकर बहस प्रारंभ की गई जो निरंतर 25 अंकों तक चली और इसमें सभी विधाओं के 46 रचनाकारों ने अपने विचार रखे। इसी तरह कहानी को लेकर भी बहस चलाई गई। प्रेरणा में प्रकाशित होने वाली सामग्री पर विस्तृत विचार विमर्श हेतु 'चिंतन' स्तंभ भी दिया जाता रहा है जिसमें विभिन्न विषयों पर 26 अंकों तक 53 रचनाकारों ने सक्रिय भागीदारी की। 24 विशेषांक भी निकाले गये। अभी बहुत विस्तार से जाना ठीक नहीं है। मेरे विचार से इन सबने प्रेरणा की राह आसान की। साथ में यह भी विचार किया गया कि पत्रिका की भाषा भी इनती क्लिष्ट न हो कि वह आम पाठक की समझ में नहीं आए क्योंकि अधिकांश साहित्यिक पत्रिकाएं, 'रचनाकारों द्वारा लिखित', रचनाकारों द्वारा प्रकाशित और रचनाकारों द्वारा ही पढ़ी जाने वाली होती है, अत: ऐसी पत्रिकाओं से अलग हटकर सामग्री हो, प्रेरणा का यह प्रयास सफल रहा है और पत्रिका की पहुंच आम सामान्य पाठक तक है। इसमें कुछ सीमा तक सफलता मिली है और मिल रही है। वर्तमान संदर्भ में साहित्य सेवा को समाज में उसका उचित स्थान नहीं मिल रहा है। पहले साहित्यकार और रचनाकार को पर्याप्त सम्मान मिलता था और एक दृष्टि से कहा जाय तो उन्हें विशिष्ट माना जाता था। अब तो समाज में साहित्य का ही वह स्थान नहीं रह पाया है तो साहित्यकार का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने पठन–पाठन में अत्यंत कमी ला दी है, साथ ही अंग्रेजी माध्यम में पढ़े छात्र भी हिन्दी साहित्य की बजाय अंग्रेजी साहित्य पढ़ना पसंद कर रहे हैं फिर भी स्थिति बहुत निराशाजनक नहीं है, क्योंकि इसके लिए भी प्रयास हो रहे हैं और निश्चित ही आने वाला समय उज्जवल होगा।

- **सहमत हूं आपकी बात से कि आज समाज में साहित्य का वह स्थान नहीं रहा। एक साहित्यकार होने के नाते आपसे इसका कारण जानना चाहूंगी, क्या वजह है आज साहित्यकारों के प्रति वह सम्माननीय भाव नहीं रहा।**

– जैसा कि मैंने ऊपर कहा कि इसके लिए बहुत हद तक आज का परिवेश भी उत्तरदायी है। बच्चों को पहले बचपन से ही उनके कोर्स के अतिरिक्त पत्रिकाएं पढ़ने को दी जातीं थीं, उनमें कमी आई है क्योंकि उनकी जगह इलेक्ट्रॉनिक गेजेट्स लेते जा रहे हैं, माता–पिता भी इस ओर प्रेरित नहीं कर रहे हैं अत: बच्चों को बचपन से ही साहित्य से पर्याप्त लगाव नहीं हो पा रहा है। घरों में भी पत्रिकाओं का आना नगण्य जैसा ही है तो बचपन से जो परिवेश मिल रहा है, आगे चलकर वहीं व्यवहार में परिलक्षित हो रहा है। इसके साथ ही साहित्यकार समाज पर वह प्रभाव नहीं छोड़ पा रहे हैं कोई भी कैसी भी रचनाएं लिखकर पुस्तकें प्रकाशित करा रहे हैं, उनका स्तर भी पाठकों की दृष्टि में आ रहा है अत: पाठकों के आकलन के दृष्टिकोण में भी अंतर आ रहा है। हां यदि कोई नामी गिरामी प्रतिष्ठित साहित्यकारों की पुस्तकें आती हैं तो उन्हें सम्मान के साथ पढ़ा जाता है और उन साहित्यकारों को सम्मान भी प्राप्त होता है पर ऐसी संख्या अधिक नहीं होती साथ ही नेट की दुनिया ने भी लोगों की मानसिकता में बदलाव लाया है जिसका प्रभाव पड़ रहा

है। मार्केटिंग की प्रवृत्ति में भी वृद्धि हो रही है उसके अनुसार भी साहित्य खरीदा व पढ़ा जा रहा है। बहुत से ऐसे कारण है जिनसे साहित्यकारों के सम्मान में कमी तो दिखाई देती है।

- **आज साहित्य के क्षेत्र में मठाधीशों का निर्माण, सम्मान की रेवड़ियां जैसे शब्द काफी चर्चा में रहते हैं। 'जो दिखता है वही बिकता है।' इस संबंध में आपकी क्या राय है।**

– देखिये, जब से मैंने साहित्य को समझना आरंभ किया तो पाया कि खेमेबाजी तो साहित्य में काफी समय से रही है और ये भी सही है कि अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा साहित्य में मठाधीश अधिक हैं और वे अपने गुट के लोगों को ही सम्मान दिलवाते हैं। यहां नाम लेना तो उचित नहीं होगा पर एक मठाधीश जो अब हमारे बीच नहीं हैं पिछले 2–3 वर्षों से। जब तक वे रहे उन्होंने अपने समर्थकों के अलावा किसी को ढंग से पनपने नहीं दिया और पीक टाइम में वे ही पत्रिकाएं प्रश्रय पा सकीं जिन्होंने उनकी झंडाबरदारी स्वीकारी हो अन्यथा भले ही वे कितनी अच्छी निकलती रही हों पर उन्हें वह मान्यता नहीं मिली जिसकी वे अधिकारी थीं। मेरे विचार से समय की अनुकूलता के अनुसार साहित्य में मठाधीश बनते रहेंगे, उन्हीं के अनुसार अपवाद छोड़ दें तो सम्मान मिलते रहेंगे।

- **काश ! साहित्यकार स्वयं से अपने दायित्व को समझें। आपने कई देशों की यात्रा की है क्या अंतर देखते हैं भारतीय संस्कृति और साहित्य के दृष्टिकोण में जानना चाहेंगे ?**

– भारतीय संस्कृति को आज भी विदेशों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और वहां के निवासियों में उसके बारे में विस्तृत जानने की उत्सुकता भी है। भारतीय साहित्य को भी सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। अपने यहां के लेखकों के बारे में भी जानने की उत्सुकता है। ये अलग बात है कि अपने यहां के कुछ लेखक अपने आलेखों में बजाय भारतीय लेखकों को उदधृत करने के स्थान पर विदेशी लेखकों को अधिक तरजीह देते हैं और लेखन में भी वहां के शिल्प और शैली को अपनाने का प्रयास करते हैं, शायद उनकी सोच यह हो सकती है कि इससे उनकी विद्वता, आधुनिकता को प्रमुखता मिले। बहरहाल अपने पर विश्वास हो तो उसके परिणाम अच्छे ही आते हैं। भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा उदाहरण वहां के आम नागरिक वैवाहिक जीवन का निरंतर चलना तथा डायवोर्स नहीं होने को मानते हैं, उनको लगता है कैसे यहां के लोग साथ–साथ रह पाते हैं और एक पति या एक पत्नी के साथ पूरी उम्र व्यतीत कर लेते हैं। इस संबंध में वहां की नवविवाहिताओं ने ही नहीं, उम्रदराज महिलाओं ने मेरी पत्नी से यह सब समझने का प्रयास किया। कुछ को तो लगा कि भारतीय महिलाएं जो बिंदी लगाती हैं और चूड़ियां तथा पैर में बिछिया पहनती हैं, इसके कारण पति उनसे बंधे रहते हैं। बहरहाल उनको यहां की संस्कृति की जानकारी दी गई। जहां तक वहां के बुद्धिजीवियों की बात है, उनके मन में एक जिज्ञासा थी कि यहां रक्तपात वाली क्रांति क्यों नहीं होती जबकि अमूमन हर देश में कभी न कभी हुई है। उनको बताने का प्रयास किया गया कि यहां के लोग अत्याधिक सहिष्णु होते हैं और हर मसले को सामान्य ढंग से सुलझाने में विश्वास रखते हैं। ये दोनों उदाहरण विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव को दिखाते हैं। हालांकि वर्तमान में अपने यहां स्थिति थोड़ी भिन्न दिखाई दे रही है।

- **निःसंदेह। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है, आपका विश्वास भारतीय संस्कृति में आम तौर पर डायवोर्स नहीं होते किंतु आज भारत में भी यह रोग तेजी से फैल रहा है, युवाओं में भी तेजी से संबंध विच्छेद हो रहे हैं। इसकी क्या वजह देखते हैं।**

– डायवोर्स तो भारत में भी काफी समय से होते रहे हैं बस अंतर इतना आया है कि पहले पति–पत्नी अलग–अलग रहने लगते थे और अधिकारिक रूप से डायवोर्स नहीं होता था। चूंकि वर्तमान समय में जीवनशैली बदली है, स्त्री भी आर्थिक रूप से सक्षम हैं तो अधिकारिक रूप से डायवोर्स की मात्रा बढ़ी है पर ये भी सही है कि एक अध्ययन के अनुसार सबसे अधिक डायवोर्स विश्व के यूरोपियन हिस्से में होते हैं, उससे कम एशियन हिस्से में और सबसे कम भारत में। आजकल विवाह भी काफी उम्र हो जाने पर होते हैं तो दोनों की अपने अपने अनुसार समझ विकसित हो जाती है और कई बार विवाह के बाद विचारों में सामंजस्य नहीं बैठ पाता, यह भी एक कारण है। प्री मेरेटियल और पोस्ट मेरिटियल सेक्स में भी वृद्धि हुई है, वो भी एक कारण हो सकता है। कई जगह मां बाप को साथ में रखने के कारण भी मतभिन्नता होती है, यह भी कारण है। कारण कोई भी हो पर इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता है कि सहनशीलता की दोनों पक्षों में कमी आई है जिसे हम ईगो भी कह सकते हैं, वो भी कारण बनता है। परंतु यह सच है कि भारत में भी डायवोर्स का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है पर दूसरे देशों की तुलना में अपवाद जैसा ही है, साथ में पुर्नविवाह का चलन भी बढ़ने लगा है। विश्व परिदृश्य का असर तो आयेगा ही। पर अपने देश की एक विशेषता है कि बीच–बीच में कई तरह की सामाजिक बुराईयां,

ड्रग्स नशे आदि की लत जैसी चीजें तेजी से पनपीं पर वे समय के साथ विलुप्त भी होती गईं और यही तो मुख्य रूप से शोध और उत्सुकता का विषय है।

- **एक निजी सवाल ''कहते हैं पति-पत्नी गृहस्थ जीवन में रथ के दो पहिए हैं। कभी किसी कारणवश एक पहिया अपना सफर जल्द समाप्त कर जाता है'' जिंदगी के सफर में संगिनी को आप क्या योगदान देखते हैं।**

– यह भले ही निजी सवाल हो पर यह भी एक सच्चाई है कि जिस उम्र में पति-पत्नी को एक दूसरे की सबसे अधिक आवश्यकता होती है अक्सर उसी उम्र में एक कोई चला जाता है और दूसरा यदि संवेदनशील है और पति-पत्नी के संबंध मित्रवत रहे हों तो अकेलेपन और डिप्रेशन से ग्रसित हो जाता है। यह स्थिति बहुत ही दुखद और आत्मविश्वास को कम करने वाली होती है। किसी भी पुरुष के जीवन में नारी शक्ति का बहुत महत्व है, यह कहने की बात नहीं पर ठोस सच्चाई है कि नारी के बिना पुरुष का जीवन अपूर्ण है। पुरुष भले ही कितना स्ट्रांग हो पर जब वह किन्हीं प्रकरणों में विभ्रम का शिकार हो जाता है और निर्णय नहीं ले पाता है, पत्नी ऐसा सहज और सरल हल सुझाती है कि वह हतप्रभ हो जाता है कि यह विचार मेरे मस्तिष्क में क्यों नहीं आया। आपने संगिनी शब्द का बहुत सही उपयोग किया है क्योंकि पत्नी हर भूमिका में पति का साथ निभाती है। सभी तरह की बातें एक-दूसरे से शेयर कर लेते हैं। यदि कई बार मतभिन्नता की स्थिति बनती भी है पर यदि दूसरे के प्रति समझ और कनविनसिंग अच्छी हो तो स्थिति अप्रिय नहीं हो पाती।

जहां तक आपने निजी सवाल के बारे में जानना चाहा है तो अवश्य बताना चाहूंगा। हम लोग 46 वर्ष 3 माह 16 दिन साथ रह पाये। चाहा तो था कि जब जायें तो साथ-साथ जायें क्योंकि विवाह के बाद हम लोग जहां भी जाते थे, सदैव साथ-साथ ही जाते थे, रिश्तेदार इस बात का मजाक भी उड़ाते थे पर हम लोगों ने चिंता नहीं की, हम लोग अपने आप में मगन थे परंतु चाहा हुआ सदैव पूरा तो नहीं हो पाता और यही हम लोगों के साथ हुआ। जहां तक योगदान की बात है तो शायद मैं पत्नी के बिना कुछ होता ही नहीं क्योंकि हम लोग पति-पत्नी से अधिक मित्र थे। और हर बात आपस में शेयर करते थे। कई-कई बार तो ऐसा होता था कि किसी बात के निर्णय पर पहुंचने में घंटों लग जाते थे, कारण उस विषय पर अपने-अपने विचार और फिर किसी एक निर्णय पर पहुचना।

बहरहाल विवाह हुआ, डेढ़-डेढ़ वर्ष के अंतर से तीन पुत्र हुए। इनको लड़की न होने की हमेशा कसक रही। लिखना पढ़ना तो विवाह के बाद बंद हो ही गया था फिर बच्चों को बड़ा करने की जिम्मेवारी, नौकरी की व्यस्तताएं जिससे समय ही नहीं मिल पाता था पर दरअसल में बचपन से पिता का प्यार न मिल पाने के कारण और एकलौता पुत्र होने के कारण एक अकेलेपन और रीतेपन का अहसास होता रहता था और जब विवाह हुआ, बच्चे हुए तो लगा कि मुझे वह मिल गया जिसकी हमेशा से आकांक्षा रही है और उसी में डूबता चला गया और कुछ सोचा ही नहीं या सोच नहीं पाया। बहरहाल मैं अपने जीवन से संतुष्ट था पर इनको हमेशा ये मलाल रहा कि शायद लेखन से दूर होने में उनकी भूमिका है। वैसे मैं पत्रिका आकंठ के संपादक मंडल में था और कहानी व समीक्षा पक्ष देखता था पर जब वे दोनों स्तंभ बंद हो गये तब पत्नी ने प्रेरित किया कि अब वहां से मुक्त होकर अपनी स्वयं के अनुसार नई पत्रिका निकालना चाहिए और इस तरह 'प्रेरणा' का प्रार्दुभाव हुआ। पहले कंपोजिंग टाइप सेटिंग से एक-एक अक्षर जमाकर होती थी अत: इन्होंने हिंदी टाइपिंग सीखकर और टाइप राइटर खरीदकर पांडुलिपि बनाने तथा पता टाइप करने का काम सम्हाल लिया और प्रेरणा समय के अनुसार परिवर्तित होती निकल रही है। प्रेरणा आने के पहले वे संपादकीय अवश्य पढ़तीं थीं, उस पर चर्चा भी करतीं, आलोचना भी करतीं और सुझाव भी देतीं। मैं मजाक में कहता कि अच्छा है, आलोचक घर में ही मिल गया और उसमें संशोधन हो जाता है। बहरहाल जीवन अच्छा चल रहा था, बच्चे बढ़े हुए, पढ़ने बाहर चले गये फिर उनके विवाह हुए, उनके बच्चे हुए। सौभाग्य से बहुएं हमें बहुत अच्छी मिलीं, शिक्षित तो थीं ही, संवेदनशील भी थीं, हम लोगों का पर्याप्त ध्यान रखतीं। उनके जाने के कुछ समय पहले से मैं एक बदलाव देख रहा था कि वे काफी पजेसिव होतीं जा रही थीं। कभी-कभी तो मैं खीझ जाता पर वे कुछ बोलतीं नहीं, बस कातरता से देखते रहतीं और चेहरे पर बहुत ही दयनीय भाव आ जाते। वास्तव में वे मुझे अकेले रहने के हिसाब से तैयार करना चाह रही थीं। उन्हें शायद अपने जाने का पूर्वाभास हो गया था। एकाध बार उन्होंने यों ही हंसते-हंसते कहा था कि यदि मैं कहीं चली गई तो इन आदतों से अकेले कैसे रह पाओगे। मैं मजाक समझा, कहा कि अकेले कैसे जाओगी। अभी तक जहां भी गये हैं, साथ-साथ गये हैं तो मैं भी तो चलूंगा। इनका उत्तर बहुत ही मार्मिक था कि यदि ऊपर चली गई तो मैंने कहा था कि ईश्वर से लड़कर वहां भी साथ-साथ जाएंगे। पर जो हुआ, सामने है, काश! उस दिन की बात की

गंभीरता को समझ पाता और अच्छे से उतने दिन साथ-साथ बिता लेता पर अब तो बस स्मृतियां हैं और जाने की प्रतीक्षा है कि पता नहीं कब समय आ जाए। मेरे विचार से उत्तर काफी लंबा हो गया है, चाहें तो एडिट कर लें, भावनाओं में बह गया था। वैसे इस उत्तर से संगिनी का योगदान भी काफी कुछ स्पष्ट हो गया होगा, इसलिए अलग से उत्तर देने की आवश्यकता नहीं लगती।

- **खो गई थी आपके जीवन प्रसंग में। अगला सवाल आपके लेखन से ,'स्मृतियों का शिलालेख' के प्रति जिज्ञासा है , इसमें व्यक्तित्व से जुदी स्मृतियाँ हैं या कृतित्व से जुड़ी ?**

– जी इसमें उन व्यक्तित्वों की स्मृतियाँ हैं जिनके कृतित्व ने साहित्य जगत को नये आयाम दिए। 'स्मृतियों का शिलालेख' पुस्तक में आलेख हैं जिनके माध्यम से उन साहित्यिक पुरखों को स्मरण किया गया है जो अब हमारे बीच नहीं हैं। पुस्तक में सबको तो नहीं लिया जा सका परन्तु 24 साहित्यकारों को लिया गया है उनमें कबीर, प्रेमचन्द, निराला, महादेवी वर्मा, हरिशंकर परसाई, यशपाल, मुक्तिबोध, वनमाली, भीष्मसाहनी, नागार्जुन, शानी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, शरद बिल्लौरे, शलभ श्रीराम सिंह, राकेश वत्स, चिलोचन, दुष्यंत कुमार, नवीनसागर, श्याम सुन्दर व्यास, सत्येन कुमार, श्री कांत वर्मा, कमलेश्वर, नरेश मेहता, ओमप्रकाश मेहरा हैं।

- **उत्तम; बधाई आपको, आपकी कृति सृजन का समकालीन परिदृश्य पर एक सवाल कितना संतुष्ट हैं आप इस समकालीन परिदृश्य से ?**

– सृजन का समकालीन परिदृश्य में पांच चुनिंदा चर्चित एवं प्रतिष्ठित रचनाकारों से अनौपचारिक बातचीत की गई है जिनमें धनंजय वर्मा, कमलेश्वर, नरेश मेहता, कमलाप्रसाद व राजेश जोशी हैं और सभी ने खुलकर हर विषय पर चर्चा की है जिसमें समकालीन परिद्श्य पर भी चर्चा है वैसे भी साहित्यकार कभी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो पाता नहीं तो वह और अच्छा नहीं कर पायेगा इसलिये सदैव सुधार की गुंजाइश तो रहती ही है।

- **जी, जैसा कि मैंने कहा पत्रकारिता भी आपका क्षेत्र है। अगर वर्तमान पत्रकारिता को भारतेन्दु युग से जोड़ कर देखा जाए तो काफी बदलाव आया है। आप इस बदलाव को किस रूप में देखते हैं ?**

– नि:संदेह! वर्तमान पत्रकारिता में काफी बदलाव आया है। ये बदलाव कम से कम समाज के लिए उचित तो नहीं कहा जा सकता। पहले पत्रकारिता एक मिशन हुआ करती थी। उसकी विश्वसनीयता असंदिग्ध थी। इसके मूल में देखें तो पहले साहित्यकार ही संपादक हुआ करते थे और उनका दृष्टिकोण किसी भी घटना के लिए संवेदना लिए हुए होता था। भाषा भी परिष्कृत होती थी। समाचार के शीर्षक भी उसी प्रकार से होते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में भी पत्रकारिता ने अपनी उपादेयता सिद्ध की। सीमित साधनों में भी जन-जन तक समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता की अलख जगाई या यूँ कहें कि उन्होंने वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धीरे-धीरे समाचार पत्रों के मालिक बदलने के कारण भी बदलाव आया क्योंकि उनका फोकस प्रसार संख्या में वृद्धि करने का प्रमुख रहा। सम्पादक साहित्यकार के स्थान पर मैनेजर टाइप के आने लगे जिसका प्रभाव पत्रकारिता पर पड़ा, मूल्यों में गिरावट आई। भाषा में अंतर आया। नकारात्मकता को अधिक स्थान मिलने लगा। सामग्री भी चटपटी होने लगी। रही सही कसर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने पूरी कर दी। वह तो पूरी तरह टी.आर.पी. बढ़ाने के चक्कर में हर तरह के हथकंडे अपनाने लगे। मीडिया पर व्यवसायिक घरानों ने कब्जा कर लिया। टी.आर.पी.के चक्कर में उन्हें न तो मूल्यों की परवाह रही, न संस्कृति की, न भाषा की, न आचरण की और अब तो मीडिया ट्रायल के नाम पर निर्णय भी दिये जाने लगे हैं। आगे-आगे देखिये होता क्या है पर इतना नुकसान तो अवश्य होने लगा है कि लोगों की मानसिकता में परिवर्तन हो रहा है, जीवन शैली बदल रही है। बच्चों और किशोरों की मानसिकता में भी काफी बदलाव आने लगा है। पर शायद ये सब अधिक समय तक नहीं चले क्योंकि हमारे देश की संस्कृति की जड़ें काफी गहरी हैं, भले ही कुछ समय के लिए प्रभावित हों।

- **ईश्वर करे ऐसा ही हो, कहा जाता है, 'आज पत्रकार रोटियां सेंकने में लगे हैं' आप इस बात से कितना इत्तेफाक रखते हैं ?**

– आपका यह कथन 'आज पत्रकार रोटियां सेंकने में लगे हैं। कहीं से भी गलत नहीं है। कुछ पत्रकार तो ब्लेक मेलिंग करने से भी नहीं चूकते। पर ऐसे लोग कम हैं।

- **जी, खबरें प्रकाश में आती हैं, प्रकाशनाधीन पुस्तक 'मुखौशे' का शीर्षक बहुत आकर्षित कर रहे हैं कुछ उसके बारे में जानना चाहेंगे ?**

– प्रकाशनाधीन पुस्तक 'मुखौशे' कहानी संग्रह है। पुस्तक का नाम मेरी पहली प्रकाशित कहानी मुखौशे के नाम पर रखने की योजना है। मुखौशे के बारे में ऊपर बता चुका हूँ। इस कहानी संग्रह

को प्रकाशित कराने में भी मेरे मन में द्विविधा है कि ये सब साठ-सत्तर के दशक की कहानियां हैं जो वर्तमान समय के अनुकूल न हों पर मित्रों का आग्रह है कि कहानी संग्रह आना चाहिए। देखिये कब तक आ पाता है।

- **स्वागत रहेगा, इस बात में कितनी सच्चाई है, 'पत्रकारिता यानी सच्ची खबरों का कत्ल' क्या कहना चाहेंगे ?**

– यह सत्य है कि आजकल समाचार भी काफी तोड़ मरोड़कर प्रकाशित/प्रसारित होने लगे हैं जिससे मीडिया की विश्वसनीयता में कमी तो आई है।

- **आज पत्रकारों पर मनोवैज्ञानिक दबाव अधिक है। क्या आप इस बात से सहमत हैं ?क्या आप भी मानते हैं पत्रकारिता पर राजनीति हावी है ?**

– पत्रकारों पर मनोवैज्ञानिक दबाव ही नहीं, कई तरह के दबाव हैं जो समझौता कर लेते हैं वे चल रहे हैं जो नहीं कर पाते वे समाचार पत्रों/चेनलों से बाहर हैं और अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। जहाँ तक पत्रकारिता पर राजनीति हावी होने की बात है, पूरी तरह सही है, पत्रकार पहले भी राजनैतिक विचारधारा के हुआ करते थे पर पत्रकारिता निष्पक्ष रूप से करते थे पर अब तो स्पष्ट समझ में आने लगा है कि कौन से पत्रकार किस तरह की राजनीति से प्रेरित हैं स्वयंमेव, दबाववश या भयवश।

- **पत्रकारिता भाषा का महत्वपूर्ण स्तम्भ है, वर्तमान पत्रकारिता की भाषा देखकर कहीं निराशा नहीं होती ?**

– पत्रकारिता की आत्मा ही भाषा है। वर्तमान पत्रकारिता में भाषा का जो हश्र हो रहा है, उससे निराशा ही नहीं होती अपितु कभी-कभी लगता है कि कहीं ये सब जानबूझकर किसी योजना के तहत तो नहीं हो रहा है क्योंकि आज के पत्रकार चाहे वह प्रिंट मीडिया के हों या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के हों, हैं तो अपने देश के ही और भाषा ज्ञान से तो भलीभांति परिचित ही होंगे भले ही वे अंग्रेजी माध्यम से पढ़े हों। भाषा तोड़ी-मरोड़ी ही नहीं जा रही है वरन किन्हीं-किन्हीं के द्वारा तो मर्यादाओं की सीमा लांघकर भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अवहेलना की जा रही है। ये बात भी सही है कि हिन्दी को अपने देश में प्रथम दर्जा नहीं मिला, सदैव दोयम स्थान पर रही जबकि देश में वह सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है परन्तु इसको अभिजात्य वर्ग के द्वारा वह मान्यता नहीं दी जा रही है जो वे अंग्रेजी को देते हैं, उसी में बोलने, बात करने को अपना स्टेटस सिम्बल मानते हैं। दूसरी विडम्बना यह भी है कि व्यवसायिक पाठ्यक्रम अभी भी अंग्रेजी में हैं। अधिकांश शासकीय कार्यालयों का काम काज अंग्रेजी में ही होता है। यहां तक कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय, कहीं कहीं तो जिला एवं सत्र न्यायालयों में अंग्रेजी का प्रयोग होता है तो कोई आश्चर्य नहीं कि पत्रकारिता विश्वविद्यालय से शिक्षित होकर आए पत्रकार भी उसी हीन ग्रंथि से ग्रसित होकर पत्रकारिता की भाषा को महत्व न दे रहे हों और वैसे भी पत्रकारिता के हर स्तर पर यदि कुछ अपवादों को छोड़ दें तो आया हुआ बदलाव चिंता तो उत्पन्न करता ही है पर जैसा कि मैंने ऊपर कहा है कि हर चीज स्थायी नहीं होती, समय के साथ-साथ परिवर्तन आता ही है अत: सुखद कल्पना तो की ही जा सकती है।

- **'आपने अपना अमूल्य समय देकर अपने विचार हमसे सांझा किये, आपका बहुत-बहुत आभार सर।'**

– 'स्वागत, आपने मुझसे वार्ता करके मुझे महत्व दिया, इसके लिए कृतज्ञ हूँ। साभार।'

– **आदरणीय, आप अपनी पचहत्तरवीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं, मेरी ओर से अमृतोत्सव की हार्दिक बधाई। आप स्वस्थ और शतायु हों।**

– धन्यवाद, लता जी

साक्षात्कार प्रदाता :

– **श्री अरुण तिवारी जी,** पता- ए-74, पैलेस आरचर्ड फेज-3, सर्वधर्म के पीछे, कोलाररोड, भोपाल (म.प्र.) 462042, मो.9826282750
e-mail : prernapatrika@gmail.com

साक्षात्कारकर्ता :

– **डॉ. लता अग्रवाल,** वरिष्ठ साहित्यकार, निवास- 30 सीनियर एमआईजी, अप्सरा कोम्प्लेक्स, इंद्रपुरी, भेल क्षेत्र, भोपाल- 462022
मो. 9926481878

पुस्तक - समीक्षा

'कला समय' पत्रिका में कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास पुरातत्व, लोक साहित्य, पर्यटन, गीत, ग़ज़ल, कविता इत्यादि विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की जाती है। प्रकाशनार्थ समीक्षा के साथ पुस्तक की एक प्रति भेजना आवश्यक है।

- संपादक

दिल के अपने शहर का एक इंसान और कुछ बातें

वह दुनिया को समझता-बूझता है
खिड़की के पर्दे से
बस यहीं उसका बाहर है
उसका आस-पास किताबों, रिसालों और
अख़बारों से भरा और जगत में खुला
और उसके भीतर काम में मशगूल ज़रूरी वाले काम और ख्वाब हैं
बस इसी जगह से उसने आबाद किया शब्दों को अर्थ सहित
जिसमें आम पाठक और अदीब रह सकते हैं
और अभिव्यक्त कर सकते हैं आज़ाद सरोकार

मेरा अरुण जी के साथ उठना-बैठना कभी न हुआ। हां! प्रेरणा के साथ किश्तों में बीते दो दशकों के साथ मैं बना रहा। अफ़सोस है कि उनके साथ संगत उनके लिखे-किये तक महदूद रही। वे इस संसार में डूबे इंसान अधिक लगते हैं। अमूमन पत्रिका के बहाने कुछ प्रत्यक्ष और ढेर-सा परोक्ष सरोकार है हमारे बीच। वे अपनी पत्रिका और पत्रकारिता में अलग सोचने वाले व्यक्ति हैं।

बच्चों से बूढ़ों तक को अपनी सोच में समेटे। वे अछूते विषयों पर काम करने के आग्रही हैं। स्थापित लेखक उनकी पत्रिका में लिखें यह उनका मन होता है, लेकिन उनके न होने का मातम नहीं है पत्रिका में। यह समझ उनकी 'आकंठ' के ज़माने से बन गयी थी। उनके लिये प्रकाशन का अबाध सिलसिला ज़रूरी है। वह आजीवन के लिए बना हुआ है। आज हम उनके होने को याद कर रहे हैं। हालांकि यह उनका ख़याल नहीं वे तो दूसरों के लिए फिक्रमंद हैं 75 पार भी। प्रेरणा का धनंजय वर्मा विशेष अंक अब भी याद में है। मैं 1990 से भोपाल में था। 1997 से प्रेरणा के साथ पाठक के रूप में मेरा सफ़र शुरू हुआ। उनमें एक विलक्षण खूबी है पाठकों और पत्रिका के लेखकों से जुड़े रहने की। वे बिना चूक अंक भेजा करते हैं। स्मृति में निराला, मुक्तिबोध, प्रेमचंद अंक बने हुए हैं। उनके भीतर यश, प्रतिष्ठा की कामना से परे लेखकों का अवदान प्रमुख है। भगवत रावत और प्रेमशंकर रघुवंशी स्मृति अंक इसके उदाहरण हैं। मुझे उनका निकाला 'पर्यावरण अंक' समय के साथ संपादकीय प्रज्ञा और दायित्व का उदाहरण लगता है। अभिमन्यु अनंत को उन्होंने जिस तरह याद किया, वह प्रणम्य है। मानवीयता उनके साहित्य संपादन के केंद्र में रही है। वे सृष्टि के मंगल के बारे में सोचते हैं।

लीलाधर मंडलोई

पत्रकारिता और बच्चों के लिए और बच्चों द्वारा रचनाकर्म में भी यही भाव प्रमुख है। प्रेरणा शायद म.प्र. के इतिहास में अकेली ऐसी पत्रिका है जिसमें पाठकों के लिए लेखकीय सम्मान वाली जगह सुरक्षित है। कुछ ने लेखक की तरह जगह भी बनायी। प्रेरणा साहित्य के साथ ज़रूरी सामाजिक दायित्व वाले विषय को भी पर्याप्त तरजीह देती है। यह उसकी लंबी यात्रा का अविभाज्य अंग है। वैसे ही जैसे लघु पत्रिका आंदोलन की भूमिका। एक तटस्थता भाव से देखा जाए तो उनका अवदान कई दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आवश्यकता है राजनीति से ऊपर मूल्यांकन की।

समय के साथ यह आने वाले वक्तों में होगा, यह उम्मीद है। इसके साथ ही उनकी अपनी लिखी किताबों पर भी बात होगी। उनके लिखे में समावेशी विश्लेषण है। 'सृजन का समकालीन परिदृश्य' -उनकी किताब में उनकी दृष्टि का आकाश है। वे आलोचक की भूमिका में चिंतन की मौलिकता को महत्व देते हैं। यह पत्रिका के अग्रलेखों में भी दृष्टिगोचर है और बाल साहित्य के संपादन में भी। उन्होंने कई देशों की यात्राएं की और विश्व चेतना को समझा। प्रगतिशील साहित्य के लिए उनकी संवेदनशीलता लक्षित की जा सकती है। उनके कुछ संस्मरण स्मृति में हैं। हिंदी के अलावा बच्चों के लिए अंग्रेजी में 'इंटेलीजेली' निकालना उनकी उदात्त नज़र का परिचायक है। वे अपने समय के संभावित विकास में अकादमिक ज़रूरतों को गहरे तक समझने वाले विचारवान शख्सियत प्रतीत होते हैं। उनके तमाम कामों पर लिखने का यह विचार समय है। वक्त के इस मोड़ पर जबकि समय तेज़ी से भाग रहा है, अपने समकालीनों को बतौर गुज़ारिश मीर का ये शेर याद दिलाने का मन हो रहा है-

''आलम के लोगों का है तस्वीर का सा आलम
ज़ाहिर खुली हैं आंखें लेकिन बेख़बर हैं सब।''

-लेखक वरिष्ठ कवि एवं पूर्व महानिदेशक दूरदर्शन तथा
अध्यक्ष वनमाली सृजन पीठ, नई दिल्ली हैं।
आखर बी 253, सरिता विहार,नई दिल्ली 76, मो.: 9818291188

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

शशांक

श्रीयुत अरुण तिवारी पचहत्तर वर्ष के हो गए। वे सहज, विनम्र व मितभाषी हैं। ऐसा बार-बार लगता है कि साहित्यकारों के बीच में संवाद ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं परन्तु वे दूरी बनाकर कुछ गुन रहे हैं। उनकी आकर्षक मुस्कान ही ऐसे समय में सुई धागे का काम करती है। जोड़ती है। यह एक भंगिमा है, उनके संपादन में नियमित प्रकाशित होती है 'प्रेरणा' पत्रिका। यह इस भंगिमा का विस्तार है, चिन्ता है और उद्देश्य है।

'प्रेरणा' ने निराला, प्रेमचंद, भगवत रावत, अनन्त, प्रेमशंकर रघुवंशी, गोयनका, धनंजय वर्मा आदि पर केन्द्रित अंक प्रकाशित किए हैं। यह साहित्य के अनेक वर्गीकरण से हटकर सृजनधर्मी झुकाव के आग्रह प्रस्तुत करता है। तिवारी जी ने कविता, कहानी, लघु उपन्यास, नारी अस्मिता पर विपुल सामग्री एकत्र की है। साहित्य पत्रकारिता पर उनका तीव्र विमर्श भी 'प्रेरणा' में देख पाते हैं। तिवारी जी के साहित्य के अनचीन्हें सृजन और सृजनकार को सामने लाने के प्रयत्न निरन्तर साहित्य के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। यह बिना हो-हल्ला के बिना मठ में छाजन लगाए चुपचाप वे सम्पन्न करते हैं।

मुझे सबसे अधिक लुभाता है लघु पत्रिकाओं की सूची। भारत की हिन्दी लघु पत्रिकाओं की विषय वस्तु नाम व पते इसमें होते हैं। यह एक तरह से लेखन सक्रियता को इंगित करते हैं।

लघु पत्रिकाओं के कठिन काम को तिवारी जी सामने लाते हैं। वे बताते हैं कि लघु पत्रिकाओं की संकल्पना व अवधारणा 1970 में सामने आई है। डस्ट बुक पब्लिशिंग के लेखक फुल्टन ने यह काम किया था। लघु पत्रिका के संपादक और प्रकाशक का महासंघ बनाए जाने की मांग की गई थी। सरकार से अनुदान निशुल्क डाक खर्च, पुरस्कार, विज्ञापन नीति, डीएव्हीपी से विज्ञापन सरकारी खरीद के मुद्दों को उठाया गया था। सर्वश्रेष्ठ लघु पत्रिका 'पहल' के शुरुआती दिनों से मैं जुड़ा था। पत्रिका के प्रतिपक्षी तेवर, लेखकों के गर्ममिजाज से यह संभव नहीं था कि 1973 के उन दिनों में सरकार से कोई चीज मांगे भी! 'वाम कथा' उत्तरार्ध के बहुमूल्य अंक हिन्दी के जागरूक लेखकों की सृजन और दृष्टि को आगे लेकर आते हैं। आज पचास बरस के बाद लघु पत्रिकाओं को देखने पर पता चलता है कि वह वस्तुत: साहित्यिक पत्रिका है और वह सुर गायब हैं जिसकी चाहत 1973 से बनी हुई थी। हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन संदर्भों से भंडार बना है। इसके बारे में कहा गया है कि हिन्दी प्रभाग के व्याख्याताओं की साहित्य समझ को अनुसंधान में बदलना है। फिर भी समकालीन चेतना की उधेड़बुन कविता, कहानी में दिखती है, इसे साहित्य पत्रिकाएं बखूबी प्रस्तुत करती हैं। 'पहल' हाल ही में बन्द हो चुकी है। तद्भव, कथादेश, अकार, विहान, बनासजन आज के साहित्य को उदाहरण बनाती हैं।

'सृजन का समकालीन परिदृश्य' और 'आज की बात' तिवारी जी की संपादित पुस्तकें हैं। परिदृश्य में डॉ. धनंजय वर्मा अपनी भेंट में कहते हैं कि समस्त कला एक अखण्ड व्यापार है, अखण्ड क्रिया है, लीला है, ऐसे में अलग-अलग टूल्स होंगे हर कालखण्ड के। और इसीलिए मूल्यांकन के अलग प्रतिमान होंगे। वे कहते हैं रचना सिंथेसिस मांगती है। अत: विश्लेषक सृजन में सफल नहीं होते। कहानी में मूल चेतना और मूल्य अन्वेषण आया। साहित्य का मूल्य छोटी पत्रिकाएं रखेंगी।' उनकी यह बात जैसे 'प्रेरणा' के लिए संबल बनती है।

तिवारी जी ने साहित्यिक पत्रकारिता के विमर्श में लगातार सार्थकता की खोज की है। वे कहते हैं कि 'पत्रकारिता में नकारात्मकता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अधिक है। आवश्यकताओं की प्राथमिकता का क्रम बदलने के रास्ते खोजे जा रहे हैं। शब्दों के अर्थ और परिभाषा बदल रही है। इससे विश्वसनीयता का संकट खड़ा हुआ है।' यह सोच निश्चय ही कुछ नया और कुछ बड़ा करने का आमंत्रण देती है। 'प्रेरणा' से अब और अधिक उम्मीद की जा रही है। यह हिन्दी समाज की आधुनिक चिंताओं के प्रतिनिधि संवाद को सामने लाएगी। उच्च स्तरीय लेखकों के नवीनतम सृजन से जोड़ेगी।

आज नेट के विस्तार के बावजूद, जागरूक पाठक यत्नपूर्वक साहित्यिक पत्रिकाओं को सहेजते हैं। लगाव महसूस करते हैं। आखिर साहित्यिक पत्रिकाओं ने उनका रूप आकार गढ़ा है। यहां तिवारी जी के इस गहन विश्वास से सहमत हुआ जा सकता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभाव से जिस अपसंस्कृति और जीवन शैली को मान्यता मिलने लगी है, हिन्दी गद्य को तोड़ा-मरोड़ा जा रहा है इन सब की चुनौती लघु पत्रिकाओं को स्वीकार कर मुकाबला करना होगा।

तिवारी जी 'प्रेरणा' पत्रिका के अलावा पुस्तकों का संपादन करते हैं, पुस्तकों का प्रकाशन करते हैं। मुकाबला करने में वे सक्षम हैं। साहित्य धर्मी संसार को जोड़ते हैं। यह आशा हम बनाए हुए हैं क्योंकि उनका यह वाक्य है – 'कोशिश करो कोशिश करो जीने की जमीन में गड़कर भी। यह कविता है मुक्तिबोध की जिसे तिवारी अपनी जिंदगी में घूँट-घूँट उतारते हैं। उनकी यह ताकत, यह भरोसा है – कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

साहित्य समाज के समय सार को तिवारी जी मनोयोग से गढ़ रहे हैं। उनके परिश्रम के ध्येय के और एकाग्रता के लिए शुभकामनाएँ।

-लेखक वरिष्ठ कथाकार एवं पूर्व उपमहानिदेशक दूरदर्शन हैं।
41, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462003

■

'कला समय' पत्रिका के सदस्यता शुल्क में वृद्धि की सूचना

प्रिय पाठकों,

द्वैमासिक 'कला समय' एक अव्यावसायिक कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक सांस्कृतिक पत्रिका है, जो विगत 25 वर्षों से अविकल रूप से कला/साहित्य जगत की सेवा कर रही है। आप इस तथ्य से परिचित हैं कि एक अव्यावसायिक कला-सांस्कृतिक पत्रिका निकालना बड़ा ही दुष्कर और श्रमसाध्य कार्य है। विगत कुछ वर्षों में मुद्रण, टंकण, कागज आदि की लागत में असामान्य बढ़ोत्तरी हुई है। ऐसे में पत्रिका के नियमित प्रकाशन को आप तक पहुँचाने के लिए ग्राहक सदस्यता शुल्क में (जून-जुलाई 2021) अंक से वृद्धि करना अपरिहार्य हो गया है। सदस्यों से अनुरोध है कि अब वे अपना सदस्यता शुल्क निम्नानुसार भेजकर सहयोग करें। जिन आजीवन (15 वर्षीय) सदस्यों की सदस्यता अवधि के 15 वर्ष पूरे हो चुके हैं, उनसे अनुरोध है कि वे पुन: अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण कराने हेतु 'कला समय' के पक्ष में आजीवन सदस्यता शुल्क भेज कर अनुगृहीत करें।

संशोधित सदस्यता शुल्क

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)
		350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)
		700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)
		1200 (संस्थागत)
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)
(15 वर्ष के लिए)	:	12,000 (संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 120/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

अरुण तिवारी - मृदु व्यक्तित्व

डॉ. करुणा पांडे

सृष्टि की गतिशीलता में चिंतनशील मनुष्य के नव सृजन से सौन्दर्य प्रधान परिवेश का निर्माण होता है। भाषा मनुष्य की परम उपलब्धि है जिसके आधार पर समाज का निर्माण हुआ है। साहित्य सृजन का द्वार खोलता है। भगवान् भास्कर प्रतिदिन सुनिश्चित समय पर अपनी लालिमा धरा पर बिखराकर जागरण का सन्देश देते हैं। खगकुल चहचहाकर परिवेश को संगीतमय करते हैं। प्रकृति का अनुप्रेरक भोर का ऐसा रूप मन को आल्हादित और मस्तिष्क को उर्जावान बना देता है। ऐसे अनुप्रेरक मधुर पलों का उपयोग करने वाले समाज के दिग्दर्शक होते हैं। उनका सहज और प्रेरक व्यक्तित्व अभिनंदनीय होता है। ऐसे में मधुरता की प्रतिमूर्ती अरुण तिवारी जो खुद में एक संस्था हैं, उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को उनकी अमृत जयंती में स्मरण कर आनंदित होना स्वाभाविक है।

महान विचारक प्लेटो ने लिखा है- ''जब हम कुछ सोचते हैं तो अपनी आत्मा से संवाद करते हैं।'' आत्मसंवाद की यही अन्तर्प्रक्रिया हमें कुछ ऐसे जीवन सूत्र पकड़ा जाती हैं जिनके माध्यम से हम मानवता के चिंतन की ओर अनुप्रेरित और अग्रसर होते हैं। इस प्रक्रिया में हम मनुष्य बोध का भाव प्रदर्शित करते हैं और अपने सजग मानव होने का परिचय भी प्रमाणित करते हैं। मानव को आजीवन अनगिनत अनुभव प्राप्त होते हैं और वह उन पर विचार भी करता है। क्या उचित है, क्या अनुचित है, यह निरंतर चलने वाला विचार है और यही विचारपूर्ण बात ही समाज में समादृत की जाती है। प्राचीन और आधुनिक मान्यताओं और संस्कारों में सामंजस्य बनाकर इन्हें नवीन पीढ़ी को हस्तांतरित करने का कार्य कोई संतुलित वैचारिक और विशिष्ट ज्ञान रखने वाला व्यक्ति ही कर सकता है और इस क्षेत्र में अगर हम दृष्टिपात करें तो अरुण तिवारी जी का नाम हमें दिखाई देता है। अप्रतिम प्रतिभा के धनी, बहुआयामी, साहित्य साधना में निरंतर संलग्न, समसामयिक विषयों पर पैनी दृष्टि रखने वाले प्रखर सम्पादक अरुण तिवारी किसी परिचय के मोहताज़ नहीं हैं। उनका वैविध्यपूर्ण सम्पादकीय और साहित्यिक अवदान आम आदमी से लेकर बुध्दिजीवियों तक चर्चा में रहता है।

संचिति के सुकृत एवं भगवत कृपा से अपने भाग्य विभव को लेकर जन्मने वाले प्राणियों में ईश्वर के विशेष कृपा पात्र ही अपने कुल, नगर, प्रांत व देश का गौरव बनते हैं। ऐसी ही एक विभूति, कर्मयोगी, साहित्य साधक, प्रेरणास्रोत, कर्मठ, कर्तव्यनिष्ठ, सौम्य एवं शालीन व्यक्तित्व के धनी स्वाभिमानी पुरोधा अरुण तिवारी वह खिला फूल है जिसने अपने साहित्यिक और सम्पादकीय अवदान से अपने शहर का नाम भारत के कोने-कोने तक सुरभित किया।

अरुण तिवारी जी का जन्म 4 फरवरी 1946 को सागर में हुआ था। 4 फरवरी 2021 को वह 75 वर्ष के हुए और उनकी अमृत जयन्ती थी। कोरोना के कारण भव्य उत्सव नहीं हो सका। वे एक अच्छे और सच्चे इंसान हैं। ऐसे इंसान, जिनका आज धरा पर प्राय: लोप हो चला है। जो भी उनसे मिलता है, उसे वे सहज रूप में अपनी ओर न केवल आकर्षित कर लेते हैं, अपितु सहज आत्मीय भी बन जाते हैं और ऐसा लगता है कि उनसे युग-युग का परिचय हो। जीवन कैसे जिया जाय, हमारे व्यवहार से किसी को कोई कष्ट न पहुंचे, यह सब कुछ यदि सीखना है तो अरुण जी से आप अवश्य मिलें। 75 वर्ष में भी उनकी कार्यक्षमता, कार्यशीलता और कार्यपद्धति चकित करती है। आज हम समय के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं , किन्तु अरुण जी आयु के इस मोड़ पर भी समय के प्रति सदैव सचेत रहते हैं। वे समयानुशासन और आत्मानुशासन के संगम हैं। यही नहीं अरुणजी स्वयं में एक जीती-जागती संस्था है। सामजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षिक कार्यों के उन्नयन, संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए वह मुक्त हाथ से सहायता करते हैं। अरुण जी को अव्यवस्था से बहुत चिढ़ है। उनमें नेतृत्व के गुण हैं। अपने विचार किसी पर थोपते नहीं हैं। किसी का प्रत्यक्ष विरोध न करके, सबकी राय लेकर अपने अनुकूल सहमति लेने में अरुण जी बहुत सिद्धहस्त हैं। संबंध बनाने और निभाने की कला में अरुण जी प्रवीण हैं। उनके विचारों से विरोध रखने वाला भी उनकी बात को काटने का साहस

नहीं कर पाता। अरुण जी में जितने गुण हैं वह वंशानुगत नहीं हैं वरण उन्होंने इनको अर्जित किया है। सीमित संसाधनों के होते हुए भी जिस तरह लगातार 23 वर्षों से प्रेरणा पत्रिका को अरुण जी जिस शिद्दत से निकाल रहे हैं, उसके लिए उनको प्रणाम है। पत्रिका निकालना और उसके स्तर को उच्च से उच्चतर स्तर तक पहुंचाना बहुत ही धैर्य और साहस का काम है। वैसे चुनौती स्वीकार करके उस पर प्राणपण से लग जाना अरुण जी के चरित्र की वह विशेषता है जिसके कारण आज वह इतनी ऊंचाइयों को छू सके हैं । उनके लिए न तो कोई व्यक्ति बुरा है और न ही कोई परिस्थिति बुरी है। वह अपने अदम्य कौशल से परिस्थिति और अपने सामने खड़े आदमी को गढ़ लेते हैं। सबको साथ लेकर चलना, सबका हित हो और सबका विकास हो यह अरुण जी की एक अन्य विशेषता है। दूसरे का मन परिवर्तन करके उसमें सकारात्मकता भरने का काम अरुणजी बहुत तन्मयता से करते हैं।

''साहित्य समाज का दर्पण होता है'' यह हिन्दी साहित्य का सूक्त वाक्य, हिन्दी साहित्य के सृष्टाओं के लिए एक बड़ी कसौटी है। साहित्य की समस्त विधाएं समाज के बाह्य एवं आंतरिक जगत के परिष्कार की कारक होती हैं ताकि समाज अपने परिमार्जित चेहरे का प्रतिबिम्ब साहित्य रूपी दर्पण में देख सके। दोष युक्त दर्पण में प्रतिबिम्ब भी दोषयुक्त ही प्रतिबिंबित होगा। साहित्य और दर्पण दोनों की परस्पर शुचिता के महत्त्व का श्लाघनीय सन्देश अरुण तिवारी जी के साहित्य का मूल तत्व है। ये श्रेष्ठ कहानीकार, कवि, विचारक, समीक्षक और प्रखर सम्पादक भी हैं। कविता से ज्यादा इनकी लेखनी ने गद्य साहित्य को अपना ममत्व प्रदान किया। मानवीय मूल्य, आसपास में घटित होती घटनाएं तथा चारित्रिक और राष्ट्रीय मूल्यों में व्याप्त होती गिरावट इनकी कहानियों के मूल विषय पर इनकी लेखनी खूब चली है। रागात्मकता अरुण जी की रचनाओं की मूल संवेदना है। उनकी लेखनी में हृदय के भावों को प्रकट करने की अलौकिक शक्ति है। उनका कवि मन व्यक्तिगत दु:ख-दर्द तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु उनके काव्य में सामाजिकता का भाव भी गहरे घर कर गया है। अरुण जी बहुत संवेदनशील रचनाकार हैं। छायावादी कवियों की तरह अरुण जी के काव्य में पीड़ा व दर्द का दर्शन देखने को मिलता है। जीवन के प्रति सदैव आशावादी और सकारात्मक दृष्टिकोण ही उनकी ऊर्जा का रहस्य है।

संसार के समस्त शास्त्रों, उपदेशों और आदर्शों का मूल उद्देश्य यही है कि आदमी 'इंसान' कहलाने योग्य बने। मानव की पहचान मानव देह धारण करने से नहीं वरन उसके मानवीय गुणों के कारण है। अरुण जी ने अपने बहुमुखी मानवीय व्यक्तित्व में इसे चरितार्थ किया है। वह शांत और धैर्यवान, सहृदय, संवेदनशील, न्यायी, कर्तव्यपरायण आत्मन हैं। इन्हीं गुणों के कारण वह एक सफल सम्पादक, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, दार्शनिक, चिन्तक, संगीत प्रेमी, कलाकार, वक्ता, मददगार और कुशल मार्गदर्शक सिध्द हुए हैं। 'कर्म करो, फल की इच्छा मत करो' गीता के इस उपदेश को उन्होंने चरितार्थ किया है। वह पाखंड से दूर हैं। पर भले ही वह माला जपने नहीं बैठते पर हृदय के मंदिर में वह अपने प्रभु के साथ सदा रमण करते हैं, जो उनके सामाजिक कार्यों में दिखाई देता है। इनकी साहित्य साधना बहुत अलग किस्म की है। ये बिना किसी शोर-शराबे और आत्म विज्ञापन कराये चुपचाप अपना सृजनात्मक कार्य करते रहते हैं। छद्म बौद्धिकता से दूर रहकर राजनैतिक छल छद्म से भी मुक्त रहकर निडर हैं और किसी प्रकार के दबाव को स्वीकार नहीं करते। इनमें संवेदनशीलता बहुत है इस कारण किसी की भी परेशानी या द्वंद्व को देखकर ये बहुत द्रवित हो जाते हैं और उसकी परेशानियों का मनोवैज्ञानिक हल खोजते हैं और उनको उत्साहित करते हुए ऊर्जा देते हैं। नए लोगों को आगे बढ़ाने के लिए इनका सदा प्रयास रहता है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने निरंतर गिरते स्तर पर अपने सम्पादकीय के द्वारा चिंता जताई है। उनके द्वारा ''अपनी बात'' पुस्तक में प्रेरणा में प्रकाशित जिन सम्पादकीय आलेखों का संकलन करके प्रकाशन किया है वह एक नया प्रयोग है। यह पुस्तक एक सामजिक और राजनैतिक स्तर पर विमर्श तो है ही, साथ ही आम पाठकों को गहराई से मंथन करने का अवसर भी देती है। पत्नी की मृत्यु होने के बाद अरुण जी ने जिस प्रकार संतुलन बनाकर अपने को संभाला वह उनके आध्यात्मिक ज्ञान और गीता का प्रभाव ही है। इंजीनियर जैसे रुखे पेशे के होकर भी जिस तरह की सम्वेगात्मकता उनकी रचनाओं में और व्यवहार में पाई जाती हैं वह सबके लिए एक उदाहरण है। ऐसा लगता है कि अपने स्नेहिल स्वभाव से अरुण जी लोहे को भी नम्रता से झुका देने, गला देने की क्षमता रखते हैं। उनसे मिलकर, उनसे बात करके हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है। उनकी ज़िन्दगी एक मिसाल है। आने वाली नस्लें जरूर उनसे कुछ सीखेंगी। मैं उनके स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना करती हूँ।

-लेखक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं।
2/62 , सी- विशालखंड ,गोमतीनगर लखनऊ 226010,
मो.: 9897501069

■

कहानी

मुखौशे

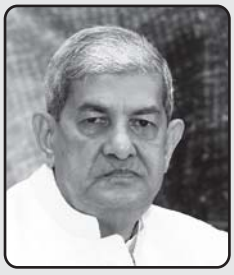

अरुण तिवारी

सुबह हो आई थी। बाहर बीमार पीली धूप फैलने लगी थी। आधा बिस्तर खाली था। निनि के सोने की जगह गड्ढा-सा बन गया था। उसने एक नजर डाली और किचन की आवाजें लेने लगा। उसने अंदाजा लगा लिया कि निनि इस वक्त चाय का पानी चढ़ा ब्रश कर रही होगी। ब्रश करने के बाद आकर वह उठायेगी। उसने सोचा कि आज वह उसके बिना उठाये ही उठ जाये। पहले निनि अपने उठते ही, उसे उठा देती थी। वह उसे खींचकर गिरा लेता था और उसके ओठों को सिप करने लगता था। एक दिन उसने कह दिया था कि निनि तुम्हारे मुंह से बदबू आती है और इस तरह मेरे मुंह का भी जायका बदल जाता है, तब से वह ब्रश करने के बाद ही उठाने लगी थी। उसने सांस खींचकर एक अंगड़ाई ली और टेबुल पर पड़े मुखौशों में से एक मुखौश उठाकर अपने चेहरे पर चिपका लिया। इस वक्त वह नार्मल था और उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह उठकर किचन तक आया।

निनि हीटर पर केतली में रखे पानी का उबलना देख कर, कुछ सोचने में निमग्न थी। उसे जरा भी पता नहीं चला कि वह कब आकर उसके पीछे खड़ा हो गया है। जब उसने उसको पीछे से बांहों में लपेटा तो एकाएक चौंक गई। आज वह बजाय ओठों को सिप करने के उसकी गर्दन चूमने लगा था। बासी गंध उसे अच्छी नहीं लगी और वह ब्रश करने चला गया। पिंकी और बंटी उठ आये थे उसने आकर मुस्कराकर दोनों का हाल पूछा और अपने पितृत्व के दायित्व से मुक्त हो हल्का प्रतीत करने लगा। चाय पीते हुए अखबार में नजर गड़ाकर उसने अपने को देश के नक्शे में बैठा महसूसा। हर खबर पढ़ने के बाद वह कुछ क्षण शून्य में देखता और गंभीरता से सिर हिलाने लगता।

नौ बज चुके थे। निनि के उसे चेता दिया था कि सुबह के लिए सब्जी बिल्कुल भी नहीं है। चाहे तो वे वह अभी ले आये या नहाकर ले आये। उसे एक आलस सा महसूस हुआ। बाजार जाने में उसे कपड़ों के साथ-साथ मुखौश भी बदलना पड़ेगा और खाना खाने के पहले फिर बदलना पड़ेगा। उसने एक दयनीय दृष्टि से निनि को देखा। उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह उत्तर सुनने को व्यग्र थी। उसने अपना चेहरा पूर्णत: उसकी ओर घुमाकर पैसे पास न होने की विवशता बताई। उसे लगा कि इस तरह वह जाने से मुक्त हो जाएगा। निनि ने उत्तर से वह चौंक उठा। वह कह रही थी कि उसके पास कुछ पैसे हैं जिसे उसने बहुत सम्हाल-सम्हाल कर बचाये हैं। उसका मुखौश कृतज्ञतापूर्वक देख रहा था पर वह सोच रहा था कि सभी औरतें भीतर से एक जैसी होती हैं। सोचता हुआ वह बाथरूम की ओर बढ़ गया।

खाना लेने के बाद वह ऑफिस जाने के लिए तैयार होने लगा। वह जब सब कपड़े पहन चुका तो मुखौश ढूंढ़ने लगा। वह रखे हुए मुखौश में ऑफिस वाला और शामवाला मुखौश ढूंढ रहा था। वह निनि पर झुंझलाया। निनि उसको असली रूप में देखकर डर गई। हालांकि वह अपने चेहरे पर जो मुखौश पहने थी, उससे यह बात दिखाई नहीं दी और तत्परता से ढूंढ़ने लगी। वह बड़बड़ाया: 'अब की बार चार छै सेट इकट्ठे ले आऊंगा।' पिछले दिन के उतारे कपड़ों में उसे वे मिल गये। उसने एक पेंट में रख लिया और एक चेहरे पर चढ़ा लिया। उसके चेहरे पर एक गर्वित, विजित, शासित मुस्कान आ गई थी। वह ऑफिस वाला चेहरा लगा चुका था। उसने निनि को अधिकारपूर्वक देखा और गाल थपथपाकर बस स्टॉप की ओर बढ़ गया।

ऑफिस में वह अभिवादनों का उत्तर देता हुआ अपनी मेज के निकट आ गया। इस वक्त उसके चेहरे पर गंभीरता चिपकी हुई थी। वह इसे जरूरी समझता था, कार्यालय प्रमुख जो था। वह टाई की गांठ ढीली कर अपनी मेज पर बैठ गया। सामने बैठी युवा स्टेनो भी संभलकर बैठ गई और उसके निर्देशों की प्रतीक्षा करने लगी। वह उसकी ओर देख जरा-सा मुस्कराया। निनि की फूहड़ता का अहसास अक्सर उसे स्टेनों को देखकर ही होता था। वह हमेशा स्मार्ट नजर आती थी। उसे देखकर अंदाजा लगाना मुश्किल था कि

वह कभी दु:खी भी होती है। फोन की घंटी से उसे अचानक अपना ध्यान उसे मोड़ना पड़ा। स्टेनो के किसी परिचित का फोन था। उसने उसे बुलाकर रिसीवर उसकी ओर बढ़ा दिया और चुपचाप उसका चेहरा देखने लगा। उसे लगा वह भी मुखौशों को प्रयोग करती है अन्यथा हमेशा कैसे मुस्कराती रहती।

फोन समाप्त होने पर उसने पूछा :

'किसका फोन था ?'

स्टेनो ने थोड़ा सा सिर झुकाया, थोड़ा चुप रही फिर उत्तर दिया : 'बॉय फ्रेंड का।'

उसके ऑफिस वाले मुखौश पर सिकुड़नें पड़ गईं : 'यह ऑफिस है, रेस्तरां नहीं।'

वह सिर झुकाए रही। वह अंदर से कहीं खुश हो गया और मुस्कराकर उसकी उघड़ी बांह पर हाथ फिरा कर थपथपा दिया और सीट पर बैठने को कहा। उसे लगा, अब उसके लिए आसानी हो गई और उसने भरपूर नजर स्टेनों पर डाली। वह उसी की ओर देख रही थी। एकटक अपनी तरफ देखते पाकर, झेंपकर कागज पर पेन चलाने लगी। हंसा, आज या कल... कोई रुकावट नहीं।

लंच टाइम समाप्त हो चुका था और वह एक फोन की प्रतीक्षा कर रहा था। शील उसे फोन करने वाली थी। शाम का प्रोग्राम वह ही सूचित कर दिया करती थी। वह सुबह से कई बार स्टेनों को घूर चुका था। शील की पसंद भी अजीब ही होती थी। कई बार वह ऐसी हरकतें करती या प्रोग्राम बनाती कि वह हतप्रभ रह जाता। एक बार वे सड़कों पर निरुद्देश्य घूमते रहे थे। जब भी वह कहीं रुकने को कहता, वह मना कर देती।

अंत में जब वह रुकी तो वह एक श्मशान था। उसकी फर्माइश उस जगह कोलाहल बनकर गूंजने लगी थी। पर वह नहीं मानी थी। उसने कई बार कहा कि किसी होटल में चले चलते हैं। खुले आकाश के नीचे इस तरह वह पहली बार किसी के साथ सोया था। उसे हरदम भयावनी आवाजें, उल्लू की आवाजें सुनाई देती रहीं थीं। उसे अजीब सा महसूस हो रहा था। उस वक्त उसे एक नये मुखौशे की आवश्यकता महसूस हुई थी और उसने सोचा था, अब कई नये किस्म के लायेगा। तभी फोन की घंटी ने उसे आकर्षित किया। फोन शील का था। उसने शाम पांच बजे क्वालिटी में मिलने को कहा था। वह खुश हो गया था। ज्योंही उसने रिसीवर रखकर सामने देखा, स्टेनो उसे घूर रही थी। उसे लगा, जैसे वह पूछ रही हो, किसका फोन था ? यह रेस्तरां नहीं है।

ऑफिस समय खत्म होने को था। वह टायलेट में जाकर अपने को हल्का करने लगा उसे वहां काफी देर लग गई। जब वहां से लौटा सभी स्टाफ जा चुका था। स्टेनो लड़की भी मेकअप को अंतिम स्पर्श देखकर निकलने वाली थी। इस समय वह अपने को ताजादम महसूस कर रहा था। टायलेट में उसने ऑफिस वाला मुखौश उतारकर दूसरा चढ़ा लिया था एकदम स्मार्ट नजर आ रहा था। वह मुस्कराया और स्टेनो लड़की के निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। वह बेखबर अपने को संवारे जा रही थी। उसने हल्के से मेज पर दस्तक दी। स्टेनों ने चौंककर देखा, उत्सुकता उसके चेहरे पर तिर आई थी।

'आप गये नहीं, अभी ?

वह चुपचाप उसकी ओर बढ़ता रहा। उसके एकदम पास आकर रुक गया। उसके हाथ उसके गिर्द लिपट गये। और ओंठ लड़की के ओठों पर। उसे लगा, लड़की ने हल्का-सा प्रतिरोध किया था। कमरे में नयी गंध फैल गई थी। भारी सांसों की आवाज को कमरा महसूस कर रहा था। इस बार वह टायलेट से जल्दी निकल आया था।

साढ़े पांच बज चुके थे। उसे शील के मिलने की आशा कम हो चली थी वह क्वालिटी की ओर बढ़ गया। शील जा चुकी थी।

घर आकर वह बेहद उदास था। शील के न मिलने और रूठने का भय बार-बार टोंच रहा था। वह एकदम निरीह हो आया था। निनि हाथ मुंह धोकर सोने की तैयारी में थी। उसने निनि को हाथ बढ़ाकर खींच लिया। निनि तड़पकर अलग हो गई: 'ये एकाएक कभी कभी तुम्हें क्या हो जाता है, एकदम खसोटने लगते हो ?'

उसे लगा कि वह नंगा हो गया है। निनि ने मुखौश लगा रहने के बावजूद भी पहचान लिया है, कहीं वह इसी तरह तो नहीं पहचाना जा रहा है ? उसे ग्लानि के साथ आक्रोश भी महसूस हुआ उसने सोचा कहीं ऐसा तो नहीं कुछ दिन उपयोग करने के बाद मुखौश भी चेहरे बन जाते हैं अत: कल ही पूरा सेट बदल देगा और अच्छी क्वालिटी के विभिन्न वेरायटी वाला लायेगा। यह सोचकर उसने राहत की सांस ली। देखा, निनि उसी के चहरे को ध्यान से देख रही थी, उसने एक पल सोचा ओर निनि के होंठ सिप करते हुए उस पर झपट पड़ा।

- संपादक- प्रेरणा, ए-74, पैलेस आरचर्ड फेज-3, सर्वधर्म के पीछे,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) 462042,
मो.:98262 82750

■

एक पॉजिटिव थिंकर की छवि

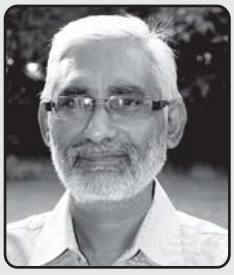

महेश दर्पण

'प्रेरणा', 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' और 'इंटेलिजेली' ऐसे सूत्र हैं जो मुझे अरुण तिवारी जैसे शख्सियत की असल पहचान देते हैं। इनमें 'प्रेरणा' का संपादन करते हुए वह तीसरे दशक में प्रवेश कर चुके हैं और अपनी तरह की एक अलग लघु पत्रिका के संपादक के रूप में साहित्य-जगत में समादृत हैं। एक कथाकार-कवि होने के बावजूद वह अपने रचनाकार को पार्श्व में और विचारक व चिंतक को आगे रखते हैं। उनके संपादक को साहित्यिक पत्रकारिता से गहरा लगाव है। इसका प्रमाण है उनके द्वारा संपादित पुस्तक 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य'। यहाँ साहित्यिक पत्रकारिता पर विमर्श करते हुए अनेक विद्वान जहाँ अपनी कहानी को ही साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य समझ बैठे नजर आते हैं वही पुस्तक के संपादक अरुण तिवारी साहित्य और पत्रकारिता को एक दूसरे का पूरक मानते हुए समूचे इस परिवेश के गुण-दोषों की चर्चा करते दिखाई देते हैं।

पत्रकारिता में नकारात्मकता का चलन ही नहीं, बदलते परिदृश्य में भाषा पर विश्वसनीयता का संकट भी देखते हुए अरुण जी हमें पत्रकारिता के इतिहास की याद दिलाना नहीं भूलते हैं जहाँ कभी वह एक मिशन हुआ करती थी। वह यह जरूरी मानते हैं कि पत्रिका में साहित्य से इतर सामग्री भी प्रकाशित की जानी चाहिए। इसका श्रेय भी वह स्वयं लेने के बजाय यह बताना नहीं भूलते कि इसकी 'प्रेरणा' उन्हें सुधीर विद्यार्थी और जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी से मिली। इसका सार्थक प्रमाण उन्होंने राजेश जोशी के साथ हुई एक बातचीत में 'नोटा' पर विचार के रूप में प्रस्तुत किया। आज के प्रजातंत्र में इसका कितना महत्व है यह विवेकीजन अच्छी तरह से जानते हैं। कल्पना कीजिए यदि यह मान्य हो जाता है कि बारह वर्ष से बड़े स्वेच्छा से शारीरिक संबंध बना सकते हैं तो आज क्या हालत होती ! 'अपनी बात' में 'प्रेरणा' ने यह गंभीर मुद्दा उठाकर ध्यान आकर्षित किया। इसके बाद ही संसद ने इस मामले में उम्र की सीमा अठारह वर्ष की। यह पत्रकार और पत्रकारिता की शक्ति को पहचानना है, जिनके जरिए पहले पहल बुनियादी मुद्दे उठाए जाते हैं और फिर क्रमश: एक जनमत बनने लगता है।

बहरहाल, इस पुस्तक में अनेक आलेख ऐसे विद्वानों के भी हैं जिनसे पत्रकारिता का बूझा-अनबूझा इतिहास भी खुला है। स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात की पत्र-पत्रिकाओं पर चर्चा करते हुए अनेक विद्वानों ने सार्थक पत्रकारिता को रेखांकित किया है। यह बताया है कि आखिर क्यों पत्रकारिता एक समय में सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन की तरह थी। उन तत्वों की पहचान कराई है जिनसे साहित्यिक पत्रकारिता की एक उज्जवल परंपरा बनी है। अच्छा लगा यह देखकर की लघु पत्रिकाओं के संपादकों द्वारा उठाए गए काबिले तारीफ कदम और जोखिम की भूमिका के महत्व का अंकन गंभीरता से किया गया। यह भी कहने से नहीं बचा गया कि क्यों लघु पत्रिकाओं ने आखिर एक आंदोलन की शक्ल अख्तियार नहीं की ? जोखिम उठाने वाला पत्रकार अकेला क्यों पड़ जाता है ?

'द स्क्रूटनी' और 'सरस्वती' की समीचीन तुलना ही नहीं, आनंद प्रकाश के 'जनरल ऑफ ड्रामा स्टडीज' का उल्लेख भी लंबे समय बाद किस पुस्तक में नजर आया। साहित्यिक पत्रकारिता का कृष्ण पक्ष हो या उसमें से प्रतिरोध की पत्रकारिता की खोज यह पुस्तक जरूरी तथ्य रखते-रखते भी कहीं-कहीं जबरदस्त चूक करती भी नजर आती है जैसे पृष्ठ 117 पर कहा गया कि 'कमलेश्वर' ने 'सारिका' से जिस समानांतर कहानी आंदोलन की शुरुआत की थी, उसी को आगे बढ़ाने के लिए भैरव प्रसाद गुप्त ने 'कहानी' का आरंभ किया और फिर 'नई कहानियाँ' सामने आई। यह इतिहास की गलत प्रस्तुति है। इसे अगले संस्करण में दुरुस्त किया जा सकता है।

यह पुस्तक सही नब्ज़ उस पर हाथ रखते हुए बड़ी जिम्मेदारी से यह भी बताती है कि बाजारवाद की ताकत है इस कदर हावी हो चुकी है कि अब पत्रकारिता की बागडोर संपन्न और शक्तिशाली घरानों और उपक्रमों के हाथों में आ गई है। अखबार और पत्रिकाएं प्रोडक्ट बन गई है। बाजार ने शब्दों को अर्थहीन कर डाला

है, भाषा प्रदूषित हो रही है।

इस विमर्श के भागीदार 'प्रेरणा' के माध्यम से पहले और विचाराधीन पुस्तक के सहभागी बाद में बने मनमोहन सरल, प्रदीप पंत, रमेश दवे, केवल गोस्वामी, सूर्यकांत नागर, बलराम, प्रो. सेवाराम त्रिपाठी, प्रांजल घर, शशिभूषण द्विवेदी, हेतु भारद्वाज, सुरेश पंडित, सुरेश उजाला और मुकेश वर्मा।

सत्ता स्वदेशी हो या विदेशी उसे अपनी आलोचना बर्दाश्त नहीं होती किंतु साहित्यिक पत्रकारिता के विविध रूप समय-समय पर प्रतिरोध का स्वर उठाते रहते हैं। इस दृष्टि से विविध आलेखकारों ने उदाहरण सहित अपनी बात स्पष्ट की है। साहित्य और पत्रकारिता के अन्तरसंबंधों को खोला है। इस कोशिश में साहित्यिक पत्रकारिता की परंपरा और विकास के विभिन्न सोपान भी खुलते चले हैं। इनमें अच्छी बात यह है कि अरुण तिवारी का उदार संपादक हर विचार को जगह देता नजर आता है। यही कारण है कि यहाँ मीडिया पर पूंजीवादी आधिपत्य के प्रभावों के चलते खत्म होती संपादक परंपरा और प्रबंधकों की तिकड़मों की खुलकर आलोचना और व्यवसायिक रवैये की भरसक निंदा मौजूद है। यह बताने और जताने की गंभीर कोशिश यहाँ है कि साहित्यिक पत्रकारिता के घटते जा रहे स्पेस के कारण देश की नागरिकता और संस्कृति को कितना नुकसान हो रहा है। यही नहीं साहित्यिक पत्रकारिता का इस दौर का कृष्ण पक्ष उजागर करने से भी लेखक बचे नहीं है। इस दृष्टि से एक जैसे प्रश्नों से अनेक साक्षात्कार परिचर्चा जैसे बन पड़े हैं जरूर, पर उनमें अनेक में बड़ी कायदे की बात सामने है। बात तो नागरिक पत्रकारिता तक चली आई है, पर देखना यह भी जरूरी है कि आज का मीडिया समय-समय पर कैसे उसका इस्तेमाल अपने लिए कर ले जाता है। पत्रकारिता व्यवसायिक पत्र की हो या लघु पत्रिका की, दृष्टि संपन्न संपादक जरूरी है। निकट अतीत के उदाहरणों से भी यह जाहिर हुआ है। मिशन से व्यवसाय में परिवर्तित हो रही पत्रकारिता के इस खराब समय में पत्र-पत्रिकाएं समय का स्वर तभी बन सकती हैं जब हर तरह का जोखिम उठाने का माद्दा फिर से जगह बना ले। और ऐसा तभी संभव है जब जन-मन उनमें अपना भी होना समझे।

यह सब कह पाने का साहस इसलिए कर पा रहा हूं कि मेरी साहित्यिक पत्रकारिता की शुरुआत लघु पत्रिका से ही हुई थी और फिर देश के दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में लंबा समय देने के बाद मैंने पाया कि एक अच्छा संपादक चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है। पर इसके लिए सबसे बड़ा जोखिम उसे व्यक्तिगत स्तर पर ही उठाने को तैयार रहना होगा। जहाँ-जहाँ विचार प्रमुख होगा, वहाँ-वहाँ जोखिम स्वत: उठ खड़ा होगा, क्योंकि प्रतिरोध सार्थक विचार का मूल है।

यदि आप अरुण तिवारी के प्रकाशन देखना चाहें तो 'सृजन का समकालीन परिदृश्य' जैसी उनकी पुस्तक देख सकते हैं जिसमें वे अपने सहयोगियों के साथ मिलकर अपने समय के चुनिन्दा आलोचक, चिंतक, कथाकार-संपादक, कवि और संगठनकर्ता से एक खुला संवाद करते नजर आते हैं। यहाँ उनकी जिज्ञासाएँ है सहज किंतु जरूरी हैं, जिनमें आने वाले उत्तरों से एक समूचा समय खुलता है। वहाँ चिंताएं छोटी नहीं एक बड़े कालखंड और समाज की है। अच्छी बात यह है कि उनके ये संवाद पूर्व नियोजित नहीं है। अनौपचारिक और तर्कशील।

अपने समय का एक जागरूक विवेकी और सहज संपादक मानता हूं मैं तिवारी जी को। उनकी पुस्तक 'अपनी बात' में 'प्रेरणा' के संपादकीय पढ़कर इसीलिए मुझे अच्छा लगा। वह मुक्तिबोध की पंक्तियों (कोशिश करो/कोशिश करो/जीने की/जमीन में गड़कर भी) से इस कदर प्रभावित हैं कि वे उन्हें बार-बार स्मरण आती है। उन्हें मुक्तिबोध की अपने प्रति तटस्थता प्रभावित करती है तो उन पर प्रायोजित चर्चाएं प्राय: स्टेट। मुक्तिबोध की यथार्थवादी दृष्टि स्वयं को प्रभावों से बचा कर रखना उनके द्वारा बिंबो और प्रतीकों का इस्तेमाल उनका अपनी कहानियों में अन्यतम होना जीवन को भोग की वस्तु नहीं बल्कि एक लक्ष्यपूर्ण गति, जो हर क्षण का मूल्य आंकती चले, अपनी सृजन दृष्टि एवं रचना प्रक्रिया पर अरुण तिवारी कुछ इस तरह विचार करते हैं कि वह जीवन की वास्तविकता के असल लेखक के रूप में सहजता से प्रतिष्ठित हो जाते हैं।

दरअसल इस संपादक कवि की फितरत चीजों को करीब से समझने की है। इसके लिए वह समय-समय पर अनेक बहसें 'प्रेरणा' में संयोजित करते हैं। ऐसी एक महत्वपूर्ण बहस है 'हिन्दी कविता का बदलता चेहरा'। खुद उनकी यह मान्यता है कि 'यह मिथ भी ना पाला जाए कि जो कविता एक बार पढ़ने में समझ में आ जाए, वह कविता ही क्या या कविता को बार-बार पढ़ने पर समझ में आने पर ही वह अच्छी और स्तरीय है या कविता बुद्धिजीवियों के लिए ही लिखी जाती है।'

कहानी को लेकर भी उनके उनकी सोच में पाठक का प्रभावित होना महत्वपूर्ण है। वह तेजी से हो रहे परिवर्तनों का कहानी पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक मानते हैं किंतु उनकी दृष्टि में वही रचना सराहनीय रही जिसमें प्रभावपूर्ण कथ्य था। जो पाठक को प्रभावित कर सकी। उसके मन-मस्तिष्क पर उतर सकी। वह एक सरल

व्यक्ति की तरह अपने लेखकीय अनुभवों को साझा करने से नहीं हिचकते। मनमोहिनी द्वारा भेजे गए पत्र की चर्चा करते हुए बताते हैं कि कविता में फैलाव नहीं कसावट की मांग जरूरी बताते हुए उन्होंने कहा कि 'अच्छा हो, आप कहानी लिखें।' और फिर कहानी की 'लहर' से स्वीकृति मिलने पर कैसा लगा, या इस सब में देवताले जी की भूमिका का खुल कर उल्लेख करना उनके जेनुइन होने का प्रमाण है ।

अरुण तिवारी का संपादक व्यक्तित्व ऐसा है, जिसमें दूसरों के लिए पर्याप्त स्थान है। विविध रचनाकारों व आलोचकों पर केन्द्रित 'प्रेरणा' के अंक इसके प्रमाण हैं। विधा केन्द्रित अंकों में ग़ज़ल अंक तो उल्लेखनीय है ही, पर्यावरण पर भी वह एक समूचा अंक दे चुके हैं। यही नहीं वह मानते हैं कि संवेदना के स्तर पर ग़ज़ल कविता से आगे खड़ी है। उन्हें इस विधा में संघर्ष और प्रतिरोध का स्वर प्रभावित करता है।

'अपनी बात' में संग्रहित चयनित संपादकीयों के अंश यह बताते हैं कि 'प्रेरणा' का संपादक टीम वर्क में यकीन करते हुए बाहर से मिले सुझावों व मार्गदर्शन पर गंभीरतापूर्वक अमल करता है। उसे सार्वजनिक रूप से जाहिर करता है और आभार भी ज्ञापित करता है। यह खास किस्म की जेंटलमैनशिप अब विलुप्तप्राय है।

आधोपांत 'अपनी बात' पढ़ते हुए स्पष्ट हो जाता है कि 'प्रेरणा' के संपादक की चिंताएँ असीमित है। उनमें एक ओर टीवी चैनलों के परोसे पर बात की गई है तो दूसरी ओर अपसंस्कृति के प्रसार और प्रभाव पर, वह स्त्री विमर्श पर चर्चा करता है तो किशोरवय में गर्भपात पर भी और विज्ञापन में स्त्री के साथ ही प्रिंट मीडिया पर गहराते संकट पर भी। अच्छी बात यह है कि वह हवाई बयानबाजी की जगह तर्क और प्रमाण जुटाते हुए अपनी बात कहते हैं। उनके विचार में राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान के लिए जगह है तो महंगाई, भ्रष्टाचार, शिक्षा प्रणाली, सामाजिक व्यवस्था का विखंडन, पीढ़ियों के बीच टकराव, वरिष्ठ नागरिकों के संकट, लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा, विविध प्रकार के जागरूकता अभियानों के साथ कैंसर पर चर्चा, जीएसटी, समय की बड़ी सभी चिंताएँ भी मौजूद हैं। यहाँ तक कि वह चिंतित हैं कि आज का मनुष्य आनंद की अनुभूति को महसूस ही नहीं कर पा रहा है। वह आश्चर्य सही व्यक्त करते हैं कि जो मनुष्य के अंदर है उसके लिए संसाधन खोजे जा रहे हैं, बनाए जा रहे हैं। वह आनंद पाठ्यक्रम की वकालत करते हुए समाज में सकारात्मकता के प्रसार की बात करते हैं।

एक तरह से अरुण तिवारी की छवि मेरे मन में एक पॉजिटिव थिंकर की बनती है जिसकी आज के समय में बड़ी जरूरत है। उनके सोचने का तरीका इतना उम्दा है कि वह अपने विरोधी और दुश्मन को भी कैंसर न होने की कामना करते हैं।

– लेखक वरिष्ठ कथाकार हैं।
सी–3/51, गली नं. 3, नियर ज्योति स्कूल, सादतपुर एक्सटेंशन
दिल्ली– 110094, मो.: 9013266057

साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य

साहित्यिक पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं का विशद विश्लेषण

अरुण तिवारी

पृष्ठ : 360
मूल्य : 370/–
प्रकाशक : प्रेरणा पब्लिकेशन, देशबंधु भवन, प्रथमतल,
26–बी, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन–1,
भोपाल (म.प्र.) 462011, टेलीफोन : 0755–4940788
ई–मेल : prernapublicationbpl@gmail.com
(शोधार्थियों के लिए 50% छूट)

आलेख

साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य

अरुण तिवारी

साहित्यिक पत्रकारिता इतना महत्वपूर्ण विषय है, इस पर जितनी भी चर्चा की जाए कम है क्योंकि हर चर्चा में से कुछ न कुछ नया निकल कर आ रहा है जो निश्चित ही आग चल कर थोड़ी बहुत दिशा दे सकेगा। साहित्य और पत्रकारिता दो अलग अलग नहीं है बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।

वैसे तो साहित्य का शाब्दिक अर्थ विचारों को उनके मूलभूत और मूल भाव के साथ लिपिबद्ध करना है चाहे वह गद्यात्मक हो या पद्यात्मक रचना के रूप में हो। यह जिस किसी भी भाषा में हो, उस भाषा का साहित्य कहा जाता है, जैसे हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, फ्रेंच साहित्य आदि तथा जिस विषय को लेकर विचारों को लिपिबद्ध किया जाता है उसके आगे वह विशेषण के रूप में आ जाता है जैसे धार्मिक साहित्य, बाल साहित्य आदि। साहित्य को मुख्यत: कहानी, कविता, लेख निबंध, आलोचना आदि के माध्यम से शिक्षा में सम्मिलित किया गया और आगे चलकर यही उसकी पहचान बन गई कि साहित्य सिर्फ उक्त स्वरूप तक ही सीमित है, वस्तुत: ऐसा नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व आजादी से मुक्ति पाने के लिए जो विचार लोगों तक समाचार पत्रों या अन्य माध्यमों से पहुंचे उसे क्रांतिकारी साहित्य कहा गया या कोई भी संगठन अपने को सुदृढ़ करने के लिए या उसकी उपादेयता और प्रमाणिकता बताने के लिए उससे संबंधित विचार, पर्चों, पुस्तिकओं आदि के माध्यम से प्रचारित करते हैं, वह उस संगठन का साहित्य कहा जाता है जैसे नक्सलवादी साहित्य, अलगाववादी साहित्य, आतंकवादी साहित्य आदि। यहां तक कि किसी भी उत्पाद का ब्यौरा बताने या उसके प्रसार के लिए जो विवरण पत्र साथ में रहता है, वह भी उस उत्पाद के लिटरेचर या साहित्य के रूप में जाना जाता है। इस तरह अन्य कई उदाहरण हैं जो यह प्रतिपादित करते हैं कि साहित्य की सीमा कहानी, कविता तक ही नहीं बल्कि उसकी सीमा अनंत है और हमारे दैनिक जीवन का अंग है। यदि इसको अंग्रेजी भाषा के संदर्भ में देखे तो लिटलेचर शब्द लिटरेसी से आया है अर्थात लिखने पढ़ने की योग्यता या ज्ञान का ही व्यापक रूप लिटरेचर बना।

जहां तक पत्रकारिता शब्द का आशय है, दैनंदिन जीवन का लेखा जोखा प्रस्तुत करना। यदि इसको अंग्रेजी भाषा के संदर्भ में देखें तो पत्रकारिता या जर्नलिज्म शब्द जनरल से आया है अर्थात प्रतिदिन का लेखा जोखा, डायरी लिखना आदि का व्यापक रूप जर्नलिज्म बना। अपने देश में इसका इतिहास लगभग दो सौ वर्ष पुराना है और इसने स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में महत्पूर्ण भूमिका निभाई और उसमें विचारों की ही प्रमुख भूमिका रही, अर्थात साहित्य और पत्रकारिता आपस में विलीन होते चले गये, यही तो साहित्यिक पत्रकारिता का आशय है, इसमें मूल विभेद किया जा सकता है कि साहित्य के साथ जहां संवेदना, भावना जुड़ जाती है, वहीं पत्रकारिता के साथ यथार्थ, पर यह फर्क भी उनको अलग नहीं करता अपितु जोड़ता है और यही पत्रकारिता की भाषा, उसकी पहुंच में परिलक्षित होता है।

लगभग 30-35 वर्षों पूर्व टेलीविजन चलन में आया और पत्रकारिता को भी अलग-अलग प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के रूप में जाना जाने लगा जो मुद्रित माध्यम से आया वह प्रिंट मीडिया कहलाया, समाचार पत्र-पत्रिकाएं आदि इसी के तहत आये तथा जो टेलीविजन के माध्यम से आया, वह इलेक्ट्रानिक मीडिया अर्थात प्रिंट या इलेक्ट्रानिक मीडिया माध्यम या साधन थे पर अब प्रचलन में आते-आते मीडिया शब्द पत्रकारिता शब्द का पर्याय बन गया है जिस तरह जब सिर्फ प्रिंट मीडिया था तो समाचार पत्र पत्रिकाएं प्रेस में मुंद्रित होते थे, तो प्रेस शब्द ही पत्रकारिता के पर्याय के रूप में अत्याधिक प्रचलन में रहा, आज भी है पर अब मीडिया शब्द अधिक प्रचलन में आ रहा है।

माध्यम में भले ही अंतर आया जो परंतु उसे दिखाने के साथ-साथ अभिव्यक्त करने के लिए दृष्टिकोण और भाषा की आवश्यकता होती है अत: यह हिंदी के हित के लिए ही उपयोगी नहीं है बल्कि इसमें साहित्यिक पत्रकारिता के लिए भी असीम

संभावनाएं हैं। बशर्ते इसका उचित उपयोग किया जाए।

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है और है भी, यथार्थ में वही सब कुछ साहित्य में अर्थात कहानी, कविता, लेख में समाज में घटित हो रही घटनाओं को उनकी मूलभूत संवेदनाओं के साथ आता है पर अब क्या आज के इस समय में साहित्य अप्रासांगिक होता जा रहा है कि उसको अधिकांश द्वारा महत्व ही नहीं दिया जा रहा है। बाजारवाद के इस समय में जो बिकता है, वही चलता है, इस आधार पर साहित्य की उपादेयता आंकी जा रही है, इस तरह के कई और मुद्दों पर इस पुस्तक में हमारे साहित्य मीडिया और लघुपत्रिकाओं से जुड़े महत्वपूर्ण रचनाकारों ने आलेख, संवाद बातचीत के माध्यम से चर्चा की है और साहित्यिक पत्रकारिता को परिभाषित किया है।

साहित्य और पत्रकारिता एक दूसरे के पूरक हैं। मानव जीवन और प्रकृति से संबंधित स्थितियां,घटनाएं साहित्य का प्रार्दुभाव करती हैं जिनसे कहानी, कविता का सृजन होता है,वहीं पत्रकारिता द्वारा वे समाचार का जनक बनती हैं। जहां साहित्य में संवेदना होती है, एक अदृश्य तारतम्य होता है, वहीं समाचार में सपाबयानी होती है, वस्तुस्थिति को जस का तस प्रस्तुत करने की बाध्यता होती है परन्तु यदि संपादक का नजरिया साहित्यिक है तो वह उस समाचार की भाषा और उसके शीर्षक से परिलक्षित होता है, तथा पत्र-पत्रिकाओं की सामग्री में भी दिखाई देता है। पहले एक कहावत प्रचलित थी कि अच्छा साहित्यकार,अच्छा पत्रकार हो सकता है पर अच्छा पत्रकार,अच्छा साहित्यकार नहीं हो सकता। उस कहावत की प्रासंगकिता आज के परिदृश्य में और बढ़ गई है क्योंकि आज का संपादक, सामग्री इस दृष्टि से देना चाहता है कि पत्र-पत्रिका की प्रसार संख्या बढ़े,लोगों को पढ़ने में रोचक, चटपटा लगे और यही कारण है, कि पत्र-पत्रिकाओं में रंग बिरंगे फोटो,फैशन,फिल्म आदि से संबंधित सामग्री बढ़ गई है, दैनिक समाचार पत्रों में तो जहां ये सप्ताह में एक बार आते थे प्राय: अब प्रतिदिन होते हैं।

इधर की पत्रकारिता में नकारात्मकता के चलन में भी वृद्धि हुई है। समाचार, समाचारों की भाषा, प्रस्तुतीकरण,आदि नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया इस प्रवृत्ति को अत्याधिक बढ़ावा दे रहा है। समाचारों में सकारात्मक समाचार, सफलता के समाचार,ग्रामीण एवं मूलभूत समस्याएं , अपनी माटी से जुड़े विकास से संबंधित समाचारों में कमी आती जा रही है। सनसनीखेज समाचार और भी सनसनीखेज बनाकर तथा फूहड़ हास्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा रहे हैं। धीरे धीरे रूचियों में परिवर्तन किया जा रहा है, जीवनशैली को बदलने का प्रयास किया जा रहा है,आवश्यकताओं की प्राथमिकता का क्रम बदलने के रास्ते तलाशे जा रहे हैं। ये सब बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अपने उत्पाद खपाने की सुनियोजित रणनीति हो सकती है जिसमें मीडिया को बेतहाशा विज्ञापन और आर्थिक मदद देकर अपने अनुसार उपयोग किया जा रहा है या विदेशी शक्तियों द्वारा सोच बदलने के प्रयास भी हो सकते हैं।

बदलते परिदृश्य में शब्दों के अर्थ और परिभाषा बदल रही है। शब्दकोष में दिये गये उनके शाब्दिक मायने संशय उत्पन्न करने लगे हैं क्योंकि जिस ढंग से उनका प्रयोग हो रहा है, वे प्रभावित करने की बजाय नये अर्थ दे रहे हैं और इन सबसे निश्चित रूप से भाषा प्रभावित हो रही है। पूर्व में इन शब्दों के प्रयोग से जो प्रभाव उत्पन्न होता था, उसकी जगह विश्वसनीयता का संकट पैदा हो रहा है जो पत्रकारिता की पहली और आवश्यक शर्त्त है। अब तो पत्रकारिता शब्द के आगे ही प्रश्नचिन्ह लगने लगे हैं। एक ऐसा माध्यम जो जनता की दशा को बयान करता हो,उसे दिशा देता हो जब वो ही अपनी विश्वसनीयता खोने लगे तो उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है।

पत्रकारिता का इतिहास अपने देश में लगभग दो सौ वर्ष पुराना है लेकिन उसकी असली उपादेयता उसने स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में सिद्ध की और महत्पूर्ण योगदान दिया। उस समय पत्रकारिता एक मिशन के रूप में उभरी,जुनून के रूप में चली और लोगों के सिर पर चढ़कर बोली और निश्चित ही इसका श्रेय उस समय के समाचार पत्रों के मालिकों और सम्पादकों को जाता है जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों में जागृति की भावना पैदा की, गुलामी से मुक्ति पाने का जोश पैदा किया,विभिन्न प्रकार के खतरे उठाकर एक पवित्र लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। सोद्देश्य पत्रकारिता की यह अनूठी और अद्भुत मिसाल है। हालांकि यह भी कहा जाता है कि उस समय के व्यवसायी व उद्योगपति ब्रिटिश हुकुमत को हटाना चाहते थे, उनकी सोच यह थी कि देश स्वतंत्र होने पर अपनी ही हुकुमत आने पर उन्हें अपने व्यवसाय व उद्योग धंधों को अपने ढंग से आगे बढ़ाने के अवसर मिलेंगे। पत्रकारिता के बारे भी यही सोच हो सकती है। इन्हीं सब कारणों से हो सकता है उनका भरपूर सहयोग पत्रकारिता को मिला। बहरहाल वास्तविकता जो भी हो परन्तु वर्तमान में पत्रकारिता चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया, पूरी तरह, अच्छा खासा बड़ा व्यवसाय बन

चुकी है और इस व्यवसाय को संचालित करने वालों का नामकरण बदलते समय के साथ मीडिया हाउस हो चुका है।

साहित्य समाज का दर्पण है तो पत्रकारिता ने भी समाज की कुरीतियां मिटाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है, समाज को जागरूक बनाने में, दिशा देने में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। शायद इसका एक कारण यह भी था कि उन दिनों साहित्यकार ही पत्रकार हुआ करते थे और वे पत्रकारिता को एक अनुष्ठान मानते थे, पत्रकारिता को उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और उसकी सफलता सबके सामने है पर जिस तरह समय के साथ साथ एक अच्छी चीज में बुराईयां आ जाती हैं,वो सब इसके साथ भी होता गया। वो हथियार जिसने गुलामी से मुक्ति पाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, वही हथियार धीरे धीरे अपना प्रभाव बनाने में, दबाव निर्मित करने में, स्वार्थसिद्धि में और पैसा कमाने में उपयोग किये जाने लगे और उसका व्यापक रूप अब हमारे सामने है। पत्रकारिता के माध्यम चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया, बड़े-बड़े व्यवासायिक घरानों जिन्हें अब कारपोरेट हाउस कहा जाने लगा है, के एक व्यवसाय के रूप में ही उभर कर नहीं आ रहे हैं बल्कि वह सब कर रहे हैं जिससे उनके हितों को लाभ पहुंचता हो और साहित्यकार जो कभी इनके महत्वपूर्ण अंग हुआ करते थे, परिदृश्य से विलुप्त होते जा रहे हैं और साहित्य तो इनके लिए अछूत सा हो गया है। कभी कभी लगता है कि आज की पत्रकारिता साहित्य से इतनी भयाक्रांत क्यों है ? क्या आज भी साहित्य हथियार बन सकता है जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के महासंग्राम में पत्रकारिता के साथ साथ एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी एवं सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने में तथा सामाजिक उत्थान में अग्रणी रहा था। साहित्य तो परमाणु बम से भी अधिक प्रभावशाली हथियार हो सकता है क्योंकि परमाणु बम से एक निर्धारित क्षेत्र ही प्रभावित होता है परन्तु साहित्य से इन बम को बनाने वाले मस्तिष्क के विचार प्रभावित होते हैं जो सम्प्रेषित होते रहते हैं और वे किसी भी शोध के लिए,खोज के लिए,निर्माण में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते हैं, यदि इनको सुनियोजित ढंग से प्रचारित,प्रसारित किया जाय और लोगों के मस्तिष्क में ठीक ढंग से उतारा जाय, वैचारिक क्रांति का आधार बनते हैं। विश्व में इस तरह के उदाहरण हैं। नक्सलवादीअपने संगठन को सुदृढ़ करने और नये लोगों को उसमें जोड़ने के लिए इससे संबंधित साहित्य का सफल उपयोग करते हैं जिसे नक्सली साहित्य की संज्ञा दी जाती है। इसी तरह आतंकवादी संगठन भी अपनी गतिविधियों को बढ़ाने, संगठन फैलाव के लिए तथा लोगों को गुमराह करने के लिए संगठन से संबंधित साहित्य का सहारा ले रहे हैं जिसे आतंकी साहित्य कहा जाता है। साहित्य ही नहीं साहित्य शब्द भी विभिन्न रूपों में मानवजीवन का अंग है जैसे किसी भी उत्पाद, दवा आदि के साथ के विवरण पत्रक को भी सामान्यतया लिटरेचर कहा जाता है जिससे उस वस्तुविशेष की विशेषता परखी जाती है। साहित्य जब इस तरह रचा बसा है तो उसे कैसे अलग किया जा सकता है।

आज स्थिति यह है कि पत्रकारिता विश्वविद्यालयों में संचालित होने वाले पाठ्यक्रम में साहित्य,भाषा,सामाजिक विकास और दायित्व, ग्रामीण समस्याएं और विकास,पर्यावरण,भारतीय संस्कृति,नैतिक मूल्य संबंधी शिक्षा के विषय सम्मिलित नहीं हैं। वे विषय जो आदमी को आदमी से जोड़ सकें, समाज से जुड़ने में सहायक हों,सामाजिक प्रतिबद्धता की बात करते हों,नहीं पढ़ाये जाते। पत्रकारिता विश्वविद्यालय के एक वरिष्ठ से अनौपचारिक चर्चा के दौरान ज्ञात हुआ कि चाहकर भी उन विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं किया जा सकता क्योंकि वे विषय ही प्रमुखता से रखे जाते हैं जिनसे विद्यार्थियों का प्लेसमेंट हो सके। यदि प्लेसमेंट नहीं हुआ तो पढ़ने कौन आएगा जिससे प्रतिष्ठान की आर्थिक स्थिति पर तो प्रभाव पड़ेगा ही, उसकी प्रतिष्ठा भी प्रभावित होगी अत: बहुत कुछ मीडिया हाउस के अनुसार चलना पड़ता है। मेरे स्पष्ट पूंछने पर कि ये विषय विस्तृत रूप में न सही,सामान्य रूप से तो सम्मिलित किये जा सकते हैं। उनके अनुसार साहित्य तो किसी भी रूप में नहीं, इससे आगे बताने में वे सकुचाये। मतलब साफ है कि या तो इनको साहित्य से खतरा है या साहित्य इनके लिए बेकार की चीज है या साहित्य इनकी दृष्टि में बिकाऊ नहीं है। जो भी हो,साहित्य आज की पत्रकारिता चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया द्वारा पूरी तरह से उपेक्षित कर दिया गया है, वजहें कई हो सकती है,तलाश कर भी शायद कोई फायदा हो ? इन पत्रकारिता विश्वविद्यालयों से जो विद्यार्थी पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे आएगें उनसे साहित्य की अपेक्षा कैसे की जा सकती है, और वे सामाजिक दायित्वों के प्रति कितना सचेत हो सकेंगे ? भले ही वे अच्छे प्रोफेशनल्स हों, नया तकनीकी ज्ञान रखते हों पर वे भाषा और संवेदना से परे ही रहेंगे ? वे सिर्फ और सिर्फ अपने व्यवसाय को ऊंचाई पर पहुंचता हुआ देखना चाहेगें,भले ही वे रास्ते कैसे भी हों।

पुराने समय में व्यवसायी या सम्पन्न व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार धर्मशालाएं बनवाते थे, कुएं -बावड़ी खुदवाते थे,धर्मार्थ औषधालय खोलते थे,वाचनालयों/पुस्तकालयों को आर्थिक मदद

करते थे,यह सब वे समाज के हित में करते थे और इसे समाज सेवा का नाम दिया जाता था क्योंकि इन सबसे वे किसी भी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं करते थे बल्कि समाज के वर्गविशेष की सहायता इस ढंग से करते थे कि उनके स्वाभिमान को ठेस नहीं लगे। पचास-साठ के दशक में कुछ व्यवसायिक घरानों ने कुछ और आगे बढ़कर साहित्य सेवा की ओर कदम बढ़ाये और कुछ विशुद्ध साहित्यिक पत्रिकाएं जैसे ज्ञानोदय,कल्पना,माध्यम आदि का प्रकाशन आरंभ हुआ। इन पत्रिकाओं ने साहित्यिक जगत मेंअपनी अमिट छाप छोड़ी, आज भी इनका स्मरण किया जाता है। इन पत्रिकाओं के निकालने का उद्देश्य उस समय व्यवसायिक तो बिल्कुल नहीं दिखता था। इन पत्रिकाओं के बीच एक साहित्यिक पत्रिका 'लहर' भी अत्याधिक चर्चित रही जो एक दम्पत्ति प्रकाश जैन एवं मनमोहिनी जैन द्वारा निजी बूते पर संचालित की जाती थी। कुछ और पत्रिकाएं जैसे धर्मयुग,साप्ताहिक हिन्दुस्तान ,सारिका,कादम्बिनी, नवनीत आदि भी निकलीं। ये पत्रिकाएं व्यवसायिक स्तर पर निकाली गईं और इन्होंने अच्छा व्यवसाय ही नहीं किया बल्कि साहित्य को भी भरपूर स्थान दिया। ये पत्रिकाएं विशेषकर धर्मयुग,साप्ताहिक हिन्दुस्तान तो उस समय के प्रत्येक पढ़े लिखे व्यक्ति को आवश्यक लगने लगे थे क्योंकि इनमें राजनीति के साथ साथ,समाज से जुड़े हर प्रकार के स्तंभ होते थे। कुछ समय उपरांत दिनमान और रविवार जैसी पत्रिकाएं भी निकलीं,उनको प्रसिद्धि तो बहुत मिली पर उनका जीवनकाल अपेक्षाकृत कम रहा हालांकि ये पत्रिकाएं भी अपने समय की चर्चित पत्रिकाएं थीं और इनमें भी साहित्य को अच्छा स्थान दिया जाता था! उपरोक्त पत्रिकाओं के सम्पादक प्रतिष्ठित साहित्यकार रहे। उनकी सम्पादकीय दृष्टि विलक्षण थी। इन पत्रिकाओं में प्रमुख रूप से धर्मवीर भारती,मनोहरश्याम जोशी,अज्ञेय,रघुवीर सहाय,कमलेश्वर,कन्हैयालाल नंदन,सर्वेश्वरदयाल सक्सेना,सुरेन्द्रप्रताप सिंह,मृणाल पाण्डे जैसे यशस्वी साहित्यकार सम्पादक रहे हैं। क्या आज के समय में भी व्यवसायी,व्यावसायिक घराने या कारपोरेट या मीडिया हाउस साहित्य,समाज के लिए इतना नहीं कर सकते कि साहित्य को व्यवसाय का अंग न मान ,सेवा मानकर अपने लाभ में से थोड़ा सा अंश उपरोक्त तरह की पत्रिकाएं निकालने में नहीं कर सकते या विद्यमान पत्रिकाओं की नि:स्वार्थ भाव से मदद नहीं कर सकते।

हालांकि साठ सत्तर के दशक में इन पत्रिकाओं को व्यावसायिक पत्रिकाएं मानकर इनके विरूद्ध अभियान चलाया गया क्योंकि इन्हें साहित्यिक पत्रिकाएं नहीं माना गया। उस समय यहां तक माहौल बना कि जो रचनाकार धर्मयुग,साप्ताहिक हिन्दुस्तान में छपेगा,लघु/साहित्यिक पत्रिकाएं उनका बहिष्कार करेंगी,परन्तु यह संभव नहीं हो पाया पर 'लघु बनाम व्यवसायिक पत्रिकाओं' की चर्चा खूब रही और जब व्यवसायिक पत्रिकाओं से साहित्य पूरी तरह अदृश्य होता जा रहा है, तब भी चर्चा है कि इनमें साहित्य को स्थान नहीं दिया जा रहा है।

कुछ दैनिक समाचार पत्रों में अभी भी साहित्यिक, साप्ताहिक परिशिष्ट,छमाही, वार्षिक परिशिष्ट/पत्रिका आ रहे हैं जिसमें दैनिक जनसत्ता, दैनिक जागरण, पत्रिका, छपते छपते आदि प्रमुख हैं। इनके सम्पादक ओमथानवी,राजेन्द्र राव,गुलाब चंद्र कोठारी, शैलेन्द्र,विजयशंकर विकुज अच्छे साहित्यकार हैं।

कुछ हिन्दी समाचार पत्रों में चलन बढ़ा है कि कुछ पृष्ठ अंग्रेजी में दिये जा रहे हैं, परन्तु अंग्रेजी के समाचार पत्रों में हिन्दी के पृष्ठ नहीं दिये जा रहे हैं। हिन्दी के समाचार पत्रों में अंग्रेजी पृष्ठ दिये जाने की मानसिकता के पीछे शायद यह कारण हो सकता है कि अंग्रेजीदां लोग भी हिन्दी समाचार पत्र को पढ़ें। यह सोच इस का परिचायक है कि अब हमें अपनी हिंदीभाषा पर इतना विश्वास नहीं रहा है कि वह अकेली पढ़ी जा सकेगी। हिन्दी भाषा में भी अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग अधिकता से होने लगा है जबकि उन शब्दों के हिन्दी में भी अपेक्षाकृत सहज और सरल विकल्प हैं। ऐसा नहीं है कि हिन्दी में अंग्रेजी के शब्दों का उपयोग न हो पर जब उन शब्दों के सुगम विकल्प हिन्दी में हैं तो अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग से यथासंभव बचा जाना चाहिए। यह बात अलग है कि किसी भी भाषा में अन्य भाषा के शब्द लेने से भाषा समृद्ध होती है परन्तु अधिकता असमान्य ही कही जायगी।

साहित्यिक पत्रिकाओं में भी प्रयुक्त होने वाली भाषा को सहज, सरल होना आवश्यक है जो आम पाठक को आसानी से समझ में आ सके। इसका यह अर्थ नहीं कि भाषा का सरलीकरण होना चाहिए या भाषा परिष्कृत नहीं होना चाहिए परन्तु भाषा क्लिष्ट, दुरूह भी नहीं होना चाहिए, भारी भरकम शब्दों के विकल्प के रूप में सरल शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है, वाक्य विन्यास भी छोटे छोटे हो सकते हैं। शायद यहीं कारण है कि आजकल युवाओं में चेतनभगत जैसे ऐसे ही अन्य रचनाकारों की हिन्दी भाषा की पुस्तकें अत्यधिक लोकप्रिय हो रही हैं क्योंकि उनमें सहज, सरल शब्द हैं और सरल वाक्य विन्यास होता है।

आज के इस समय में जिसे साहित्य का संक्रमणकाल तो

नहीं कहा जा सकता फिर भी, साहित्य की पठनीयता और रूचि में जो कमी आई है, उसे देखते हुए साहित्यिक पत्रिकाएं अभी भी पाठकों की रूचि का केन्द्र हैं।

साहित्यिक पत्रकारिता को लघु पत्रिकाओं का पर्याय माना जाता है और आज कई लघु/साहित्यिक पत्रिकाएं पूरे उत्साह और जोश के साथ निकल रही हैं पर यदि उनकी प्रसार संख्या देखी जाय या उनकी पहुंच आम पाठक तक देखी जाय तो शायद बड़े स्तर पर निकलने वाली पत्रिकाएं हंस और नया ज्ञानोदय की प्रसार संख्या जो लगभग पन्द्रह-बीस हजार के आसपास होगी,का अनुपात देश के सवा अरब से अधिक लोगों के अनुपात में एक से ढाई लाख लोगों के मध्य एक पत्रिका आती है जबकि कई अन्य लघु पत्रिकाएं जो चार सौ से एक हजार तक प्रकाशित होती हैं,उनका अनुपात तेरह से इक्कीस लाख लोगों के मध्य एक पत्रिका का होता है। हालांकि इन पत्रिकाओं का मूल्यांकन प्रसार संख्या आदि के आधार पर नहीं किया जा सकता और न ही किया जाना चाहिए। ये तो मात्र यह बताने की कोशिश है कि इतने बड़े देश में लघु/साहित्यिक पत्रिकाओं की पहुंच और पठनीयता किस सीमा तक है अत: साहित्यिक पत्रिकाओं के अधिकाधिक विस्तार के लिए कारपोरेट क्षेत्र को आगे आने के लिए प्रेरित करना होगा। साहित्यिक पत्रिकाओं को भी साहित्य से इतर सामग्री देने की पहल करना होगी जिससे वे आम पाठक से जुड़ सकें और उनकी पठनीयता अधिक से अधिक हो सके क्योंकि रचनाकारों द्वारा लिखी जा रहीं, रचनाकारों द्वारा निकाली जा रहीं और रचनाकारों के द्वारा ही पढ़ी जा रही पत्रिकाएं, साहित्यिक स्तर पर अच्छी कही जा सकेगीं पर साहित्य को आम जन से जोड़ना भी अनिवार्य है अत: सामाजिक और सामयिक सामग्री तथा पाठकों की भागीदारी और सहभागिता पर भी ध्यान देना होगा।

साहित्यिक पत्रकारिता का एक अंग निश्चित रूप से लघु/साहित्यिक पत्रिकाएं हैं जो बड़े महानगरों से लेकर छोटे-छोटे कस्बों से भी प्रकाशित हो रही हैं, ये एक बहुत ही शुभ संकेत है कि लोगों में अभी इतना उत्साह तो है कि वे साहित्य को किसी न किसी रूप में लोगों तक पहुंचा रहे हैं, भले ही वे पत्रिकाएं किसी भी विधा की हों, किसी भी विचारधारा की हों, किसी संगठन विशेष की हों या गुट विशेष की या अपनों को उपकृत करने के लिए निकाली जा रही हों परन्तु साहित्य तो कर ही रही हैं। पठनीयता को बढ़ावा दे रही हैं। लोगों में साहित्य को लेकर विमर्श की स्थिति निर्मित कर रही हैं।

लघु पत्रिकाओं के आपसी समन्वय, संगठन को लेकर पूर्व में प्रयास होते रहे हैं, अभी भी हो रहे हैं पर अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही है, प्रयास जारी रखे जाना चाहिए, एक न एक दिन तो अवश्य ही लक्ष्य की प्राप्ति होगी। यदि किसी विषय की सुगबुगाहट भी होती रहे तो उसके क्रियान्वयन की स्थिति आती ही है। उसके लिए लघु/साहित्यिक पत्रिकाओं को भी अपने अपने स्तर पर प्रयास करते रहना चाहिए। 'प्रेरणा' इस दिशा में छोटा सा प्रयास कर रही है। अपने स्तंभ 'लघु पत्रिका अभियान' के अंतर्गत लगभग सौ पत्रिकाओं की चर्चा करती है, उद्देश्य यही है कि यदि एक पत्रिका के पाठक, दूसरी पत्रिकाओं से परिचित नहीं हैं तो परिचित हो सकें और रचनाकार भी अधिक से अधिक पत्रिकाओं से जुड़ सकें। इस उद्देश्य में सफलता भी मिल रही है, अन्य पत्रिकाओं के संपादकों और रचनाकारों द्वारा इसे सराहा जा रहा है। पाठकों, रचनाकारों, संपादकों के मध्य समन्वय बढ़ रहा है। कई रचनाकारों को तो इस स्तंभ के माध्यम से किसी पत्रिका में रचना प्रकाशित होने की जानकारी प्राप्त हो रही है जो उनको उस पत्रिका द्वारा उनके माध्यम से किन्हीं कारणों से मिलने से रह जाती है। सभी पत्रिकाओं से आग्रह है कि यदि विशेष कठिनाई न हो तो समानधर्मी पत्रिकाओं की चर्चा किसी न किसी रूप में अवश्य करें।

वरिष्ठ साहित्यकार व सम्पादक- 'पूर्वग्रह' एवं 'समावर्तन' डॉ. रमेश दवे ने साहित्यिक पत्रकारिता के तीन प्रकार के बारे में उल्लेख किया है एक तो साहित्यिक समारोहों, उत्सवों, घटनाओं, आयोजनों के समाचार या रपट छापना, दूसरे सर्जनात्मक लेखन छापना, तीसरे सम्पादकों को लिखे गये पत्र एवं सम्मतियां छापना। प्रेरणा इस दिशा में कार्य कर रही है। स्तंभ 'रपट' के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर अहिन्दी भाषी क्षेत्रों की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की चर्चा की जाती है जिससे लोगों को इस तरह के आयोजन करने की प्रेरणा मिलती है। दूसरे 'सर्जनात्मक लेखन' के अंतर्गत,आलेख, कहानी, कविता, लघु कथा, उपन्यास अंश, व्यंग्य, बातचीत आदि सामग्री दी जाती है। तीसरे 'सम्पादक को लिखे गये पत्र एवं सम्मतियां छापना' के अंतर्गत स्तंभ 'आपकी कलम से' में पाठकों को खुला मंच प्रदान कियाजाता है जिसमें वे प्रेरणा में प्रकाशित सामग्री पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी के साथ साथ अन्य मुद्दे भी उठाते हैं और प्रकाशित पत्रों पर भी अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। यह स्तंभ पत्रिका के साथ पाठकों की भागीदारी ही नहीं बढ़ाता बल्कि पाठकों को आपस में संवाद का अवसर भी प्रदान करता है। इस स्तंभ में पाठक खुलकर अपने विचार व्यक्त करते हैं,पत्रिका के स्वरूप पर चर्चा करते हैं उसको

अच्छा बनाने के लिए सुझाव भी देते हैं। इसके माध्यम से पठनीयता बढ़ती है, तथा लेखन के प्रति प्रवृत्ति जाग्रत होती है। इसमें पाठकों को उचित मान दिया जाता है जिससे वे इसमें सहज रूप से सहभागिता कर सकें। इससे वे पाठक जिन तक पत्रिका नहीं पहुंचती है, वे दूसरों से प्राप्त कर पत्र लिखते हैं जिससे पाठक समूह बनते हैं। इस स्तंभ को बहुत सराहा जा रहा है यहां तक सुझाव मिले हैं कि इसमें प्रकाशित पत्रों को पुस्तकाकार रूप में लाया जाए।

प्रेरणा में साहित्य से इतर सामग्री भी दी जाती है। समय समय पर विभिन्न प्रकार के मुद्दे प्रेरणा ने उठाये हैं। इस तरह के मुद्दे उठाने को सबसे पहले वरिष्ठ लेखक सुधीर विद्यार्थीजी और जगदीश प्रसाद चतुर्वेदीजी ने प्रेरित किया। वर्ष 1997 में प्रेरणा नई नई निकलना आरंभ हुई थीऔर उस समय मैं अलीराजपुर, झाबुआ में था तब सुधीर विद्यार्थी के पत्र आये थे कि 'आजाद की जन्मस्थली के बारे में विवाद निरर्थक है। बदरका वाले आजाद को सम्मान के साथ याद करते हैं, यह अच्छी बात है पर उनकी जन्मस्थली भामरा ही है। अत: जन्मस्थली के संबंध में भी छापिए।' जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने पत्रों में भी 'भाभरा के बारे में, चन्द्रशेखर आजाद के स्मारक बनने, उनके पैतृक निवास, उनके नाम पर स्कूल आदि के बारे में लिखा था।' तब तय किया गया कि आजाद के जन्म स्थान के बारे में प्रमाणिक तौर पर प्रेरणा में प्रकाशित किया जाए। अत: वहां के एक युवा पत्रकार शफाकत हुसैन दाऊदी के सहयोग से प्रोफेसर डॉ. के.के. त्रिवेदी से संपर्क किया गया जिन्होंने इस पर विस्तृत शोध किया था। 'प्रेरणा' में सुधीर विद्यार्थी एवं जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी के पत्रों के साथ डॉ. के.के. त्रिवेदी का प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया। इस संबंध में मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री से लिये गये साक्षात्कार में इस संबंध में किये गये जिक्र का उल्लेख भी उसी अंक में दिया गया। प्रेरणा में यह शोध लेख आने के बाद समाचार एजेंसी 'वार्ता' द्वारा प्रेरणा के शोध लेख के आधार पर आजाद की जन्मभूमि भामरा प्रतिपादित करते हुए प्रेरणा का संदर्भ देते हुए समाचार प्रसारित किया गया जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। जिनमें दैनिक भास्कर, चौथा संसार, सांध्य प्रकाश अदि प्रमुख हैं। दूरदर्शन पर भी यह समाचार आया। कुछ सुयोग और संयोग इस बीच हुए और एक बड़ा समारोह आयोजित कर उपराष्ट्रपति कृष्णकांत, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री मकबूल डार, मध्यप्रदेश के पूर्व राज्यपाल मो. शफी कुरैशी, मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह आदि की उपस्थिति में भामरा को आजाद का जन्म स्थान माना गया। इसके बाद आजाद के जन्म स्थान के बारे में हो रहा विवाद समाप्त हो गया। प्रेरणा के अगस्त 1998 की 'अपनी बात' में इसका उल्लेख किया गया था।

समय-समय पर प्रेरणा अन्य मुद्दे भी उठाती रही है। प्रेरणा के वर्ष 2000 के एक अंक में चुनाव सुधार के संबंध में यह बात उठी कि 'कोई ऐसा कालम क्यों नहीं होता कि हम इनको वोट नहीं देना चाहते हैं क्योंकि कभी कभी पार्टियां खराब प्रत्याशियों को भी चुनाव में उतारती हैं परन्तु जनता को उनमें से किसी एक को ही चुनने की विवशता होती है जबकि वह जनता को पसंद नहीं है, इससे कई मतदाता मतदान ही नहीं करते और मतदान प्रभावित होता है।' इस मुद्दे पर अलग अलग स्तर पर प्रयास किये गये। वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में मतदान केंद्रों पर एक-प्रपत्र क्रमांक सत्रह रखा गया कि ई.व्ही.एम. में दर्शाये गये प्रत्याशियों को मैं अपने मत के योग्य नहीं पाता या इनको मत नहीं देना चाहता। इसका प्रचार, प्रसार अधिक नहीं हो पाया फिर भी कुछ लोगों ने कहीं से जानकारी प्राप्त कर इस प्रपत्र का उपयोग किया। हालांकि यदि यह कालम ई.व्ही.एम. में होता तो इसका उपयोग अधिक होता। प्रसन्नता है यह प्रावधान लागू हुआ भले ही आंशिक रूप से हुआ हो और यह आशा तो की ही जा सकती है कि जब इतना लागू हुआ है तो पूरी तरह भी लागू हो सकेगा। उन सभी को साधुवाद जिन्होंने यह मुद्दा इसके पूर्व या पश्चात बहुत दमखम के साथ उठाया। प्रेरणा के जून 2009 के एक अंक की 'अपनी बात' में इसका उल्लेख किया गया था। अब तो 'नोटा' के रूप में ईव्हीएम में भी आ चुका है।

प्रेरणा के जन-मार्च 2011 के अंक में 'अपनी बात' में यह मुद्दा उठाया गया था कि 'सुना है कि एक कानून यह भी बन रहा है जिसमें 12 वर्ष से बड़े बच्चे स्वेच्छा से शारीरिक संबंध बना सकेंगे, इस कानून की क्यों और क्या आवश्यकता है जबकि वैवाहिक उम्र के लिए लड़की की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित है और इसके पीछे एक दलील यह भी दी जाती है कि शारीरिक संरचना की दृष्टि से इससे छोटी उम्र में शारीरिक संबंध बनाने से कई प्रकार की शारीरिक कठिनाईयां उत्पन्न होगीं फिर दूसरी ओर 12 वर्ष से बड़े बच्चों को इस प्रकार की स्वतंत्रता देने का क्या औचित्य है ? इसके कितने भयावह परिणाम समाज भोगेगा यह तो समय ही बतायेगा क्योंकि अन्य देश जहां इस प्रकार की स्वतंत्रता है, कई प्रकार की समस्याओं से पीड़ित हैं अत: इस पर अपने देश की परिस्थितियों के अनुसार बहुत सोच विचार कर निर्णय लिया जाना चाहिए।' इस मुद्दे को कुछ समाचार पत्रों ने भी उठाया। प्रसन्नता है कि माननीय संसद ने स्वेच्छा से संबंध बनाने की उम्र 12 वर्ष के बजाय 18 वर्ष रखने का प्रस्ताव पारित किया है जिससे वैवाहिक उम्र और इसमें

एकरूपता रहेगी। हालांकि कुछ स्वैच्छिक संगठनों ने अपने तर्कों के आधार पर आपत्ति जताते हुए यह उम्र 16 वर्ष करने की दलील दी है। यदि ऐसा होता है तो इसमें एक बात का ध्यान अवश्य रखा जाये कि वैवाहिक उम्र और इसमें एक रूपता अवश्य ही हो। इनके अतिरिक्त प्रेरणा ने बहुत से मुद्दे समय-समय पर उठाये हैं पर उन्हीं का जिक्र विस्तारसे किया गया है जिसमें ठोस हल निकला है।

कई बार जाने अन्जाने में या व्यक्तिगत अहं के टकराव के चलते या अन्य कारणों से व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप, कटाक्ष की स्थिति साहित्यकारों के मध्य निर्मित हो जाती है, इससे बचा जा सकता है तभी पाठकों के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित हो सकेगा। वैसे भी आपसी कटाक्ष, वैमनस्यता तो उत्पन्न कर ही सकते हैं। आलोचना रचनाकारों की नहीं, रचनाओं की होना चाहिए, वह भी संयत और परिष्कृत शब्दों में जिससे किसी को ठेस न लगे, तथा स्वाभिमान आहत न हो।

पत्रकारिता बहुत बड़ी शक्ति है जिसके जनक और पोषक पत्रकार होते हैं जो अपने श्रमसाध्य, जोखिमपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्यों से बुनियादी मुद्दों को उठाते हैं, जनता और सरकार के सामने लाते हैं। इसमें यदि साहित्य का अनुपातीय समावेश हो जाए तो व्यावहारिकता के साथ साथ सहिष्णुता में और अधिक वृद्धि हो सकेगी, भाषा भी और अधिक परिष्कृत हो सकेगी। आने वाले समय में यह अवश्य ही होगा क्योंकि समय परिवर्तनशील है और हमारे यहां साहित्य और संस्कृति की जड़ें गहरी हैं जो अवश्य ही अपना प्रभाव दिखाएगीं। यही अपेक्षा की जा सकती है कि साहित्यिक पत्रकारिता लघु/ साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से ही न हो बल्कि व्यवसायिक दैनिक समाचार पत्रों, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रिकाओं में भी सम्मिलित हो और उनके सम्पादक भी साहित्य में पर्याप्त रूचि लें तथा मीडिया हाउस भी इस दिशा में सोचें।

- संपादक- प्रेरणा, ए-74, पैलेस आरचर्ड फेज-3, सर्वधर्म के पीछे,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) 462042,
मो.: 98262 82750

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ` 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

-संपादक

अरुण तिवारी: साहित्यिक पत्रकारिता के सिरमौर

प्रमोद भार्गव

किसी साहित्यिक पात्रिका में असाहित्यिक प्रसंगों की चर्चा हो और संपादकीय भी ऐसे ही प्रसंगों व संदर्भों से भरे हों तो 'प्रेरणा' के संपादक को अद्वितीय व असाधारण माना जाना चाहिए? क्योंकि प्रेरणा की अधिकांश संपादकीय किसी नीति, समस्या, घटना और वक्तव्य पर ही लिखी आलोचनात्मक टिप्पणियां होती हैं, इसलिए जहां ऐसे संपादकीय अग्रलेख स्थापित साहित्यकारों को असहज लगते हैं, वहीं इनका पुनर्मूल्यांकन बाल की खाल निकालने जैसा होता है। लेकिन प्रेरणा के प्रधान संपादक अरुण तिवारी और उनकी साहित्यिक पत्रकारिता इसीलिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि भोपाल से प्रकाशित होने वाली इस लघु-पत्रिका का विधायी स्वरूप बहुआयामी और व्यापक रहा है। अन्यथा, साहित्य से जुड़ी जो लघु पात्रिकाएं हैं, अव्वल तो उनमें संपादकीय लेख होते ही नहीं हैं, होते भी हैं तो साहित्यिक घटनाओं या वैचारिक आग्रहो-दुराग्रहों के खांचें में आबद्ध रहते हैं। 'हंस' में राजेंद्र यादव द्वारा लिखित संपादकियों को अपवादस्वरूप छोड़ दिया जाए तो ज्यादातर पात्रिकाएं साहित्य से इतर सामाजिक समस्याएं या सरोकारों से जुड़ी संपादकीय टिप्पणियों से बचते हैं। सामाजिक दायित्व के प्रति प्रेरणा इस दृष्टि से प्रतिबद्धता जताती रही है। इसीलिए प्रेरणा के संपादक अरुण तिवारी अत्यंत सहज-बोध के साथ उन तमाम विषयों को पत्रिका में समेटते रहे हैं, जो समाज की या तो ज्वलंत समस्या बने हुए हैं या फिर स्वतंत्रता के बाद से ही अनुत्तरित प्रश्न बने हुए हैं। इस नाते पिछले बाईस-तेईस साल से यह पत्रिका सामाजिक सरोकारों को साहित्यिक-पत्रकरिता के मानदंडों के अनुरूप व्यापक धरातल देने का काम निरपेक्ष भाव से करती रही है। परिणामत: अरुण तिवारी भी संपादक के रूप में एक अलग एवं निर्विवादित पहचान बनाने में सफल रहे हैं। अतएव प्रेरणा और अरुण तिवारी परस्पर उसी तरह पूरक माने जाते हैं, जिस तरह धर्मवीर भारती और 'धर्मयुग' को एक दूसरे का पूरक माना जाता है।

प्रेरणा का पहला अंक 1992 में प्रकाशित हुआ। तदुपरांत पांच वर्ष के अंतराल के बाद 1997 से इसका नियमित प्रकाशन शुरू हुआ। प्रेरणा के अब तक 50 अंक प्रकाशित हुए हैं, जिनमें से 24 विशेषांक हैं। साहित्य के साथ पत्रिका में सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सामग्री इसलिए दी जाती है, जिससे उसके प्रसार का दायरा केवल रचनाकारों के बीच ही सिमटकर न रह जाए। पत्रिका के पाठकों का फलक व्यापक हो इसलिए पाठकों की प्रतिक्रियाएं 'आपकी कलम से' स्तंभ में बड़ी संख्या में छापी जाती हैं। देश के कोने-कोने से पाठकों के लंबे-लंबे पत्र प्रेरणा में प्रकाशित किए जाते हैं। कई पत्र इतने सशक्त होते हैं कि उन्हें लेख की श्रेणी में भी रखा जा सकता है।

प्रेरणा में छपे संपादकियों पर अरुण तिवाारी जी ने 'अपनी बात' शीर्षक से पुस्तक भी प्रकाशित कराई है। यह किताब इक्कीस साल के भीतर प्रेरणा के छपे उनतालीस अंकों में उनतालीस संपादकीय लेखों का संकलन है। इसमें साहित्य और साहित्यकार से संबंधित आलेख तो हैं ही, परंतु साहित्य से इतर सामग्री भी बहुतायत में है। यह परिपाटी के विपरीत चलने की पहल है। इस पहल को निर्विकार, निर्लिप्त व निश्चिंत भाव से स्वीकारते हुए अरुण तिवारी लिखते हैं, 'किसी लघु साहित्यिक पत्रिका में यदि साहित्य से इतर कोई सामग्री जाए तो लोगों का चौंकना स्वाभाविक है, क्योंकि अधिकांश पत्रिकाएं साहित्य तक ही सीमित रहती हैं। ऐसे में प्रेरणा ने जब पिछले अंक में मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह से कला, साहित्य व संस्कृति पर साक्षात्कार और शहीद चंद्रशेखर आजाद की जन्मभूमि 'भाभरा' के विवाद से संबंधित शोध-लेख और फिल्म निदेशक वासु भट्टाचार्य पर संस्मरणात्मक लेख छापे तो बौद्धिक कुलबुला कर ठिठक गए, किंतु आम पाठकों ने इस सामग्री को पसंद किया।' यहां लेखक समुदाय को विचार करने की जरूरत है कि भिन्न विषय हों या भिन्न कार्य क्षेत्रों से जुड़े व्यक्ति, इन सब में परस्पर अंतरसंबंधों के बीच स्थित बीज से ही साहित्य सृजन के नवांकुर फूटते हैं।

यहां यह भी सवाल उठता है कि लेखक सरकार द्वारा दिए

जाने वाले पुरस्कार और धनराशि तो प्रसन्नता के साथ ग्रहण कर लेता है, लेकिन जब किसी राजनेता को साहित्यिक पत्रिका में स्थान मिलता है तो उसे परेशानी होती है और वह इस रचनाकर्म को असाहित्यिक पहल मानता है। जबकि इस परिप्रेक्ष्य में सोचने की बात है कि साहित्यिक पत्रकारिता के जरिए यदि कला, साहित्य और संस्कृति के कोई प्रश्न उठाए जा रहे हैं तो उनके हल तो सरकार ही करेगी, फिर आपत्ति क्यों? यदि मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह आगे नहीं बढ़ते, तब क्या भोपाल में कला, संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ केंद्र 'भारत-भवन' अस्तित्व में आ पाता? इसी तरह क्रांतिकारियों पर सामग्री छापने से लघु-पत्रिकाएं न केवल मुंह मोड़े रहती हैं, अपितु वैचारिकता का वामपंथी प्रवाह तो भक्तिकालीन काव्य और कवि तथा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्र के लिए बलिदान को प्रेरित करने वाली रचनाओं को प्रक्रियावादी साहित्य कहकर हाशिए पर डालने का धतकर्म तक करता रहा है। किंतु अरुण तिवारी ने अपने संपादकीय लेखों में इच्छा मृत्यु, वरिष्ठजन, नारी अस्मिता, साहित्यिक पत्रकारिता, पेड न्यूज, लिव एंड रिलेशनशिप, समलैंगिक संबंध, पोर्न फिल्म जैसे प्रश्न तार्किक ढंग से खड़े करते हैं। साथ ही इनमें से कई विषयों पर विशेषांक भी निकाले। दूसरी तरफ प्रसिद्ध लेखकों के लघु उपन्यासों को संपूर्ण या फिर धारावाहिक रूप से प्रेरणा में प्रकाशित किए। इसी तरह कहानी और कविता पर विशेषांक छापे, साथ ही डॉ. भगवत रावत व प्रेमशंकर रघुवंशी, कमलकिरशोर गोयनका, डॉ. धनंजय वर्मा, चंद्रकांत देवताले, कमलाप्रसाद और राजेश जोशी की रचनात्मकता पर विलक्षण अंक निकाले और उनके लंबे साक्षात्कार छापे।

'इच्छा-मृत्यु' पर बात करने से अकसर लोग बचते हैं, जबकि समग्र रूप में बात करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम देख चुके हैं कि 'जीवनदायी कृत्रिम उपचार सुविधाओं' के बूते बलात्कार की शिकार मुंबई की नर्स अरुणा शॉनबॉग ने पलंग पर निश्चेत रहते हुए पैंतीस साल शारीरिक और मानसिक यंत्रणा झेलने के बाद प्राण त्यागे थे। तब ऐसे अनुत्तरित प्रश्न का समाधान खोजने की कोशिश क्यों नहीं होनी चाहिए? प्रेरणा में ऐसे प्रश्न खड़ा करना वाकई साहस का काम है।

अरुण जी की उदारता यह भी है कि वे अन्य पत्रिकाओं में छपी चर्चित कहानियों की विस्तृत परिचर्चा 'अपनी बात' स्तंभ के साथ प्रेरणा में भी बेवाकी से करते और करवाते हैं। इस हेतु उन्होंने 'बहस के लिए' स्तंभ भी निर्धारित किया हुआ है। इसी संदर्भ में तिवारी जी अपनी बात में लिखते हैं, 'डॉ. परशुराम शुक्ल विरही द्वारा प्रमोद भार्गव की कहानी 'मुक्त होती औरत' पर चर्चा की गई है, जो हंस में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने एक बहुत ज्वलंत मुद्दा उठाया है कि स्कूलों में यौन शिक्षा और एड्स से बचाव के अभियान की शिक्षा किस प्रकार आज के किशोर-किशोरियों को प्रभावित कर रही है।'

लघु पत्रिकाओं में आमतौर से उन प्रश्नों को नहीं उठाया जाता जो कानून या नए कानून बनाने से संबद्ध होते हैं, लेकिन जनवरी-जून 2012 के अंक में इस मुद्दे को तिवारी जी ने बेधड़क उठाते हुए अपनी बात रखी है, 'सुना है कि एक कानून यह भी बन रहा है कि बारह वर्ष से बड़े बच्चे स्वेच्छा से शारीरिक संबंध बना सकेंगे। इस कानून की क्यों और क्या आवश्यकता है? जबकि वैवाहिक उम्र के लिए लड़की की न्यूनतम आयु अठारह वर्ष निर्धारित है। इसके कितने भयावह परिणाम समाज भोगेगा, यह तो समय ही बताएगा, क्योंकि अन्य देशों में जहां इस प्रकार की स्वतंत्रता है, वे कई प्रकार की समस्याओं से दो-चार हो रहे हैं। अत: इस पर अपने देश की परिस्थितियों के अनुसार बहुत सोच-विचार कर निर्णय किया जाना चाहिए।' हालांकि व्यापक प्रतिरोध के चलते यह कानून ठंडे बस्ते में चला गया। तय है, इस संपादकीय की भूमिका भी अहम् रही होगी। प्रेरणा में बचपन में मोबाइल, खेत में सूखा, लाइलाज कैंसर, समकालीन गजल और आनंद की खोज जैसे विषय उठाए हैं। मध्यप्रदेश समेत कई राज्यों ने आनंद मंत्रालय खोलकर व्यक्ति को अवसाद मुक्त बनाए रखने के उपाय किए जरूर हैं, लेकिन इनके फलित रहस्य ही हैं। दरअसल साहित्य पहले मन को छूता है, फिर बुद्धि को। संभवत: इसीलिए अपनी बात में उल्लेखित वे समस्याएं प्रमुखता से उठाई गई हैं, जो मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हैं। इन प्रश्नों पर जोर इसलिए भी है, जिससे साहित्य और पत्रकारिता का समन्वय समाज में नैतिक मूल्यों के संस्कार देकर लोकहितों को पुख्ता करे। लोक पक्षधरता ही पत्रकारिता का मूल है। साहित्य में यह मूल्यपरक पत्रकारिता इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि आज दृश्य व श्रव्य मीडिया ने मुद्रित मीडिया को व्यवसाय के ऐसे चक्रव्यूह में उलझा दिया है कि वह आर्थिक हित-पूर्ति के लिए हर वक्त बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापन पाने की लालसा में पंक्ति में खड़ा रहता है। इसीलिए परंपरागत पत्रकारिता की आचार संहिताएं टूट रही हैं और नैतिक मूल्य तिरोहित हो रहे हैं। गोया, साहित्यिक पत्रकारिता सामाजिक सरोकार से जुड़ी है, इसलिए सामाजिक विसंगतियों से जुड़े प्रश्न उठाना अत्यंत जरूरी हो गया है। अन्यथा, पत्रकारिता के आज जितने भी स्वरूप हैं, वे जिस तकनीक व संचार माध्यमों में विलीन होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व खोते जा रहे हैं, वह आसन्न खतरा साहित्यिक पत्रकारिता पर मंडरा कर, उसे कालांतर में लील लेगा। प्रेरणा में

प्रकाशित संपादकियों को संकलित कर पुस्तक 'अपनी बात' का प्रकाशन हुआ है जिस पर टिप्पणी देना आवश्यक प्रतीत होता है।

प्रेरणा का प्रत्येक अंक इस नाते साहित्यिक सरोकारों से जुड़ा हैं, इसलिए अविस्मणीय व संग्रहणीय है। प्रेरणा के प्रत्येक अंक की बेवाक और तार्किक समीक्षा इसमें छपने वाले लंबे संपादक के नाम लिखे दर्जनों पत्र करते हैं। इनमें से अधिकांश पत्र लेखकों के साथ आम पाठक के भी होते हैं। इतने पत्र हिंदी की अन्य किसी लघु पत्रिका में नहीं छपते हैं। प्रेरणा में साहित्यिक गतिविधियों की अनेक रपटें भी छपती हैं। प्रेरणा एकमात्र ऐसी लघु-पात्रिका है, जो नियमित करीब 50 लघु-पात्रिकाओं के ताजा अंकों की परिचयात्मक जानकारी आवरण समेत देती है। साथ ही उन लेखकों का नामोल्लेख भी करती है, जो पात्रिका में छपते हैं। ऐसा अभिनव और उदार प्रयोग किसी पात्रिका में देखने में नहीं मिलता है। तिवारी जी की यही उदारता है कि यह पात्रिका त्रैमासिक होते हुए भी लेखकों और पाठकों के आकर्षण के न केवल केंद्र में है, बल्कि विषयगत विविधताओं के कारण साहित्य से इतर विषयों में प्रखर हस्तक्षेप के चलते भी महत्वपूर्ण बनी हुई है। लेखक व पाठक इसके नए अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा करते है। गोया, प्रेरणा और अरुण तिवारी परस्पर पूरक हैं।

अपनी बात - किसी साहित्यिक पात्रिका के संपादकीय लेखों के संग्रह की समीक्षा मेरी दृष्टि में कठिन काम है। क्योंकि ये संपादकीय टिपपणियां किसी नीति, समस्या, घटना और वक्तव्य पर ही लिखी आलोचनात्मक समीक्षा होती हैं। इसलिए इनका पुनर्मूल्यांकन बाल की खाल निकालने जैसा है। लेकिन यह कार्य इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि भोपाल से प्रकाशित होने वाली लघु-पत्रिका का विधायी स्वरूप बहुआयामी और व्यापाक रहा है। अन्यथा, साहित्य से जुड़ी जो लघु पात्रिकाएं हैं, अव्वल तो उनमें संपादकीय लेख होता ही नहीं है, होता भी है तो साहित्यिक घटनाओं या वैचारिक आग्रहो-दुराग्रहों के खांचें में आबद्ध रहता है। 'हंस' में राजेंद्र यादव द्वारा लिखित संपादकियों को अपवादस्वरूप छोड़ दिया जाए तो ज्यादातर पात्रिकाएं साहित्य से इतर सामाजिक समस्याएं या सरोकारों से जुड़ी संपादकीय टिप्पणी से बचते हैं। सामाजिक दायित्व के प्रति प्रेरणा इस दृष्टि से प्रतिबद्धता जताती रही है। इसीलिए प्रेरणा के संपादक अरुण तिवारी अत्यंत सहज-बोध के साथ उन तमाम विषयों को पत्रिका में समेटते रहे हैं, जो समाज की या तो ज्वलंत समस्या बने हुए हैं या फिर स्वतंत्रता के बाद से ही अनुत्तरित प्रश्न बने हुए हैं। इस नाते पिछले बाईस-तेईस साल से यह पत्रिका सामाजिक सरोकारों को साहित्यिक-पत्रकरिता के मानदंडों के अनुरूप व्यापक धरातल देने का काम निरपेक्ष भाव से करती रही है।

'अपनी बात' शीर्षक से प्रकाशित यह किताब तेईस साल के भीतर प्रेरणा के छपे उनतालीस अंकों में उनतालीस संपादकीय लेखों का संकलन है। इसमें साहित्य और साहित्यकार से संबंधित आलेख तो हैं ही, परंतु साहित्य से इतर सामग्री भी बहुतायत में है। यह परिपाटी के विपरीत चलने की पहल है। इस पहल को निर्विकार, निर्लिप्त व निश्चिंत भाव से स्वीकारते हुए अरुण तिवारी लिखते हैं, 'किसी लघु साहित्यिक पत्रिका में यदि साहित्य से इतर कोई सामग्री जाए तो लोगों का चौंकना स्वाभाविक है, क्योंकि अधिकांश पत्रिकाएं साहित्य तक ही सीमित रहती हैं। ऐसे में प्रेरणा ने जब पिछले अंक में मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह से कला, साहित्य व संस्कृति पर साक्षात्कार और शहीद चंद्रशेखर आजाद की जन्मभूमि 'भाभरा' के विवाद से संबंधित शोध-लेख और फिल्म निदेशक वासु भट्टाचार्य पर संस्मरणात्मक लेख छापे तो बौद्धिक कुलबुला कर ठिठक गए, किंतु आम पाठकों ने इस सामग्री को पसंद किया।' यहां लेखक समुदाय को विचार करने की जरूरत है कि भिन्न विषय हों या भिन्न कार्य क्षेत्रों से जुड़े व्यक्ति। इन सब में परस्पर अंतरसंबंधों के बीच स्थित बीज से ही साहित्य सृजन के नवांकुर फूटते हैं।

यहां यह भी सवाल उठता है कि लेखक सरकार द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार और धनराशि तो प्रसन्नता के साथ ग्रहण कर लेता है, लेकिन जब किसी राजनेता को साहित्यिक पत्रिका में स्थान मिलता है तो उसे परेशानी होती है और वह इस रचनाकर्म को असाहित्यिक पहल मानता है। जबकि इस परिप्रेक्ष्य में सोचने की बात है कि साहित्यिक पत्रकारिता के जरिए यदि कला, साहित्य और संस्कृति के कोई प्रश्न उठाए जा रहे हैं तो उनके हल तो सरकार ही करेगी, फिर आपत्ति क्यों ? यदि मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह आगे नहीं बढ़ते, तब क्या भोपाल में कला, संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ केंद्र 'भारत-भवन' अस्तित्व में आ पाता ? इसी तरह क्रांतिकारियों पर सामग्री छापने से लघु-पत्रिकाएं न केवल मुंह मोड़े रहती हैं, अपितु वैचारिकता का वामपंथी प्रवाह तो भक्तिकालीन काव्य और कवि तथा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्र के लिए बलिदान को प्रेरित करने वाली रचनाओं को प्रक्रियावादी साहित्य कहकर हाशिए पर डालने का धतकर्म तक करता रहा है। किंतु अरुण तिवारी ने अपने संपादकीय लेखों में इच्छा मृत्यु, वरिष्ठजन, नारी अस्मिता, साहित्यिक पत्रकारिता, पेड न्यूज, लिव एंड रिलेशनशिप, समलैंगिक संबंध, पोर्न फिल्म जैसे प्रश्न तार्किक ढंग से खड़े करते हैं। साथ ही इनमें से कई विषयों पर विशेषांक भी निकाले। दूसरी तरफ प्रसिद्ध लेखकों के लघु उपन्यासों को संपूर्ण या फिर

धारावाहिक रूप प्रेरणा में प्रकाशित किए। इसी तरह कहानी और कविता पर विशेषांक छापे। साथ ही डॉ भगवत रावत व प्रेमशंकर रघुवंशी, कमलकिशोर गोयनका, डॉ धनंजय वर्मा, चंद्रकांत देवताले, कमलाप्रसाद और राजेश जोशी की रचनात्मकता पर विलक्षण अंक निकाले और उनके लंबे साक्षात्कार छापे।

'इच्छा-मृत्यु' पर बात करने से अकसर लोग बचते हैं। जबकि समग्र रूप में बात करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। क्योंकि हम देख चुके हैं कि 'जीवनदायी कृत्रिम उपचार सुविधाओं' के बूते बलात्कार की शिकार मुंबई की नर्स अरुणा शॉनबॉग ने पलंग पर निश्चेत रहते हुए पैंतीस साल शारीरिक और मानसिक यंत्रणा झेलने के बाद प्राण त्यागे थे। तब ऐसे अनुत्तरित प्रश्न का समाधान खोजने की कोशिश क्यों नहीं होनी चाहिए ?'अपनी बात' में ऐसे प्रश्न खड़ा करना वाकई सहस का काम है।

अरुण जी की उदारता यह भी है कि वे अन्य पात्रिकाओं में छपी चार्चित कहानियों की विस्तृत परिचर्चा 'अपनी बात' स्तंभ के साथ प्रेरणा में भी बेवाकी से करते और करवाते हैं। इस हेतु उन्होंने 'बहस के लिए' स्तंभ भी निर्धारित किया हुआ है। इसी संदर्भ में तिवारी अपनी बात में लिखते हैं, 'डॉ परशुराम शुक्ल विरही द्वारा प्रमोद भार्गव की कहानी 'मुक्त होती औरत' पर चर्चा की गई है, जो हंस में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने एक बहुत ज्वलंत मुद्दा उठाया है कि स्कूलों में यौन शिक्षा और एड्स से बचाव के अभियान की शिक्षा किस प्रकार आज के किशोर-किशोरियों को प्रभावित कर रही है।'

लघु पात्रिकाओं में आमतौर से उन प्रश्नों को नहीं उठाया जाता जो कानून या नए कानून बनाने से संबद्ध होते हैं। लेकिन जनवरी-जून 2012 के अंक में इस मुद्दे को तिवारी जी बेधड़क उठाते हुए अपनी बात रखी है, 'सुना है कि एक कानून यह भी बन रहा है कि बारह वर्ष से बड़े बच्चे स्वेच्छा से शरीरिक संबंध बना सकेंगे। इस कानून की क्यों और क्या आवश्यकता है ? जबकि वैवाहिक उम्र के लिए लड़की की न्यूनतम आयु अठारह वर्ष निर्धारित है। इसके कितने भयावह परिणाम समाज भोगेगा, यह तो समय ही बताएगा ? क्योंकि अन्य देशों में जहां इस प्रकार की स्वतंत्रता है, वे कई प्रकार की समस्याओं से दो-चार हो रहे हैं। अत: इस पर अपने देश की परिस्थितियों के अनुसार बहुत सोच-विचार कर निर्णय किया जाना चाहिए।' हालांकि व्यापक प्रतिरोध के चलते यह कानून ठंडे बस्ते में चला गया। तय है, इस संपादकीय की भूमिका भी अहम् रही होगी। 'अपनी बात' में बचपन में मोबाइल, खेत में सूखा, लाइलाज कैंसर, समकालीन गजल और आनंद की खोज जैसे विषय उठाए हैं। मध्य-प्रदेश समेत कई राज्यों ने आनंद मंत्रालय खोलकर व्यक्ति को अवसाद मुक्त बनाए रखने के उपाय किए जरूर हैं, लेकिन इनके फलित रहस्य ही हैं। दरअसल साहित्य पहले मन को छूता है, फिर बुद्धि को। संभवत: इसीलिए अपनी बात में उल्लेखित वे समस्याएं प्रमुखता से उठाई गई हैं, जो मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हैं। इन प्रश्नों पर जोर इसलिए भी है, जिससे साहित्य और पत्रकारिता का समन्वय समाज में नैतिक मूल्यों के संस्कार देकर लोकहितों को पुख्ता करे। लोक पक्षधरता ही पत्रकारिता का मूल है। साहित्य में यह मूल्यपरक पत्रकारिता इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि आज दृश्य व श्रव्य मीडिया ने मुद्रित मीडिया को व्यवसाय के ऐसे चक्रव्यूह में उलझा दिया है कि वह आर्थिक हित-पूर्ति के लिए हर वक्त बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापन पाने की लालसा में पंक्ति में खड़ा रहता है। इसीलिए परंपरागत पत्रकारिता की आचार संहिताएं टूट रही हैं और नैतिक मूल्य तिरोहित हो रहे हैं। गोया, साहित्यिक पत्रकारिता सामाजिक सरोकार से जुड़ी है, इसलिए सामाजिक विसंगतियों से जुड़े प्रश्न उठाना अत्यंत जरूरी हो गया है। अन्यथा, पत्रकारिता के आज जितने भी स्वरूप हैं, वे जिस तकनीक व संचार माध्यमों में विलीन होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व खोते जा रहे हैं, वह आसन्न खतरा साहित्य पत्रकारिता पर मंडरा कर, उसे कालांतर में लील लेगा।

प्रेरणा का प्रत्येक अंक इस नाते साहित्यिक सरोकारों से जुड़ा हैं, इसलिए अविस्मणीय व संग्रहनीय है। प्रेरणा के प्रत्येक अंक की बेवाक और तार्किक समीक्षा इसमें छपने वाले लंबे संपादक के नाम लिखे दर्जनों पत्र करते हैं। इनमें से अधिकांश पत्र लेखकों के साथ आम पाठक के भी होते हैं। इतने पत्र हिंदी की अन्य किसी लघु पत्रिका में नहीं छपते हैं। प्रेरणा में साहित्यिक गतिविधियों की अनेक रपटें भी छपती हैं। प्रेरणा एकमात्र ऐसी लघु-पात्रिका है, जो नियमित करीब 50 लघु-पात्रिकाओं के ताजा अंकों की परिचयात्मक जानकारी आवरण समेत देती है। साथ ही उन लेखकों का नामोल्लेख भी करती है, जो पात्रिका में छपते हैं। ऐसा अभिनव और उदार प्रयोग किसी पात्रिका में देखने में नहीं मिलता है। तिवारी जी की यही उदारता है कि यह पात्रिका त्रैमासिक होते हुए भी लेखकों और पाठकों के आकर्षण के न केवल केंद्र में है, बल्कि विषयगत विविधताओं के कारण साहित्य से इतर विषयों में प्रखर हस्तक्षेप के चलते भी महत्वपूर्ण बनी हुई है। लेखक व पाठक इसके नए अंक की बेसबरी से प्रतीक्षा करते हैं।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार, कथाकार, उपान्यासकार और पत्रकार हैं।
लेखक/पत्रकार शब्दार्थ 49, श्रीराम कॉलोनी, शिवपुरी म.प्र.,
मो. 09425488224, 09981061100

■

आयु के 75 वर्ष पूर्ण करना ही महत्वपूर्ण नहीं है

महेश श्रीवास्तव

आयु के पिचहत्तर वर्ष पूर्ण करना महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण यह होता है कि मनुष्य ने उसे कैसे जिया और क्या श्रेष्ठ कर्म किया। अरुण तिवारी ने समर्पित भाव से साहित्यिक सक्रियता के सार्थक पिचहत्तर वर्ष पूर्ण किए इसलिए वे अतिरिक्त बधाई के पात्र हैं। उन्होंने अपने होने को सिद्ध किया और जीवन को अर्थ दिया है।

अरुण तिवारी ने सृजन भी किया किन्तु उससे अधिक श्रेष्ठ नहीं जो समानांतर कर्म सृजन को समाज तक पहुंचाने का किया। महत्वपूर्ण यह है कि इंजीनियर होते हुए उन्होंने साहित्य को अपना जीवन समर्पित किया। 1992 में 'प्रेरणा' का प्रथम अंक प्रकाशित कर उन्होंने हांडी के चावल को टटोला यह देखने के लिए कि प्रकाशन की आवश्यकतायें क्या हैं और बाधायें क्या-क्या आ सकती हैं। अपनी क्षमताओं को परखा और स्वयं को सक्षम बनाकर 1997 से इसका नियमित प्रकाशन किया जो अपनी श्रेष्ठता के साथ अहर्निष जारी है। ऐसा नहीं कि कठिनाइयां नहीं आईं किन्तु गिर पड़े, गिर कर उठे फिर चल दिये के संकल्प भाव से अपराजित रहे। जैसे उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया ''राम काज कीन्हें बिना, मोहि कहां विश्राम'' और अथक यात्री बन गये। शायद ऐसे ही कर्मठ योद्धाओं के लिए अथर्ववेद में कहा गया है- ''कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो में सव्य आहित:।''

ऐसे समय में जब साहित्य में भी अखाड़ों और मठ एवं मठाधीशों की भरमार है ''जाके संग दस-बीस हैं, ताको नाम महंत'' की उक्ति चरितार्थ हो रही है वे किसी अखाड़े के पहलवान या मठ के सदस्य नहीं बने। साहित्य के सरोवर में वे कमल के पत्ते की तरह रहे, पानी के भीतर भी और पानी के बाहर भी। रचनायें तो उन्होंने भी की किन्तु रचनाकारों के लिए केवट का काम भी किया। साहित्य को समाज तक पहुंचाया और समाज के अज्ञात सर्जकों को साहित्यकारों की बिरादरी में लाकर खड़ा किया। स्वाभाविक रूप से उन्हें कथित कुलीन साहित्यकारों के बाणों को भी सहना पड़ा होगा किन्तु लगता है वह कर्ण का कवच पहने रहे, बाण टकराकर टूटते रहे और उन्होंने किसी छली इंद्र को कवच दान कर दानवीर कहलाने का मोह भी नहीं पाला।

यह महत्वपूर्ण है कि उन्होंने 'प्रेरणा' को केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का मंच ही नहीं बनाया उसमें वर्तमान की चिंताओं को उनके समाधान के सुझावों के साथ व्यक्त करने का माध्यम भी बनाया और कई सामाजिक विवादों एवं संदेहों का विश्लेषणात्मक निवारण करने का प्रयास भी किया। विषय विशेष को लेकर गहन मंथन करने वाले विशेषांक प्रकाशित किये और संपादकीय के माध्यम से अपने विचार भी प्रस्तुत किये। गद्य और पद्य में उनकी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान भी प्राप्त हुए। उनका कर्म और उससे प्राप्त आनंद ही उनका सर्वोच्च पुरस्कार है ऐसा मैं मानता हूं।

समाज में श्रेष्ठ विचारों के प्रवाह और सकारात्मक दृष्टिकोण के संवाहक बने रहने की उनकी अदम्य इच्छाशक्ति का ही प्रमाण है कि लगभग सत्तर वर्ष की आयु में संस्कारित पीढ़ी तैयार करने के उद्देश्य से बच्चों के लिए 'इंटेलीजेली' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया और वरिष्ठजनों की रिक्तता को भरने के लिए 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन' समाचार पत्र प्रारंभ किया। दोनों ही प्रकाशन अपने-अपने क्षेत्र में लोकप्रियता अर्जित कर रहे हैं।

वे अपनी अद्भुत कर्मठता अदम्य इच्छाशक्ति और लोक समर्पित जिजीविषा के साथ दीर्घजीवी हो। यह कामना करते हुए, उनके व्यक्तित्व के अनुरूप मुझे राबर्ट फ्रास्ट की निम्न पंक्तियाँ याद हो आई हैं-

The words are lovely
Dark and deep
But I have promises to keep
And miles to go before I sleep
And miles to go before I sleep

- लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार हैं।
7, पत्रकार कालोनी, लिंक रोड-3, सप्रे मार्ग, भोपाल-462003
मो.: 9425006180

■

अरुण तिवारी: दृष्टि सम्पन्न शख्सियत

किरण अग्रवाल

याद नहीं प्रेरणा का पहला अंक कब देखा मैंने लेकिन पिछले दस-बारह सालों से हाँलाकि कई बार थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद, प्रेरणा के अंक निरंतर मुझे मिलते रहे हैं। जिस तरह बिना शोर-शराबे और निष्ठा एवं समर्पण के साथ अरुण तिवारी पिछले चैबीस सालों से प्रेरणा पत्रिका निकाल रहे हैं वह अपने आप में एक मिसाल है और प्रेरणा देने वाली है। यूँ तो अरुण जी के व्यक्तित्व के कई पहलू हैं और कई रंग हैं; वे एक कवि हैं, एक कथाकार हैं, एक समीक्षक हैं, एक सम्पादक हैं, एक विचारक हैं, शायद और भी बहुत कुछ लेकिन आज मैं उन सबकी चर्चा न करते हुए मुख्य रूप से प्रेरणा और उसके सम्पादकीयों तक स्वयं को सीमित रखूँगी।

तकरीबन हर जरूरी विषय और समस्या को अरुण जी ने प्रेरणा और अपनी बात में छुआ है। छुआ ही नहीं है बल्कि उस पर सम्यक दृष्टि से चिंतन और मनन भी किया है और कई बार रास्ते भी सुझाए हैं बेहद सहज भाव से और आगे बढ़ गए हैं जीवन और समाज के किसी दूसरे आयाम को खंगालने। मसलन प्रेरणा अक्टूबर-दिसम्बर 2011 की अपनी बात में शार्टकट की संस्कृति की बढ़ोतरी के एक साइड इफेक्ट के रूप में वे भ्रष्टाचार को देखते हैं और कहते हैं, ''भ्रष्टाचार आजकल हमारे शरीर की नस-नस में ही नहीं समाया है वरन् हमारे रक्त के साथ प्रवाहित होने लगा है।'' आगे वे भ्रष्टाचार को परिभाषित करते हैं और जोड़ते हैं, ''आर्थिक भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार नहीं कहा जा सकता बल्कि वह आचरण जो प्रकृति, मर्यादाओं, संस्कृति, नियम, कानून के अनुकूल न हो तथा दायित्वों, कर्त्तव्यों का उचित और पर्याप्त निर्वहन न करता हो, वह भी भ्रष्ट आचरण या भ्रष्टाचार ही कहा जायेगा।'' भ्रष्टाचार आखिर है क्या यह स्पष्ट करने के बाद वे फिर वापस लौटते हैं और कहते हैं,'' भष्टाचार इस तरह व्यक्ति की आदतों में शुमार हो गया है कि कई बार तो महसूस ही नहीं होता कि वह गलत कार्य कर रहा है क्योंकि वह तो जीने का ढंग बन गया है। छोटे से छोटा काम कराने में या सुविधा पाने में इसका उपयोग नि:संकोच होता है।'' इन पंक्तियों को पढ़ते हुए लगता नहीं है कि यह सम्पादकीय दस साल पहले लिखा गया है। ऐसा लगता है कि अरुण तिवारी आज की तारीख में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का ही शब्दश: विश्लेषण कर रहे हैं।

प्रेरणा के 2011 (संयुक्तांक, अप्रेल-जून 2011, जुलाई-सितम्बर 2011) के ही दूसरे सम्पादकीय में वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करते हैं लेकिन साथ ही जोड़ते हैं, ''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सही अर्थो में बनाए रखने के लिये उसके प्रति दायित्वों और कर्त्तव्यों का पालन करना भी आवश्यक है जिससे उसकी गरिमा और सम्मान बना रहे।'' मतलब साफ है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यह अर्थ कदापि नहीं कि आप बिना सोचे-समझे अंट-शंट, उल्टा-सीधा, सच-झूठ कुछ भी बोलें जैसा कि आज हो रहा है। अरुण जी आगे कहते हैं, ''ऐसा आपाधापी का वातावरण बनाया जा रहा है कि कहीं भी कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है, प्रगति आरोपों की धुंध में छिप रही है। ऐसा नहीं है कि सब अच्छा ही अच्छा है और ऐसा भी नहीं है कि सब बुरा ही बुरा है तो क्या आवश्यक नहीं कि दोनों ही पहलुओं को सामने आना चाहिए और उनपर विचार विमर्श होना चाहिए तभी इस बन रहे छद्म आपाधापी के माहौल से निजात मिलेगी अन्यथा आरोप प्रत्यारोपों के प्रदूषण से अराजक स्थिति बनने से नहीं रोका जा सकेगा। ...यदि इसी तरह स्थितियां बिगड़ती रहीं तो सहिष्णुता जो इस देश की पहचान है, को समाप्त होने से नहीं रोका जा सकेगा।'' मैं फिर सोच में पड़ गई हूँ, यह सम्पादकीय तो दस साल पहले लिखा गया लेकिन यह तो आज की बात है! जिस चीज का अंदेशा अरुण तिवारी को दस साल पहले था वह आज सच होता प्रतीत हो रहा है। कहाँ बची है व्यक्ति में आज वह सहिष्णुता जिसके लिये हमारा यह देश जाना जाता था! अरुण जी ने तब ही कहा था, ''यह धीमा विष मानसिकता को रूग्ण करने के साथ-साथ एक-दूसरे के सम्मान में भी कमी लाएगा।''और वही तो हुआ है और हो रहा है। आज देश का एक तबका ऐसा है जिसे कुछ भी अच्छा होता नहीं दीख रहा। वह सत्ता परिवर्तन चाहता है। इस स्थिति के बारे में भी अरुण जी ने जैसे अपनी दूर दृष्टि से आज से दस साल पहले ही सोच लिया था और लिखा, ''व्यवस्था में बदलाव के लिए सतत् वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है परन्तु यह वैचारिक आतंकवाद में परिवर्तित न हो सके, इसका भी ध्यान रखना होगा।'' (वही) सवाल यहाँ यह भी है कि क्या इसका ध्यान रखा जा रहा है! कहीं ऐसा तो नहीं कि सत्य को तोड़ा-मरोड़ा जा रहा हो किसी निहित स्वार्थ के वशीभूत हो! अरुण तिवारी का सिद्दत से मानना है कि ''रचनाकार किसी भी विचारधारा का हो परन्तु सबसे पहले वह एक सामाजिक प्राणी है।'' (प्रेरणा अप्रेल-जून 2017) जिसे आज लोग प्राय: अपनी नफरतों में इतने डूब गए हैं कि भूलते जा रहे हैं।

अरुण तिवारी के पास एक विजन हैं। उनकी दृष्टि साफ और निरपेक्ष है और मन में एक निश्चय कि जिस चीज का भी बीड़ा वे उठाएँ वहाँ उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ देना है। उनके कार्य-कलापों के पीछे एक ही प्रेरक शक्ति है 'भवतु सब मंगलम्'। इसके दर्शन हमें न केवल प्रेरणा और उनकी 'अपनी बात' में बल्कि इसके अलावा जो कुछ भी वे लिख-पढ़ रहे हैं या कर रहे हैं वहाँ भी होते हैं। वे पहले स्वप्न देखते हैं और फिर उस स्वप्न को हकीकत में बदलते हैं। ऐसा ही एक स्वप्न उन्होंने बच्चों की एक पत्रिका को लेकर देखा था और वह स्वप्न धरती पर उतरा आज से छह वर्ष पूर्व 'इंटेलीजेली' नाम की अंग्रेजी पत्रिका के रूप में उन बच्चों को बड़े ही रोचक ढंग से खेल-खेल में शिक्षित और प्रेरित करने के लिये जो इलेक्ट्रानिक मीडिया, इंटरनेट व सोशल मीडिया के कारण पढ़ाई-लिखायी, बाहरी दुनिया व खेल-कूद से विमुख हो रहे हैं। जब तक मैंने इसे देखा नहीं था, जबतक मैंने इसे पढ़ा नहीं था मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि इस स्तर की बच्चों की कोई पत्रिका मेरे देश में मेरे इतने करीब सांस ले रही है। करीब दो साल तक मैं 'इन्टेलीजेली' से रूबरू रही और कई बच्चों को भी मैंने इससे जोड़ा। बच्चे जिस कदर इसमें डूब जाते थे वह मेरे लिये आश्चर्यजनक था। जिन्हें अंग्रेजी बहुत कम आती थी वे भी इसके आकर्षण पाश में स्वयं को बंधा पाते थे।

खैर, मैं बात प्रेरणा की कर रही थी। प्रेरणा के अपने तकरीबन चौबीस वर्ष के सफर में अरुण तिवारी ने अनेकों साहित्य विषयक विशेषांक, दिवंगत साहित्यकारों पर विशेषांक, समसामयिक एवं सामाजिक सरोकार विषयक अंक निकाले हैं जो काफी चर्चित हुए हैं और सराहे गए हैं। अभी इसी वर्ष पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकारों पर केन्द्रित प्रेरणा का विशेषांक (जनवरी-मार्च 2021) आया है जो अपने आप में एक अद्भुत अंक है और ऐसा अरूण तिवारी की उस सोच के कारण है जो इस अंक को रूप देने के पीछे काम कर रही है। ये वे रचनाकार हैं, हिन्दी साहित्य आज जहाँ खड़ा है उसे वहाँ तक ले जाने में जिनका महती योगदान है, लेकिन इनमें से कइयों के बारे में हम नहीं जानते हैं या बहुत कम जानते हैं या उनके सिर्फ एक पक्ष से ही हमारा परिचय है। प्रेरणा का यह अंक हमारा उनसे पूर्ण परिचय कराता है और परिचय की इस प्रक्रिया के दौरान हमें उनके द्वारा किये गए महत्वपूर्ण काम की विराटता और उम्र को पछाड़ देने के उनके प्रबल जज्बे का बोध होता है। हमारे यहाँ अमूमन मृत्योपरांत स्मृति अंक प्रकाशित होने का चलन है। उसका भी अपना महत्व है ''परन्तु'', अरुण तिवारी कहते हैं, ''उनके जीवनकाल की उतरती बेला पर यदि उनपर अंक केन्द्रित किया जाए तो यह भी उन्हें असीम प्रसन्नता देगा और उत्साहित भी करेगा जिससे वे लेखन कर्म में और तेजी एवं एकाग्रता से जुट सकेंगे।'' (प्रेरणा जनवरी-मार्च 2017) ऐसी बात एक दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति ही सोच सकता है। अरुण तिवारी सिर्फ सोचकर ही नहीं रह जाते हैं। वे अपने विचार का मंथन और विश्लेषण कर उसे कार्यरूप में परिणत भी करते हैं। उनके सम्पादकीयों को पढ़ने पर पाएँगे कि उनका उद्देश्य कभी भी सनसनी फैलाना नहीं रहा। येन-केन-प्रकारेण उन्होंने चर्चा के केन्द्र में भी नहीं होना चाहा। वे किसी भी विचारधारा से इस तरह नहीं बंधे कि सच्चाई को न देख पाए और अगर देख भी रहें हैं तो उसे नजरअंदाज कर दें हाँलाकि वे भली-भांति जानते हैं कि ''तटस्थ पहले भी उपेक्षित थे, अब भी हैं। उनको यथोचित सम्मान पहले नहीं मिला और अब भी कमोवेश वही स्थिति है।'' (प्रेरणा अक्टूबर-दिसम्बर 2015)

बेशक वे अंर्तमुखी हों, बेशक वे संकोची हों परन्तु सच को बयान करने में उन्हें कोई झिझक नहीं होती, सच को कहने में वे कोई कोताही नहीं बरतते। यह सच उनके शब्दों में सामान्य रूप से प्रकट होता है। शायद यह उनका वे ऑफ लाइफ है या कहूँ उनकी जीवन शैली। प्रेरणा के अक्टूबर-दिसम्बर 2018 अंक में अपनी बात में वे सामाजिक चेतना की बात करते हैं और कहते हैं, ''ऐसे बहुत से विषय हैं जिनको लेकर सामाजिक चेतना जागृत करना आवश्यक है। जिस तरह स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है, उसके प्रभाव दिखने लगे हैं। इसी तरह के अभियान अन्य विषयों को लेकर भी चलाए जाये तो उसके परिणाम भी निश्चित ही सकारात्मक होंगे।'' इसके बाद वे पेड़ों के काटे जाने से प्रकृति पर पड़ते विपरीत प्रभाव के मद्देनजर पुराने पेड़ों,वनों का संरक्षण तथा वृक्षारोपण के प्रति जागरूकता, ट्रैफिक व्यवस्था की बद से बद्तर होती स्थिति, नदियों से रेत उत्खनन के परिणाम स्वरूप बाढ़ जैसे उत्पन्न हालात या नदियों को प्रदूषित करती फेक्ट्रियों व नालों की गंदगी आदि विषयों पर चर्चा करते हैं। इस पूरे सम्पादकीय में ''जिस तरह स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है, उसके प्रभाव दिखने लगे हैं।'' यह साधारण सा वाक्य मुझे सर्वाधिक असाधारण लग रहा है और मेरा सबसे ज्यादा ध्यान आकर्षित कर रहा है। वह शायद इसलिये क्योंकि हर किसी में सच को इतनी सहजता से कह देने की कूवत नहीं होती। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं लेकिन यहाँ मैं उनमें जाने की जरूरत नहीं समझती। हाँ, लेकिन एक बात तो दीगर है और वह यह कि स्वच्छता अभियान या ऐसे ही दूसरे अभियान कोई अकेला व्यक्ति पूरा नहीं कर सकता चाहे वह किसी भी विचारधारा का क्यों न हो। ऐसे अभियान सफल हों इसमें देश के हर नागरिक का योगदान अपेक्षित है। और यही बात अरुण तिवारी भी कहते हैं अपने इसी सम्पादकीय में, ''प्रदूषण ही नई-नई और संक्रमित बीमारियों को जन्म दे रहा है। यदि समाज का हर व्यक्ति अपना दायित्व एवं कर्तव्य समझने लगे और उसका पालन करने लगे और इस तरह की मानसिकता बन जाए तो समाज की बहुत सी कुरीतियां दूर हो जाएंगी

क्योंकि अकेले सरकारें कुछ नहीं कर सकतीं, दोनों को मिलकर आगे बढ़ना होगा। इसके लिए साहित्यकार, पत्रकार व मीडिया को भी अपनी महती भूमिका निभानी होगी और सामाजिक जागरूकता में अपनी पुरजोर उपस्थिति दर्ज करानी होगी।''

प्रेरणा के दो अंक नारी अस्मिता पर भी आए हैं जिसे काफी पसन्द किया गया है। नारी विमर्श अरुण जी के लिए स्त्री विरूद्ध पुरूष या पुरूष विरूद्ध स्त्री नहीं है जैसा कि नारी विमर्श के नाम पर अमूमन परिलक्षित होता है। प्रेरणा के नारी अस्मिता अंक-2 (जनवरी-मार्च 2011) के अपनी बात में वे स्पष्ट कहते हैं, ''नारी अस्मिता या स्त्री विमर्श नारी विरूद्ध पुरूष नहीं है और न ही नारी व पुरूष आपस में प्रतिद्वन्द्वी एवं प्रतिस्पर्धी हो सकते हैं, वे एक दूसरे के पूरक होकर ही, आपस में संतुलन स्थापित कर अपनी-अपनी गरिमा, मान-सम्मान व स्वाभिमान को बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं।''

उन्होंने पत्रकारिता और हिन्दी के संकट जैसे अनेकों अन्य विषयों पर भी गम्भीर और बेबाक टिप्पणियाँ की हैं। उन्हें विश्वास है कि ''हिन्दी साहित्य में आज भी ऐसा कुछ लिखा जा रहा है जो कालजयी है, बस ये पुस्तकें और ऐसी ही प्रकाशित अन्य पुस्तकें अधिक से अधिक आम पाठकों तक कैसे पहुंचे, यह अवश्य ही चिंतन का विषय है जिस पर लेखक, प्रकाशक, पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों को गंभीर विचार-विमर्श करना चाहिए।'' (प्रेरणा जनवरी-मार्च 2013) जहाँ तक प्रेरणा की बात है वे मानते हैं कि ''इसको निकालना एक मिशन की तरह है जो जुनून बनकर छा गया कि पत्रिका को आम पाठक तक पहुंचाना है'' (प्रेरणा अक्टूबर-दिसम्बर 2017) और वे इसमें काफी हद तक सफल भी हुए हैं।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
हाउस नंबर 2, फ्रेंड्स एन्क्लेव, रूद्रपुर- 263153 (उत्तराखंड)
मो.: 9068699956

अरुण तिवारी संकटग्रस्त मानवीय मूल्यों के प्रतिनिधि

शैलेन्द्र शैली

प्रतिगामी, फासीवादी ताकतों के आतंक के कारण जब मानवीय मूल्य संकट में हों, सत्ता के संरक्षण में सहिष्णुता, अभिव्यक्ति की आजादी तथा असहमति का सम्मान से जुड़े मूल्यों को ध्वस्त किया जा रहा हो, तब इन संकटग्रस्त मानवीय मूल्यों के पक्ष में खड़े लोग ही हमारे समय के सच्चे प्रतिनिधि और जनता के नायक हैं।

मानवीय मूल्यों और इनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रतिबद्ध प्रेरणा पत्रिका के संपादक और साहित्यिक परिदृश्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर श्री अरुण तिवारी जी कुछ इस तरह ही हमारे समय के सच्चे प्रतिनिधि और जनता के नायक की छवि के रूप में मेरे मानस में अंकित हैं ।

साहित्यिक पत्रिका प्रेरणा तथा प्रेरणा प्रकाशन के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक पुस्तकों को प्रकाशित कर श्री अरुण तिवारी जी ने जो गरिमा और यश अर्जित किया है ,वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्री अरुण तिवारी जी की अभी तक प्रकाशित पुस्तकें समकालीन पत्रकारिता का परिदृश्य ,स्मृतियों के शिलालेख , अपनी बात, पहाड़ों की पग डंडियों से शहर में, सृजन का समकालीन परिदृश्य।

दरअसल समकालीन साहित्यिक, सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रेरक दस्तावेज है। प्रेरणा के माध्यम से नई प्रतिभाओं को प्रस्तुत कर तिवारी जी ने अत्यंत महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य किया है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में सक्रिय अरुण तिवारी जी का अवदान मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की गंभीर अभिव्यक्ति है।

समावेशिता और सामूहिकता के प्रति आग्रह अरुण तिवारी जी के व्यक्तित्व और सृजन का केंद्रीय भाव है। उन्होंने अपने सुख और दुख को एकांगी नहीं होने दिया। इसे सामूहिकता में रूपांतरित किया।

श्री अरुण तिवारी जी की पत्नी उर्मिला तिवारी जी का वर्ष 2016 में कैंसर से निधन हुआ। इस घनघोर दुख से अरुण तिवारी जी टूटे नही, अपितु उन्होंने कैंसर से रक्षा के लिए जन-जागरण का मोर्चा संभाला। इस हेतु उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रेरक है।

इसी तरह श्री अरुण तिवारी जी इस वर्ष 2021 में 75 वर्ष के हुए हैं । इस सुखद गौरव का भी सामूहिकता में रूपांतरण कर पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकारों पर केंद्रित 'प्रेरणा' पत्रिका का एक उल्लेखनीय विशेषांक उन्होंने प्रकाशित किया है। श्री अरुण तिवारी जी वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक अखबार भी प्रकाशित करते हैं।

इस तरह अपनी संवेदनाओं का सामूहिकता में रूपांतरण एक अनूठा मानवीय मूल्य है। यह मानवीय मूल्य दुर्लभ है। श्री अरुण तिवारी जी शतायु हों। उन्हें क्रांतिकारी अभिवादन।

- लेखक वरिष्ठ लेखक तथा संपादक- राग भोपाली एवं समाज सेवी हैं।
22, एच.के. होम्स, बंजारी, कोलार रोड, भोपाल - 462042
मो. : 9425023669

बहुकोणीय व्यक्तित्व

महेश सक्सेना

पचहत्तर बसन्त देख चुके श्री अरुण तिवारी आज भी आकर्षक, सुदर्शन व्यक्तित्व के नजर आते हैं। उनका व्यक्तित्व बहुकोषी है। वे सबके बीच निर्विवाद छवि के साथ बेहद सहज मिलनसार मृदुभाषी और ''परहित सदिस धर्म नहीं'' के पथ पर चलने वाले एक विरल व्यक्ति हैं। इसके अतिरिक्त वे लोकप्रिय, साहित्यकार, संपादक और कुशल प्रशासक के रूप में भी जाने जाते हैं।

सोचता हूँ कि श्री तिवारी जी से व्यक्तिगत सम्बन्ध की बात बाद में करूँ। इसके पहले उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अन्य जो वैशिष्ट्य हैं, उसे कुछ शब्दों में बाँध लूँ। मेरा मानना है कि एक अच्छा साहित्यकार ही योग्य पत्रकार, संपादक आदि हो सकता है। श्री तिवारी द्वारा रचित स्मृतियों के अभिलेख तथा पहाड़ों की पगडंडियों से शहर में (कविता संग्रह) चर्चित है। उनके संपादन में प्रकाशित साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य पुस्तक में देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों-पत्रकारों के जो लेख विभिन्न शीर्षक से प्रकाशित हैं, उन्हें मैंने कई-कई बार पढ़ा है। साहित्यिक पत्रकारिता पर उनकी यह अद्भुत कृति है। इसी तरह प्रेरणा समकालीन लेखन के लिए अंक जनवरी-मार्च 2021 'पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकारों' पर केन्द्रित पुस्तक का प्रकाशन तो, साहित्य में नवाचार पूर्ण लगा। इसमें वरेण्य रचनाकारों का परिचय, आत्मकथ्य, आलेख पढ़कर हम उस रचनाकार के निकट पहुँचते हैं। अपनी बात में 'प्रेरणा' पत्रिका में पिछले तेईस वर्षों में लिखे गये संपादकीय संकलित हैं। श्री तिवारी के विभिन्न विषयों पर लिखे गये संपादकीय विभिन्न विभागों द्वारा जनहित में कार्य करने की सलाह व मार्गदर्शन से भरे हैं। इनमें उनके चिन्तन-मनन, अपनी बात पाठकों तक पहुँचाकर जनमत निर्माण करने की छटपटाहट है। साहित्यकारों की प्रकाशित पुस्तकें जब पाठकों तक पहुँचती हैं, तब उसके रचना कौशल से परिचित होते हैं, प्रभावित होते हैं, लेकिन साहित्यकार के तमाम व्यक्तिगत विचारों से हम अनभिज्ञ रहते ही हैं। ऐसे साक्षात्कार विधा से हम रचनाकार के विभिन्न विषयों पर उनके व्यक्तिगत विचारों को भी जान पाते हैं। इसे केन्द्र में रखकर श्री तिवारी जी की पुस्तक 'सृजन का समकालीन परिदृश्य' में देश के अनेक सम्माननीय साहित्यकारों के साक्षात्कार श्री अरुण तिवारी, श्री बलराम गुमास्ता, श्री अमिताभ मिश्र ने लिये है। रचनाकारों से साक्षात्कार या बातचीत के प्रश्न तय करके भेजे नहीं गये हैं। उनसे लिखित उत्तर प्राप्त नहीं किये गये है।। इस कृति में डॉ. धनंजय वर्मा, श्री कमलेश्वर, श्री नरेश मेहता, श्री राजेश जोशी तथा प्रो. कमलाप्रसाद जैसे मूर्धन्य साहित्यकारों के साक्षात्कार है। इनसे प्रश्न पूछने का कौशल तो देखते ही बनता है। कैसे विभिन्न विषयों पर उनके विचारों को उनके मन से निकलवा लेने का कमाल इस कृति में है। ये सभी पुस्तकों का श्री तिवारी ने उनकी जीवन संगिनी श्रीमती उर्मिला तिवारी की स्मृति को समर्पित की हैं। वास्तव में वे ही तो अंतिम सांस तक श्री अरुण तिवारी की नैपथ्य की शक्ति बनकर रही हैं। उनके बिछोह के बाद श्री तिवारी उदासीन तो हुए होंगे, लेकिन कैसे उन्होंने स्वयं को संभालकर शिथिलता नहीं आने दी। उन्होंने समाजसेवा का मार्ग चुना। वृद्धजनों का फोरम बनाया, वे वृद्धजनों से मिलते हैं। अनेक कार्यक्रम कर उन्हें आनन्द से रहने के गुर सिखाते हैं। उनकी समस्याएं हल करते हैं तथा एक अखबार 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' प्रकाशित कर रहे हैं। श्री तिवारी जी के बेटे-बहुएँ उनके आजू-बाजू खड़े रहते हैं तथा वृद्धजनों की एक लम्बी भीड़ उनके साथ है।

अब मैं एक व्यक्तिगत बात जाहिर करना चाहता हूँ, जिसके कारण में श्री तिवारी जी का मुरीद बना हूँ। कुछ वर्ष पूर्व लालघाटी में एक गार्डन में एक विवाह समारोह में श्री तिवारी व मैं मौजूद था। काफी रात हो गई थी। मैं एक तरफ खड़ा किसी से बात कर रहा था, तभी श्री तिवारी जी ने मेरी पीठ पर हाथ रखकर पूछा 'सक्सेना जी घर कैसे जायेंगे'। मैंने कहा 'कोई ऑटो कर लूंगा'। तब वे बोले 'मेरे साथ चलो, मैं आपको घर तक छोड़ दूंगा।' मैंने कहा 'मुझे जवाहर चैक या रंगमहल पर उतार देना।' तब वे बोले 'ये नहीं हो सकता। मैं घर तक ले जाकर छोडूंगा' और उन्होंने किया भी यही। उस दिन तिवारी जी मेरे अधिक आदर व स्नेह के पात्र बने। मैं कुछ वर्ष उनसे उम्र में बड़ा हूँ। मेरी उन्हें अनन्त शुभकामनाएँ।

- लेखक वरिष्ठ बाल साहित्यकार हैं।
EWS- 9, कस्तूरबा स्कूल के पीछे, नाबर्ड, टी.टी. नगर, भोपाल-462003

रचनात्मकता परिदृश्य के सामने

नवल शुक्ल

प्रत्येक गांव शहर कस्बे में एक ऐसी सड़क होती है एक ऐसी जगह होती है, जहां खूब हरियाली होती है। जहां ऐसी जगहों पर आमतौर पर बच्चे बूढ़े जाना पसंद करते हैं ।इन जगहों पर ढेर सारे पेड़ होते हैं।

यह जगह बगीचे की तरह हो सकती है, किसी जलाशय की तरह हो सकती है, किसी अज्ञात और अचंभे की तरह। ऐसी जगहें बाकी सुखी जगहों से भिन्न होती हैं।अलग और अनोखी होती हैं। यह अनोखापन हमेशा लोगों को अपनी ओर खींचता है । अरुण तिवारी साहित्य संसार में ऐसी ही जगह हैं।वे लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। वे सबके लिए हरी भरी जगहें निर्मित करने में लगे रहते हैं। वे लोगों को छाया और राहत देते हैं।उनके पास होना किसी बगीचे,किसी फुलवारी में होना है।जहां रचनात्मकता के विभिन्न स्रोत पाए जाते हैं और उन सभी को मुकम्मल जगह मिलती है।

दरअसल हर शहर,कस्बे में कुछ लोग होते हैं जो हमेशा प्रेरणा और दूर दृष्टि से भरे हुए होते हैं। वे इतने अपने से होते हैं कि हमेशा उपलब्ध होते हैं।वे हमसे भिन्न नहीं लगते। उनकी विशिष्टता के बावजूद वह हमारे ही जैसे लगते हैं। हम में घुले मिले लगते हैं ।वह कभी नहीं कहते कि मैं क्या कर रहा हूं। वह कभी नहीं कहते कि मुझे मेरे काम के कारण हर व्यक्ति को जानना चाहिए। वह किसी के दरवाजे नहीं जाते कि मुझे कुछ चाहिए ।वह किसी से अपेक्षा नहीं करते कि आप मेरे बारे में कुछ कहिए ।दरअसल वे लगातार और जीवन भर ऐसा कुछ करते रहते हैं कि वे हमेशा लोगों के ध्यान में रहते हैं। उनके काम कई बार इस तरह होते हैं कि वे ध्यान में आते भी हैं और फिर से बिछड़ जाते हैं ।ऐसे लोगों के काम का ध्यान में आना और उनका विसरना निरंतर होता है। ऐसे लोग इन क्रियाओं ,जगहों से भी प्रेरणा पाते हैं और रचनात्मक कार्यों में लगे रहते हैं।वे इन जगहों से सिर्फ प्रेरणा ही नहीं पाते हैं, वे कुछ ऐसे काम कर जाते हैं जो सभी के लिए प्रेरणा की तरह हो और उनके द्वारा किए गए काम सभी के काम आएँ।अरुण तिवारी ऐसे ही व्यक्ति और रचनाकार हैं।

अरुण तिवारी जैसे लोगों में अकूत संभावनाएं होती हैं और अथाह ऊर्जा भी। इनमें इतनी अधिक रचनात्मकता होती है कि वे लगातार एक से दूसरे काम में लगे रहते हैं। इनके द्वारा किए गए कार्य, व्यक्तिगत यश और समृद्धि के लिए ना होकर परिवार, समाज और देश के लिए होते हैं। जाहिर है कि ये सभी काम ऐसे हैं, जिनमें कोई स्वार्थ नहीं है । खुद का स्वार्थ नहीं है। सिर्फ एक इच्छा है कि जो भी अच्छा है और जहां भी अच्छा है वह सब प्रत्येक व्यक्ति के लिए हो। सबकी पहुंच में हो। सबके समक्ष आए। प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष उपलब्ध स्रोत पहुंच पाएं।लोग उसे देखें पढ़ें और अपने देश दुनिया को जानें।

कवि कथाकार श्री अरुण तिवारी ऐसे ही व्यक्ति हैं। जिनके बारे में मैं ऊपर कुछ कह पाया हूं। दरअसल उनके बारे में जो भी कहा जाय वह बहुत ही कम है। ये संकेत मात्र हैं। इन संकेतों के माध्यम से श्री अरुण तिवारी के व्यक्तित्व और उनके जीवन को बेहतर तरीके से देखा समझा जा सकता है। एक बार यदि आप अरुण जी के संपर्क में आ जाते हैं तो आप हमेशा उनके संपर्क में होते हैं। इसके पीछे एकमात्र कारण है उनकी मनुष्यता। उनमें ऐसे अंतर्निहित मानवीय गुण हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।इन मान्य गुणों को उनके साथ रहकर और उनके काम में हाथ बटा कर ही जाना समझा जा सकता है।

60 और 70 के दशक में अरुण जी की कविताएं और कहानियां लगातार हिंदी की श्रेष्ठ पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं।हम सब जानते हैं कि अरुण जी उस दौर के श्रेष्ठ कथाकार और कवि हैं,जो निरंतर रचनाशील रहे हैं। अरुण जी के बारे में सिर्फ इतना ही जानना पर्याप्त है कि उस समय की श्रेष्ठ पत्रिका आकंठ के साथ पूरी तरह संबद्ध थे,जिसकी चर्चा पूरे देश में थी। यह पत्रिका हिंदी में ऐतिहासिक और उल्लेखनीय पत्रिका रही है। इस तरह वे अपना अपने रचना कर्म के साथ हिंदी साहित्य के विस्तृत रचना कर्म को शुरू से देखते परखते रहे हैं और उसे उचित साहित्यिक स्थान देने में लगातार जद्दोजहद करते रहे हैं। उनका संबंध और संपर्क साहित्य के भूगोल

में बहुत विस्तृत है। उन्होंने कविता और कहानियों के अलावा अनेक तरह के कार्य किए हैं।

वर्ष 1992 से अरुण तिवारी के संपादन में प्रेरणा पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ होता है। इस पत्रिका के हिंदी जगत में आने से अलग ही प्रकार की सनसनी और उत्तेजना लिखने पढ़ने वालों के बीच दिखती है। अनेक साहित्यकार,लेखक इस पत्रिका के साथ जुड़ जाते हैं। रुचि और जरूरत के अनुसार यह पत्रिका लगातार अपने पाठकों की मांग को पूरा करती है। उनके समक्ष उत्कृष्ट साहित्य और समकालीन साहित्य प्रेरणा पत्रिका के माध्यम से सामने आता है। यह पत्रिका समाज की रचनात्मकता में उसकी पहचान और प्रसार में जरूरी हस्तक्षेप करती है।

अरुण तिवारी मात्र प्रेरणा पत्रिका के संपादन से ही संतुष्ट नहीं होते। दरअसल उनकी क्रियाशीलता और रचना शीलता मात्र एक साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन और संपादन से ही संतुष्ट नहीं होती। उनके लिए कई तरह की क्रियाशीलता चाहिए। कारण कि वे कई तरह की चीजों को और परिस्थितियों को और जरूरतों को देखते हैं और उनके बारे में जहां तक संभव हो कुछ करने की कोशिश करते हैं। इसलिए समय-समय पर वे अलग-अलग प्रकार की पत्रिकाओं का संपादन प्रकाशन करते हैं। पिछले 6 वर्षों से उन्होंने बच्चों के लिए एक अंग्रेजी पत्रिका इंटेलीजेली का प्रकाशन किया प्रारंभ है। इसके अतिरिक्त पिछले 2 वर्षों से 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' नामक एक अखबार का प्रकाशन भी प्रारंभ किया है, जिसमें वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित वे सभी जरूरी सूचनाएं और जानकारियां लगातार प्रकाशित होती है जो अन्यत्र कहीं पाई नहीं जाती। यह अखबार इस सोच में दुर्लभ है।

अरुण तिवारी कवि कथाकार के अतिरिक्त पत्रकार, समाज सेवक, तकनीकी, वैज्ञानिक सोच के धनी व्यक्ति भी हैं। उन्होंने समय-समय पर अपने शहर के लिए जरूरी मुद्दों की ओर शासन और प्रशासन का ध्यान आकृष्ट किया है और ऐसे मुद्दे उनके सतत प्रयासों के कारण पूरे भी हुए हैं। उन्होंने शहर में आजाद की मूर्ती स्थापना में जरूरी पहल की है। पुस्तकालय, वाचनालय आदि की जरूरतों की ओर ध्यान दिया और इनकी पूर्ति करवाई है।

अरुण जी ने अपनी पत्रिका प्रेरणा में कविता और कहानी पर अनेक अंकों में उल्लेखनीय बहसें चलाई हैं।ये बहसें अपने समय के दस्तावेज हैं। प्रेरणा के अनेक दुर्लभ विशेषांक अरुण तिवारी की सक्रियता के प्रमाण हैं।निराला और मुक्तिबोध से लेकर भगवत रावत तक श्रेष्ठ कवियों पर केंद्रित प्रेरणा के विशेषांक दुर्लभ हैं। यह ऐसे काम हैं,जिसके कारण कोई भी पत्रिका और व्यक्ति हमेशा स्मरणीय होता है। यह कार्य सिर्फ विस्मरण के लिए ही नहीं होते बल्कि आने वाली पीढ़ियों के पथ प्रदर्शक भी होते हैं

अरुण तिवारी जी से मेरी पहली मुलाकात मेरे समय के सुप्रसिद्ध कवि और मेरे मित्र बलराम गुमास्ता के साथ हुई। संभव है यदि बलराम जी ने मेरी मुलाकात अरुण जी से नहीं करवाई होती तो एक अच्छे कवि कथाकार और इंसान से मिलने में बहुत देर होती ।मैं सौभाग्यशाली हूं कि अरुण तिवारी जी से मेरा मिलना समय रहते हो पाया। आज जब वे अपने 75 वर्ष पूरे कर चुके हैं तो ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि वे इतने वरिष्ठ हो चुके हैं। उसके पीछे सिर्फ एक कारण है , वह है उनकी लगातार सक्रियता।

- लेखक वरिष्ठ कवि, संपादक एवं साहित्यकार तथा पूर्व निदेशक म.प्र. साहित्य अकादमी हैं।
एम 28, निराला नगर, भोपाल 462003

कला समय का बैंक खाता विवरण

1.	**खाता का नाम**	:	कला समय
2.	**खाता संख्या**	:	09321011000775 (चालू खाता)
3.	**बैंक शाखा**	:	पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
4.	**आईएफएस कोड**	:	PUNB0093210

सम्पादक- कला समय

अरुण तिवारी: एक सृजनधर्मी

अमिताभ मिश्र

अरुण तिवारी साहित्यिक पत्रकारिता में सक्रिय रहने के साथ-साथ संस्कृतिकर्मी, कवि एवं लेखक भी हैं। 23 वर्षों से वे समकालीन लेखन को समर्पित साहित्यिक पत्रिका 'प्रेरणा' का संपादन कर रहे हैं। इसके साथ ही महत्वपूर्ण पत्रिका आकंठ के भी संपादन मंडल में वे रह चुके हैं। मेरा अरुण तिवारी से परिचय लगभग 30 वर्षों से अधिक का है। हम दोनों एक ही विभाग में कार्यरत रहे। वे न सिर्फ साहित्य में बल्कि विभागीय दायित्वों को भी कुशलता से संपन्न करते रहे। बहुत पहले हरिशंकर अग्रवाल जी ने अरुण तिवारी का जिक्र कर कहा था कि वे तो आपके ही विभाग में हैं। उसके कुछ ही समय बाद उनसे भोपाल में आफिस में मुलाकात हो गई। वे किसी रूपांकन के सिलसिले में आए थे। फिर तो उसके बाद मुलाकात होती रही और जब प्रेरणा पत्रिका उन्होंने निकाली तब कुछ कविताएं छापीं भी। मैं उनकी विनम्रता का शुरू से कायल रहा हूं। और उनकी संपादन कुशलता का भी। अक्टूबर दिसम्बर 2017 के प्रेरणा के अंक में अपनी बात में भी अरुण जिक्र करते हैं' मुक्तिबोध शताब्दी वर्ष में प्रेरणा का यह अंक मुक्तिबोध अंक के रूप में आ रहा है। आज से बीस वर्ष पूर्व प्रेरणा का प्रथम अंक भी मुक्तिबोध अंक था और उनकी इन पंक्तियों 'कोशिश करो/कोशिश करो/जीने की/जमीन में गड़कर भी' से प्रारंभ हुआ था। 'तब की कोशिश जो जमीन में गड़कर की गई थी वह आज प्रतिरोध की प्रतीक प्रेरणा की शकल में हमारे सामने है। जिसमें अरुण तिवारी नाम के शख्स की मेहनत और प्रेरणा झलक रही है। इसी अंक में उन्हीं के द्वारा मुक्तिबोध पर लिखा गया आलेख 'मुक्तिबोध-यथार्थ के लेखक' मुक्तिबोध पर एक महत्वपूर्ण आलेख है जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस तरह हर अंक में अपनी बात में अरुण तिवारी महत्वपूर्ण रचते हैं। वे अपनी बात में सिर्फ साहित्य पर ही केन्द्रित नहीं रहते बल्कि अपनी जिम्मेदारी को विस्तार देते हुए सामाजिक आर्थिक समस्याओं पर भी ध्यान दिलाते हैं। एक बार बातचीत के दौरान मैंने उनसे कहा कि हिन्दी कविता की दशा और दिशा पर भी विचार करना चाहिए। उनका सुझाव था कि आप इस पर लिखें। तब मैंने 'कविता का पाठ और पाठ की कविता' लिखा और वह छपा भी और उस पर अच्छी खासी चर्चा भी हुई। मुझे उन्होंने प्रेरणा के परामर्श में शामिल कर लिया। तब से आज तक मैं उनकी पत्रिका प्रेरणा के परामर्श मंडल में हूं। बिना कुछ खास किए हमारे समय की एक खास पत्रिका के परामर्श में शामिल होना खास बात है। अरुण तिवारी एक शानदार संपादक के अलावा खुद भी एक अच्छे रचनाकार हैं। जिस पर वे चुप रहते हैं। उनकी रचनाओं का प्रकाशन समय समय पर हिन्दी की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में होता रहा है। वे कविता, कहानी, आलोचना, समीक्षाएं, आलेख समान रूप से बढ़िया लिखते हैं। यदि साहित्येतर विषयों पर भी प्रेरणा की अपनी बात से संकलित किया जाए तो वह भी बहुत काम के लेख हैं।

अरुण तिवारी की प्रकाशित पुस्तकें हैं :-

1. साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य
2. अपनी बात
3. स्मृतियों के शिलालेख
4. पहाड़ों की पगडंडियों से शहर में (कविता संग्रह)
5. सृजन का समकालीन परिदृश्य

कुछ पुस्तकें प्रकाशन की बाट जोह रही हैं जिनमें मुखौशे, स्मृतियों के झरोखे से, समकालीन ग़ज़ल का स्वरूप। उम्मीद है कि ये जल्द ही आएंगी। उन्हें माखन लाल चतुर्वेदी पुरस्कार, अखिल भारतीय पत्रकारिता पुरस्कार, साहित्य गौरव और साहित्यिक पत्रकारिता से जुड़े सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। अरुण तिवारी एक जमाने में साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजक की भी भूमिका निभा चुके हैं। वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हैं। 75 साल के होने पर उन्हें बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं। वे इसी तरह प्रेरणा से प्रेरित करते रहें और सृजनरत रहें और लघु पत्रिका की मशाल को जलाए रहें यही कामना है।

- लेखक, कवि, कथाकार एवं उपन्यासकार हैं।
बी-18, महाकाली सोसाइटी, त्रिलंगा, भोपाल-462039
मो.: 8770704902

■

आलेख

वरिष्ठ नागरिक हमारी धरोहर

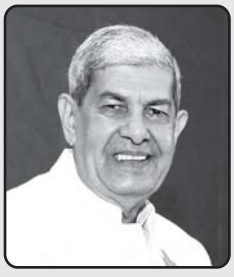

अरुण तिवारी

प्रकृति अपने नियमों से संचालित होती है जिसके अनुसार नियति का चक्र अपनी गति से चलता रहता है। जीव की उत्पत्ति होती है, एक सीमा तक उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है फिर धीरे-धीरे ह्रास होने लगता है और अंत हो जाता है। यही नियम सभी प्राणियों, पशु पक्षियों, पेड़ पौधों और मनुष्य पर लागू होता है, कारण भले ही अलग अलग हों बॉयलाजिकल, बॉटनीकल, एग्रीकल्चर या अन्य कोई और भी हो सकते हैं पर जिसका आरंभ है, उसका अंत अवश्यम्भावी है। यदि सूर्य उदय होता है तो अस्त भी होता है, दोपहर तक अपने प्रबल वेग और तीव्रता से आता है, उसके पश्चात तीव्रता कम होते होते अंतिम अवस्था में आकर विलुप्त हो जाता है। शायद यहीं प्रकृति को चुनौती नहीं दी जा सकी है।

इसीलिए पूर्व में मनुष्य जीवन को चार चरणों में विभक्त किया गया था, जिन्हें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम से जाना जाता था। ये शायद मानव शरीर की संरचना को ध्यान में रखकर ही बनाये गये होंगे और शायद उस समय इसका पालन भी होता हो परंतु यह व्यवस्था समयकाल और परिस्थितियों के अनुसार समाप्त हो गई। मनुष्य के जीवन और संरचना को लेकर विभिन्न प्रकार के शोध और प्रयोग होते रहे हैं, उनसे कुछ उपलब्धियां भी प्राप्त हुई हैं, जागरूकता में भी वृद्धि हुई है। शारीरिक स्वास्थ्य और आयु में अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी हुई है हालांकि साठा सो पाठा, यह कहावत बहुत समय से प्रचलित है।

पीढ़ी अंतराल सदा से ही रहा है, इसका स्वरूप समय के अनुसार परिवर्तित होता रहा है। विभिन्न प्रकार के दबावों ने सामाजिक परिवेश और जीवन शैली तथा मूल्यों को प्रभावित किया है जो अस्वाभाविक नहीं है परंतु पिछले कुछ समय से अपने देश में जब से भूमंडलीकरण, उदारवाद और बाजारवाद का प्रभाव बढ़ा है। परिवर्तन गुणात्मक रूप से देखने को मिले हैं, आवश्यकताओं, महत्वाकांक्षाओं का अंतहीन सिलसिला धीरे-धीरे मनुष्य के जीवन में प्रवेश कर हावी हो गया है जिससे उसकी लालसाओं में अभूतपूर्व वृद्धि के साथ-साथ जीवन शैली और सदियों से चल रहे जीवन दर्शन और परंपराओं को सुविधा अनुसार तोड़मरोड़कर अपनाने पर विवश किया है, यह अनायास नहीं है, हर विकासशील देश में अच्छाइयों और प्रगति, उन्नति के साथ-साथ उसके दुष्परिणाम भी साथ-साथ आते हैं, जिसको प्रभावरहित करने में वहां का जनमानस जितना सक्ष्म होता है, वहां की मान्यताएं परंपराएं और संस्कृति उसी अनुसार प्रभावित होती हैं।

भारतीय परिवारों में पहले संयुक्त परिवार का प्रचलन था और यह उस समय की आवश्यकताओं के अनुरूप था। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि ही एक मात्र जीवन यापन का साधन था जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाया जाता था। परिवार में वृद्धि होती रहती थी और सभी उसी में समायोजित होते रहते थे। व्यवसाय में भी इसी तरह परिवार के समस्त सदस्य परंपरागत व्यवसाय में सम्मिलित होकर जीवन यापन करते थे। नौकरीपेशा वर्ग अवश्य इससे प्रभावित होता था पर उनका भी प्रयास होता था कि अगली पीढ़ी भी वहीं नौकरी करे और साथ-साथ रहे। हालांकि युवा पीढ़ी में वरिष्ठ पीढ़ी के प्रति अवज्ञा या अवहेलना नहीं थी। उनके जीवन आदर्श मानने के लिए बाध्य करने पर एक कसमसाहट अवश्य ही थी परंतु यह सोचकर कि यह तो अपनाना ही है, मानना है, न चाहते हुए भी एक स्वीकार्यता थी जो धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। यहीं से आरंभ होता है दूरियों के बढ़ने का और फिर धीरे-धीरे यही मोहभंग करा देता है और कर्तव्यों के प्रति भी उदासीनता बरतने का कारण बनता है। वरिष्ठ पीढ़ी जहां अपने अनुभवों के आधार पर वर्तमान जीवन के लिए भी अपना वही दृष्टिकोण अपनाने पर जोर देती है वहीं नई पीढ़ी उसे अपने ढंग से जीना चाहती है, कहीं-कहीं टकराहट का प्रमुख कारण यह भी होता है और यह किन्हीं-किन्हीं में तो कडुवाहट में परिवर्तित हो जाता है। इसका विकल्प यह भी हो सकता है कि वरिष्ठ पीढ़ी संक्षेप में किसी भी समस्या पर अपने अनुभव के आधार पर अपना दृष्टिकोण, प्रस्तुत करें व नई पीढ़ी अपने अनुसार अपना दृष्टिकोण, दोनों पर संवाद

करने से निश्चित ही सर्वमान्य हल निकल सकता है बशर्ते दोनों अपने-अपने दृष्टिकोण पर अडिग न रहे व उसमें लचीला रुख अपनाकर समन्वय स्थापित करें। बल्कि कई मामलों में तो वरिष्ठ पीढ़ी को किसी भी कार्य के लिए नई पीढ़ी को रोकने के बजाय उसके समस्त पक्ष बताकर उसे करने को प्रेरित करना चाहिए। नई पीढ़ी स्वयं जब वह कार्य करेगी तो उसके समस्त पक्ष उसके सामने आ जाएंगे और उस समय यदि वह सोचेगी कि वरिष्ठ पीढ़ी का पक्ष अधिक सटीक था तो वह प्रभावित होने के साथ-साथ उचित सम्मान भी प्रदर्शित करेगी। नई पीढ़ी भी वरिष्ठ पीढ़ी के दृष्टिकोण को एकदम नकारे नहीं, उस पर विचार करने का आश्वासन ही न दे वरन उस पर विचार करे और यदि वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार वह उपयोगी है तो माने अन्यथा विनम्र शब्दों में उसकी अनुपयोगिता के बारे में वरिष्ठ पीढ़ी को सहमत करा दे।

जागरूकता बढ़ने के साथ-साथ शिक्षा का प्रसार भी तीव्र गति से हुआ। हर अभिभावक अपने बच्चों को उच्च से उच्चतम शिक्षा दिलाने पर जोर देने लगा। शासन की शिक्षा ऋण प्रणाली भी इसमें अत्यधिक मददगार साबित हुई। शिक्षा के साथ-साथ युवा पीढ़ी में महत्वाकांक्षा का स्वरूप भी परिवर्तितत हुआ और वे उसे पूरा करने के लिए कहीं भी देश में या विदेश में अच्छे कॅरियर की तलाश में अच्छी नौकरी पर जाने के लिए तत्पर हो गये। संयुक्त परिवार के विघटन का एक कारण यह भी बना। कई बार युवापीढ़ी की शिक्षा के अनुरूप पैतृक शहर में नौकरी नहीं थी अत: बाहर जाना उनकी विवशता थी। ग्रामीण क्षेत्रों और व्यवसायियों की युवापीढ़ी भी इससे अछूती नहीं रही परंतु इन परिस्थितिजन्य स्थितियों के कारण किसी भी पीढ़ी को दोष नहीं दिया जा सकता क्योंकि समय के अनुरूप चलना भी आवश्यक है। एकल परिवार और अब न्यूकिलियर परिवार प्रचलन में आने का एक प्रमुख कारण यह भी कहा जा सकता है।

संयुक्त परिवार के विघटन के फलस्वरूप वरिष्ठ नागरिकों में अकेलेपन की समस्या प्रमुखता से उबर रही है, यहां पर उनका युवा पीढ़ी से टकराव भी नहीं है, पर्याप्त समन्वय है परंतु वे अपना पैतृक स्थान छोड़कर उनके साथ जाना नहीं चाहते और युवा पीढ़ी अपनी नौकरी के कारण वहां रह नहीं सकती। ऐसे में वरिष्ठ नागरिक अकेले रहते हैं और यही अकेलापन उन पर धीरे-धीरे हावी होने लगता है जो डिप्रेशन का कारण बनता है परंतु कुछ चुनौती मानकर इसका जीवटता से सामना करते हैं। यहां पर उनकी मन: स्थिति सुदृढ़ होना आवश्यक है, यही नहीं सोचें कि यह तो जिंदगी के पड़ाव का चौथापन एवं अंतिम समय है। यदि ये सोच होने लगता तो ऊबने लगते हैं। नैराश्यभाव और चिड़चिड़ापन बढ़ने लगता है। 'सुबह होती है, शाम होती है, उम्र यों ही तमाम होती है।' यह सोचकर वे असाध्य बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। यही पर उनको टूटना नहीं बल्कि अपना जीवन नये सिरे से जीने की आवश्यकता है। एक लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने में जुट जाना है, देखें फिर पूर्ववर्ती जीवन से अधिक ऊर्जा प्राप्त होती है क्योंकि एक बार फिर प्रतिपादिता सिद्ध करने की उमंग होती है, उत्साह का संचार होता है और मन, मस्तिष्क और शरीर प्रफुल्लित होकर व्याधियों से जूझने को प्रेरित करते हुए स्वस्थ रखता है। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां 80 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों ने भी अपने आप को सिद्ध किया है और अपने लक्ष्य प्राप्ति में जुटे रहे। न्यूटन से जब अंतिम समय में पूछा गया कि आपकी आखिरी इच्छा क्या है तो उनका उत्तर था कि कुछ वर्ष और जीता तो कुछ और सीख पाता। यह उनकी जिजीविषा ही थी जो उन्हें और अधिक सार्थक जीवन जीने को प्रेरित कर रही थी। आजकल तो 63 वर्ष के व्यक्ति भी देश के शीर्षस्थ पद पर सफलतापूर्वक कार्य करते हुए युवा कहलाते हैं तो कुछ ने तो 75-80 वर्ष तक सफलतापूर्वक कार्य किया। कुछ रचनाकार, कलाकार तो 90 वर्ष या अधिकतम सृजनरत रहे हैं या हैं अत: कितना सही है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' तो बस अब सब वरिष्ठ जन प्रण करें कि वे नकारात्मकता से बचेंगें और सकारात्मक सोच लेकर स्वयं, परिवार और समाज को कुछ देंगें। हालांकि उनको आर्थिक एवं भावनात्मक सम्बल मिलना भी बहुत आवश्यक है।

कुछ वरिष्ठ नागरिकों के समक्ष अवश्य यह समस्या है कि किन्हीं न किन्हीं कारणों से अपने बच्चों पर आश्रित हैं व उनके साथ रहने को विवश हैं और यहीं पर दोनों पीढ़ियों ने धैर्य, सहनशीलता और समझदारी से परिस्थितियों को नहीं सम्हाला तो कलह के कारण बनते हैं। पुरानी पीढ़ी को जहां अपनी उपेक्षा का बोध होता है वहीं नयी पीढ़ी को हस्तक्षेप, और चाहे, अनचाहे प्रतिबंधों का। स्थितियां वहां और असमान्य हो जाती हैं जहां मां या पिता में से एक का निधन हो गया हो और एक अकेला ही हो, ऐसे में वे अकेलेपन, कुंठा से ग्रसित होने लगते हैं और कुछ परिवार तो सामाजिक या रिश्तेदारों के भय से ऐसे ही जीते रहते हैं और जहां से भय समाप्त हो जाते हैं या नहीं होते हैं, पुरानी पीढ़ी को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है या वृद्धाश्रम में छोड़ दिया जाता है। ये उनके साथ अधिक होता है जिनके पास अपनी कोई संपत्ति नहीं है अथवा जीने का साधन नहीं है पर क्या यही अंतिम परिणिती है, विकल्प है। सरकार

ने इसके लिए वृद्धावस्था कानून बनाया है।

कहीं कहीं एक और समस्या वरिष्ठ नागरिकों में देखने में आती है जहां पति पत्नी के आपसी अहं टकराव के कारण विसंगतियां उत्पन्न हो जाती हैं। जहां एक पक्ष समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाता है तथा समझदारी दिखाता है वहां स्थितियां सुधर जाती हैं अन्यथा अनचाही शारीरिक, मानसिक, बीमारियां, शारीरिक विकार जिनका कभी-कभी या चरम पर जाकर आत्महत्या में पटाक्षेप होता है। जीवन कितना सहज है यदि सरलता से जिया जाय और कितना कठिन है यदि जरा सी असावधानी हो जाये। सब कुछ स्वयं ही तय करना होता है।

ज्ञात हो कि अंग्रेजों ने दिल्ली में पार्लियामेंट हाऊस (स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व असेम्बली हाल) के निर्माण उपरांत प्रवेश द्वार पर अंदर की छत पर एक श्लोक लिखवाया था जिसकी कुछ पंक्तियां 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः/ वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम... ? अर्थात युवाओं में यदि ऊर्जा का समन्दर लहरा रहा तो वृद्धों के पास अनुभवों का हिमालय है। दोनों की अपनी-अपनी उपयोगिता है। प्राचीन ग्रंथ 'ऋग्वेद' में धरती को माता और आकाश को पिता बताया है। 'महाभारत' में भी यक्ष के एक प्रश्न 'पृथ्वी से भारी और आकाश से ऊँचा क्या है' के उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा था कि 'माता पृथ्वी से बड़ी है और पिता आकाश से ऊँचा है।'' भगवान बुद्ध ने भी वैशाली गणराज्य की उन्नत व्यवस्था की प्रासंगकिता देखते हुए उनके सात सूत्रों को अपने धर्म संघ की समुचित व्यवस्था के लिए अपनाया था जिनमें एक था 'वृद्धों का सम्मान-सत्कार करना तथा उनकी बातों पर ध्यान देना।' हिंदी साहित्य में तो प्रायः सभी रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में बुजुर्ग समस्याओं, दाम्पत्य जीवन आदि को किसी न किसी रूप में उठाया है, कहानियों में प्रेमचंद, विश्वंभरनाथ कौशिक, यशपाल, अमृतलाल नागर, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, अमरकांत, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, भैरवप्रसाद गुप्त, मोहन राकेश, शानी, निर्मल वर्मा, हृदयेश, से.रा. यात्री, मधुकरसिंह, शेखर जोशी, जवाहरसिंह, ज्ञानरंजन, काशीनाथसिंह, सतीश जमाली, मिथिलेश्वर, मन्नूभंडारी, उषा प्रियंवदा, शैलेश मटियानी, मार्कण्डेय, धर्मवीर भारती, कृष्णा सोबती, श्रीलाल, शुक्ल, राजीसेठ, गोविंद मिश्र, गिरिराज किशोर, चित्रा मुद्गल, सूर्यबाला, उदयप्रकाश, मुकेश वर्मा, संतोष चौबे, प्रमोद भार्गव, ए.असफल, दिनेशचंद झा, शिवनारायण, सिद्धेश, रंजना श्रीवास्तव,राजेन्द्र परदेसी, जयंत, कुमार शर्मा अनिल, सुशांत सुप्रिय, मदनमोहन, उपेन्द्र, प्रद्युम्न भल्ला, राकेश भ्रमर, विजय कुमार सपत्ति, शरदसिंह, निरूपमाराय, रीता सिन्हा, राजनारायण, राधेश्याम तिवारी, कलानाथ मिश्र, भगवतीशरण मिश्र, जगदीश नारायण चौबे आदि।

कविताओं में कबीर, जायसी, तुलसीदास, सुमित्रानंदन पंत, बच्चन, दिनकर, नागार्जुन, मुक्ति बोध, भवानीप्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ अग्रवाल, लीलाधर जगूड़ी, राजेश जोशी, अरूण कमल, विष्णुनागर, विनोद भारद्वाज, अष्टभुजा शुक्ल, मंगलेश डबराल, ज्ञानेन्द्रपति, शिवनारायण, शरद कोकास, राधेश्याम तिवारी, निविड़ शिवपुत्र, मदनकश्यप, इति माधवी, विनोद कुमार श्रीवास्तव, रमेश प्रजापति, ब्रजकिशोर वर्मा, सूरजप्रसाद राठोर, महावीर राजी, सुरेश सेन, निशांत, वर्षासिंह, राधेश्याम बंधु, परेश सिन्हा, कृष्णेश्वर डींगर, षण्मुखन, अर्पण कुमार, भवनाथ मिश्र, बलराम गुमास्ता, उद्भ्रांत, प्रेमशंकर रघुवंशी, राजेन्द्र उपाध्याय, शरदसिंह, अभिज्ञात, भरत प्रसाद, शैलेन्द्र, महेन्द्रगगन, अरविंद अवस्थी, कुशेश्वर, चंद्रसेन विराट, ओमप्रकाश मिश्र, सुवंश ठाकुर, शिवसिंह पतंग, रमेश कुमार त्रिपाठी, परशुराम विरही, राकेश भ्रमर, रासबिहारी पाण्डेय, शकुंत, पंकज पटेरिया, विवेक सत्यांशु, उषा प्रारब्ध, आशा शैली, मोतीलाल जैन, माया दुबे, सुषमा भंडारी, बालकृष्ण काबरा, रजत कृष्ण, भास्कर चौधरी, कमलेश्वर साहू, घनश्याम त्रिपाठी, बसंत त्रिपाठी, विजय राठौर, राधेलाल बिजघावने, सुनील कुमार पारीट आदि। इसके अतिरिक्त लघुकथा एवं आलेख भी कई महत्वूर्ण हस्ताक्षरों द्वारा लिखे गये हैं। ऊपर समस्त रचनाकारों का उल्लेख नहीं हो सका है, अन्यथा न लें, अन्य रचनाकारों के बारे में भी जानकारी दे सकें सुविधा होगी।

इतने सारे रचनाकारों द्वारा कई महत्वपूर्ण रचनाएं लिखे जाने के पश्चात भी समाज में वरिष्ठजनों की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। सरकार द्वारा भी कानून बनाकर प्रयास किया गया है इससे थोड़ी जागरूकता तो आई है परंतु इससे समस्या का हल नहीं हो पायेगा जब तक कि सामाजिक चेतना न लायी जाय। जिस तरह 'स्त्री विमर्श' के रूप में विमर्श, बहस, चर्चाएं आदि की जा रही हैं, उसी तरह 'वरिष्ठजन विमर्श' को भी मुख्यधारा में लाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी बिल्कुल प्रारंभिक स्तर से पाठ्यक्रम में भारतीय परंपराओं, मान्यताओं, संस्कृति को वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में सम्मिलित किया जाना चाहिए जिससे हमारे समाज में घट रही सहिष्णुता जो इस देश की पहचान है सुदृढ़ हो

सके तथा सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, विकृतियों पर अंकुश लग सके और पाश्चत्य देश भी जिन विकृतियों आदि से निजात पाना चाह रहे हैं वे अपने देश में फैल न सकें। हालांकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1999 को 'वृद्धावस्था वर्ष', एक अक्टूबर को 'वृद्ध दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया था। इससे अवश्य ही वरिष्ठजनों की समस्याओं के बारे में जागरूकता तो बढ़ी है। सरकार द्वारा भी 1999 में एक राष्ट्रीय नीति की घोषणा की गई थी तथा 2007 में कानून भी बना। कानून में प्रत्येक शहर में वृद्धाश्रम खोलने का प्रावधान किया गया है। 2007 से अभी तक, कितने खुले हैं और उनकी स्थिति क्या है, केंद्र सरकार अथवा राज्य सरकार के आंकड़े प्राप्त नहीं हुए हैं। वृद्धाश्रम के अतिरिक्त सरकार को प्रत्येक शहर में वरिष्ठजन कालोनी के प्रावधान की दिशा में भी कदम उठाना चाहिए जहां पर हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध हों, भले ही वे भुगतान आधार पर हों, इस कॉलोनी में सभी वरिष्ठजन साथ रहकर अपने अनुभव, दुख-सुख साझा कर सकेंगे तथा नई-नई गतिविधियों से नि:संकोच परिचित हो सकेंगे एवं आत्मविश्वास बनाये रख सकेंगे।

जागरूकता की दिशा में रचनाकारों, कलाकारों, पत्रकारों, समाजसेवियों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवी संस्थाओं को महती भूमिका निभाना होगी, युवाओं को भी आगे आना होगा क्योंकि उम्र तो सभी की बढ़ना है जो वापस नहीं होती क्योंकि 'जाके न आए वो जवानी देखी, आके न जाये वो बुढ़ापा देखा' और बुढ़ापा आने के बाद ही व्यक्ति जब अपने विगत की ओर देखता है तो उसे अपने जीवन में की गई जानी अनजानी गल्तियों का आभास होता है परंतु अब क्या हो सकता है ? अत: युवावस्था में ही यदि गल्तियां न होने का ध्यान रखा जाय तो स्थितियां काफी सीमा तक बिगड़ने से बच सकती हैं। विषय इतना गंभीर है और झकझोरने वाला है कि जितना भी मंथन किया जाय, कम है।

वरिष्ठजनों से जुड़ी समस्याओं के कुछ पक्षों पर समग्रता से विचार विमर्श किया गया। यह यक्ष प्रश्न अभी भी बरकरार है कि किसी भी विकसित देश की यही नियति है कि जो अपने जीवन में पूर्ण निष्ठा से इस दिशा में अग्रसर रहे, अब वे उम्र बढ़ने के साथ-साथ अप्रासंगिक हो गये हैं या यह उस दृष्टिकोण का प्रतिफल है जो पूर्व से विकसित पश्चिमी देश हैं जहां कि सभ्यता, संस्कृति व पारंपरिक जीवन शैली हमारे यहां से भिन्न हैं परन्तु विकास के साथ-साथ उनकी नीतियां ही नहीं बल्कि उनका समग्र परिवेश धीरे-धीरे विकासशील देशों को जकड़ रहा है, बहरहाल हमारे देश की एक विशेषता अवश्य है कि हमारी जड़ें अभी भी आत्यधिक सुदृढ़ हैं जो हमें किसी भी आंधी-तूफान से क्षणिक रूप से या कुछ समय के लिए हिला तो देती हैं परन्तु उखाड़ नहीं फेंक पातीं और फिर हम पुन: पूर्वास्था में आ जाते हैं पर साथ ही यह सोचकर निश्चिन्त नहीं हुआ जा सकता बल्कि समय-समय पर ठोस प्रयास अवश्य निरंतर करते रहना होंगे जिससे कोई भी दुष्प्रभाव बढ़े नहीं अपितु कम ही हों।

वरिष्ठ नागरिकों की ओर सरकार, गैरसरकारी संगठन और कुछ व्यक्ति समूहों ने भी ध्यान केन्द्रित किया है और इस ओर प्रयासरत हैं कि वरिष्ठ नागरिक, बुजुर्ग और वृद्धों के लिए उचित सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक वातावरण मिले। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में बुजुर्गो की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है और अनुमान के अनुसार वर्ष 2050 तक यह कुल आबादी का बीस प्रतिशत तक हो सकती है। औसत आयु में वृद्धि होने के साथ-साथ यदि बुजुर्गों की आयु के अनुसार उनकी क्रियाशीलता को आधार माना जावे तो 60 वर्ष के पश्चात् अवश्य व्यक्ति वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में आ जाता है परन्तु आज भी ऐसे कई रचनाकार व राजनैतिक हैं जो सजगता से कार्य कर रहे हैं, वे 75 वर्ष से भी अधिक हैं और वे अपना अमृत महोत्सव धूमधाम से मनाते हैं और कार्यरत हैं। कुछ इसे दूसरी पारी से भी परिभाषित कर रहे हैं। परिभाषित करने हेतु 60 वर्ष से 80 वर्ष तक आयु वर्ग को वरिष्ठ नागरिक और उसके अधिक उम्र वालों को बुजुर्ग (वरिष्ठतम नागरिक) की श्रेणी में रखा जा सकता है पर यह भी उतना ही सत्य है कि इस तरह के क्रियाशील नागरिकों का प्रतिशत बहुत अधिक नहीं है, क्योंकि आयु के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन तो आते ही हैं जिनसे बचाव के लिए समग्र प्रयत्न आवश्यक हैं जिस ओर सरकारों को विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि मात्र कानून का प्रावधान करने से ही स्थितियां नहीं बदलतीं, उनके लिए सामाजिक चेतना और जागृति भी उतनी ही अनिवार्य है जिससे मूल कारणों का समाधान होता रहे।

केन्द्र सरकार ने बुजुर्गो के संरक्षण के लिए एक कानून 'वरिष्ठ नागरिक अधिनियम 2007' का प्रावधान किया है परन्तु उसकी नियति यही है कि वह अभी तक पूर्णता से प्रभावशील नहीं हो सका है और अधिकांश नागरिकों को उसकी जानकारी भी नहीं है पर उसका बिल्कुल भी प्रभाव न पड़ा हो, ऐसा नहीं है। यदा कदा उससे संबंधित छिटपुट प्रकरण सुनाई दे जाते हैं जिससे वातावरण तो निर्मित होता ही है। वरिष्ठ नागरिक अधिनियम केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की ओर से लागू किया गया है जिसमें माता-पिता के रखरखाव का प्रमुख दायित्व उनके बच्चों, पोते-पोतियों उनके रिश्तेदारों का देता है जो संभवत: वरिष्ठ नागरिकों की सम्पत्ति का अधिग्रहण करेंगे। कानून के अन्तर्गत

माता-पिता की सही देखभाल न करने या फिर उन्हें बेसहारा छोड़ देने के फलस्वरूप बच्चों को 3 माह की कैद या 5000/- का जुर्माना अथवा दोनों का दण्ड दिया जा सकता है। साथ ही उन्हें सम्पत्ति से भी वंचित किया जा सकता है। इस प्रकार के प्रकरणों में वरिष्ठ नागरिकों को बच्चों की ओर से प्रति माह अधिकतम रु. 10,000/- राशि का मासिक रखरखाव भत्ता देने का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त इस कानून में संतान पर माता-पिता की देखभाल की वैधानिक जिम्मेदारी डाली गई तथा बुजुर्गों के लिए वृद्धाश्रमों की स्थापना का प्रावधान किया गया है।

बुजुर्गों की समस्याओं को लेकर 'हेल्प एज इंडिया' समय-समय पर सर्वेक्षण करता है। ताजा सर्वेक्षण के अनुसार 31 प्रतिशत सताए जा रहे बुजुर्गों में 75 प्रतिशत, परिवार के साथ रहते हैं। 80 प्रतिशत बुजुर्गों का मानना है कि मुश्किलों की वजह दोनों पीढ़ियों में एडजस्टमेंट न होना है। 55 प्रतिशत बुजुर्ग अपने साथ होने वाले अत्याचार की शिकायत किसी से नहीं करते। 80 प्रतिशत मामलों में ऐसा परिवार की इज्जत बचाए रखने के लिए किया जाता है। 62 प्रतिशत का मानना है कि बच्चों को अवेयर कर सेंसिटिव बनाया जाय तो मुश्किलें आसान हो जाती हैं। बुजुर्गों पर अत्याचार के लिहाज से देश के 24 शहरों में तमिलनाड के मदुराई में सबसे अधिक 63 प्रतिशत तथा इसके बाद उत्तरप्रदेश के कानपुर में 60 प्रतिशत अत्याचार का शिकार होते हैं। इसमें सबसे चौकाने वाली बात यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक शहरी क्षेत्रों में माँ-बाप पर अत्याचार करने वाले पाये गये। यू.एन.पी.एफ. के एक आंकलन के अनुसार देश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में लगभग 20 प्रतिशत बुजुर्ग अकेले या सिर्फ अपने जीवन साथी के साथ रहते पाये गये।

उपरोक्त सर्वेक्षण परिणाम चौंकाने वाले हैं पर वास्तविकता को नकारा भी नहीं जा सकता। देश में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ती ही जा रही है जिसमें निराश्रित व बेसहारा बुजुर्गों की संख्या अधिक है। यह भौतिक दृष्टि से अच्छा उपाय है कि निराश्रित, बेसहारा बुजुर्गों को रहने का ठिकाना मिल जाता है, उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति कमोबेश हो जाती होगी पर भावनात्मक दृष्टि से जितना वे टूट चुके होते हैं, ऐसी स्थिति में बस जीवन ढोने जैसा ही रह जाता है, जिये जाते हैं कुछ इस आशा के सहारे भी कि सांस है तो आस है और आस यही रहती है कि अपनों के बीच शायद हो पायें, एक सपना पलता रहता है जागी आँखों का सपना।

यदि सामाजिक जागरूकता व संतुलन फिर से पूर्व के वर्षों की तरह होगा तो ये समस्याएं उत्पन्न होंगी ही नहीं। हाँ, जहां बच्चों की विवशता है कि वे अपनी नौकरी के चलते अपने माँ-बाप के साथ नहीं रह सकते या माँ-बॉप सालों साल बिताए गये निवास को छोड़ना नहीं चाहते तो उनके लिए वरिष्ठ नागरिक कॉलोनी बनाई जाए जहां बुजुर्गों से संबंधित मूलभूत व प्राथमिक आवश्यकताएं पूर्ति के साधन हों और बच्चे जितना शीघ्र हो सके, माँ-बाप के पास आते रहें व माँ-बाप को भी कुछ समय के लिए उनकी इच्छानुसार बुलाते रहें।

वर्तमान में भारत में आबादी का लगभग दस प्रतिशत वरिष्ठ नागरिकों की आबादी है जो अगले दस वर्षो में 17 करोड़ से भी अधिक होने का अनुमान है। अमूमन माना जाता है कि प्रतिदिन लगभग 17 हजार लोग 60 वर्ष के हो जाते हैं। इंदिरागांधी राष्ट्रीय वृद्धाश्रम पेंशन योजना के अर्न्तगत बुजुर्गो को शायद 1000/- मिलते हैं जिसमें राज्यों की जिम्मेवारी भी सम्मिलित है क्या इसमें जीवन-यापन, रहना, खाना, दैनंदिन की आवश्यकताएं बीमारी आदि का व्यय उठाया जा सकता है। यह पेंशन भी अपवाद स्वरूप नागरिको को कई औपचारिकताएं पूर्ण करने पर मिल पाती है। बुजुर्गों पर होने वाला व्यय एक आकलन के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद (जी डी पी) का मात्र 0.032% है। जब हमारा संविधान समान नागरिक अधिकार का पक्षधर है, ऐसे में यह वरिष्ठ नागरिकों के साथ अन्याय कहा जा सकता है। अत: इस पर विचार करना आवश्यक है कि इस राशि में पर्याप्त वृद्धि की जाये जिसमें वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा व उचित देखभाल का प्रावधान हो जो जी डी पी का न्यूनतम एक प्रतिशत से अधिक हो। इसके साथ ही सरकार को यह भी ध्यान देना होगा कि यह बीमारी हो जाने के बाद के उपचार की तरह है अत: क्यों न जिस तरह किसी भी महामारी का संक्रमण फैलने से पहले उसके बचाव की तैयारी युद्धस्तर पर करते हैं, विभिन्न साधनों से जागरूकता बढ़ाते हैं, इसको भी बढ़ने से रोकें कि वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएं उत्पन्न ही न हों और वे सम्मान के साथ जी सके, उन्हें आवश्यक सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक वातावरण मिले। इसके लिए हमारी शिक्षा पद्धति में भी आवश्यक पहल की जाये, पारिवारिक वातावरण में संतुलन बनाने हेतु जागरूकता बढ़ाई जावे क्योंकि अभी स्थिति इतनी विकराल नहीं है कि नियंत्रण से बाहर हो पर आरंभ तो है कि और कई नागरिकों के साथ अति भी है पर हमारी जड़ें मतबूत हैं यदि उन्हें वहीं ढंग से पोषित किया जाय तो इस तरह की समस्याएं उत्पन्न ही नहीं होगीं।

हालांकि विषय और उसके समाधान अंतहीन से लगते हैं।

- संपादक- प्रेरणा, ए-74, पैलेस आरचर्ड फेज-3, सर्वधर्म के पीछे,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) 462042,
मो.: 98262 82750

■

शोर शराबे से दूर रहकर ठोसकार्य

डॉ गंगाप्रसाद बरसैंया

सर्वप्रथम सक्रिय एवं सार्थक जीवन के शानदार 75 वर्ष पूरे होने पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। श्री बिजघावने जी के लेख से ज्ञात हुआ कि विगत 4 फरवरी 2021 को आपकी हीरक जयंती मनाई गई। 75 वर्ष पूरे होने पर आपकी सचियता सुखद और प्रेरक है। मेरी शुभकामना हैं कि शतत पार तक स्वस्थ और सक्रिय रहकर साहित्य और समाज की सेवा करते रहें। श्री राधेलाल बिजघावने ने समय को गढ़ता व्यक्तित्व-कृतित्व की विस्तार से चर्चा की है। लेख से पता चलता है कि श्री तिवारी का रचना संसार कितना बड़ा और व्यापक है तथा दुनिया के शोर शराबे से दूर रहकर वे कितना ठोस काम कर रहे हैं। उन्होंने उनकी कृतियों की भी चर्चा की है। उनके लेखन का यह अंश उनके व्यक्तित्व-कृतित्व का अच्छा परिचायक है-अरुण तिवारी अपने समकालीनों से इसलिए अलग हैं कि इन्होंने अच्छी मात्रा में गुणवत्ता वाली रचनाओं का सृजन किया तथा 'प्रेरणा' जैसी पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। ये श्रेष्ठ कहानीकार, कवि, लेखक, विचारक और निरपेक्ष समीक्षक हैं। इनका व्यक्तित्व ओजस्वी एवं प्रभावशाली है। ये गलत आधारहीन आलोचना, टिप्पणी को खारिज कर देते हैं क्योंकि इनकी दृष्टि पैनी निरपेक्ष है। इन्हें सम्मानों, पुरुस्कारों की लालसा नहीं। ये साहित्य साधना में निष्ठा के साथ जुटे हैं। इन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता को लेकर जो अभियान चलाया है प्रशंसनीय है। उनकी इस विषय पर आई पुस्तक साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य के बारे में कुछ विचार प्रकट कर रहा हूं।

पत्रकारिता बनाम साहित्यिक पत्रकारिता (संदर्भ-साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य)

मैंने अपनी सम्मति आपको प्रेषित कर यह कहने में कोई पुनरुक्ति न होगी कि अधिकांश लेखक पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं। उन्होंने अपने अनुभवों के साथ ही पत्रकारिता जगत में व्याप्त गुण-दोषों का सप्रमाण तटस्थ बेबाक विवेचन किया है। उन लेखों से पत्रकारिता के इतिहास पर ही प्रकाश नहीं पड़ता अपितु विशिष्ट पत्र और पत्रकार भी विशेष रूप से उल्लेख है। यह तो सभी मानते हैं कि देश और समाज को जागृत करने तथा कुरीतियों और विद्रूपताओं एवं शोषण और अनाचारों के साथ अनैतिक कार्य कलापों को उजागर करने, उनके प्रति जनता को सजग और जागरूक करने में पत्रकारिता का योगदान ऐतिहासिक और उल्लेखनीय है। अपने स्वार्थ और लाभ के लिए धन्नासेठों और सत्ताधीशों ने अपने-अपने प्रचार-प्रसार के लिए अपने स्वयं के अखबार और पत्रिकायें भले निकाली हैं, पर लघुपत्रिकाओं ने उनकी परवाह किये बिना जनहित में जो अभियान छेड़ रखा है और साहित्य तथा पत्रकारिता के आदर्शों के परिपालन में संपादकों ने त्याग और संघर्ष किया, वह क्रम कभी समाप्त नहीं हुआ। धनी निर्धन का यह संघर्ष सदैव से रहा है। आज भी है। आदर्श चरित्र के आदरणीय पत्रकार और संपादक तब भी थे और आज भी हैं। भले ही उनकी संख्या नगण्य हो। अच्छी बात यह है कि प्राय: सभी लेखों में उन्हें आदर के साथ स्मरण किया गया है। पत्रकारिता के इतिहास, पत्र पत्रिकाओं के प्रदेय, लघु पत्रिकाओं की जुझारू भूमिका का उल्लेख के साथ इन लेखों में आज की पत्रकारिता में आये अनैतिक पतन, लाभ लोभ भरी दौड़, अधिक से अधिक कमाने, सम्मानित होने की लालसा तथा चाटुकारिता पर भी प्रकाश डाला है। यही नहीं, पत्रकारिता के क्षेत्र में हो रही उठा-पटक, छल-छंद और दांव पेंचों का उल्लेख भी इन लेखों में देखा जा सकता है। कई लेखकों ने स्वयं अपने अनुभवों को विस्तार से अंकित किया है। आपने अपने संपादकीय में भी उन तमाम बिंदुओं को इंगित किया है।

मनमोहन सरल का यह कथन कि 'सनसनी फैलाने वाले विषयों के मुकाबले विशुद्ध और गंभीर साहित्य देनेवाली पत्रिकाओं को हमेशा आर्थिक कठिनाइयों से जूझना पड़ेगा। क्योंकि विज्ञापन तंत्र समर्थों के हाथ में है। प्रदीप पंत, रमेश दवे, बलराम, हेतुभारद्वाज, सुरेश पंडित, सेवाराम त्रिपाठी, रामनाथ शिवेन्द्र, प्रमोद भार्गव, राजेन्द्र परदेसी, दिनेश पाठक, ओमप्रकाश पांडेय, आदि के लेख विशेष उल्लेखनीय हैं। दिनेश पाठक ने जैसे अपने अनुभवों को

विस्तार से अंकित किया है, वहीं ओमप्रकाश पांडेय ने मीडिया के भ्रष्ट और विद्रूपरूप का जो रूप सामने रखा है वह आंख खोलने वाला है। उन्होंने बड़े साहस से तथ्यों को सामने रखा है। मैं यहां उनके लेख का एक अंश प्रस्तुत करना चाहता हूं। वे लिखते हैं 'वैश्विक बाजारीकरण के मकड़जाल में फंसे मीडिया ने देश की 70 प्रतिशत जनता को खबर मानने से इंकार कर दिया है।...मीडिया के पास हलवे जैसा गर्म-गर्म, नर्म-नर्म, मीठा-मीठा आध्यात्म है, योगासन है, ज्योतिष है, प्रकृति है, वन्य जीवन है, पूरब से पश्चिम तक तरह-तरह का संगीत है, स्वास्थ्य, दुनिया की सैर है, संस्कृति की झांकियां हैं, उच्च तथा उच्चतम मध्यवर्ग की सुनहरी झलकियां हैं, बीच-बीच में थिरकती नाचती तारिकाएं तथा मेनकायें हैं, सब कुछ अच्छा-अच्छा, सुंदर-सुंदर लेकिन मजदूर, किसान-मेहनतकश महिलाएं अन्याय, शोषण... ऐसा कुछ भी जो इस मधुर कोमलता को बदमजा कर दें कठिन-कठिन, आवश्यक राजनैतिक, आर्थिक बहसें, जो दिमाग पर जोर डालने को मजबूर कर दें, इन्हें हटा दिया गया है। ...चौथा स्तंभ जनता के लिए नहीं, शासकों, पूंजीपतियों तथा अपने स्वार्थलाभ के लिए हैं। इस कथन में आक्रोश अधिक है, पर सत्यांश से अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार इन लेखों के माध्यम से पूरे पत्रकारिता के संसार पर दृष्टि डाली जा सकती है। जहां त्याग कम, स्वार्थ प्रमुख हो रहा है। श्री अरुण तिवारी की इस संबंध में यह कृति महत्वपूर्ण है।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
103, गोयल विहार, खजराना गणेश मंदिर के पास,
इंदौर-452016, मो. 9425376413

'प्रेरणा' पत्रिका के नए आयाम

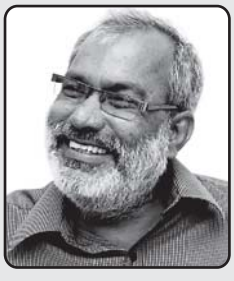

राजाराम भादू

प्रेरणा पत्रिका के संपादक अरुण तिवारी मुझे वर्षों से हर अंक भेजते रहे हैं। तो सबसे पहले तो सार्वजनिक रूप से उनका आभार ज्ञापन करता हूं। समकालीन लेखन के लिए प्रतिश्रुति यह पत्रिका गत तेईस वर्षों से नियमित प्रकाशित होती रही है। यह लघु पत्रिकाओं की उस परंपरा से जुड़ी है जिसे मिशनरी कहा जाता है। अरुण जी का संकल्प है प्रेरणा और प्रेरणा प्रकाशन से अपनी दृष्टि के अनुरूप पुस्तकों को छापना। उन्होंने हाल ही में अपने सार्थक जीवन के पचहत्तर बरस पूरे किये हैं। अपनी जीवन-संगिनी की कैंसर से हुई मृत्यु के बाद वे पत्रिका के प्रत्येक अंक में कैंसर तथा दूसरी जानलेवा बीमारियों पर जरूरी लेख देते हैं। उन्होंने वरिष्ठजनों पर केंद्रित एक अखबार निकालना शुरू किया है जो हिंदी में मेरी जानकारी में ऐसा अकेला उपक्रम है। प्रेरणा का एक विशेषांक भी वे वरिष्ठजनों पर निकाल चुके हैं। इससे आप ये न समझें कि यह कोई सामाजिक किस्म की पत्रिका तो नहीं। इस भ्रम को दूर करने के लिए इसके कुछ विशेषांकों का ही उल्लेख पर्याप्त है : मुक्तिबोध, निराला, धनंजय वर्मा, भगवत रावत और अभिमन्यु अनंत कहानी, कविता, संस्मरण, नारी अस्मिता, लघु उपन्यास और विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित। यह पूरी सूची नहीं है। अभी लोक संस्कृति और पचहत्तर पार अलक्षित रचनाकारों पर केंद्रित अंक घोषित है। साहित्यिक पत्रिकाओं पर विशेषांक के आयोजन के अतिरिक्त प्रेरणा में इनकी भूमिका व चुनौतियों को लेकर कई अंकों में सार्थक बहस चलाई गई। पत्रिका के हर अंक में अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं के नये अंकों का परिचय दिया जाता है। पत्रिका में अंतर्वस्तु व रचनाकारों के प्रतिनिधित्व को लेकर खुलापन है। बेशक, कई कमजोर रचनाएं भी अंकों में जगह पा जाती हैं। हर अंक में पाठकों की ढेर प्रतिक्रियाएं छपती हैं जो इधर दुर्लभ होती जा रही हैं। प्रस्तुतिकरण आकर्षक और सुनियोजित होता है। एक और उल्लेखनीय तथ्य सिनेमा पर सविता बजाज का नियमित स्तंभ है जो फिल्मों पर प्रचलित लेखन से नितांत भिन्न है। आप जानते होंगे, समान्तर सिनेमा से उभरी सविता बजाज रंगमंच, साहित्य और गंभीर सिनेमा में गंभीर दखल रखती हैं। कथित मुख्यधारा सिनेमा से भी उनका संबंध रहा है। तो वे इस दुनिया पर आनुभविक रूप से प्रभावी लिख रही हैं।

- लेखक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं।
86, मान सागर कालोनी, सशेपुर रोड, प्रताप नगर, जयपुर-302-033
मो : 9828169277

साहित्यिक पत्रकारिता के प्रेरणा पुरुष

सूर्यकांत नागर

बहुत मुश्किल है अरुण तिवारी जी के सम्बन्ध में कुछ कहना। वज़ह यह नहीं कि उनका व्यक्तित्व जटिल और कृतित्व अमूर्त है। जितने उत्कृष्ट साहित्यकार हैं, उतने ही उत्कृष्ट इंसान हैं। सरल, सौम्य और मृदु। उनसे मिलना और बतियाना अलग तरह का अनुभव है। योग वशिष्ट का यह उद्धरण अरुण जी के व्यक्तित्व पर शत प्रतिशत उतरता है– 'यीस्पन्श्रृति प्राप्ते इष्टे, स्मृति मुपागते / आनंद यान्ति थूतानि जीवतं तस्य शोभते।' अर्थात् जिसका वृतांत सुनकर, जिसे देखकर और जिसका स्मरण कर सभी प्राणियों को आनंद होता है, वह जीवन शोभा देता है, सफल होता है। अरुण जी से मिलकर जो सुकून मिलता है, वर्णनातीत है। उनका निश्छल, सहज, पारदर्शी रूप मन मोह लेता है। उनकी सहजता ओढ़ी हुई नहीं है। ठेठ अंदर तक बसी है। सही अर्थ में सहज होना बहुत कठिन है। नकली सहजता पकड़ में आ जाती है। वे अंदर–बाहर एक–से हैं। उनके निजी जीवन और सार्वजनिक जीवन में कोई भेद नहीं है। निराभिमानी न कोई दिखावा, न प्रदर्शन। जोड़–तोड़, गुटबंदी और ईर्ष्या–द्वैष से मुक्त। उनकी सादगी और प्रतिभा में ऐसी गुरुत्वाकर्षक शक्ति है जो हर किसी को अपने मोह–पाश में बाँध लेती है। ईश्वर में गहरी आस्था है। ईश्वर का दिया सबकुछ है, पर तिवारी जी का मानना है कि बड़प्पन अमीरी में नहीं, सज्जनता और ईमानदारी में है।

कृतित्व रचनाकार के व्यक्तित्व का दर्पण है। हमें अरुणजी के व्यक्तित्व की छाप उनके कृतित्व में दिखाई देती है। वे श्रेष्ठ लेखक, कवि, चिंतक, कथाकार, आलोचक और संपादक हैं। समकालीन साहित्य पर उनकी पाँच महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रकाशित हैं। वे एक दृष्टि–सम्पन्न संपादक हैं। संपादन का उनका लम्बा अनुभव है। लगता है, संपादन उनकी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बन चुका है। एक समय वे 'आकंठ' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका से जुड़े थे। बुजुर्ग पीढ़ी के प्रति तिवारी जी के मन में विशेष आदर भाव है। उम्र के ढलान पर खड़े लोगों के अकेलेपन, अवसाद, उपेक्षा और मानसिक–शारीरिक स्थिति जैसी समस्याओं के प्रति उनकी चिंता का ही प्रतिफल है कि उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों पर केन्द्रित देश के पहले समाचार–पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया है। निश्चित ही यह अनोखी पहल है। 'प्रेरणा' के भी कई अंक उम्रदराज साहित्यकारों और समाजसेवियों पर केन्द्रित रहे हैं। आज जब संयुक्त परिवार टूट–बिखर रहे हैं, बूढ़े वृद्धाश्रम में रहने को विवश हैं, तिवारीजी की वृद्धजनों के प्रति सहानुभूति अनुकरणीय है।

संपादन के प्रति उनकी रुचि का एक और प्रमाण है बच्चों की अंग्रेजी पत्रिका 'इंटेलीजेली' का संपादन–प्रकाशन। सतत छह वर्षों से इसका नियमित प्रकाशन हो रहा है। प्रकाशन–संस्थान का दायित्व है सो अलग। अपने समय का सदुपयोग करना कोई उनसे सीखे। गत तेईस वर्षों से वे 'प्रेरणा' साहित्यिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। यह किसी औद्योगिक घराने की पत्रिका नहीं है। लोक मांगलिक चेतना जाग्रत करने की दृष्टि से अरुण जी अपने बल–बूते पर यह कार्य कर रहे हैं। मानवीय और लोकतांत्रिक मूल्यों के अभिरक्षक के रूप में इस काम में जुटे हैं। प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति उनके पास समाजसेवी दृष्टि है। उन्हें पता है कि साहित्यिक पत्रकारिता का काम पाठक की बौद्धिक, नैतिक और साहित्यिक चेतना जाग्रत करना है। विचार करने वाला मानस तैयार करना। सजग संपादक का काम अच्छे लेखक तैयार करना ही नहीं, अच्छे पाठक तैयार करना भी है। उनके लिए प्रेरणा का संपादन एक व्यसन की तरह है। वे उदारहृदय संपादक हैं। विरोधी की श्रेष्ठ रचना छापने में भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। उदारता और सहृदयता संपादक का बड़ा गुण है। दलबंदी से मुक्त हो उन्होंने पत्रिका को ध्वंसात्मक गतिविधियों से बचाए रखा है। पाँच–छह पृष्ठों में छपने वाली पाठकीय प्रतिक्रिया का स्तंभ 'आपकी क़लम से' इस बात का सूचक है कि प्रेरणा का पाठक वर्ग कितना विशाल है।

अरुण तिवारीजी ने पत्रिका को धनार्जन का साधन नहीं बनाया। उनके लिए यह एक सारस्वत अनुष्ठान है। यह नहीं कि लम्बे सफरनामे में तकलीफें या समस्याएँ नहीं आईं। मगर वे एक

निस्पृह साधक की तरह जुटे रहे– 'इक क़दम जानिब–ए–मंज़िल बढ़ा हूँ हरदम जब भी मुश्किल से मुसीबत मेरे दर पर आई।'

'अपनी बात' के तहत लिखी गई अरुणजी की संपादकीय टिप्पणियाँ उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। भूमण्डलीकरण, बाज़ारवाद, पर्यावरण, साहित्य, संस्कृति, स्त्री–विमर्श, साम्प्रदायिकता, सोशल मीडिया और जीवन–मूल्य पर उनके विचार–प्रवाह ने बड़े पाठक समूह का ध्यान आकर्षित किया है। इसके अतिरिक्त वरिष्ठ नागरिक पचहत्तर पार साहित्यकार, साहित्यिक पत्रकारिता, नारी–अस्मिता, समकालीन ग़ज़ल और उपन्यास जैसे विषयों पर विशेषांक निकाले जिनकी व्यापक चर्चा हुई।

तिवारीजी के जीवन का सर्वाधिक दुखद प्रसंग धर्मपत्नी उर्मिला जी का केंसर रोग से असामयिक निधन है। विरह–वेदना ने प्रेम को एक नया रूप दिया। सूर्य–प्रिया (अरुण–प्रिया) के विछोह ने प्यार को नए आयाम दिए। इस गहन आघात को सहने के लिए साहित्य और पत्रकारिता उनके सम्बल बने। इनमें डूबकर उन्होंने पीड़ा की तीव्रता को काफी हद तक नियंत्रित किया। किंतु केंसर की क्रूरता के दमन के लिए उन्होंने केंसर के विरुद्ध मुहिम छेड़ रखी है। प्रेरणा के हर अंक में वे केंसर से बचाव और उपचार का संदेश प्रमुखता से देते हैं। केंसर पर डॉ. श्री गोपाल काबरा के लेख भी अक्सर छपते रहते हैं।

अरुण तिवारी जी ने एक विशेष काम और किया है। प्रेरणा में कुछ सामग्री अंग्रेजी में देने की शुरुआत की। मेधावी डॉ. शशिभूषण द्विवेदी जैसे विद्वानों के लेख समय–समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। पत्रिका की इस नीति को कुछ लोगों द्वारा पसंद नहीं किया गया पर संपादक अपनी सोच पर कायम है।

अंग्रेजी में एक मुहावरा है– 'May his tribe increase' (मे हिज ट्राइब इन्क्रीस)। हिन्दी में लगभग इसके समान्तर मुहावरा है– 'इस प्रजाति के लोग अब लगभग लुप्तप्राय हैं। दोनों के भावार्थ पर अरुणजी खरे उतरते हैं– सामाजिक और साहित्यिक दोनों स्तर पर। आज जब चारों ओर स्वार्थ का बाज़ार गर्म है, लूट–खसोट मची हुई है, लोग जोड़–बाकी में संलग्न हैं, तब निस्वार्थ भाव तथा पूरी लगन और ईमानदारी से लोक–कल्याण के प्रति अपने को समर्पित करना स्तुत्य है। उनकी–सी सादगी या तो स्वभावगत होती है या कठिन तपस्या से साधी जा सकती है। वे जो भी करते हैं नाम या यश के लिए नहीं करते। उनकी सकारात्मक सोच प्रेरणादायी है। कामना है कि अपनी अहर्निश साहित्य–सेवा के लिए अनेक सम्मानों से अलंकृत अरुण जी अपनी लालिमा यूँ ही फैलाते रहें। अंत में मैं लोकधर्मी पं. रामनारायण उपाध्याय की इन पंक्तियों के साथ में उनका अभिनंनदन करता हूँ– 'एक अच्छा आदमी / खिले हुए फूल की तरह सबको / सुख पहुँचाता है / एक अच्छी क़िताब / ख़ुशमिज़ाज आदमी की तरह / लिखने की प्रेरणा देती है / एक अच्छे आदमी की एक अच्छी किताब / ऐसी इबारत है / जिसे उसी तरह जी कर पढ़ा जा सकता है।'

– लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
81, बैराठी कॉलोनी नं. 2, इंदौर–452014, मो.: 9893810050

सृजन का समकालीन परिदृश्य

(बातचीत)

अरुण तिवारी

पृष्ठ : 144
मूल्य : 190/–
प्रकाशक : प्रेरणा पब्लिकेशन, देशबंधु भवन, प्रथमतल,
26–बी, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन–1,
भोपाल (म.प्र.) 462011, टेलीफोन : 0755–4940788
ई–मेल : prernapublicationbpl@gmail.com

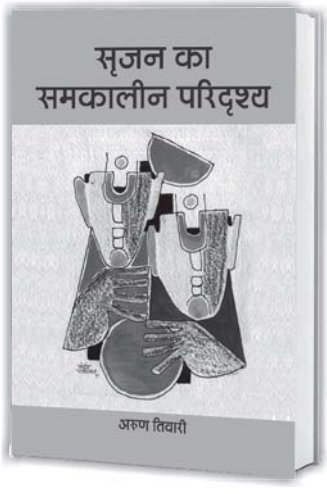

फौलादी इरादों वाला आदमी- अरुण तिवारी

माताचरण मिश्र

बहुत पहले की बात है, जैसे कई रास्ते किसी एक मोड़ पर मिल जाते हैं, वैसे ही कोई एक दिन वरिष्ठ रचनाकार राधेलाल विजघावने जी मेरे आवास पर आ गए। कुछ इधर-उधर की बातें चल रही थीं। साहित्यिक तो कतई नहीं, घर-गृहस्थी या खेती किसानी की बातें, चाय नाश्ते के बीच उन्होंने मुझसे पूछा- ''तुम कभी अरुण तिवारी जी से मिले हो'' और मेरे नहीं कहने पर उन्होंने मुझे तैयार होने के लिए कहा और यह भी ताकीद की कि अपनी किताबें उन्हें देने के लिए रख लेना।

बिजघावने जी उम्र में बेहद वरिष्ठ हैं पर बेहद संकोची स्वभाव के जैसा अक्सर किसानों का ही हो सकता है पर उनके व्यवहार से ऐसा नहीं लगा कि उनमें कोई संकोच है यानि कि वे पहले भी तिवारी जी से भलीभांति मिलते रहे हैं। मैंने उन्हें अपने घरघराते स्कूटर पर पीछे बैठने के लिए कहा और तब तक हम रास्ते पर साथ-साथ जा रहे थे। शाहपुरा का तालाब कहीं से भी आते-जाते रहो मन को ताजगी और प्रफुल्लित कर देता है और फिर हम फिर रास्ते में एक मोड़ पर तिवारी जी के आवास की ओर मुखातिब थे, एक बेहद खूबसूरत डुप्लेक्स, बगीची में मौसम के ताजे नये फूल, लॉन पर एक बड़ी सी गाड़ी। विजघावने दादा ने डोरबेल दबाई। संगीत मय चिड़ियों की चहचहाहट अन्दर से उनका भृत्य बाहर आया और पूरी जानकारी ले फिर अन्दर चला गया।

इन्तजार के कुछ बेसब्र पल, सामने के बुक स्टेंड पर 'प्रेरणा' के कुछ एक विशिष्ट अंक खण्डों पर लगे हुए बहुत करीने से। एकाएक तिवारी जी अन्दर से बाहर ड्राईंगरूम में आए। साफ सुथरे जैसे नहाने धोने के बाद ही बाहर आए हों। विजघावने दादा ने तिवारी जी से मेरा परिचय कराया। ''क्या इसकी कोई खास जरूरत थी''- बड़ी नफासत से उन्होंने कहा और मेरा संकोच जाने कहां बिला गया? उनकी बातचीत और व्यवहार में कोई बनावट नहीं, जैसे पहले भी हम मिल चुके हैं, मैंने अपनी दो किताबें उन्हें दीं, वे उसे लेकर उलटने पुलटने लगे।

''अरे भाई! इन्हें तो मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ''- उन्होंने फिर कहा।

इतने बड़े सिविल इंजीनियर जैसे ओहदेदार पेशे में रहा हुआ आदमी और घमण्ड का कहीं नामोनिशान तक नहीं। यह मन को बहुत अच्छा लगा। फिर उन्होंने मुझे 'प्रेरणा' के लिए कुछ भिजवाने के लिए भी कहा।

वापस घर लौट कर मैंने उन्हीं दिनों लिखी अपनी एक कहानी डाक से 'प्रेरणा' के लिए भिजवा दी और फिर इस बात को भी करीब-करीब भुला सा दिया। कुछ एक दिनों बाद डाक से 'प्रेरणा' का एक अंक मुझ तक पहुँचा। वह प्रेरणा का 'कहानी अंक-एक संवेदना की तलाश' था। बड़े खूबसूरत संदीप राशिनकर के चित्र से सजी हुई जैसे कोई सुन्दर सी किताब हो। बड़े बड़े स्थापित और नामी कथाकारों की कहानियों के बीच में 'थोड़ी सी जगह' मेरी कहानी जयंत देशमुख के खूबसूरत स्केच के साथ प्रकाशित हुई थी। सबसे अच्छा मुझे यह लगा था कि तिवारी जी लोहे ईंट गारे के बीच रहने के बाद भी सिर्फ अपने साहित्यिक संस्कारों और अपनी रुचियों को बरकरार रखे हैं। कमरे का रखरखाव सादगीपूर्ण लेकिन जैसे मन को बाँधता हो, जरूर भाभीजी की संस्कारप्रियता इसके पीछे रही होगी। 'प्रेरणा' में प्रकाशित कहानी का शीर्षक भी 'थोड़ी सी जगह' ही था। बड़े-बड़े नाम डॉ. रमेश चन्द्र शाह, कमलाप्रसाद और दामोदर दत्त दीक्षित, सूर्यकान्त नागर और दामोदर खडसे। पत्रिका काफी आकर्षक और संग्रहणीय। इतने प्रसिद्ध नामों के साथ इस नाचीज का भी नाम देख कर बहुत अच्छा लगा।

एक बहुत खास बात जो मुझे यह नजर आई कि तिवारी जी सिविल इंजीनियर होते हुए भी उन्होंने एम.बी.ए. की आंशिक पढ़ाई, संस्कृत और एम.ए. हिन्दी के साथ और भी काफी विशिष्ट अध्ययन किया है। हरिशंकर अग्रवाल की मध्यप्रदेश की सबसे चर्चित पत्रिका 'आकंठ' के संपादक मंडल में भी रहे हैं। वरिष्ठ जनों

के लिए समाचार पत्र 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' भी निकालते हैं। यानी कि धुन के धनी व्यक्ति हैं। बड़े से बड़े पुरस्कार भी मिल चुके हैं। बड़े निबंधकार भी हैं। कविता-कहानियां भी लिखते रहे हैं और 'भोपाल' की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका जिस पर अनेकों पी.एच.डी. भी हो चुकी हैं, रससिद्ध आदमी हैं। भगवान ने हैसियत दी है तो साहित्यिक संस्कारों से भी नवाजा है। पत्रिका निकालना जोखिम का काम है फिर भी मैदान में अपनी हिम्मत से डटे हुए हैं।

इसी बीच 'प्रेरणा' का अगला अंक प्राप्त हुआ जिसमें बलराम, प्रदीप पन्त जैसे विख्यात नामों के साथ 'इंडिया टुडे' ने 'थोड़ी सी जगह' की भी तारीफ की है। मैंने अरुण तिवारी सर को आभार व्यक्त किया। जिसे उन्होंने बड़ी सहजता से ग्रहण किया है। यही बड़े आदमी होने का उनका बड़प्पन भी है। बात आई गई हो गई।

***

समय आगे बढ़ता गया। 'प्रेरणा' के अगले अंक निकलते रहे। सुनते हैं इसी बीच भाभी जी यानी कि मैडम उर्मिला तिवारी जी को कैंसर हो गया। बिना किसी को ज्ञात हुए तिवारी जी इस आई हुई विपदा से भी निपटते रहे, जहाँ जहाँ भी संभव था उनके इस घातक रोग से जूझने के लिए दिल्ली-मुम्बई एक किए जाते रहे। सितम्बर 2016 का महीना चल रहा था, 'दैनिक भास्कर' के अंक में भाभी जी के नहीं रहने की खबर साया हुई, यह भी कि उनका पार्थिव शरीर बाई-प्लेन 'भोपाल' लाए जाने की सूचना मिली, भदभदा श्मशान घाट में अंतिम संस्कार किया जाएगा, मुझे देखकर भाई बलराम गुमाश्ता जी मुझ तक आए कहा- सुबह तिवारी सर से बात हुई थी और उन्होंने बिलखते हुए कहा-''हम यह लड़ाई हार गए हैं!'' मैं भी कहता तो क्या कहता? संतोष चौबे, राजकुमार केसवानी जैसी प्रसिद्ध हस्तियाँ वहां उपस्थित थीं। पार्थिव शरीर आने की प्रतीक्षा हो रही थी। एकाएक द्वार से तिवारी जी श्वेत वस्त्रों में आते हुए दिखे, उनका चेहरा फक् था। वह सोलह सितम्बर की मनहूस सुबह थी और श्मशान में चहकती हुई चिड़ियों और मौसम के ताजे फूल थे पर शायद इस समय बदरंग से हों।

देह अग्नि के हवाले हुई तिवारी साहब का चेहरा जैसे कोई लुट सा गया हो। ऐसी वीरानगी उन पर साया हो रही थी। वे अपनी सहधर्मिणी जो पत्नी से आगे बढ़ कर अब दोस्त सी हो गई थीं।

कहते हैं उसके बाद तिवारी जी के एकाकी ओर सूने जीवन में वे अवसादग्रस्त हो गए। जैसे किसी की सारी दौलत छीन उसे विपन्न कर दिया गया हो। सारे-सारे दिन वे चुप से बैठे रह जाते थे।

यह वही ए-74, पैलेस आर्चर्ड कोलार रोड का आशियाना था जहाँ वे मैडम के साथ रह रहे थे। उनका सबसे ज्यादा समय यहीं व्यतीत हुआ। एकाएक उन्हें ऐसा लगता जैसे भाभी जी ने उन्हें आवाज दी है। वे हौले से हँसी हों, वे रात सोये हुए नींद से जाग उठते और सारी रात बैठे बैठे रह जाते थे, यह उनके जीवन का सबसे खतरनाक दौर चल रहा था, उन्हें महाकवि निराला जी की पंक्तियाँ याद आ जाती थीं-

''मैं अकेला
देखता हूँ आ रही मेरे दिवस की सांध्य बेला
पके आधे बाल मेरे
हुए निष्प्रभ गाल मेरे
चाल मेरी मन्द होती आ रही
हट रहा मेला मैं अकेला''

न्यूजीलैंड, मुम्बई, जालंधर जैसी जगहों पर रहते हुए उनके बच्चों ने उन्हें समझाया। आप संगीत की दुनिया में खो जायें। कभी बातों में मैंने उनसे उनके सर्वश्रेष्ठ कलाकार के बारे में पूछा था उन्होंने बताया-राजकुमार और अभिनेत्री मैं सोच रहा था कि शायद वे वहीदा जी का नाम लेंगे परन्तु वे बिलकुल चुप रह गए... जैसे उन्होंने न कहते हुए भी कह दिया हो। फलस्वरूप वे 'आग', 'जागते रहो' और 'जोकर' जैसी फिल्मों के संगीत में डूबते चले गए जैसे आगे का रास्ता मिल गया हो। वे अवसाद से बाहर आते चले गए। रह रह कर उन्हें मुक्तिबोध की पंक्तियों से अंधेरे से बाहर आने का रास्ता मिल गया हो-

कोशिश करो
कोशिश करो
जीने की
जमीन में गड़ कर भी

..... और वे उस अपार दुख से बाहर आने लगे थे। उन्होंने अपने आपको काम में डुबा दिया था।

****

यह एक दूसरा दौर था। जब उन्होंने अपनी नियति को स्वीकार अपने को वर्तमान को सौंप दिया था। 'प्रेरणा' लेखकों के साथ ही साथ पाठकों को भी तवज्जो देती है। आम पाठक को भी पर्याप्त स्पेस दिया गया है।

पत्रिका साहित्य के अतिरिक्त समसामयिक मुद्दों और सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ी है। समय-समय पर 'प्रेरणा' ने ऐसे महत्वपूर्ण सवालों को उठाया है जिससे 'प्रेरणा' को अन्य दूसरी पत्रिकाओं, रेडियो और दूरदर्शन पर प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। पत्रिका में सभी चुनावों में किसी को भी मत नहीं देने 'नोटा' का प्रावधान होना चाहिए। पाठ्यक्रमों में रोजगारोन्मुखी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। कविता-कहानी के बदलते हुए चेहरे पर लोगों के विचार एकत्रित किए गए। वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया। हर अंक में पर्यावरण और कैंसर पर बड़े से बड़े डॉक्टरों के आलेख प्रकाशित किए गए। बच्चों के समुचित विकास को ध्यान देते हुए एक अंग्रेजी की पत्रिका 'इन्टेलीजेली' का प्रकाशन आरंभ किया गया। वृद्धजनों की समस्याओं पर 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' जैसे अखबार का प्रकाशन प्रारंभ किया गया।

इस तरह हम पाते हैं कि अरुण तिवारी जी द्वारा समसामयिक स्थितियों को देखते हुए समय-समय पर विशिष्ट अंकों का प्रकाशन भी किया गया। यह पूरी तरह निर्माण का रास्ता था जिस पर उन्होंने अपने दुखों का गरलपान शिव की तरह किया है और इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह एक नव निर्माण का विहान है और इसका सारा श्रेय अरुण तिवारी जी को ही जाता है। राहत इन्दौरी की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं जो उन पर मौजूं बैठती हैं मुलाहिजा हो-

आँख में पानी रखो, होंठों पर चिन्गारी रखो
जिन्दा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो
राह के पत्थर से बढ़ कर कुछ नहीं है मंजिलें
रास्ते आवाज देते हैं सफर जारी रखो।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
ए-19, ओल्ड मिनाल रेसीडेंसी, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.) 462023
मो.: 9893467069

'प्रेरणा' द्वारा प्रेरणात्मक कार्य

अतिरिक्त उत्साह है कि भाई साहब 'प्रदीप पन्त' की सिफारिश पर मुझे पत्रिका सहज ही मिल गयी, उन्हें तो दोगुना साभार आभार कहना बनता है, मजे की बात अभी पीछे facebook पर भाई जी ने अपना नम्बर दिया लम्बी बात हुई मेरा पहला वक्तव्य यही था कि क्यों न ऐसा कोई अंक निकाला जाये जिसमें अपने पुराने लेखक बन्धु बान्धव को हम सब याद करें कि सब कैसें है क्या उनकी रचनात्क गतिविधियां हैं। जवाब में प्रेरणा का जिक्र आया कि यह काम अभी अरुण तिवारी ने खूब कर दिखाया है- बस फिर तमाम जददो जहद के बीच पत्रिका मुझ तक पहुंच ही गयी। अपनी पसन्द का विषय समेटे, अभी अरूण तिवारी का संपादकीय ही पढ़ चुकी हूं, वाह...हमारी बूढी होती लेखकीय पीढ़ी के लिय मै उतनी ही फिक्रमन्द हूँ जितनी मैं अपने अनपढ़ विस्थापित बच्चो के लिये... अरुण की चिन्ता और प्रयास दोनो बहुत सार्थक है, सभी की सकुशलता बयान करते हुए तमाम जानकारी से भी लबरेज़ कर दिया कि कौन कब और कितना काम कर रहा है, सुखद अनुभूति यह रही कि हम बूढों के प्रति चिंता उनकी क्षमताओ के प्रति आशावादी व सुरक्षा हित सर्वोपरि है जाहिर सी बात है कि बहुत से देशों में बुजुर्गों को बीतराग नहीं माना जाता और उनके अनुभवों और वरिष्ठता से एक आशावादी माहौल बनाया जाता है, संपादक की हैसियत से अरुण सचमुच बहुत-बहुत बधाई के पात्र है कि एक कारगर प्रयास आपने कर दिखाया आगे भी मिलती रहे जरूर यही चाहूंगी। चित्रा दीदी का इन्टरव्यू पूरा पढ़ गयी एक ही सिटिंग में खासा लम्बा रहा कमाल की कलात्मकता से पन्ने आगे सरकाती रही चन्द्रकला... अति उत्तम क्या रवानगी है आपके भाषा प्रवाह में-मजा आ गया। अब सूर्यबाला और प्रदीप पन्त को पढ रही हूँ-बहुत व्यापक और सुन्दर दृष्टिकोण लिये है पत्रिका, आगे भी अवश्य पढ़ना चाहूंगी।

जया रावत

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
350, नीति खंड-1, सेकेन्ड फ्लोर, इंदिरापुरम, केम्ब्रिज स्कूल के पास,
गाजियाबाद-201-014, मो.9873778817

शब्द-जुलाहा

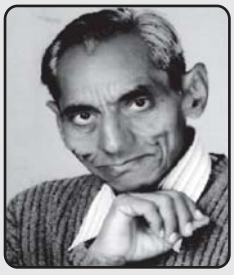

राधेलाल बिजघावने

शब्द को गढ़ना और उसको भाषा की चादर में बुनना एक महत्वपूर्ण रचना कर्म है। जिसमें कलात्मक क्षमता, कला शिल्प की उत्कृष्ठता की जरूरत होती है। अनुभवी विद्वान शब्द जुलाहा ही पूरी निष्ठा, ईमानदारी और पूरी लगन से समर्पित भाव से यह कार्य संपन्न कर सकता है। जब खेत में किसान बीज बोता है तो उसमें खरपतवार भी बिना बोये उग आते हैं जिन्हें काट छांटकर साफ कर फेंक देना पड़ता है। साहित्य में भी शब्द जुलाहा साहित्य की चादर बुनता है तो उसके साथ कूड़ा कर्कट भी स्वत: शामिल हो जाता है। जिसे विवेक के ब्रश से साफ कर निरपेक्ष आलोचना का फिल्टर इस्तेमाल कर उत्कृष्ट साहित्य को कलात्मक रूप देना पड़ता है।

उत्कृष्ट कला साहित्य से ही कलात्मक साहित्य, संस्कृति का निर्माण होता है। नि:संदेह कला साहित्य से ही देश की पहचान होती है। यानि किसी देश से उसकी कला साहित्य छीन कर मिटा अथवा नष्ट कर दिया जाय तो विश्व में उसकी पहचान ही नहीं रहेगी। बिना पहचान वाले देश का कोई विश्व में अस्तित्व ही नहीं होगा।

उत्कृष्ट कला, साहित्य से ही भाषा, परिवेश, समाज, संस्कृति का निर्माण होता है। अच्छा समाज, अच्छी संस्कृति से देशवासियों का नैतिक चरित्र का गठन होता है। उनके व्यवहार और आचरण में सुधार आता है। इससे घर परिवार, समाज संस्कृति आदि देश के कुल नैतिक मूल्य समृद्ध होते हैं। कुल नैतिक मूल्यों के समृद्ध होने से कुल आर्थिक विकास होता है और आर्थिक विकास से कुल राजनैतिक मूल्यों में निरपेक्ष उत्कृष्टता आती है और उनकी वैचारिकता, सोच समाज में परिवर्तन सकारात्मक मूल्यों के साथ होता है। सुख, शांति, सद्भावना, एकता की भावना हर आदमी में विकसित होती है। ईमानदारी का प्रतिस्थापन भी होता है। इससे कुल सामाजिक वेलफेयर स्थापित होता है।

शब्द गढ़ना और उसका सही इस्तेमाल करना कला धर्म की उत्कृष्टता से ही संभव है। इसमें थोड़ी सी भी लापरवाही से समाज संस्कृति की कलात्मक क्षमता के स्तर में गिरावट आ जाती है जो बहुत बड़ी शर्मनाक हानि होती है।

'शब्द' दोधारी तलवार होता है, जिसे संभालकर चलाना जरूरी है। थोड़ी सी गड़बड़ी से शब्द तमाम समाज, से संस्कृति के साथ साहित्य की बनावट को अलग ढंग से काटपीट कर बर्बाद कर देता है और उसकी भव्य इमारत को ढहा देता है।

शब्द में बहुत बड़ी ताकत है। उसकी धार को बोथरा नहीं बनने देना चाहिए। उसकी मारक क्षमता भी असीमित है। उसे कहीं भी, किसी भी समय सुना जा सकता है। शब्द की हत्या मनुष्य की हत्या है। बिना शब्द के मनुष्य भाषाहीन, गूंगा, बहरा, अंधा, लंगड़ा और किसी काम का नहीं होता है। इसलिए शब्दों को संवेदनहीन और संवेदन शून्य बनाये रखने से बचाने की नितांत जरूरत है।

शब्द गढ़ता आदमी निरपेक्ष उत्कृष्ठ साहित्यकार होता है क्योंकि उसे साहित्य की चादर के फेब्रिक की अच्छी पहचान होती है। अच्छी पहचान होती है, साहित्य से उत्कृष्ट देशों की जिससे समाज संस्कृति की हित चिन्ताओं को सुनना और रंगना है इसलिए शब्दों का फेब्रिक भी उत्कृष्ट, साफ-सुथरा होना चाहिए।

जो लोग शब्दों का प्रयोग प्रयोजनहीनता के लिए करते हैं अथवा गाली, गलौच, वैमनस्य, हत्या, अतिवाद बढ़ाने के लिए करते हैं, उनकी भाषा शब्दों की मौत हो जाती है। भाषा शब्दों की मौत के साथ ऐसे निकृष्ट सोच के लिए भाषा शब्दों के इस्तेमाल करने वाले लोगों की मौत हो जाती है और दुनिया के ब्लेक बोर्ड से उनका नाम हमेशा के लिए मिट जाता है क्योंकि अतीत में बदलना उनका वर्तमान धूल धुएं में हमेशा के लिए दफन हो जाता है। उनका स्वप्न बिम्ब भी शेष नहीं रहता।

अरुण तिवारी ऐसे शब्द साधक और हिन्दी भाषा तकनीकी के विशेषज्ञ हैं जो समाज भाषा शब्द चरित्र और उसके कलापक्ष को

बहुत गहरे से जानते और समझते हैं, इसलिए हिन्दी साहित्य में शब्दों का इस्तेमाल, सजगता, सतर्कता से करते हुए लेख, कहानी, कविता का सृजन करते हैं और आलोचना के फिल्टर का इस्तेमाल बहुत सावधानी से करते हैं ताकि साहित्य संस्कृति की उत्कृष्टता और कलात्मकता की कहीं हानि नहीं हो। इसलिए देश के हर आदमी के नैतिक चरित्र, उसके उद्देश्यों और उसके कार्यकलापों का गहरे से अध्ययन कर कहानी गढ़ते हैं। जिसमें मानवीय चरित्र, उसकी हित चिंताएं और सामाजिक कुल, कल्याण की भावना जीवित रहती है। इनका मनोवैज्ञानिक ज्ञानात्मक संवेदन-सुदृढ़ और निरपेक्ष तथा साफ सुथरा है। ये मानवीयता के पक्षधर हैं, जिसमें उनकी अनुभवशीलता एवं जिज्ञासाएं सक्रिय रहती हैं।

अरुण तिवारी की कहानियां समाज के दुख दर्द, तनाव, बिखरावों की चादर ओढ़े लोगों के चरित्र की हैं। प्रेम के चरित्र की रस्सी की कसावट में घुटते मरते चरित्र की घुटन, थकन और निराशा, हताशा की भी हैं।

अरुण तिवारी ऐसे लोगों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो असंवैधानिक निकृष्ट भाषा, शब्दों का गलत ढंग से इस्तेमाल करते हैं, आर्थिक तंगी में जीते हैं और जाति धर्म के माध्यम से प्रयासरत अतिवाद और कड़वाहट को झेलते हुए घुटते, मरते हैं। विचारधारा की सिकुड़न में सिमटकर रह जाते हैं। जहां उनकी जिजीविषा खत्म हो जाती है। उनके पास अपनी संपर्क की भाषा नहीं होती, वह भी छीन ली जाती है। इनकी भाषा शब्द संयत है तथा इतनी ताकतवर है कि ये नैतिक चरित्र निर्माण का कार्य समाज संस्कृति के विकास के लिए करते हैं।

कहानियों में अरुण तिवारी स्वयं अनुपस्थित होते हैं। उनकी कहानी के पात्र, चरित्र और उनके साथ घटित दुखों, तकलीफों, तनाव, बिखरावों, अभावों के सही बिम्ब होते हैं जो दूरदर्शन के पात्रों की तरह साफ दिखाई देते हैं जिनके पास अंधा भविष्य, तकलीफ देह वर्तमान तथा अंधेरे में डूबा दरिद्र अतीत होता है इसलिए काव्य बोधी कवि तथा यथार्थवादी कथा लेखक हैं क्योंकि इनके मन में सच्चाई जीती है। कहानी लिखते समय पूरी तरह कलापक्षों, उनकी विपदाओं को जीते हैं। उनकी भाषा, कथा, परिवेश और संस्कृति में घुल मिल जाती है। उनकी जिन्दगी कथा पात्रों में ढल जाती है। ऐसे समय कथा, भाषा के शिल्पकार बन जाते हैं।

कविताओं में अरुण तिवारी के भाव संवेदन कल्पनाशीलता के भाव संवेदनों से बाहर निकालकर यथार्थ की अनुभूतियों को साक्ष्य के साथ प्रस्तुत करते हैं इसलिए उनकी काव्य भाषा में ताकत है। शब्दों में फोर्स है। ये मानवीय जीवन के दृश्यबिम्बों को केवल देखते ही नहीं, चित्रित भी करते हैं। काव्य भाषा में कसावट है। ये बनावट से दूर ही रहते हैं। ये काव्य भाषा में अलग तरह की कसावट को प्रधानता देते हैं। काव्य भाषा की बुनावट में परिवेश की बुनावट, संस्कृति की बनावट को महत्व देते हैं जिसमें उनकी काव्य क्षमता स्वत: उजागर होती है। ये कविता में दैनिक जन जीवन, कार्यकलापों की अच्छी मीमान्सा को महत्व देते हैं। इनकी काव्य सृष्टि, और काव्य विवेक अलग होता है। इनका ध्यान काव्य भाषा शब्दों का सही इस्तेमाल पर होता है। ये अनावश्यक शब्दों, बनावटी अर्थबोध और खरपतवारी संवेदनों से दूर रहते हैं। इसलिए इनकी काव्य भाषा में काव्यात्मकता की झलक स्वत: स्फूर्त होती है। इनमें शब्द की ताकत और उसकी मारक क्षमता साफ दिखाई देती है। ये समय की आहट को अच्छी तरह समझते हैं। खतरों और धोखों के संकेतों को समझते हैं एवं पूर्वाभास इन्हें जल्द हो जाता है।

अरुण तिवारी एक ऐसे लेखक हैं जो समय की हर गतिविधि उनकी आंखों के समक्ष होती है, जिसे वे संयम से संतुलित भाषा शब्दों के साथ लेखों में संवेदनशील, वैचारिक भाषा शिल्प के साथ प्रस्तुत करते हैं जिससे किसी को आहत नहीं पहुंचे और प्रत्येक गतिविधि में समाये उद्देश्यों को बहुत बारीकी से महीन, सुलझी भाषा में प्रस्तुत कर सकें।

देश में होते आन्दोलनों के भीतर चुपचाप बैठी मंशा, हितलाभ और धार्मिक लाभ के साथ राजनैतिक पेंचों में फंसी उनकी हित चिन्ताओं की भाषा अरुण तिवारी आसानी से पढ़ लिख लेते हैं और उसे जन जन तक ईमानदारी के साथ पहुंचाते हैं। देश को बांटने, देश की एकता अखंडता में दरार डालने की साजिश का पर्दाफाश करते हैं। इसके साथ जाति, धर्म के भीतर उगते कटुता के बीजों को समूल उखाड़ फेंकते हैं। समाज संस्कृति की समरसता में विष घोलने की मंशाओं की चीर फाड़ करते हैं और वास्तविक सत्य को उजागर करते हैं। समाज संस्कृति में निरंतर उगते, लहलहाते खरपतवारों को उखाड़ते हैं। इस तरह एक सांस्कृतिक सफाई, वैचारिक धुलाई और अनैतिकता चरित्रहीनता की जड़ों में अग्नि देकर नयी सामाजिक दृष्टि रोपित कर हर आदमी का माइण्डवाश करते हैं। इस तरह नये समाज निर्माण में एक निष्ठावान कारीगर का

काम करते हैं।

देश भूख, अभाव और बेरोजगारी की समस्या के साथ आर्थिक तंगी से गुजर रहा है इसके निराकरण के प्रति इनके मन में गहन चिन्ता है तथा अपने आलेखों के माध्यम से राजनेताओं, अर्थशास्त्रियों का ध्यान इन समस्याओं की ओर आकृष्ट करने की लगातार कोशिश कर रहे हैं और जन जागरण कर रहे हैं।

अरुण तिवारी ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए प्रेरणा पत्रिका के दो अंक प्रकाशित किये हैं तथा दो विशेषांक साहित्यिक पत्रकारिता के भी निकाले हैं। इसके साथ ही 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' पाक्षिक का प्रकाशन भी लगातार कर रहे हैं। वरिष्ठ नागरिक एवं पचहत्तर पार प्रेरणा का विशेषांक भी निकाले हैं। इस प्रकार ये वरिष्ठ नागरिकों के अनुभवों को नयी पीढ़ी के लिए समेटकर एवं एकत्रित कर उनके भविष्य की नयी बिल्डिंग खड़ी कर रहे हैं। यह कार्य अरुण तिवारी ने पहले पहल किया है।

यह संभव है कि वरिष्ठ नागरिकों के विचार वर्तमान स्पेस के साथ प्रासंगिक न हों। यह उनकी नहीं उनकी उम्र की गल्ती से सम्भव है। ऐसी स्थिति में युवा वर्ग को सोचना चाहिए कि वे बूढ़ों को डांटने, उपेक्षा करने की मानसिकता से ग्रस्त नहीं होना चाहिए। बल्कि सोचना यह चाहिए कि माता पिता ने उनके बचपन की गलतियों को झेला और सुधारा है और उन्हें पढ़ा लिखाकर इंसान बनाया है। यह बहुत बड़ा कार्य उनके जीवन के लिए किया है।

अरुण तिवारी ने युवा वर्ग को भी यह एक गाइड लाइन और नागरिक संहिता का पाठ प्रेरणा पत्रिका के माध्यम से पढ़ाया और सिखाया है।

खाली शब्द खोखले होते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता। जब कवि लेखक, प्रकाशक शब्दों से जब कहानी कविता, लेख लिखकर उनका प्रकाशन करते हैं तो शब्द सार्थक एवं अमर हो जाते हैं रचनाकार भी। क्योंकि साहित्यकार शब्दों को जुलाहे की ही तरह वैचारिक चेतना और भविष्य की चिंताओं के साथ समाज संस्कृति की चादर में, समाज संस्कृति के हित के लिए बुनता है जिसे पूरा समाज उसे ओढ़ता, बिछाता है और अपना जीवन वैचारिक मौसम की दुखद तकलीफों से सुरक्षित कर लेता है और वह शिक्षित होकर देश, समाज संस्कृति का सृजन करने के लिए सक्षम होता है।

जब साहित्यकार नैतिक चरित्र, सत्कर्म, धर्म, ईमान कर्तव्यबोध निष्ठा के रंग से शब्दों की सांस्कृतिक, सामाजिक चादर से ढंकता है तो वह अद्‌भुत और भव्य बन जाती है।

अरुण तिवारी भाषा शब्दों को जुलाहे की तरह बुनकर उसकी चादर में ऐसे ही विचार चेतना के रंग डालते हैं जो नयी पीढ़ी के लिए आधार शिला होते है।

इसमें संदेह नहीं कि विद्यालय, मंदिर तथा संतों के गुरुकुल ऐसे स्थान हैं जहाँ से मानवीयता के मूल्यों का निर्धारण होता है। ये एक स्कूल की तरह काम करते हैं।

अरुण तिवारी प्रेरणा पत्रिका के माध्यम से आम लोगों के लिए शिक्षण संस्थाओं की तरह कार्य कर रहे हैं तथा आम लोगों के लिए चारित्रिक मूल्यों का निर्धारण का कार्य कर रहे हैं ताकि समाज को नैतिक चारित्रिक मूल्यों की गिरावट से बचाया जा सके। यह बड़ा कार्य अरुण तिवारी प्रेरणा पत्रिका का प्रकाशन कर, सबको प्रेरणा देकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं।

यह नितांत सत्य है कि शब्द जब साहित्यकार के विचारों में प्रवेश कर और प्रकाशक उन्हें कहानी, कविता, लेखों के रूप में छपता है तो शब्द अमर हो जाते हैं। बिना छपे शब्द निरर्थक हो, नष्ट हो जाते हैं। छपे शब्दों की ताकत एवं उम्र बढ़ जाती है।

अरुण तिवारी प्रेरणा पत्रिका निकालकर कहानी, कविताएं, लेख, प्रेरणा पत्रिका में छाप देते हैं तो शब्द सार्थक जीवंत हो जाते हैं, उनका जीवन आगे बढ़ जाता है और ये समाज को नई गाइड लाइन देकर तथा समाज संस्कृति को नयारूप देते हैं। अरुण तिवारी यह कार्य चुपचाप कर रहे हैं। जो अपने तरह का अलग प्रेरणा दायक कार्य है। सही कला अनुभवों को समेटकर, नई इमारत गढ़ने की प्रतिबद्धता अरुण तिवारी में है।

अरुण तिवारी आम नागरिकों के जीवन में मूल्य निर्धारण करते हैं। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य निर्धारण कर उनके जीवन की नयी भव्य इमारत गढ़ते हैं जो अपनी तरह की अलग और भव्य होती है। प्रेरणा पत्रिका के संपादन कला के माध्यम से यह कार्य सहज, सहर्ष करते हैं तथा समय को दोगला बनने से बचाते हैं।

उत्कृष्ट–साहित्यिक पत्रकारिता, उत्कृष्ट साहित्य सेवा एवं लोक साहित्य के लिए प्रतिवर्ष सप्तपर्णी पुरस्कार स्व. श्रीमती उर्मिला तिवारी की स्मृति में स्थापित अरुण तिवारी द्वारा दिये जाते हैं ताकि साहित्य की उत्कृष्टता बनी रहे और उसके मूल्यों में गिरावट नहीं आ सके।

अरुण तिवारी एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें कोई पुरस्कार प्राप्त करने की लालसा नहीं है। बावजूद इसके सृजनात्मक व्यक्तित्व से

प्रभावित होकर इन पुरस्कारों तथा सम्मानों से इनके सृजनात्मक व्यक्तित्व को गौरव मंडित किया गया है–

साहित्य गौरव सम्मान, काव्य केशव सम्मान, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मान, अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार, मालवा अंचल (उज्जैन, इंदौर, धार, शाजापुर, देवास) पत्रकार संघ के जनसपंर्क विभाग के तत्वावधान में एवं राजगढ़ जिला पत्रकार संघ द्वारा सम्मान, म.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मान, विभिन्न नगरों की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं तथा कर्मचारी संगठनों द्वारा अभिनंदन एवं सम्मान।

भारत महोत्सव के अंतर्गत ताशकंद, मास्को, लेनिनग्राद, सोची, यूक्रेन की सौजन्य यात्रा से उत्प्रेरित होकर इनके द्वारा कलात्मक रूपों एवं संवेदनों को विस्तारित करने हेतु इन्होंने अनेकों सृजनात्मक योजनाएं जनहित को लाभान्वित करने हेतु तैयार की।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर समय–समय पर इनके कार्यक्रम प्रसारित होते रहे हैं। विगत 23 वर्षों से प्रेरणा पत्रिका प्रकाशन एवं संपादन सांस्कृतिक नव बदलाव हेतु करते रहे हैं। इसके साथ ही आकंठ पत्रिका का संपादन हरिशंकर अग्रवाल के साथ करते रहे हैं।

इनकी प्रकाशित पुस्तकें– साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य, स्मृतियों के शिलालेख, अपनी बात, पहाड़ों की पगडंडियों से शहर में, सृजन का समकालीन परिदृश्य चर्चा के केन्द्र में रही हैं जो संवेदना के सामाजिक सांस्कृतिक समुद्र में शब्द स्नान कराकर वैचारिक सफाई सक्रियता से करती हैं।

अरुण तिवारी की तीन पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं–मुखौशे, स्मृतियों के झरोखे से, समकालीन गजलों का स्वरूप। अरुण तिवारी निरपेक्ष एवं निष्पक्ष समालोचक भी हैं। इनकी आलोचना सृष्टि पैनी एवं पारदर्शीय है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अरुण तिवारी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो प्रेरणा पत्रिका का गौरवशाली प्रकाशन करते हुए 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' पाक्षिक का प्रकाशन भी निरंतर, पूरी निष्ठा, लगन, ईमानदारी के साथ कर रहे हैं। यह प्रेरणा प्रकाशन का ही पाक्षिक है। इसके साथ ही बाल पत्रिका 'इंटेलीजेली' का प्रकाशन भी कर रहे हैं।

अरुण तिवारी को उत्कृष्ट साहित्यिक पत्रकारिता करने के लिए हिन्दी साहित्य में बहुत ही सम्मान के साथ देखा जाता है। उनकी पुस्तक 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य' पर एक छोटी सी टिप्पणी इसी क्रम में है।

इससे स्पष्ट होता है कि अरुण तिवारी एक्टिव हैं, मेहनतकश हैं, आलस प्रमाद उनके स्वभाव में नहीं है। वे मानवीय जीवन को भी प्रोत्साहित करने के लिए नये नये दोस्तों की तलाश में रहते हैं।

अरुण तिवारी के व्यक्तित्व से बड़ा इनका साहित्यकार है क्योंकि ये भाषा शब्दों में चुपचाप बैठकर हिन्दी साहित्य का सृजन एक शब्द जुलाहे की तरह करते हैं तथा साहित्य संस्कृति की चादर बुनकर सामाजिक सांस्कृतिक उत्कृष्टता की चादर, समाज संस्कृति को प्रदान कर रहे हैं ताकि साहित्य एवं समाज के स्वरूप की सुरक्षा हो सके तथा वैचारिक मौसमी बीमारियों, दिक्कतों एवं समाज, संस्कृति की दिक्कतों से मनुष्यों को सुरक्षित बचाया जा सके। सामाजिक प्रदूषण से भी समाज संस्कृति की हिफाजत की जा सके।

इस तरह अरुण तिवारी, साहित्य, संस्कृति में रिफाइनरी का कार्य कर उसके स्वरूप को स्वच्छ कराने में निरंतर सक्रिय हैं।

अरुण तिवारी अच्छी तरह इस बात से सजग सचेत रहते हैं कि गंभीरता के साथ वे जीवन का एवं साहित्य का सृजन नहीं करेंगे तो, उस दिन का उनका श्रम व्यर्थ ही नष्ट हो जायेगा और प्राप्तियां कुछ नहीं होगी। व्यर्थ ही नष्ट हुए समय और श्रम की भूतकाल में कोई पहचान नहीं होती और उपलब्धियां भी नहीं होती और अतीत के धुंधले अंधेरे में बिना इतिहास लिखे सब कुछ डूब जाती है।

अरुण तिवारी की विशेषता यह भी है कि वे अपने मन में जो संकल्प धारित कर लेते हैं, उसी के अनुरूप चुपचाप साहित्य का सृजन करते हैं और समाज के लोगों के अनुचित विचारों तथा सुझावों को विश्वासों पर ध्यान नहीं देते तथा इन्हें विश्वास की ग्रिप में रखे पारे की तरह ऐसे फिसला देते हैं कि जिसका किसी को कुछ पता ही नहीं चलता।

अरुण तिवारी की मुख्य चिन्ता सामाजिक स्तर पर अस्वस्थ, समाज, संस्कृति और देश को स्वस्थ बनाये रखना है और उनके चरित्र का निरंतर सुधार करते रहना है ताकि उनका स्वरूप हमेशा ही प्रांजल बना रहे।

अरुण तिवारी के पास अनुभवगत ज्ञानात्मक संवेदनों की इतनी आक्सीजन है कि ये युवा वर्ग को निरंतर उत्साहित एवं प्रोत्साहित कर यथोचित मार्गदर्शन करते हुए उनकी चिन्ता, चिन्तन को जगाते रहते हैं। वे युवा वर्ग के सृजनात्मक विश्वास के लिए उनके वैचारिक सोच की बंदगली, बंद रास्तों को खोलकर भविष्य

की संभावनाओं के सभी ताले खोलकर विकास के पहाड़ की सीढ़ियां चढ़ाते हैं तथा शून्य से शिखर पर बैठा देते हैं, यही इनके उदारमना व्यक्तित्व की विशेषता है।

सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों का विकास, संदर्भ-साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य

साहित्यिक पत्रकारिता करना आसान नहीं। इसमें जितनी नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास की जिम्मेदारी है, उससे कहीं अधिक खतरे भी हैं। पत्रकारिता चाहे साहित्यिक हो अथवा अखबारी इसका कार्य मानवीय चेतना को विकसित करते हुए समय के खतरों से अगाह करना है और एक दूसरे को नयी नयी सूचनाओं और जानकारी से अवगत कराना है। पत्रकारिता मानवीय मूल्यों को विकसित करती हुई मनुष्य को, मनुष्य से जोड़ती है और नैतिक मूल्यों को संवारती है। पत्रकारिता की जिम्मेदारी है कि विश्व की तमाम घटनाओं और दुर्घटनाओं और महत्वपूर्ण खबरों से मनुष्य को दिमागी स्तर पर अपटूडेट करे और उसमें ईमानदार वैचारिकता के गुणात्मक संबंधों को सचेतन रूप देते हुए उनकी अनुभवशीलता को विकसित करे। इसलिए पत्रकारिता मानवीय दैनिक जीवन की जरूरत है क्योंकि प्रतिदिन के घटनाक्रमों का न केवल लेखा-जोखा होता है बल्कि उनमें सुधारात्मक एवं गुणात्मक उपायों की खोज भी होती है। पत्रकारिता मूल्य विभेद को समाप्त करने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संरक्षित करने का कार्य करती है। पत्रकारिता का कार्य जनोन्मुखी होता है जिसमें समय की चिंता और चेतना की चिंगारी होती है। पत्रकारिता चाहे अखबारों, इलेक्ट्रिक मीडिया की हो अथवा साहित्यिक, बहुत तेजी से आदमी की सोच समझ और वैचारिकता को कन्सट्रक्ट करती हुई जनमानस में अवेयरनेस लाती है और सही गलत का अहसास कराती है। समाचार पत्रों के पत्रकारों की खासियत है कि वे अपने पत्र की प्रसारण संख्या बढ़ाने के लिए सनसनीखेज खबरें छापते हैं कई बार पीत पत्रकारिता का भी सहारा लेते हैं। परंतु साहित्यकी समझ समाचार पत्रों के पत्रकारों में कम ही होती है। इसलिए ये कई बार साहित्य की उपेक्षा भी कर देते हैं। लेकिन साहित्यिक पत्रकारिता आधुनिक समाज, संस्कृति का निर्माण करती हैं और सहयोगी भावना से निरपेक्ष रूप से आदमी के विकास और भविष्य के उत्कर्ष की अपेक्षा करती है।

साहित्य किसी भी देश की अपनी मौलिक पहचान है। साहित्य संस्कृति के अभाव में देश एवं समाज के विकास की अपेक्षा संभव नहीं, इन तमाम तथ्यों को ध्यान में रखकर ही अरुण तिवारी साहित्यिक पत्रकारिता ईमानदारी से प्रेरणा के माध्यम से कर रहे हैं।

अरुण तिवारी अच्छी तरह जानते हैं कि आज देश में साहित्यिक पत्रकारिता पर केंद्रित पुस्तकों का अभाव है। इस अभाव को समाप्त करने की दृष्टि से ही अरुण तिवारी-संपादक-प्रेरणा पत्रिका ने 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य' पुस्तक का संपादन प्रकाशन किया है। जिसकी सहृदय सहभागिता को नकारा नहीं जा सकता। साहित्यिक पत्रकारिता पर पुस्तकों की अभी तक बहुत कमी महसूस की जाती रही है। परंतु 'साहित्यिक पत्रकारिता की इस पुस्तक के प्रकाशन से इसकी कमी इसलिए महसूस नहीं होगी, क्योंकि इसमें जिनाइन अनुभवी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के संपादकों एवं लेखकों के लेख एवं आलेख संग्रहित हैं। जो पत्रकारों को पत्रकारिता, विद्यालयों और विद्यार्थियों के लिए शोध विषय और गाइड लाइन के रूप में उपयोगी होंगे।

अरुण तिवारी द्वारा संपादित पुस्तक 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य' पुस्तक में जिन साहित्यिक पत्रकारों एवं साहित्यकारों के अनुभव संपन्न आलेख हैं उनमें से कुछ नाम इस प्रकार हैं। स्वयं अरुण तिवारी के अतिरिक्त मनमोहन सरल, प्रदीप पंत, रमेश दवे, केवल गोस्वामी, बलराम, सेवाराम त्रिपाठी, प्रांजलधर, शशिभूषण द्विवेदी, हेतु भारद्वाज, सुरेश पंडित, सुरेश उजाला, मुकेश वर्मा, राणा प्रताप, रामनाथ शिवेन्द्र, दामोदरदत्त दीक्षित, विजय शंकर निकुंज, प्रमोद भार्गव, रामनिहाल गुंजन, राजेन्द्र परदेसी, शराफतअली खान, नरेन्द्र गौड़, दिनेश पाठक, राधेलाल विजधावने, सिद्धेश्वर, राजेन्द्र जोशी, डॉ जीवनसिंह, डॉ अभिज्ञात, अवधेश प्रीत, शैलेन्द्र, विष्णुनागर, सुधीर विद्यार्थी, महेश भारद्वाज, ओमप्रकाश पांडेय, डॉ गंगाप्रसाद बरसैंया, सूर्यकांत नागर आदि। अरुण तिवारी, ने संपादकीय में लिखा है कि ''अब तो पत्रकारिता शब्द के आगे ही प्रश्नचिन्ह लगने लगे हैं, एक ऐसा माध्यम जो जनता की दशा का बयान करता हो, उसे दिशा देता हो, जब वो ही अपनी विश्वसनीयता खोने लगे तो उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है।'' यह पत्रकारिता के वर्तमान चरित्र पर गहन चिंता का विषय है जिस पर सामूहिक रूप से विचार करने और पत्रकारिता की गुणात्मकता के सुधार की अपेक्षा करते हैं। क्योंकि वर्तमान पत्रकारिता के चरित्र पर हर पाठक कहीं न कहीं दुखी और चिंतित दिखाई देता है। इसलिए पत्रकारों के नैतिक मूल्यों में ईमानदार गुणात्मकता के सुधार की जरूरत हर पाठक द्वारा गहराई से समझी जा रही है और आपसी समन्वय की भी आवश्यकता महसूसी जा

रही है। मनमोहन सरल के अनुसार सुप्रभात, सनीचर, कलरव, नया संसार, रंगारंग, कलश जैसे पत्रों की पत्रकारिता एक मिशाल के तौर पर रही है। कल्पना, लहर, अजंता, मानव किरण, युगप्रभात, कोशिकोड, नवचेतन, धर्मयुग, जनकल्याण, भारतवाणी पत्रिका में हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। ज्ञानपीठ का ज्ञानोदय, साप्ताहिक हिंदुस्तान, सारिका पत्रिकाओं ने भी हिंदी साहित्य को समृद्धि की ओर बढ़ाया है। बाल पत्रिका में पराग की अपनी रचनात्मक भूमिका रही है। प्रदीप पंत मानते हैं कि साहित्यिक पत्रकारिता की भूमिका अहम रही है। अत्यंत संपन्न परंपरा थी। प्रेमचंद की हंस, इंदूमती, चांद, माधुरी, सरस्वती, इन्दु आदि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इन पत्रिकाओं ने लेखकों का निर्माण किया है। कथा साहित्य में भैरवप्रसाद गुप्त कहानी पत्रिका के संपादक थे। भीष्म साहनी, अमरकांत, मार्कण्डेय, कमलेश्वर, मोहन राकेश, शेखर जोशी, निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोवती जैसे कथाकारों की रचना शीलता को रेखांकित किया है। दिनमान जैसी पत्रिका को प्रतिष्ठा की जगमगाहट दी।

शशिभूषण द्विवेदी का कथन है। 'यूरोप के साहित्य के परिदृश्य को समझने का उन्हें मौका मिला' वहां दैनिक अखबारों में रविवारीय पृष्ठ अब भी होते हैं। जबकि भारत में दैनिक अखबारों के रविवारीय पृष्ठ से साहित्य को अनुपस्थित कर दिया गया है। यह चिंताजनक स्थिति है।

मुकेश वर्मा का कथन है–''बाजार मीडिया की रोशनी की जगमगाहट इतनी तेज है कि इस बेमुरव्वत और बेगैरत हुए चकाचौंध में इंसान लगभग अंधा हो चुका है। लघुपत्रिकाओं के हाथों में थरथराती कंदील की लौ है। विजय शंकर विकुंज ने अपने आलेख में उल्लेख किया है कि–''पत्रकारिता का लक्ष्य समाज को विकृतियों की सच्चाई से परिचित कराना है और आदमी के जीवन की सकारात्मक तथा सार्थक पथ पर ले जाना है लेकिन इसके व्यवहार में आज अपने ऊपर उंगली उठाने को मजबूर कर दिया है और अब पत्रकारिता के साथ दृश्य मीडिया ताल मिला रहा है। यहां साहित्यक पत्रकारिता में आज भी शुद्धता नजर आती है और इसका लक्ष्य मनुष्य के दिल में असर है। विष्णु नागर ने अपने आलेख में इस सच्चाई को उद्घाटित किया है कि 'व्यवसायिक पत्रिका इस अपेक्षा पर पूरी तरह खरी नहीं उतरती 'हिंदी अंग्रेजी के कुछ अखबार हैं जो एक हद तक ही सही काम करते हैं और लोकप्रिय हैं।'

सुधीर विद्यार्थी ने अपने आलेख में लिखा है– 'लघुपत्रिकाओं के माध्यम से भी विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच पुल बनाने की दिशा में जरूरी काम किया जा सकता है जैसा कि एक समय हिंदी और उर्दू के बीच नया हिंद के संपादक कर्मवीर पंडित सुंदरलाल ने किया था।'

राणा प्रताप ने अपने आलेख में यह उल्लेख किया है कि– 'साहित्यिक पत्रकारिता व्यक्ति को समाज ही नहीं बल्कि सरकार की भी आंख खोलने का काम करती है भले ही सरकार अपनी आंखों को कानून की पट्टी चढ़ाये रखे और आनन–फानन में नादिरशाही हुक्म जारी करे। साहित्यिक पत्रकारिता इस बात से डरती नहीं, वह जरूरी बातों की सूचनाएं देती रहती हैं। मैं तो कहता हूं साहित्यिक पत्रकारिता संपादक की बुद्धि और विवेक की आंख होती है। वह अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों को देख सकती है और भविष्य के आसन्न खतरों की सूचना भी देती है।

डॉ. सुरेश उजाला ने अपने आलेख में लिखा है 'पत्रकारिता एक बहुआयामी विषय है। पत्रकारिता के मुख्य चार उद्देश्य हैं जैसे–विश्लेषण करना, मार्ग निर्देशन करना, मनोरंजन करना आदमियत की चिंता और आदमी और उसकी असलियत को बताना।'

अरुण तिवारी द्वारा संपादित पुस्तक–'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य में पत्रकारिता में संलग्न पत्रकारों की सही जांच की आंखों को खोलने और सामाजिक साहित्यिक और राष्ट्रीय, हित चिंताओं को जागृत करने का कार्य किया है। यह अहसास दिलाया है कि पत्रकारों का दायित्व क्या है वो इस दायित्व को कहां तक निर्वहन कर रहे हैं। यह निर्विवाद सच है कि अखबारी पत्रकारिता से कहीं अधिक साहित्यिक पत्रकारिता में ईमानदारी है। देश समाज संस्कृति की सुरक्षा और समृद्धि का अहसास कराती है।

अरुण तिवारी द्वारा संपादित पुस्तक साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य 'पत्रकारों, शोधकर्ता और पत्रकारिता' विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसी पुस्तकों की कमी की पूर्ति इस पुस्तक से स्वत: हो जाती है। साहित्यिक पत्रकारिता से बौद्धिक, नैतिक सामाजिक और सृजनात्मक चेतना जागृत होती है। क्योंकि साहित्यिक पत्रकारिता की उज्जवल छवि एवं परंपरा रही है।

–लेखक वरिष्ठ साहित्यकार, कवि, कथाकार, आलोचक एवं समीक्षक हैं।
ई–8/73, भरत नगर, (शाहपुरा), अरेरा कालोनी, भोपाल–462039
मो. 9826559989

■

दृष्टि संपन्न संपादक : अरुण तिवारी

दामोदर दत्त दीक्षित

सिविल इंजीनियर की नौकरी से सेवानिवृत्त कथाकार कवि और संपादक अरुण तिवारी जी से मेरा परिचय उनकी पत्रिका 'प्रेरणा' के माध्यम से हुआ। बात 2008 की है। पहली बार 'प्रेरणा' का एक अंक देखने को मिला। अच्छा लगा। उसमें कहानी, कविता, ग़ज़ल, लघुकथा और समीक्षा तो थी ही 'विमर्श' और 'चिंतन' स्तंभों के अंतर्गत विचारोत्तेजक लेख भी थे। तिवारी जी का महत्वपूर्ण संपादकीय 'अपनी बात' भी। साहित्यिक पत्रिकाओं की आम पाठक तक पहुंच बनाने के उद्देश्य से अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं के पते सहित संक्षिप्त विवरण प्रकाशित हुए थे। 'आप की कलम' से स्तंभ के अंतर्गत पत्रिका में बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्रकाशित हुए थे। मेरा शुरू से ही मानना रहा है कि पत्रिकाओं में पाठकों के पत्र ज्यादा से ज्यादा संख्या में छपना चाहिए। इससे पाठकों को अपना दृष्टिकोण प्रकट करने का अवसर उपलब्ध होता है। पत्रिका को मूल्यांकन का खुला मंच उपलब्ध कराते हुए उसे लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान करता है। सामान्यत: जो संपादक अपना विचार, अपना दृष्टिकोण पाठकों पर थोपना चाहते हैं और जिनके अंदर प्रतिकूल मत सुनने का साथ नहीं होता वही पाठकों की आवाज सुनने से कतराते हैं।

मेरा एक तथ्यपरक लेख 'स्वच्छता का हटी आत्मप्रलाप' ('प्रेरणा' जुलाई सितंबर 2009) जो एक प्रभावशाली लेखिका के प्रतिकूल जाता था 'विमर्श' स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित कर तिवारी जी ने संपादकीय साहस का परिचय दिया। मेरे लेख पर कई अनुकूल और कुछ प्रतिकूल प्रतिक्रिया प्राप्त हुई जिनमें से कुछ चुनी हुई प्रतिक्रियाएं लेख के रूप में प्रकाशित कर तिवारी जी ने अपने दायित्व का निर्वहन किया यही नहीं अगले अंक में प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं पर मेरी टिप्पणी 'ता पर लोग लगावे खोरी' 'प्रेरणा' जुलाई दिसंबर 2010 चिंतन स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित की।

तिवारी से मेरी पहली भेंट 27 अप्रैल 2011 को हुई। 'हिंदी भवन' में आयोजित एक कार्यक्रम के सिलसिले में भोपाल जाना हुआ। आधारशिला हल्द्वानी के संपादक दिवाकर भट्ट भी उस कार्यक्रम में आए हुए थे। प्रोग्राम वह भी तिवारी जी से मिलने को इच्छुक थे। उन्हें साथ लेकर तिवारी जी के पैलेस आर्चर्ड स्थित आवास पर लगभग 10.30 बजे पहुंचा। तिवारी जी ने आत्मीयता के साथ अनौपचारिक भाव से स्वागत किया। उन्होंने नाश्ते और भोजन दोनों की व्यवस्था कर रखी थी। भोजन का कार्यक्रम पहले से ही अन्यत्र तय। हमने नाश्ते की बात कही। श्रीमती तिवारी ने 'ब्रेन्ब' जैसा वृहद स्तरीय नाश्ता भिजवाया। तिवारी जी के घर की साज-सज्जा सुरुचिपूर्ण है। उन्होंने दुमंजिले पर स्थित अपनी स्टडी दिखायी हम लगभग दो घंटे तक बात करते रहे। विविध विषयों पर। गुणवत्तापूर्ण समय गुज़रा। तिवारी जी ने अपनी कार से हमें 'हिंदी भवन' छोड़ा। हम वही ठहरे हुए थे। मैं पहली भेंट में ही तिवारी जी से खुल गया।

'प्रेरणा' के लिए समय-समय पर लिखता रहा। 'साहित्यिक पत्रकारिता' पर केंद्रित विशेषांक जनवरी-जून 2012 के लिए तिवारी जी ने मुझसे लेख मांगा जो 'आज की साहित्यिक पत्रकारिता' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। कौशलेंद्र प्रताप यादव ने अपनी पुस्तक आल्हा-उदल और बुंदेलखंड में महारानी लक्ष्मीबाई पर झूठे अप्रामाणिक आरोप लगाए। इस पर मैंने प्रतिवाद परक लेख 'झूठी वीरांगना या झूठा इतिहास' लिखा जिसे तिवारी जी ने 'प्रेरणा' अक्टूबर-दिसंबर 2012 में प्रकाशित किया।

तिवारी जी ने एक अनोखा प्रयोग किया जो मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने हिंदी रचनाओं के अंग्रेजी अनुवाद और हिंदी लेखन पर अंग्रेजी में आलोचनात्मक लेख 'प्रेरणा' में प्रकाशित किए। इसके पीछे भावना रही कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़े-लिखे लोग जो 'प्रेरणा' के पाठक परिवार में भी होते हैं हिंदी लेखन के बारे में परिचित हो सकें। इस प्रयोग में विद्वान लेखक शशिभूषण द्विवेदी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे स्तंभ के अंतर्गत मेरी लघुकथाएं प्रकाशित हुई जिन का अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती प्रमिला गर्ग ने किया था।

उनके संपादकीय (अपनी बात) उनकी वैचारिकी, दृष्टिसंपन्नता समाज से गहरे जुड़ाव और देश की ज्वलंत समस्याओं और उनके समाधान पर की गई सार्थक चर्चा के कारण महत्वपूर्ण होते हैं। सुखद है कि उनके संपादकीयों का संकलन 'अपनी बात' नाम से पुस्तकाकार में उपलब्ध है।

तिवारी जी को उनके संपादकत्व में प्रकाशित 'प्रेरणा' के महत्वपूर्ण विशेषांकों के लिए भी याद किया जाएगा, जिनमें से कुछ है: निराला जन्मशती वर्ष अंक (1998), कहानी अंक (2009), कविता अंक (2010), नारी अस्मिता अंक- एक और दो (2010 और 2011), साहित्यिक पत्रकारिता अंक (2012), वरिष्ठ नागरिक अंक- एक और दो (2013 और 2014) विश्व हिंदी सम्मेलन अंक (2015), प्रेमचंद स्मृति एवं हिंदी अंक (2017), पर्यावरण अंक (2016), भागवत रावत स्मृति अंक (2017), मुक्तिबोध स्मृति अंक (2017), कमल किशोर गोयनका विशेष (2018), समकालीन ग़ज़ल का स्वरूप विशेष (2018), धनंजय वर्मा विशेष (अंक 2018) और पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकार (2021)।

तिवारी जी 'प्रेरणा' तक ही सीमित नहीं है। वह पिछले 6 वर्षों से बच्चों की अंग्रेजी पत्रिका इंटेलीजेली का प्रकाशन कर रहे हैं और पिछले 2 वर्षों से वरिष्ठ नागरिकों पर केंद्रित देश के पहले समाचार पत्र 'प्रेरणा' सीनियर सिटीजन टाइम्स का संपादन कर रहे हैं। उनके द्वारा 'प्रेरणा' पब्लिकेशन के माध्यम से हिंदी और अंग्रेजी पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जाता है। 'प्रेरणा' के विचारवान और दृष्टि संपन्न संपादक अरुण तिवारी जी को उनकी हीरक जयंती के लिए हार्दिक बधाई और मंगलकामनाएं। जीवन की सर्वतोभावेन सार्थकता के साथ व स्वस्थ रहते हुए दीर्घ आयुष्य प्राप्त करें यही प्रार्थना है।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
1/35 विश्वास खंड गोमती नगर लखनऊ-226010 (उ.प्र.)
मो.: 9415516721

हिन्दी साहित्य में अनुकरणीय योगदान

दिलीप भाटिया

अरुण तिवारी का हिन्दी साहित्य को योगदान अनुकरणीय है। प्रेरणा पत्रिका एक मिसाल है। इतनी गुणवत्ता, पत्रिका स्वयं ही साक्षात प्रमाण है अरुण भाई की विलक्षण प्रतिभा का। बिना प्रचार के चुपचाप साहित्य सेवा कर अरुण भाई हम सभी के प्रेरणा पुंज हैं। कई सम्मान भी उनकी झोली में हैं , फिर भी बिना अभिमान के सहज सरल भाव से साहित्य सेवा की यात्रा करते रह अरुण जी एक सकारात्मक संदेश हम सभी को दे रहे हैं कि बस कर्म करते रहिए। अरुण जी की साहित्य यात्रा से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। शांत सादगी की भावना रख कर अरुण जी जीवन संध्या में भी ऊर्जावान रह निस्वार्थ साहित्य सेवा कर सराहनीय कार्य कर रहे हैं। कथनी की अपेक्षा करनी में विश्वास रखते हुए अरुण जी किसी गुट खेमे में नहीं हैं। सम्मान प्रदान करने वाली नकली दुकानों से अरूण जी ने कोई सम्मान कभी भी नहीं खरीदे। पाठक-पाठिका का निर्मल स्नेह प्यार पाकर ही अरुण जी संतुष्ट हैं। साहित्य सेवा किस प्रकार की जाती है यह अरूण जी से सीखा जा सकता है। अरुणजी ने स्वयं को कभी साहित्यकार नहीं समझा। एक साधारण व्यक्ति बने रहे। स्नेह के सागर प्यार की गागर अरुण जी एक बहुत अच्छे इंसान हैं। सूर्य को दीपक दिखलाना संभव नहीं है। सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं, इस वाक्य को अरुण जी ने अपने जीवन में चरितार्थ किया है। एक पाठक दिलीप की दिल से अरूण भाई को शुभकामना। प्रणाम।

- लेखक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं।
रिटायर्ड परमाणु वैज्ञानिक राजस्थान परमाणु बिजली घर रावतभाटा, राजस्थान,
238, बालाजी नगर, रावतभाटा-323307, राजस्थान
मो.: 9461591498

बाजारवाद में भी साहित्य की मशाल थामे एक कर्मयोगी

जगदीश द्विवेदी

बाजारवाद के दौर में साहित्य की मशाल थामें अरूण तिवारी के समाजसेवा और साहित्यक अवदान की चर्चा बाद में। पहले उनके उन सामाजिक सरोकारों के बारे में बात करना चाहूंगा जिन्हें मैने करीब से देखा है।

आदरणीय अरुण तिवारी से परिचय हुए एक दशक से अधिक का समय बीत रहा है। हम जिस पैलेस आर्चेड कालोनी में रहते हैं उसमें सद्भाव, आपसी प्रेम और समन्वय कायम रहे इसमें उनकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। अरुण तिवारी की साहित्यिक यात्रा की चर्चा के पहले मैं इसलिए यह लिख रहा हूं कि मेरा उनसे पहला परिचय ही इसी रूप में हुआ था। इस कालोनी में आने के बाद मुझे यह बाद में पता चला कि वे साहित्य मनीषी हैं, पहले तो कायल मैं उनके व्यवहार और मिलनसारिता का ही हुआ था। इस समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं। अरुण तिवारी जी को भी मैं ऐसी ही शख्सियत के रूप में पाता हूं। वे साहित्य सृजन तो पिछले पचास सालों से कर रहे हैं पर साहित्य से हटकर भी उनका एक रूप है, मानवीय और मिलनसार चेहरा है। जो हमेशा लोगों को सकारात्मक सोच की प्रेरणा देता है। पैलेस आर्चेड में कई लोग ऐसे थे जिन्हें मैं बुजुर्ग तो नहीं कहूंगा पर सरकारी या निजी सेवा से वे रिटायर हो चुके थे। कोई भी व्यक्ति जब लगातार तीस चालीस साल सरकारी सेवा में होता है तो वह बेहद व्यस्त होता है पर रिटायर होते ही उसके सामने ऐसा खालीपन आ जाता है जो कई बार उसे एकाकी बना देता है। हमारी कालोनी में भी ऐसे कई लोग थे जो साठ पार कर सरकारी सेवा को अलविदा कह चुके थे। इन लोगों का समय सकारात्मक तरीके से व्यातीत हो वे मनोरंजन के साथ आपस में एक दूसरे से मिलकर अपनी खुशियां और तकलीफें साझा कर सकें। इसके लिए श्री अरुण तिवारी ने पहल की और अपने कुछ सहयोगियों के साथ सीनियर सिटीजन क्लब का गठन किया। उनका रोपा यह पौधा आज वृक्ष बन चुका है और सीनियर सिटीजन क्लब में आज सदस्यों का आंकड़ा सौ को छू रहा है। इस क्लब में पुरुषों के साथ महिलाएं भी हैं और ये हर सुख-दुख का क्षण एक दूसरे के साथ मनाते हैं। देशप्रेम का जब्बा उनमें कूट कूट कर भरा है। कालोनी में राष्ट्रीय पर्वों पर प्रभात फेरी निकालने की परम्परा के शुरूआती सूत्रधार वे ही थे। देशप्रेम के साथ उनका ईश्वरी प्रेम भी गजब है। कालोनी के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के निर्माण से लेकर उसके उन्नयन में वे अब तक लगे हैं। कोई भी धार्मिक कार्यक्रम हो उसे पूरे विधि विधान और परम्पराओं के अनुरूप मनाने पर उनका जोर हमेशा से रहा है। बहुआयामी व्यक्तित्व होने के बाद विनम्रता उनका सबसे बड़ा गहना है। उनसे मिलकर आप इस बात का अंदाजा ही नहीं लगा सकते कि वे शासन के बड़े पद से रिटायर हुए हैं। एक निश्चित और समयबद्ध जीवन शैली उनके इस व्यक्तित्व को और उज्जवल बनाती है।

साहित्यिक पत्रिका निकालना अब हठयोग जैसा

एक जमाना था जब देश में पत्रिकाओं का चलन काफी था और घर-घर तक इनकी पहुंच भी थी। समय बदला और पत्रकारिता हो या साहित्य बाजारवाद दोनों पर हावी हो गया। मैं पेशे से पत्रकार हूं और मैंने अपनी तीस सालों के पत्रकारिता जीवन में कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं की अकाल मौत होते देखी है। सोशल मीडिया के दौर में लोगों की साहित्य के प्रति रूचि कम हुई तो इन पत्रिकाओं को मिलने वाले विज्ञापन कम होते चले गए। कहना न होगा कि बाजार में चलने वाली कोई भी पत्रिका बिना विज्ञापन के नहीं निकल पाती। ऐसे कठिन दौर में विज्ञापनों की संजीवनी के बगैर श्री तिवारी अपनी पत्रिका प्रेरणा को न सिर्फ दमदार तरीके से जिंदा रखे हैं बल्कि उसका सफल संचालन कर रहे हैं। यह पत्रिका आज भी साहित्य का रसपान करने वालों के लिए चहेती बनी हुई है। अपनी पत्रिका के लिए भी किसी सरकारी या निजी विज्ञापन पर आश्रित नहीं रहते। खुद इसके लिए धन खर्च करते हैं। उनकी इस पत्रिका में कई ख्यातिनाम साहित्यकार अपनी रचनाएं छपवाना गौरव मानते हैं। प्रतिष्ठित लेखकों के जुड़ाव ने ही इस पत्रिका को अब तक सार्थक बना रखा है। उनके पचहत्तरवें जन्मदिवस पर हमने देखा था कि पत्रिका के स्टाफ से वे कितना प्यार करते हैं और स्टाफ भी उनके प्रति कितनी आत्मीयता रखता है। आज के दौर में करीब एक दर्जन से अधिक लोगों को रोजगार देना भी किसी समाजसेवा से कम नहीं है। अंत में बहुआयामी व्यक्तित्व के इस कर्मयोगी के शतायु होने की मैं कामना करता हूं और उम्मीद करता हूं कि उनकी साहित्य साधना इसी तरह चलती रहे। इस अविराम यात्रा पर कभी पूर्ण विराम न लगे। सादर...

- वरिष्ठ पत्रकार, अध्यक्ष, पैलेस आरचर्ड रहवासी समिति (नार्थ),
कोलार रोड, भोपाल, मो.: 9425018915

मूल्यांकन अवसर पर

सदाशिव कौतुक

सर्वप्रथम श्री अरुण तिवारीजी को अमृत महोत्सव के अवसर पर हार्दिक बधाई। तिवारीजी के अमृत महोत्सव का जिन महानुभावों और संस्थाओं ने बीड़ा उठाया है वे भी बधाई के पात्र हैं। सरल-सहज और सौम्य स्वभाव के धनी तिवारी जी के अभिनंदन ग्रंथ में अपने विचार व्यक्त करने का जो मुझे अवसर दिया इसके लिये मैं आप सभी आयोजकों का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मैं मानता हूँ कि साहित्यिक क्षेत्र अत्यंत निजता का क्षेत्र है, जहां किसी की भागीदारी नहीं चलती। यह न तो विरासत में मिलता है और ना ही किसी से खरीदा जा सकता है। श्री तिवारीजी गौरवशाली व्यक्तित्व हैं। ऐसे लोगों से मिलना भी एक सौभाग्य का अवसर होता है। जब एक ही विचार के व्यक्ति से मिलना हो जाता है, तो सोने में सुहागा हो जाता है। ऐसे उत्कृष्ट चरित्र के लोगों से ही सभ्य और उन्नत समाज बनता है। इस दुनिया में मिलते तो बहुत लोग हैं परंतु अच्छे लोगों की गिनती ऊँगलियों पर ही होती है। दिव्य व्यक्तित्व हर व्यक्ति का नहीं होता है। आप कई लोगों के प्रेरणा स्त्रोत रहे परंतु आपके चेहरे पर या स्वभाव में कभी दम्भ का भाव नजर नहीं आया।

श्री तिवारी जी से सतही तौर पर कुछ मुलाकातें हुई, परंतु प्रेरणा में उनके संपादकीय लेखन से बहुत पहले से परिचित रहा हूँ। उनकी लेखनी में वह बात है, जो उनके दिव्य स्वभाव में है। आपने प्रेरणा में यदा-कदा मेरी रचनाओं को जगह दी और मेरी दर्जनों किताबों की समीक्षाएँ भी प्रकाशित की। पत्रिका में भी अच्छे रचनाकारों को प्रकाशित करके पत्रिका प्रेरणा को एक स्तरीय पत्रिका का गौरव प्रदान किया। आपकी एक कृति सृजन का समकालीन परिदृश्य तो मील का पत्थर साबित हुई। एक अविस्मरणीय कृति है। विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर पत्रिका को पाठकों तक भेजते रहने का अदम्य साहस आप में ही हो सकता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ जिंदगी के यथार्थ से भी आप रूबरू हुए, जिसमें हमेशा साथ देने वाली श्रीमती उर्मिला तिवारी भाभीजी का न रहना बहुत असहाय कष्ट दे गया। जिस रोग से वे ग्रसित होकर काल कवलित हुई उस रोग से आप प्रेरणा के हर अंक में पाठकों को जागरूक करते हैं। यह भाभीजी को आत्मा से दी जाने वाली श्रद्धांजली है।

तिवारीजी ने अपनी कलम को वाणी बनाई। मधुर व्यवहार हमेशा संबंधों के सागर पर सेतु बनाने का कार्य करता है, क्योंकि वाणी से निकले शब्द ही व्यक्तित्व का आइना होता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूलयांकन ही उसके जीवन का चिंतन होता है। वृत्ति में और अन्त:करण के सहज स्वाभाविक भाव ही मनुष्य को ऊँचाई प्रदान करते हैं। आपने ऐसे पद चिन्ह उकेरे हैं जिस पर सामान्य व्यक्ति भी चलकर एक अच्छा इंसान होने का दावा भर सकता है। मुझे याद है आदरणीया भाभीजी के स्वर्गवासी होने के बाद उनसे मिलने हम पाँच लोग भोपाल संवेदना व्यक्त करने आपके कार्यालय पर सर्व श्री डॉ. शरद पगारे, सदाशिव कौतुक, हरेराम वाजपेयी, प्रदीप नवीन और प्रभु त्रिवेदी मिलने गये थे। आपसे काफी चर्चा हुई। सुख-दुख का जिक्र भी हुआ। वह बड़ी आत्मीय भेंट थी। उस वक्त श्री तिवारी जी ने जो एक बात कही थी वह मुझे आज भी याद है। तिवारी जी ने कहा था- ''मैं आप मित्रों के साथ पत्नी के जाने के बाद पहली बार हँसा हूँ, पहली बार खुश हुआ हूँ और ठहाका भी लगाया है। उनके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर और मुस्कान देख कर हमें भी लगा हमने एक मित्र के दुख में शामिल होकर उन्हें खुश देखकर अच्छा लगा और हमारा उनके यहाँ जाना सार्थक रहा। वह क्षण शायद तिवारी जी भी नहीं भूल पाये होंगे और न हम ही। यह उनका प्रेम था उनकी विशेषता थी जो हमें उन तक खींच कर ले गई थी। मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ कि मैं एक अच्छे कलमकार, सरल-सहृदय व्यक्तित्व के संपर्क में हूँ। जमीन से उठकर आकाश छूने का जो आपने सत्कर्म किया है यह उसी सुकर्म का फल है कि एक साहित्य समाज, उसके मित्र परिजन आज अमृत महोत्सव मनाने जा रहे हैं। आपको मेरी ओर से मेरे परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामना- बधाई एवं प्रार्थना कि आप स्वस्थ रहें, मस्त रहें, व्यस्त रहें। धन्यवाद

- लेखक वरिष्ठ कवि, कथाकार एवं उपन्यासकार हैं।
'श्रमफल'-1520, सुदामा नगर इंदौर (म.प्र.)-452009, मो. 9893034149

■

चित्र वीथी

अरुण तिवारी जी को मिले प्रमुख सम्मान

पूर्व मुख्यमंत्री श्री कैलाश जोशी, अरुण तिवारी को भारत भवन में 'माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए।

हरियाणा सरकार की हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. श्यामसखा श्याम, अरुण तिवारी को सम्मानित करते हुए तथा अतिथिगण सर्वश्री अशोक मिश्र, राजेन्द्र लहरिया, डॉ. पल्लव, महेश दर्पण, श्याम सखा श्याम, धनराज बोथरा, डॉ. नामवर सिंह, बलराम, अरुण तिवारी द्वारा प्रेरणा के नये अंक का लोकार्पण।

हरियाणा कला संस्कृति मंच, हिसार एवं शब्दशक्ति साहित्यिक संस्था, गुड़गांव द्वारा गुड़गांव में डॉ. ओमप्रकाश कादयान, नरेन्द्र कुमार गौड़, भारतीय पब्लिक अकादमी लखनऊ के अध्यक्ष राजेन्द्र परदेसी तथा किशोर श्रीवास्तव द्वारा अरुण तिवारी को 'साहित्य गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया।

मीडिया विमर्श भोपाल के आयोजन में डॉ. विजय बहादुर सिंह अरुण तिवारी को ब्रजलाल द्विवेदी 'अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान' से सम्मानित करते हुए, साथ में संजय द्विवेदी, श्रीमती द्विवेदी, मुकेश वर्मा, सुधीर सक्सेना, श्रीकांत सिंह व गिरीश पंकज।

मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन में अरुण तिवारी को सम्मानित करते हुए डॉ. गंगाप्रसाद विमल, अनवारे इस्लाम तथा पलाश सुरजन।

दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय द्वारा दिया जाने वाला 'डॉ विजय शिरढोणकर सम्मान' अरुण तिवारी को माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.जी. सुरेश, राजुरकर राज, रामाराव वामनकर द्वारा प्रेरणा के कुशल संपादन हेतु सम्मानित किया गया।

मालवांचल (झाबुआ, धार, शाजापुर, देवास, इंदौर) पत्रकार संघ द्वारा मध्यप्रदेश जनसम्पर्क के तत्वावधान में नरेश मेहता, अरुण तिवारी को सम्मानित करते हुए, साथ में शांतिलाल पाड़ियार व जनसम्पर्क आयुक्त डॉ. अमरसिंह।

प्रेरणा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, नरसिंहगढ़ द्वारा अरुण तिवारी को सम्मानित करते हुए श्री कैलाश नारायण सोनी डावर।

राजगढ़ जिले की साहित्यिक संस्था द्वारा अरुण तिवारी का सम्मान।

कुछ पुरानी स्मृतियाँ

मास्को के विद्यालय में वहां कराये जा रहे अध्ययन का अवलोकन।

लेनिनग्राद में नव वर-वधू द्वारा भारत में डायवोर्स न होने के बारे में जानकारी लेते हुए।

लेनिनग्राद में महिलाओं ने बिंदी लगवाई, जिससे डायवोर्स न हो।

मास्को में भ्रमण

मास्को में
राइटर हाउस का भ्रमण

ताशकंद में सौजन्य भेंट

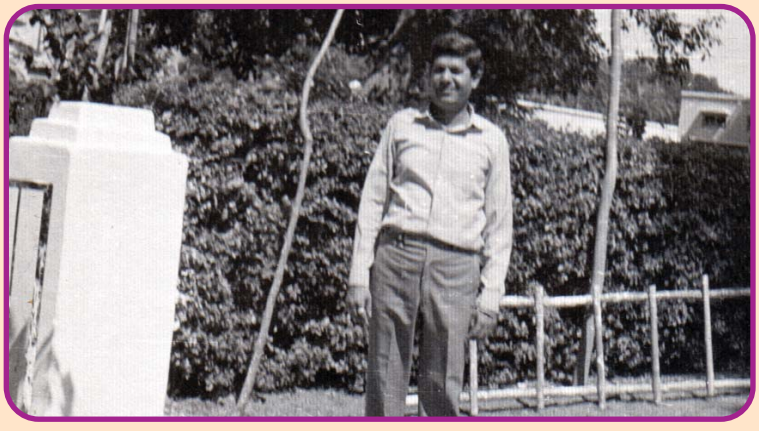

अरुण तिवारी

प्रणति...

प्रेरणा पत्रिका की प्रेरणा

उर्मिला तिवारी

बिदा : 24 सितम्बर, 2016

अरुण तिवारी, पत्नी उर्मिला तिवारी और पुत्र अनिमेष, अभिनव एवं आराध्य।

श्री अरुण तिवारी जी के सुपुत्र अभिनव, आराध्य व अनिमेष के बचपन का छायाचित्र

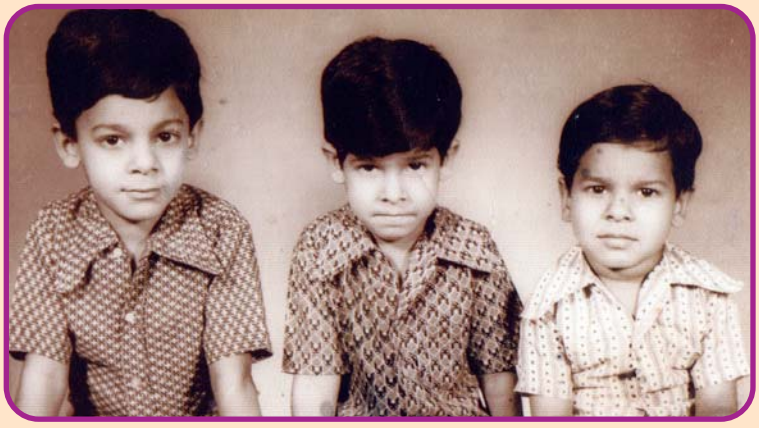

अरुण तिवारी एवं उर्मिला तिवारी

दीपावली के अवसर पर पूरा परिवार एक साथ

अमृत महोत्सव की झलकियाँ

अमृत महोत्सव कार्यक्रम में पुस्तक 'अपनी बात', पुस्तक 'सृजन का समकालीन परिदृश्य', 'प्रेरणा – समकालीन लेखन के लिए' पत्रिका का नया अंक एवं समाचार पत्र 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाईम्स' का लोकार्पण करते हुए बलराम गुमास्ता, शैलेन्द्र शैली, शशांक, अरुण तिवारी, मुकेश वर्मा एवं युगेश शर्मा

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगणों को संबोधित करते हुए अरुण तिवारी

अमृत महोत्सव कार्यक्रम में सभागार में उपस्थित अतिथिगण।

अमृत महोत्सव कार्यक्रम में सभागार में उपस्थित अतिथिगण।

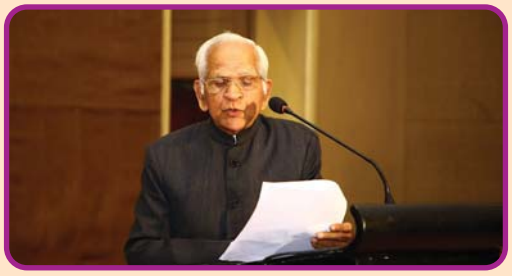

युगेश शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार) संबोधित करते हुए

संबोधित करते हुए शैलेन्द्र शैली, (संपादक राग भोपाली)

अध्यक्ष मुकेश वर्मा, (वरिष्ठ कथाकार) संबोधित करते हुए

संबोधित करते हुए शशांक, (वरिष्ठ कथाकार)

संचालन करते हुए बलराम गुमास्ता, (वरिष्ठ कवि)

संबोधित करते हुए पलाश सुरजन, (अध्यक्ष, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन)

संबोधित करते हुए राजुरकर राज, (अध्यक्ष, दुष्यंत संग्रहालय)

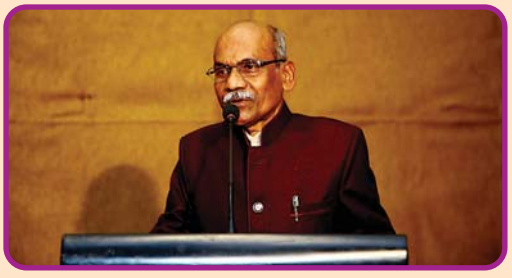

संबोधित करते हुए प्रमोद वैद्य, (वरिष्ठ इंजीनियर)

संबोधित करते हुए सूर्यकांत शर्मा, (पत्नी के छोटे भाई)

संबोधित करते हुए विवेक शर्मा (पत्नी के छोटे भाई बृजभूषण शर्मा के बड़े पुत्र)

संबोधित करते हुए जगदीश द्विवेदी, (वरिष्ठ पत्रकार एवं अध्यक्ष पैलेस आरचर्ड रहवासी समिति)

आर.के. सिंह (सदस्य सीनियर सिटीजन फोरम एवं पूर्व अध्यक्ष पैलेस आरचर्ड रहवासी समिति)

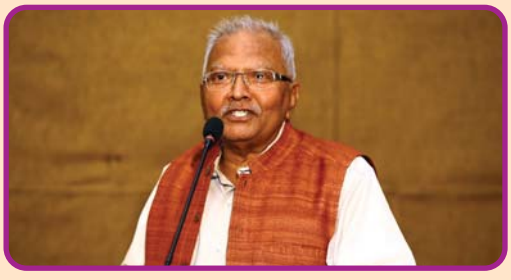

'कला समय' के संपादक भँवरलाल श्रीवास अरुण तिवारी जी को शुभकामनाएँ देते हुए

पैलेस आरचर्ड रहवासी समिति (नार्थ) के पदाधिकारी व सदस्य अरुण तिवारी जी का अभिनंदन करते हुए

सीनियर सटीजन फोरम (नार्थ) की महिला सदस्यों द्वारा अरुण तिवारी का अभिनंदन

सीनियर सटीजन फोरम (नार्थ) के पुरुष सदस्यों द्वारा अरुण तिवारी का अभिनंदन

अरुण तिवारी जी का अभिनंदन करते हुए
प्रेरणा परिवार

कार्यक्रम में उपस्थित विशेष अतिथि, अध्यक्ष एवं
आमंत्रित वक्ता ग्रुप फोटो में

उपस्थित अतिथिगणों द्वारा अरुण तिवारी जी का
आत्मीय अभिनंदन

अरुण तिवारी जी परिवार के साथ
केक काटते हुए

अरुण तिवारी अपने परिवार एवं
ससुराल पक्ष के साथ

अरुण तिवारी अपने
पोते एवं पोतियों के साथ

पुत्रवधुएं श्रीमती श्वेता तिवारी (मंझली बहू),
अनु तिवारी (छोटी बहू) एवं
सपना तिवारी (बड़ी बहू)

बड़े पुत्र अभिनव, छोटे पुत्र अनिमेष एवं
मंझले पुत्र आराध्य

तीन- तीन मोर्चों पर अद्भुत कार्य!

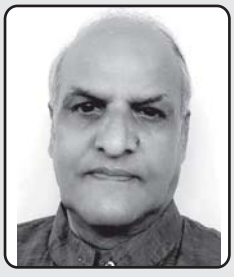

गिरीश पंकज

अरुण तिवारी जी से मेरी मुलाकात एक बार ही हुई है, भोपाल में, जब उन्हें पंडित बृजलाल द्विवेदी सम्मान प्राप्त हुआ था। यह सम्मान उन्हें उनकी श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका 'प्रेरणा' के लिए दिया गया था। प्रेरणा पत्रिका ही ऐसी है जिसके लिए मुझे उसकी अनुशंसा के लिए बाध्य होना पड़ा। संजय द्विवेदी अपने दादा के नाम से हर वर्ष किसी स्तरीय साहित्यिक पत्रिका को सम्मानित करते हैं। कुछ वर्ष पहले उन्होंने मुझसे किसी अच्छी पत्रिका का नाम पूछा तो मैंने भोपाल से निकलने वाली पत्रिका प्रेरणा के बारे में उन्हें बताया। उन्होंने मेरी संस्तुति पर मुहर लगा दी। बाद में उनके पास प्रेरणा के कुछ अंक भी पहुंचे । उन्हें देखकर उन्होंने तत्काल का निर्णय किया कि इस बार का पंडित बृजलाल द्विवेदी सम्मान अगर किसी पत्रिका को मिल सकता है तो वह पत्रिका प्रेरणा ही होगी। और जब सम्मान का आयोजन हुआ, तब मैं भोपाल पहुंचा। उसी दौरान सौम्य, सुशील व्यक्तित्व के धनीतिवारी जी से मेरी मुलाकात हुई। यह बताना इसलिए महत्वपूर्ण है कि लोगों को इस बात का एहसास हो कि अरुण तिवारी जी को मिला हुआ सम्मान याचित या जुगाडू सम्मान नहीं था। यह सम्मान उन तक चल कर पहुँचा। इसका सबसे बड़ा कारण यह है, तिवारी जी की ईमानदारी के साथ की गई साहित्यिक पत्रकारिता। व्यक्ति का काम ही ऐसा होना चाहिए कि लोग बरबस उनका नाम रिकमंड कर दें। प्रतिभाशाली लोगों को, कर्म निष्ठ लोगों को कहीं जाने की जरूरत नहीं होती। भोपाल में तिवारी जी के सम्मान-कार्यक्रम में जब मैंने उनके विचार सुने तो उनके प्रति आदर और बढ़ गया। उन्होंने पूरी विनम्रता के साथ सम्मान को स्वीकारा और अपनी साहित्यिक पत्रकारिता के उतार-चढ़ाव को भी सामने रखा। मुझे यह देख कर खुशी हुई कि उनके आसपास रहने वाले अनेक शुभचिंतक भी उनको सम्मानित होते देखने आए थे। और उन सब ने कार्यक्रम स्थल में अपनी तरफ से तिवारी जी का अतिरिक्त सम्मान भी किया। यही तो किसी व्यक्ति के जीवन की पूंजी है कि उसके काम को समाज के विभिन्न वर्गों के लोग आगे बढ़कर समादृत करते हैं। तिवारी जी सीनियर सिटीजन टाइम्स का संपादन कर रहे हैं और बच्चों की अंग्रेजी पत्रिका इंटेलीजेली का भी कुछ वर्षों से प्रकाशन कर रहे हैं।

जैसा मैंने उनके व्यक्तित्व को देखा, तो महसूस किया कि वह भारतीय संस्कृति और परंपरा के कायल हैं। यही कारण है कि उन्हें संस्कृत और रामायण में गहरी रुचि रही। वे शुरू से ही साहित्यिक रुचि संपन्न व्यक्ति रहे। छह दशक पहले से उनकी अनेक कहानियां और कविताएं पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही। एक समय ऐसा था जब 'लहर' पत्रिका का काफी नाम हुआ करता था। उस पत्रिका में तिवारी जी की रचना छपा करती थी। अपनी पत्रिका प्रेरणा का वे तीन दशक से नियमित रूप से प्रकाशन कर रहे हैं। इस पत्रिका के लिए वे कितनी मेहनत करते हैं, यह इसी बात से समझा जा सकता है कि पत्रिका के अंत में देश से निकलने वाली अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं का विस्तार के साथ परिचय प्रकाशित होता है। इसका मतलब यह है कि तिवारी जी हर पत्रिका को पढ़ते हैं और अलग से नोट्स तैयार करते हैं। जबकि अनेक पत्रिकाओं में दूसरी साहित्यिक पत्रिकाओं का केवल नाम और उसके शहर का उल्लेख होता है। यह तिवारी जी की उदारता का परिचायक है कि वे अपनी पत्रिका में दूसरी पत्रिकाओं के बारे में भी विस्तार से परिचय देते हैं। मैंने जैसा महसूस किया है उसे देखकर लगता है कि अरुण तिवारी जी ने अपना जीवन ही प्रेरणा के लिए होम कर दिया है। उस में प्रकाशित रचनाओं को देखकर उनकी संपादकीय दृष्टि से भी हमारा परिचय होता है। इसमें छपने वाली कोई भी रचना कमजोर नहीं होती। हर रचना संदेशपरक होती है। यही कारण है कि प्रेरणा की अपनी एक विशिष्ट पहचान बन चुकी है।

तिवारी जी बच्चों के लिए 'इन्टेलीजेली' नामक पत्रिका भी प्रकाशित कर रहे हैं । मैं चाहता हूं कि वह पत्रिका हिंदी में भी निकले तो वह और व्यापक स्वरूप ले लेगी। मेरे सुझाव पर तिवारी जी विचार करें। वे चाहें तो पत्रिका को द्विभाषी भी कर सकते हैं। अंग्रेजी के साथ-साथ यह हिंदी में भी निकले। खैर, यह भविष्य की बात है ।फिलहाल तो मैं यह देखकर चकित हो गया कि तिवारी जी 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' का भी प्रकाशन कर रहे हैं। इस पत्रिका के बहाने वे वरिष्ठ जनों को अपने साथ जोड़ रहे हैं । कई बार

हमारे कुछ वरिष्ठ जन सेवानिवृत्ति के बाद अपने जीवन को निस्सार समझते हैं और हताशा से भर जाते हैं, लेकिन इस पत्रिका के कारण अनेक वरिष्ठ जन कुछ-कुछ सृजन में लगे रहते हैं। उनके सृजन को तिवारी जी सीनियर सिटीजन टाइम्स में प्रकाशित करते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि पत्रिका सिर्फ साहित्यिक नहीं है, इस पत्रिका में सीनियर सिटीजन के फायदे की अनेक सरकारी, गैर सरकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी जाती है। स्वास्थ्य संबंधित टिप्स भी होते हैं। कुल मिलाकर यह पत्रिका बुजुर्गों के लिए अंतत: प्रेरणा का ही कार्य करती है। मतलब यह कि तिवारी की तीन-तीन मोर्चों पर अद्भुत और प्रेरणास्पद कार्य कर रहे हैं। बहुत कम लोग हैं इतने ऊर्जावान मिलते हैं।

इस तरह मैं अरुण तिवारी जी के पूरे जीवन को देखता हूं तो उसका सार निकलकर यह आता है कि इन्होंने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से हर किसी को प्रेरणा देने का कार्य किया है । चाहे वह साहित्यकार हो, बच्चे हों या बुजुर्ग सब के उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा रखते हुए कार्य करने वाले शख्स का नाम है : अरुण तिवारी। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना भी करता हूँ कि आप शतायु हों और उनका साहित्यिक, सामाजिक - यज्ञ निरंतर जारी रहे.. निरंतर गतिशील रहे ..निरंतर प्रेरणास्पद बना रहे।

- लेखक वरिष्ठ रचनाकार हैं।
संपादक -सद्भावना दर्पण, सेक्टर-3, एचआईजी-2, म.न. 2, दीनदयाल उपाध्याय नगर, रायपुर-492010, छ.ग.
मो.: 8770969574

अरुण तिवारी : एक अविरल साहित्य पुरोधा

जनार्दन मिश्र

मुझे कला समय- विशिष्ट साहित्यिक पत्रिका के विद्वान संपादक जी से जानकारी मिली कि उनकी इस विशिष्ट पत्रिका का आगामी अंक डॉ अरुण तिवारी जी, मूर्धन्य साहित्यकार और अपने देश की विशिष्ट साहित्यिक पत्रिका - प्रेरणा - के माननीय संपादक जी पर केंद्रित है- मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

हम इस क्रम में यह भी बताते चलें कि तिवारी जी की विशिष्ट पत्रिका प्रेरणा से हम लगभग 20 वर्षों से लगातार जुड़े हैं- और छपते रहे हैं- आदरणीय तिवारी जी की साहित्यिक दृष्टि संपन्नता इनके हर अंक में साफ साफ परिलक्षित होती है। तिवारी जी पूर्णत: राष्ट्रवादी चेतना के एक प्रखर साहित्यकार हैं। इन्होंने अपने प्रत्येक अंक में अपनी दृष्टि चेतना और सोच को परिभाषित किया है। उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से सम्पूर्ण देश और सम्पूर्ण साहित्यकार व कला संस्कृति कर्मियों को आधार सेतु की तरह जोड़कर रखा है। वे सभी जाति, धर्मों, संप्रदायों को एक सूत्र में जोड़कर रखने वाले साहित्य पुरोधा हैं।

इनकी पत्रिका का हर अंक विशिष्ट होता है चाहे वह सामान्य अंक हो या किसी साहित्यकार, कलाकार या किसी विशेष विषय पर केंद्रित ही क्यों न हो। अपने देश के जितने भी अग्रणी साहित्यकार रहे हैं या अभी है, उन सभी पर केन्द्रित कर इन्होंने अपनी पत्रिका का विशेषांक निकाला है। अभी अद्यतन में पचहत्तर पार के साहित्यकार इनकी पत्रिका का ताजा विशेषांक है, जिसमें आरा के मूर्धन्य साहित्यकार कवि आलोचक रामनिहाल गुंजन जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के ऊपर आरा के ही एक युवा आलोचक सुधीर सुमन का आलेख है।

तिवारी जी की पहचान पर्यावरण चिंतक के रूप में भी है। इन्होंने पर्यावरण पर बहुत ही बढ़िया कार्य किया है और देश की कई प्रतिष्ठित संस्थानों के द्वारा ये अत्यन्त विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त कर चुके हैं।

आदरणीय तिवारी जी साहित्य मनीषी हैं। इन्होंने अपने खर्च पर अपनी पत्रिका प्रेरणा को लंबे समय से अनवरत निकाल रहे हैं जबकि बड़ी बड़ी व्यावसायिक साहित्यिक पत्रिकाएं बन्द हो गई- इस कठिन और जटिल समय में भी वे किसी जुनून की तरह साहित्य के लिए जूझ रहें हैं। यह इनकी निरंतरता इन्हें महान बनाती है। वे इस दिशा में अग्रणी हैं, अपने देश में इस दिशा में इनके जैसे विरल साहित्यिक योद्धा बहुत ही कम शेष रह गए हैं।

मैं इनकी विशिष्ट पत्रिका प्रेरणा का हृदय से ही कायल हूं और लगभग 30 वर्षों से हर अंक बड़ी ही जतन से संभाल कर रखा हूं। पुस्तक के आकार की इनकी विशिष्ट पत्रिका निश्चित रूप से पठनीय और संग्रहणीय है। मैं इनके सुखद जीवन की मंगल कामनाएं सादर समर्पित कर रहा हूं...

- लेखक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं।
संकटमोचन नगर, नई पुलिस लाइन, आरा, बिहार-802301
मो.: 07739128835

'प्रेरणा' के संपादक, लेखक और आलोचक

अरुण तिवारी की 75वीं सालगिरह पर विशेष

हीरालाल नागर

'बगल में है ऑफिस। कभी भी आ जाइए।' भोपाल पहुंचने पर उन्होंने इतना ही कहा। तब भी मैं नहीं समझा। समझता कैसे ? बोर्ड 'देशबन्धु' का लगा था।

यह मेरी परिचित-सी जगह लगी। 'दैनिक भास्कर' ऑफिस का कांचीला परिवेश। वहां खड़े होकर देखने से लगता है- सब कुछ काँच में मढ़ा हुआ है, जिसके अंदर सांस लेता हुआ आदमी कार्यरत है। इसके अंदर पहुंचने पर आदमी बदल जाता है। वह आदमी की तरह चलता-फिरता है, आदमी की तरह बात कर लेता है, मगर काम आदमी की तरह नहीं करता है, वह यंत्र बन जाता है- जब तक अखबार की आखिरी पंक्ति नहीं छप जाती, वह यंत्र ही बना रहता है। जैसे ही वह बाहर निकलता है-आदमी बन जाता है।

तो मैं एक समय इस इलाके का आदमी था। वह आदमी अब मुझसे दूर होता चला गया है या आदमी बने रहने से दूर कर दिया गया है।

इसके चैराहे पर खड़े होकर कुछ चीजों को समझा जा सकता है। कांच की बिल्डिंग के ठीक सामने 'एक राष्ट्रीय अखबार' का कार्यालय है। इसे प्रतिस्पर्धा में यहां खड़ा किया गया है, जबकि भोपाल में उसके कद का कोई नापजोख नहीं है। वह 'देशबन्धु' और 'नई दुनिया' के नीचे का अखबार है। सत्ता की चिरौजीदानों के बल पर ही वह पल-पुस रहा है। चौराहे के चारों ओर कुछ दुकानें हैं- चाय-पानी से लेकर माल-मोबाइल की दुकानों तक।

मुख्य सड़क पर जिस चौराहे पर मैं उतरता हूं, उसे प्रेस कॉम्पलैक्स का चौराहा कहते हैं। मैं इस चौराहे से नीचे दायें ओर की सड़क पर उतरता हूँ।

जैसे ही झोपड़पट्टी खत्म होती है बायीं और दायीं ओर दोनों तरफ अखबार के दफ्तर है। पहले एक खाली प्लॉट है, जिसकी जमीन पर आम, नीम और जामुन के पेड़ हैं। फूलों की झाड़िया है। झुरमुट से झांकती फूल-पत्तियां है।

बायीं 'देशबन्धु' के ऑफिस होने की सूचना देता, एक बोर्ड लगा है। पर यहां तामझाम नहीं है। निर्वासित भूखंड में तब्दील होती जा रही हमारी अस्मिता अपने गौरवशाली अतीत और परम्परा से गौरवान्वित है। जाने का रास्ता एक है मगर उन तक पहुंचने के लिए दो रास्तों में तब्दील हो जाता है। बायें देशबन्धु कार्यालय, जिसे भाई पलाश सुरजन संभालते हैं। तन-मन से अति कमनीय और सुदर्शन व्यक्तित्व वाले पलाश सुरजन। पत्रकारिता के कीर्ति-स्तम्भ मायाराय सुरजन के सबसे छोटे पुत्र।

थोड़ा आगे बढ़ने पर सीढ़ियां चढ़कर हम जिस ऑफिस से रूबरू होते हैं- वह है- प्रेरणा पत्रिका का छोटा-सा सुरुचिपूर्ण ऑफिस। यहीं पर बैठते हैं-इसके संपादक प्रकाशक और लेखक प्रिय श्री अरुण तिवारी। अरुण तिवारी उम्र के 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। यह उनकी उम्र का अमृत महोत्सव वर्ष है। उनकी छोटी-छोटी महानतम उपलब्धियों का वर्ष है।

पिछले दस-पंद्रह साल से 'प्रेरणा' पत्रिका नियमित आती रही- दिल्ली के पते पर। कब, कैसे और क्यों शुरू की गई पत्रिका- मेरे पते पर भेजना, इसका मुझे खुद ही पता नहीं चला। इसकी धूमिल-सी याद है। मगर यह सत्य है कि पत्रिका 'प्रेरणा' को मैंने मुख्य दो-तीन कारणों से बहुत पसंद किया।

पहला इसका नियमित प्रकाशन और इसका महीने के पहले हफ्ते में पढ़ने के लिए उपलब्ध हो जाना।

पत्रिका की लोकप्रियता का एक सबसे बड़ा कारण है पत्रिका में सभी विधाओं की रचनाओं का समावेश होना। कहानी, कविता, ग़ज़ल, गीत, लघुकथा, समीक्षा, लेखकीय विचार और निबंध आदि। अगले कई कारण है- जैसे पत्रिका की साफ-सुथरी छपाई। सुरुचिपूर्ण ढंग से रखी गई चीजें।

पत्रिका का सबसे उपयोगी कॉलम है- पत्र-पत्रिकाओं के नये अंकों की जानकारी। उनमें क्या खास छपा है, यह जानने की उत्सुकता हर पाठक में होती ही है। इतना ही नहीं पत्रिका का पूरा पता और उसके आरपार गुजरने की सुविधा भी। पाठकों के लिए

रचनात्मक बने रहने का प्रयास यह पत्रिका खुद करती है, तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है।

पत्रिका के हर अंक में संपादक की ओर से छपी हुई पर्ची नत्थी रहती, जिसमें वार्षिक शुक्ल भेजने का अनुरोध होता, जिसे देखकर/पढ़कर मन कचोट उठता कि इतनी शानदार पत्रिका का मैं अभी तक ग्राहक क्यों नहीं बना।

यह पत्रिका का प्रभाव था- मुझ पर। जब मैं भोपाल आया और आइसेक्ट पब्लिकेशन का कार्य-भार संभाला तो फुरसत में लोगों से मिलने की इच्छा जागृत हुई। एक नहीं करीब सात-आठ महीने गुजर गए बिना मुलाकात के, जबकि साथी लोग बता चुके थे कि 'प्रेरणा' का दफ्तर सामने है और इसके संपादक अरुण तिवारी यहीं बैठते हैं। शायद बसंत का महीना बीत चुका था और आइसेक्ट पब्लिकेशन के कार्यालय की अमराइयों में कोयल की कूक कमजोर पड़ चुकी थी, मैंने एक दिन अरुण तिवारी जी से भेंट करने की ठान ली। ऑफिस खाली था। मौका पाकर मैं 'प्रेरणा' के दफ्तर पहुंच ही गया। सुरुचिपूर्ण ढंग से सजे कार्यालय में अरुण तिवारी जी की मुस्कान फैली हुई थी। वे मुझे जानते ही थे। इसलिए औपचारिकता का सम्मान हमने अपने दिलों में महसूस किया। जैसी पत्रिका और वैसा ही तिवारी जी का व्यक्तित्व। कोई लाग-लपेट नहीं और न ही प्रदर्शन-आडम्बर की कोई गुंजाइश। ऐसे सरल हृदय और वत्सल मन वाले अरुण तिवारी की सादगी पर कौन फिदा न होता। उन्होंने चलते-चलते कहा, 'प्रेरणा के लिए आप अपनी रचनायें अवश्य भेजें।'

अरुण तिवारी अध्यव्यवसायी संपादक हैं। उद्यमी लेखक है। 23-24 वर्षों से हिन्दी की साहित्यिक पत्रिका का संपादन-प्रकाशन और छः-सात वर्षों से अंग्रेजी में बच्चों की पत्रिका 'इंटेलीजेली' का नियमित प्रकाशन। दफ्तर व्यावसायिक छपाई के लिए भी काम करता है, जिसे आर्थिक स्रोत का स्थाई साधन मान सकते हैं, लेकिन दफ़्तर के सभी कार्यों में अरुण तिवारी अपनी ऊर्जा खपाते है। सीमित कर्मचारियों का स्टाफ और सीधी-सरल कार्य पद्धति में उलझे रहना उनकी अपनी फितरत है। भाई अरुण तिवारी अपनी उम्र से ज्यादा काम लेते हैं। शालीन है, चुस्त-दुरुस्त हैं और अपने काम के प्रति ईमानदार हैं। यहां गुण आदमी को बड़ा बनाती हैं। सम्मानित पत्रकार के रूप में उनकी छवि सर्वव्याप्त है।

अरुण तिवारी जी ने एक और महत्वपूर्ण काम संभाला हुआ है। वह है 'सीनियर सिटीजन टाइम्स' नाम से एक अखबार का प्रकाशन। यह बात हास्यास्पद लग सकती है, कि इसकी जरूरत ही क्या थी। मगर जब व्यावहासिक जगत में सिक्का चल रहा हो, तो सामाजिक कार्यों का मूल्य बढ़ जाता है। 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन' का प्रकाशन नियमित रूप से चल रहा है, तो इसमें उनकी लगन और प्रतिबद्धता ही सामने आती है।

अरुण तिवारी जी से सिर्फ दो-तीन बार ही मिल पाया। एक बार जब उनके अचानक अस्वस्थ होने की चर्चा आयी, तब उनके स्वस्थ होने की कामना लिए उनके दफ्तर पहुंचा। वे अस्वस्थ थे- जरूर मगर उनकी चिर-परिचित मुस्कान चेहरे पर मौजूद थी। तब जाना कि बेशक वे 'पेट के मरीज' हैं, मगर जिंदादिली बरकरार हैं। 'हीरामणि' सीरीज से कुछ पुरानी रचनाएं उन्हें प्रकाशनार्थ दी थीं और अगले माह उन्होंने वे कविताएं छाप भी दीं।

भोपाल में शीर्षस्थ पत्रकारों, लेखकों, कवियों और कथाकारों की जमात है। वे सब अपने-अपने हुनर में निष्णात है। वैसे भी भोपाल एक ग्लोबल शहर है। नवाबी रिवायत है। आधुनिक और पुरातन सभ्यता की मिली-जुली भाषा-बोली और संस्कृति है। अरुण तिवारी जी उससे वाकिफ हैं, और उन्होंने लेखकों, संस्कृतिकर्मियों और राजनीतिक उल्माओं से बराबर के सम्बंध बना रखे हैं। यहां का राजनीतिक माहौल कब-किसके पक्ष में काम करने लगे, किसी को रातों-रात खबर नहीं होती। मगर तिवारी जी इसकी जानकारी रखने में विवेकशील हैं। सरकार कोई भी हो, उनका काम रुकता नहीं है। साहित्य-कर्म वे सभी को साथ लेकर करते हैं। न धुर दक्षिण न धुर वाम। बीच का रास्ता बनाकर चलते हैं, जहां भंवर है, डूबने का खतरा है, लेकिन जब तैराकी आती हो, और दोनों हाथों से पानी काटना आता हो, वहां बचने की पूरी संभावना रहती है।

सबके अपने-अपने द्वीप हैं, और सुरक्षित किले हैं। रेलवे की पटरी के किनारे उनका यह निर्जन एकांत हर किसी को रास नहीं आता पर साहित्य के वसूलों के साथ उनकी पत्रिका 'प्रेरणा' दिशाओं से आने वाली हवा को थामे रखती है। शहर, नगर और कस्बा बनाती हुई यह जगह एक छोटा-सा पुल भी बनाती है- जो यहां से गुजरते हैं, उनका रास्ता आसान हो जाता है।

अरुण तिवारी जी का इस जगह आना-जाना, सुबह से शाम तक काम में व्यस्त रहना और फिर चुपचाप पुल पार कर घर निकल जाना, राहत और सेहत का मिला-जुला अभ्यास है।

75वें पार भी उल्लास और उमंग की सजग दुनिया है। वे चलते रहें और पूर्णांक हासिल करें- ये मेरी शुभकामनायें हैं।

- लेखक वरिष्ठ कवि एवं उपन्यासकार हैं।
बी-147/41 सी, सादतपुर विस्तार, गली नं. 2, जीवन ज्योति स्कूल के पास, करावल नगर, दिल्ली-110094, मो. 9582623368

■

ज़रूरत नहीं मील के पत्थरों की

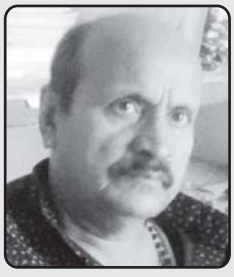

अनिरुद्ध सिन्हा

जीवन की प्रतिच्छाया व्यक्ति के द्वारा किए गए कर्मों के यश के रूप में प्रतिबिंबित होती है और निपुण, बुद्धिमति, सुचतुरा, दूरदर्शिनी सरस्वती भी उन्हीं पर श्रद्धा की दृष्टि डालती है जो उनकी प्रतिष्ठा की रक्षा ही नहीं मर्यादा की वृद्धि करने वाले होते हैं। बुद्धि सभी की अपनी-अपनी होती है और इसी पृथकता के आवरण में आदमी या लेखक/कलाकार का व्यक्तित्व अद्‌भुत होता रहता है।

कोई जिज्ञासु व्यक्ति ही सामाजिक और दार्शनिक ज्ञान का अधिकारी होता है। काया, मन और वाक्य के समवेत परिश्रम के द्वारा आदमी जो भी अनुष्ठान करता है उसके अन्त:करण में एक प्रकार का संस्कार उत्पन्न होता है जिससे भविष्य के परिणाम का बीज उत्पन्न होता है, जो वर्तमान जीवन का आधार बन जाता है। सच्ची जिज्ञासा के बिना समय का ज्ञान और अपना आदर्श की उधेड़बुन बुद्धि मात्र कुतूहल बनकर रह जाती है। प्रतिबद्धता के अभाव में समर्पण का जन्म नहीं हो सकता जिसकी समुचित व्याख्या भी नहीं की जा सकती। इसका ज्वलंत उदाहरण अरुण तिवारी हैं। आधुनिक पत्रकारिता परंपरा के एक स्तम्भ के रूप में परिगणित निष्ठावान पत्रकार और संपादक के रूप में कई दशकों से अपनी साधना की ज्योति जलाते आ रहे हैं। अपने लेखन में इन्होंने ज्ञान, समर्पण और आदर्श को महत्व दिया है। इनके लेखन को जहाँ-जहाँ भी मैं देख सका हूँ, मैं अपने ध्येय के आधार की अवहेलना नहीं कर सकता जिसके लिए मैं अपने निष्कर्ष को अपने अंतर-प्रवाह के झोंकों से प्रतिबिंबित शब्दों से ही इस महान लेखन के प्रति प्रतिबद्ध लेखक की जीवनी संक्षिप्त रूप में ही आप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अरुण तिवारी हिन्दी के ऐसे अग्रणी और मूर्धन्य संपादक हैं,जिनकी सादगी और सरलता अपने आप में अतिशय महान है। एक संपादक की हैसियत से रचनाकार की अन्त:प्रेरणा का अनुसंधान करने तथा उसके कलात्मक स्वरूप का परिचय देने में आजीवन व्यस्त रहे। रचनाकार की चुनी हुई विशिष्टताओं और उसकी प्रवृतियों को यथासंभव निखारने का ही काम किया। अपने बारे में कभी सोचा ही नहीं। हिन्दी पत्रकारिता में जिस प्रकार के उच्च नैतिकता, मानव-मूल्यों और साहसपूर्ण निर्भीकता का समावेश किया उससे हिन्दी पत्रकारिता को एक नयी ऊर्जा मिलती है।

अरुण तिवारी सिविल इंजीनियर के साथ एम.ए.(हिन्दी),साहित्य विशारद, साहित्य रत्न, एम.बी.ए. की आंशिक पढ़ाई के साथ-साथ संस्कृत की चार परीक्षाओं में से दो तथा 'रामायण' की पाँच परीक्षाओं में से दो तक की पढ़ाई की, किन्तु साहित्य से प्रभावित होकर लेखन से जुड़ गए। सर्वप्रथम मुख्य तौर पर इन्होंने कहानी और कविता को ही अपनी विधा के रूप में चयन किया। इनकी पहली कहानी उस समय की अत्यधिक चर्चित और स्तरीय पत्रिका 'लहर' में छपी। 60 और 70 के बीच निरंतर पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहे। आलोचना और समीक्षा लेखन भी किया। आकाशवाणी और दूरदर्शन के अनेक कार्यक्रमों में इनकी स्वस्थ उपस्थिति रही। काफी सराहे भी गए।

पिछले कई दशकों से अरुण तिवारी नियमित सम्पादन से जुड़े हुए हैं। इन्हें अनेक अलंकरण समाज और पुरस्कार अर्जित हुए जिसमें माखन लाल चतुर्वेदी पुरस्कार, साहित्य गौरव सम्मान, काव्य केशव सम्मान, अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मान, डॉ .विजय शिरढोणकर सम्मान, मालवा अंचल पत्रकार संघ इंदौर एवं राजगढ़ ज़िला पत्रकार संघ तथा विभिन्न शहरों की अनेक सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा अभिनंदन एवं सम्मान प्रमुख हैं। अनेक सम्मान पुरस्कार समितियों के मान्य सदस्य बनकर इन्होंने निर्णायक भूमिका भी निभाई। इनकी प्रकाशित महत्वपूर्ण कृतियों में 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य (आलेख) अपनी बात (आलेख)''सृजन का समकालीन परिदृश्य(बातचीत)''स्मृतियों के शिलालेख (आलेख)' 'पहाड़ों की पगडंडियों से शहर में (कविता-संग्रह में कविताएँ)' प्रकाशित।

पत्रकारिता के संबंध में इनके हृदय में जो भावनाएँ स्फुरित हुई हैं और सम्पादनकाल में जो अनुभूति प्राप्त हुई है, उन्हीं भावनाओं, अनुभूतियों और कल्पनाओं को सहज उच्छलन करते हुए अपने आलेख साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य में कहते हैं, 'बदलते परिदृश्य में शब्दों के अर्थ और परिभाषा बदल रही है। शब्दकोश में दिये गये उनके शाब्दिक मायने संशय उत्पन्न करने लगे हैं क्योंकि जिस ढंग से उनका प्रयोग हो रहा है,वे प्रभावित करने की बजाय नए अर्थ दे रहे हैं और इन सबसे निश्चित रूप से भाषा प्रभावित हो रही है। पूर्व में इन शब्दों के प्रयोग से जो प्रभाव उत्पन्न होता था,उसकी जगह विश्वसनीयता का संकट पैदा हो रहा है जिससे पत्रकारिता शब्द के आगे ही प्रश्नचिन्ह लगने लगे हैं। एक ऐसा माध्यम जो जनता की दशा को बयान करता हो, उसे दिशा देता हो जब वो ही अपनी विश्वसनीयता खोने लगे तो उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है।'

अरुण तिवारी की इस चिंता को उस समय बल मिलता है जब हिन्दी के विख्यात कहानीकार/पत्रकार अवधेश प्रीत कहते हैं 'आज खबरों की भाषा, परिभाषा तथा प्रस्तुति बदली है। समाचार अब नाटकीय और मनोरंजक हो गए हैं। राखी सावंत का साक्षात्कार लेकर बड़े-बड़े संपादक खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। बाज़ार की मांग के आगे सभी नतमस्तक हैं। मुनाफा सर्वोपरि हो गया है। आज मीडिया अपने को मुंबई स्टॉक एक्सचेंज में अपना रजिस्ट्रेशन कराकर बाज़ार में शेयर जारी करने के लिए कृतसंकल्प है, वह मीडिया ऐथिक्स क्यों मानेगी ? ऐसी स्थिति में सामाजिक दबाव, सिविल सोसाइटी, बुद्धिजीवियों, समाजकर्मियों सबको सक्रिय होना होगा। ग़लत संपादकों और अखबार समूहों का सार्वजनिक बहिष्कार होना चाहिए, (साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य-संपादक अरुण तिवारी)।

भाषा के बारे में अरुण तिवारी की चिंता जायज है। भाषा का अभिप्राय हिन्दी से है। हम जानते हैं भाषा केवल व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त वाक्यों का समूह भर नहीं होती ,अपितु वह एक अखंड और नीति सम्मत सत्ता है। हिन्दी भाषा के गुण हैं इसकी वैज्ञानिकता, सब प्रकार के शब्दों को पचाने की शक्ति इसका फैलाव,इसकी अभिव्यंजना शक्ति और सब तरह की ध्वनियों को स्वर देने की शक्ति। ये सब इसकी नैसर्गिक शक्तियाँ हैं जिन्हें कोई चुनौती नहीं दे सकता। आधुनिक पत्रकारों के अतिरिक्त सरकार के वैसे उच्च अधिकारी जो स्वयं हिन्दी नहीं जानते और अँग्रेजी में बड़े अधिकार से काम करते हैं। इस विषय पर पत्रकारों के द्वारा प्रश्न खड़े होने चाहिए, पर दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो पाता है। एक और बात कुछ लोग बड़ी बुद्धिमत्ता से नागरी लिपि का अप्रत्यक्ष विरोध करते हैं और कहते हैं कि रोमन लिपि में हिन्दी के कठिन शब्दों को लिखा जाए, ऐसा करने से हिन्दी के स्वरूप और शक्ति को ही नष्ट कर देना है। भाषा के विरोध में सांप्रदायिक भावना भी काम करती है जिसे राजनेताओं ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए भड़काई है। चरण चाटन की प्रवृति में अधिकांश पत्रकारों के द्वारा इन समस्याओं के प्रति सावधानी नहीं देखी जाती। यह आवश्यक है हिन्दी के गौरव को अक्षुण्ण रखने और इसकी स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए हिन्दी के पत्रकारों को कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण और व्यावहारिक प्रयास करने होंगे। कभी-कभी एक शब्द के दो मायने देने वाले अर्थ भी परेशान करते हैं। भाषा की कोई अशुद्धि बार-बार दोहराई जाए तो अक्सर नए पत्रकार उसको अपना लेते हैं। इसलिए भाषा के उपयुक्त प्रयोग की विवेचना में समाचार-पत्रों के महत्व को कम नहीं समझना चाहिए। पत्रकार में यह योग्यता होनी चाहिए कि विचारों को ठीक-ठीक और स्पष्ट रूप में व्यक्त कर सके। ऐसा करने की असमर्थता पर परदा डालने के लिए कभी-कभी जानबूझकर जटिल और उलझी हुई भाषा का प्रयोग किया जाता है। अरुण तिवारी एक ऐसे अकेले पत्रकार हैं जिन्होंने कभी भी इन भ्रामक परिस्थितियों से समझौता नहीं किया। अपने हर संपादकीय में एक शुद्ध, सरल, खरी, सजीव और लचीली भाषा के साथ उपस्थित होते हैं। यह कला है और यह कड़े परिश्रम से आती है। योगेश शर्मा के इस वक्तव्य से भी इस बात की पुष्टि होती है। मैंने पिछले वर्षों से श्री अरुण तिवारी के व्यक्तित्व और कृतित्व को सहज भाव से जानने-समझने की कोशिश की है। मेरे सामने उनके जीवन के चार पक्ष उभरकर सामने आते हैं, एक- साहित्यिक पत्रिका के संपादक, दो- एक संवेदनशील और जागरूक साहित्यकार तथा तीन- समाज के कुशलक्षेम की चिंता करने वाला नागरिक एवं चार- श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध प्रकाशक। साहित्य लेखन हों या साहित्यिक पत्रकारिता दोनों में निष्पक्षता, स्पष्टवादिता और खुले मन से अपना दायित्व उन्होंने निभाया है। वे वर्तमान की ज़मीन पर भविष्य के लिए सपने देखते हैं और उनको हरसंभव प्रयास करके साकार भी करते हैं। अपने जीवन में इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया जिनमें प्रमुख हैं- प्रेरणा, और प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स। प्रेरणा का प्रथम अंक 1992 में आया। तब से आज तक यह नियमित है। अभी तक 51 अंक प्रकाशित हो जाते हैं। प्रत्येक अंक को साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त समसायिक मुद्दों व सामाजिक सरोकारों से जोड़ा गया है तथा फिल्म स्तंभ में फिल्मों

व उससे जुड़े व्यक्तियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी जाती हैं। इसका हर अंक महत्वपूर्ण होता है। संपादकीय में प्राय: समकालीन मुद्दे उठाए जाते हैं। अब तक इसके अनेक विशेषांक आये हैं जिनमें महत्वपूर्ण हैं—मुक्तिबोध स्मृति विशेष अंक, निराला जन्मशती वर्ष अंक, कहानी अंक, कविता अंक, लघु उपन्यास अंक, स्मरण अंक, पुस्तक अंश अंक, साहित्यिक पत्रिका अंक, प्रेमचंद स्मृति अंक, समकालीन ग़ज़ल अंक, दिवंगत साहित्यकारों पर विशेषांक, अभिमन्यु अनंत अंक, भगवत रावत स्मृति विशेष अंक, प्रेमशंकर रघुवंशी स्मृति अंक, कमल किशोर गोयनका और धनंजय वर्मा अंक तथा पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकार पर केन्द्रित अंक, नारी अस्मिता अंक, नागरिक अंक, पर्यावरण अंक आदि अत्यंत चर्चित रहे हैं।

वर्तमान की ज़मीन पर भविष्य के सपने देखने वाले अरुण तिवारी कुछ इस तरह के भी प्रयोग करते हैं जिससे आश्चर्यचकित ही नहीं हतप्रभ भी होना पड़ता है। इसी में से एक है, प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स का प्रकाशन। मेरे ख्याल से भारत में एक भी ऐसा समाचार पत्र नहीं है जो पूरी तरह बुजुर्गों के हित में हो। स्वास्थ्य समस्याओं से लेकर विभिन्न तरह की तकलीफ़ों का निराकरण भी इस पत्र में मिलता है। इस पत्र के संपादकीय में इनका बुजुर्गों के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रकट होता है।

एक रचनाकार की हैसियत से मैं तहेदिल से अरुण तिवारी जी का शुक्रगुजार हूँ क्योंकि आपके त्याग और समर्पण से हिन्दी साहित्य निरंतर विकास के पथ पर है। वर्तमान मौद्रिक हालात में भी अभी तक आपके भीतर निष्ठा और ईमानदारी बची हुई है।

– लेखक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं।

गुलज़ार पोखर, मुंगेर (बिहार) 811201, मो.: 7488542351

अरुण तिवारी : समर्पित व्यक्तित्व

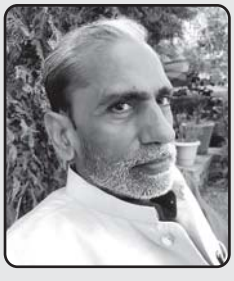

प्रभु त्रिवेदी

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यशस्वी संपादक, कवि, लेखक, पत्रकार श्रद्धेय श्री अरुण तिवारीजी के अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। आज जब व्यक्ति आत्मकेंद्रित होता जा रहा है, सोशल मीडिया का बोलबाला है और लोग साहित्य से कटते जा रहे हैं। ऐसे विकट समय में साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से समाज को नई दिशा देना और वैचारिक अलख जगाये रखना, अति दुष्कर कार्य है। तिवारी जी ने पारिवारिक विपरीत परिस्थितियों के बाद भी 'कर्म ही पूजा है' सिद्धांत के आधार पर सृजनात्मकता को बाधित नहीं होने दिया। यह साहित्य के प्रति उनके समर्पण, त्याग और अनुराग का परिचायक है। विगत अनेक वर्षों से वे सफलतापूर्वक 'प्रेरणा' पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं। इस बात की चिंता किये बिना कि कहाँ से सहयोग मिल रहा है और कहाँ से नहीं। प्रेरणा पब्लिकेशन के माध्यम से वे कई बहुचर्चित पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। किसी भी साहित्यिक आयोजन में तिवारी जी की उपस्थिति गरिमा प्रदान करती है। उनका सहज-सरल निर्लिप्त स्वभाव, गहन अध्ययन और स्वाध्याय,

अपरिचित को भी आकर्षित करता है। वे इसी तरह सक्रिय बने रहें, स्वस्थ व प्रसन्न रहें, दीर्घायु हों, इन्हीं स्वस्तिकामनाओं के साथ उन्हें बधाई। मेरा प्रणाम।

प्रेरित करती प्रेरणा, और आपका साथ।
आप शतक पूरा करें, कृपा करें रघुनाथ।।

– साहित्यकार/दोहाकार/कवि, 'प्रणम्य', 111, राम रहीम कॉलोनी, राऊ, इंदौर, म.प्र. 453331, मो.: 9425076996

संपादक और पत्रिका दोनों ने ही अपने नाम को सार्थक किया

ज़ाहिद खान

साहित्यिक लघु पत्रिकाओं में आज 'प्रेरणा' का एक ख़ास मुकाम है। बीते तेईस साल से यह पत्रिका मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से निरंतर निकल रही है। इन ढाई दशक में इस पत्रिका ने न सिर्फ साहित्य प्रेमियों के दिल में अपनी जगह बनाई है, बल्कि देश भर के लेखक भी इसे सम्मान की नज़र से देखते हैं। किसी भी पत्रिका के लिए बिना रुके, बिना किसी व्यवधान के ढाई दशक का सफ़र तय करना, कोई छोटी बात नहीं। वह तब और भी बड़ी बात हो जाती है, जब आप पत्रिका से किसी को लाभ नहीं पहुंचा सकते। राजनीति और राजनीतिक विचारों से आपने एक निश्चित दूरी बना रखी हो। आपका ध्येय सिर्फ और सिर्फ साहित्य का सवंर्धन हो। 'प्रेरणा' की इस अभूतपूर्व सफलता के पीछे यदि किसी का योगदान है, तो वह है इसके संपादक अरुण तिवारी। जिन्होंने कुशल संपादन से अपने नाम 'अरुण' और पत्रिका के नाम 'प्रेरणा' को सार्थक किया है। अपने नाम के मुताबिक ही अरुण तिवारी ने जहां अपने चमकदार काम से साहित्यिक दुनिया में उजाला फैलाया है, तो वहीं पत्रिका भी गुज़रे ढाई दशक में सैंकड़ों लोगों के लिए प्रेरणा बनी हुई है। अरुण तिवारी और 'प्रेरणा' ने आज भी अपनी चमक नहीं खोई है। साहित्यिक प्रेमियों और नई पीढ़ी के रचनाकारों के लिए वे प्रेरक बने हुए हैं। अपने पाठकों के अंदर मानवीय मूल्यों और साहित्यिक अभिरूचियों को विकसित करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अरुण तिवारी ने इस साल अपनी उम्र के पिचहत्तर साल पूरे कर लिए हैं। उनके साहित्यिक अवदान को रेखांकित करने का यह एक अच्छा मौका है। इन पिचहत्तर सालों में उन्होंने समाज और साहित्य को क्या दिया ?, इसको कायदे से परखा जाए। पेशे से सिविल इंजीनियर रहे अरुण तिवारी का साहित्य से नाता शुरू से ही रहा। हिंदी साहित्य के प्रति उनकी ये दीवानगी ही थी कि उन्होंने हिंदी साहित्य में एम.ए करने के बाद 'साहित्य विशारद' और 'साहित्य रत्न' की उपाधियां लीं। नौकरी की भागदौड़ में साहित्य सृजन भी करते रहे। साठ-सत्तर के दशक में उनकी कहानियां और कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से प्रकाशित हुईं। बीच-बीच में आलेख, आलोचना और समीक्षाएं लिखते रहे। 'पहाड़ों की पंगडंडियों से शहर में' अरुण तिवारी का कविता संग्रह, तो 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य', 'अपनी बात' और 'स्मृतियों के शिलालेख' किताबों में उनके लेखों का संकलन है। लेकिन अरुण तिवारी को हिंदी साहित्यिक बिरादरी में सही पहचान, 'प्रेरणा' के संपादन से ही मिली। उन्होंने साल 1992 में 'प्रेरणा' का प्रकाशन शुरू किया। एक अंक के प्रकाशन के बाद ही पत्रिका के प्रकाशन में रुकावट पेश आ गई। पूरे पांच साल पत्रिका का प्रकाशन स्थगित रहा। साल 1997 से पत्रिका का दोबारा प्रकाशन शुरू हुआ, तब से यह नियमित निकल रही है। इस दरमियान 'प्रेरणा' के 51 अंक आ चुके हैं। जिसमें 24 विशेषांक हैं। पत्रिका के विशेषांक तो खास हैं ही, सामान्य अंक भी विशेषांक से कम नहीं।

संपादक अरुण तिवारी का संपादन, अन्य संपादकों से इस मामले में अलग रहा कि उन्होंने हमेशा नये लेखकों को 'प्रेरणा' में जगह दी। स्थापित लेखकों के पीछे कभी नहीं भागे। बड़े नाम से ज्यादा, अच्छे लेखन को तरजीह दी। पत्रिका के विशेषांकों में नवोदितों से निरंतर लिखवाया। पत्रिका के मार्फत कई जरूरी विमर्श चलाए। 'हिंदी कविता का बदलता चेहरा' विषय पर विमर्श की शुरुआत हुई, तो यह पच्चीस अंकों तक चली। जिसमें अनेक रचनाकारों ने अपना सार्थक हस्तक्षेप किया। इसी तरह कहानी पर केन्द्रित बहस हुई। साहित्यिक पत्रकारिता को पत्रकारिता के समकक्ष माना जाए, यह मुहिम भी वे बरसों से चला रहे हैं। लघु/साहित्यिक पत्रिकाओं के आंदोलन में वे हमेशा शरीक रहे हैं। अपनी पत्रिका के मार्फत वे इसे लगातार गति देते रहते हैं। पत्रिका के 'लघु पत्रिका अभियान' स्तंभ के अंतर्गत मौजूदा दौर में प्रकाशित होने वाली तमाम पत्रिकाओं का जिक्र होता है। जिसमें पत्रिकाओं के नये अंक की विस्तृत जानकारी के साथ-साथ उनका पूरा संपर्क भी दिया जाता है। ताकि नये पाठक अपनी दिलचस्पी के मुताबिक उन पत्रिकाओं

को मंगवा सकें। जैसा कि मैंने ऊपर बतलाया 'प्रेरणा' बीच-बीच में अलग-अलग विषयों पर विशेषांक निकालती रही है। विशेषांकों की फेहरिस्त लंबी है। उनमें से कुछ अहमतरीन अंकों की चर्चा लाजिमी है। कवि मुक्तिबोध पर दो अंक, समकालीन ग़ज़ल का स्वरूप, स्मरण, पुस्तक अंश, साहित्यिक पत्रकारिता, नारी अस्मिता, वरिष्ठ नागरिक, विश्व हिंदी सम्मेलन आदि विशेषांकों में अरुण तिवारी की सम्पादकीय दृष्टि देखते बनती है। इनके अलावा अलग-अलग अवसर पर उन्होंने महत्वपूर्ण साहित्यकारों निराला, प्रेमचंद, भगवत रावत, प्रेमशंकर रघुवंशी, धनंजय वर्मा पर विशेषांक निकाले हैं, जो साहित्य प्रेमियों के साथ-साथ शोधार्थियों के भी बेहद काम के हैं।

किसी भी पत्रिका को बनाने और आगे बढ़ाने में अहम भूमिका पाठकों की होती है। यदि उसके पाठक ही नहीं होंगे, तो वह कैसे आगे बढ़ेगी। 'प्रेरणा' इस मामले में हमेशा खुशनसीब रही कि उसे पाठकों का खूब प्यार मिला। अरुण तिवारी ने भी उनकी राय को सदा अहमियत दी। सिर्फ अपने 'दिल की बात' ही नहीं की, पाठकों के 'दिल की बात' भी सुनी। उनकी बातों पर अमल किया। पत्रिका में 'आपकी कलम से' एक स्थायी स्तंभ है। जिसमें पाठकों की प्रतिक्रियाओं को प्रमुखता से छापा जाता है। वह भी बिना किसी संपादन के। हिंदी में आज जितनी भी पत्रिकाएं निकल रही हैं, 'प्रेरणा' के मुकाबले उनमें पाठकों को कम ही स्थान मिलता है। वहीं 'प्रेरणा' के कई पेज आम पाठकों की राय के लिए समर्पित रहते हैं। पत्रिका का कोई भी अंक उठाकर देख लीजिए, उसमें देश के महानगरों से लेकर दूरदराज इलाकों तक के पाठकों के पत्र मिलेंगे। जो अपनी राय को खुलकर व्यक्त करते हैं। आम पाठकों का प्यार पत्रिका की लोकप्रियता का एक पैमाना है। इस पैमाने पर आज बहुत कम साहित्यिक पत्रिकाएं खरी उतरती हैं। वरना, ज्यादातर पत्रिकाओं को लेखक और लेखक संगठनों के कार्यकर्ता ही जिंदा रखे हुए हैं। हिंदी की सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका की प्रसार संख्या भी पांच हजार से ज्यादा नहीं है। अधिकांश पत्रिकाओं की प्रसार संख्या पांच सौ से लेकर दो हजार तक ही है। कोरोना काल में यह संख्या और भी सिकुड़ गई है।

'प्रेरणा' का संपादन करते हुए अरुण तिवारी कभी सामाजिक सरोकारों से विमुख नहीं हुए। एक सजग और जागरूक नागरिक का अपने समाज के प्रति जो सरोकार होना चाहिए, वह उनमें हमेशा दिखलाई दिया। 'प्रेरणा' के तमाम अंक इस बात के सबूत हैं। अपनी संपादकीय में मुद्दों को उठाना, फिर इन मुद्दों को लेकर एक मुहिम छेड़ना और जब तक इनकी तार्किक परिणति नहीं हो जाती, इसके पक्ष में खड़े रहना अरुण तिवारी का अहम शगल है। कई मामलों में वे कामयाब भी रहे। मिसाल के तौर पर शहीद चंद्रशेखर आजाद की जन्मस्थली मध्य प्रदेश का भाभरा है, इस पर उन्होंने पत्रिका में तथ्यात्मक शोधपरक लेख प्रकाशित किया। कुछ लोगों से बातचीत की। जिसका नतीजा यह निकला कि सरकार ने भी इस बात को माना। ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालय की स्थापना, नोटा और जीएसटी की अवधारणा इनके अमल में आने से बहुत पहले वे अपने सम्पादकीय में व्यक्त कर चुके थे। इस मामले में उनकी दूरदर्शिता का कोई सानी नहीं। आज भी वे अपने सम्पादकीय में जनता के व्यापक हित से जुड़े मुद्दों को बराबर उठाते रहते हैं। कई बार वे सरकार से अपनी बात को मनवाने में कामयाब रहे, तो कई मर्तबा उनके हिस्से नाकामयाबी रहीं। लेकिन उन्होंने अपना हौसला नहीं खोया। इस मामले में उन्हें एक जुझारू संपादक कहा जा सकता है। जुझारू इस मायने में भी कि सीमित संसाधनों के बावजूद पिछले तेईस सालों से वे लगातार 'प्रेरणा' का प्रकाशन कर रहे हैं।

अरुण तिवारी की जीवनसंगिनी का निधन कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी से जूझते हुए हुआ। उनका इलाज करवाते हुए वे जिस मानसिक अवस्था से गुजरे, इस अवस्था से किसी का साबका न पड़े, इसकी भी वे लगातार कोशिशें कर रहे हैं। कैंसर के प्रति उन्होंने जागरूकता अभियान चला रखा है। 'प्रेरणा' के हर अंक में वे कैंसर रोग के विशेषज्ञ का लेख या इंटरव्यू छापते हैं। ताकि सब लोग इस बीमारी से अच्छी तरह से वाकिफ हों। समय पर इस बीमारी का इलाज करवाएं। अरुण तिवारी अलग-अलग तरीके से समाज और साहित्य की सेवा करते रहे हैं। साहित्यिक पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने अपनी जीवन संगिनी उर्मिला तिवारी की याद में साल 2018 से चार पुरस्कार शुरू किए हैं। 'सप्तपर्णी सम्मान' नाम के ये सम्मान, हर साल मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक आयोजन में दिए जाते हैं। साहित्य की सेवा सिर्फ कहानी, कविता लेखन से ही नहीं हो सकती, इसके और भी कई माध्यम हैं, अरुण तिवारी ने अपने विविध कामों से हमें यह समय-समय पर बतलाया है। वे कोई भी ऐसा मौका कभी अपने हाथ से नहीं जाने देते। साहित्यिक जगत में अरुण तिवारी की उपस्थिति हमें एक आश्वस्ति देती है कि पिछले तेईस सालों से 'प्रेरणा' के जरिए वे जो काम साहित्य के क्षेत्र में कर रहे हैं, आगे भी जारी रहेंगे। बल्कि इनका और विस्तार होगा।

- लेखक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं।
महल कॉलोनी, शिवपुरी म.प्र., मो. : 94254 89944

■

कहानी

अंतहीन.... शुरूआत

अरुण तिवारी

आज जितना अपमानित उसने अपने जीवन में कभी भी महसूस नहीं किया था। अभी तक उसने अपने मन के विपरीत भी काफी कुछ झेला था पर वह उसको किसी न किसी तरह समायोजित करती आई थी, पर आज उसे जो चोट लगी थी, उससे उबर नहीं पा रही थी। रह-रह कर उसे अपना जीवन अर्थहीन लगने लगा था। वह न तो कुछ ढंग से सोच पा रही थी, न ही कुछ दिशा दिखाई दे रही थी। उसे काफी घुटन महसूस हो रही थी। घबड़ाकर उसने घड़ी देखी, रात्रि के दो बज रहे थे। पर उसकी आंखों में नींद न थी। सिर पर हथोड़े जैसे पड़ रहे थे। इतना रो चुकी थी कि आंख दर्द करने लगीं थीं। वह बिस्तर से उठी और बालकनी में आ गई। बाहर जोरों की बारिश हो रही थी। रह-रह कर बिजली गरज के साथ चमक उठती थी, तभी जोर का उजाला हुआ और बिजली भयंकर गर्जन के साथ गिर जैसी पड़ी। वह कांप गई।

ऐसा ही उसने शाम को महसूस किया था। वह ऑफिस से लौट रही थी। उसे गली के मोड़ वाले मैदान पर राजू तीन-चार लड़कों के साथ पैसे फेंकने वाला जुआ खेलते दिखा, वह सिगरेट के कश पर कश भी किसी अनुभवी की तरह खींच रहा था। देखते ही वह ठिठककर खड़ी हो गई, उसके पैर जम जैसे गये। वह कुछ अभी बोले या न बोले, क्या करें, सोच ही रही थी कि राजू के किसी साथी की नजर उस पर पड़ने के कारण वे एक-दूसरे को इशारा कर वहां से खिसक गये। वह घर की ओर चल पड़ी। मस्तिष्क की नसें चटकने लगी थीं। राजू के बारे में उसे इस तरह की शिकायतें काफी दिनों से मिल रहीं थी। उसे लगा, उसकी स्कूल न जाने वाली शिकायत भी सही होगी और यह भी कि स्कूल से गायब होकर या तो फिल्म देखता है या आवारागर्दी करता रहता है। वह राजू पर, अखिलेश पर, फिर स्वयं पर क्रोधित होने लगी।

घर पहुंचते ही वह राजू को खोजने लगी। राजू आंगन में बैठा आराम से गन्ना खा रहा था। वह हतप्रभ रह गई। कहां तो वह सोच रही थी कि वह शर्म के मारे, एक कोने में दुबका होगा, रो रहा होगा, उसके जाते ही पैरों पर गिर पड़ेगा, क्षमायाचना करेगा पर राजू को इतना निश्चिंत देखकर, उसे क्रोध का उबाल सा आ गया। लपकती सी वह राजू के पास पहुंची और दोनों हाथों से तब तक मारती रही, जब तक वह पूरी तरह थक नहीं गई। थक कर वह स्वयं ही रुक गई, पर राजू के मुंह से उफ तक नहीं निकली। वह जोर-जोर से सांस ले रही थी, तभी तेरह वर्षीय राजू की आवाज उसे विष घोलती सी लगी।

वह कह रहा था, ''मम्मी, रुक क्यों गईं और मारिये, आप मार सकती हैं, कुछ भी कर सकती है, पापा भी तो आप से डरते हैं, आपको कोई भी कुछ नहीं कहेगा। आप नौकरी करती हैं, कमाती हैं, व्यस्त रहती हैं। कम से कम आज आपको मेरे लिए समय तो मिल गया।''उसकी आवाज तीखी होती जा रही थी,''

''आज जल्दी फुर्सत मिल गई आपको उस खूसट बूढ़े से।''

''क्या बक्ता है।''वह क्रोध से कांप उठी।

''कुछ गलत कहा मैंने मम्मी, सभी तो कहते हैं, मेरे दोस्त भी कहते हैं।''

''क्या कहते हैं।''उसकी फुफकारती आवाज।

वह चुप रहा।

वह उसे बुरी तरह झकझोरती हुई बोली, ''बोलो क्या कहते हैं।''

''यही कि राजू की मम्मी के मजे हैं, तनख्वाह तो मिलती ही है, उस खूंसट बूढ़े प्रबंध संचालक को पटाने से काफी मिल जाता है, इसलिए तो रात-दिन व्यस्त रहती है, घर का भी होश नहीं है।''

इतना बड़ा लांछन उस बेटे ने बड़ी आसानी से लगा दिया था, जिसके लिए वह तिल-तिल जल रही थी। एक वही आस थी, आकांक्षा थी, जिसमें वह अपने अधूरे सपने पूर्ण करना चाहती थी, पर वह बेटा आज...। उसे लगा, वह क्रोध में राजू का गला दबा देगी, हाथ पैर तोड़ देगी, पर वह कुछ न कर सकी। उसका मस्तिष्क चकराने लगा। हाथ पैर में तेजी से सुनसुनाहट होने लगी। उसे अपने पैरों पर खड़े रहना मुश्किल लगने लगा। माथे पर भी पसीने की बूंदे अब फैलने लगीं थी। उसे होश नहीं, कब वह गिर पड़ी थी। होश

आया तो देखा, वह दरवाजे से लगी गिरी है। बाहर उतरती बारिश के बादलों के कारण घना अंधेरा है। घर वैसा ही खुला पड़ा है। कोई भी नहीं है, न राजू न अखिलेश। उसका सिर अभी भी चकरा रहा था। लस्त इतना पड़ गई थी, जैसे महीनों से बीमार हो। उसका ऑफिस के कपड़े बदलने का, हाथ मुंह धोने का मन भी न हुआ। चुपचाप पलंग पर जाकर लेट गई और फफक-फफक कर रोने लगी। उसे कुछ याद नहीं, कब अखिलेश आए, खाना खाया या नहीं। लगता था फिर बेहोश रही है। कमरे में नाइट लैंप का बीमार प्रकाश फैल रहा था। बाजू में अखिलेश सोये थे। बारह बज चुके थे। सिर लगातार चकराये जा रहा था, वह, अवश, असहाय-सी बार-बार आंखे खोलने का उपक्रम कर रही थी।

* * *

वह बहुत खुश थी। उसकी शादी ऐसे युवक से हो रही थी, जो बड़े नगर में शासकीय सेवा में था। कस्बानुमा शहर में रहते-रहते वह ऊब गई थी और वहां की मानसिकता से मुक्त होना चाहती थी। बड़े नगर में रहने मात्र की कल्पना उसमें उल्लास भर रही थी। शादी के तुरंत बाद ससुराल आते ही उसने पति को अपने साथ ले जाने के लिए कहना शुरू कर दिया था। मकानों की समस्या बताते हुए पति ने अश्वस्त किया था कि सरकारी क्वार्टर मिलते ही ले जायेगा। फिर भी उसने जिद जारी रखी कि वह जहां भी, जैसे रहता होगा, वह भी वहीं काट लेगी। पति के बहुत समझाने पर वह मानी थी कि अभी तो वह एक कमरे में उपकिरायेदार की हैसियत से रह रहा था, अकेला तो किसी तरह चल जाता है, फिर सामान भी कुछ खास नहीं है। गृहस्थी जमाने में परेशानी होगी।

कुछ माह इसी तरह बीत गये। इस बीच न तो क्वार्टर मिला, न वह जा पाई। पर अब उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था। इस बार तो वह निश्चित ही जायेगी, कितनी भी मुसीबत सही, किसी तरह काट लेगी, एक कमरे के उपकिरायेदार की हैसियत उसको कुछ दिन में ही समझ में आ गई थी, पर अखिलेश से वह कुछ नहीं कह पा रही थी, क्योंकि वह स्वयं ही जिद्द कर यहां आई थी। अखिलेश उसका पूरा ध्यान रखते, छुट्टी के दिन घुमाने ले जाते। कभी पैदल, कभी सिटी बस से। बड़े नगर का मोह भंग धीरे-धीरे होने लगा था। एक दिन की अकस्मात घट गई घटना ने तो उसके संस्कारों को हिलाकर रख दिया था।

वे फिल्म देखकर लौट रहे थे। भीड़ होने के कारण वे दो सिटी बस छोड़ चुके थे। देर हो रही थी, अत: अगली बस आते ही किसी तरह वे भीतर घुस गये। बस आगे बढ़ते ही उसको अपने ऊपर कुछ दबाव सा महसूस हुआ, विशेषकर विशेष अवयवों पर। उसने मुड़कर घूर कर देखा, पर पीछे खड़े व्यक्ति पर कोई खास असर नहीं हुआ। वह मुस्कराता हुआ पूर्ववत व्यस्त रहा। उसने एक बार पीछे मुड़कर टोका भी। वह थोड़ा सा खिसककर थोड़ी देर बाद पुन: बेशर्मी पर उतर आया और खुलकर दबाने लगा। अखिलेश थोड़ी दूरी पर खड़े थे। पास होते तो उनसे कहती। जब उससे नहीं रहा गया तो उसने एक थप्पड़ तेजी से मारा और बस रुकवाकर नीचे उतर आई। बस में लोग उस आदमी के बजाय, उस पर फब्तियां कस रहे थे। अखिलेश पूछते-पूछते नीचे उतरे। तब उसने उनको बताया। वे लोगों द्वारा मजाक उड़ाये जाने पर दुखी थे व उस पर क्रोधित भी। उनके विचार से उसे ही थोड़ा यहां-वहां होकर स्थिति सम्हाल लेना थी या उनसे कहना था।

उसको अखिलेश शादी के बाद पहली बार कुछ अपरिचित से लगे थे। इस घटना के बाद उनका घूमना फिरना प्राय: बंद सा हो गया था। एक कारण और भी था इसके पीछे। उसके आने के बाद यहां के खर्चे काफी बढ़ गए थे और अखिलेश हमेशा की तरह घर पैसे नहीं भेज पा रहे थे। हालांकि दोनों ही इस बारे में सोचते थे, कुछ न कुछ भेजने का प्रयत्न करते। घर से पहले सामान्य ढंग से पत्र आते रहे थे। घर की आवश्यकताओं को बताकर उसकी जिम्मेदारी बताई जाती रही थी। पर पिछले तीन चार पत्र व्यंग्य से, कुछ गुस्से से आये थे, पैसा न भेजने का कारण अप्रत्यक्ष रूप से आशी को ठहराया जाने लगा। अखिलेश कुछ चिढ़े-चिढ़े से, चिंतित रहने लगे थे। वह उनको प्रसन्न रखने का यत्न रखती, पर पहले जैसी बात नहीं आ पा रही थी।

एक दिन उसे लगा, अखिलेश उससे कुछ कहना चाहते हैं। उसके प्रोत्साहित करने पर उन्होंने कहा, आशी, तुम सर्विस कर लो, तभी शायद हमारी मुश्किलें हल हो सकें।

'लेकिन मैं... मैं। मुझे सर्विस मिलेगी कहां।'

उन्होंने बीच में ही टोकते हुए कहा था, ''सर्विस का कहीं न कहीं जम ही जायगा। एक दो परिचितों से कह रखा है, आखिर बी.ए. होने का कुछ तो फायदा उठाओ।''

वह चुप ही रही थी। वह समझ गई थी, अखिलेश ने पहले ही निर्णय ले लिया है। यह उसके लिए सूचना मात्र थी।

कुछ दिन बाद अखिलेश में पहले जैसी स्फूर्ति दिखी थी, कारण वह बूझ पाती, इसके पहले ही उन्होंने उसे कसकर आलिंगनबद्ध कर लिया था और मुंह बंद करते हुए कहा था, ''तुम्हें नौकरी मिल गई है। अभी रोजनदारी पर रखेंगे। अर्द्ध-शासकीय निगम है, जल्दी ही तदर्थ कर नियमित कर देंगे।''

बहुत दिन बाद, उस दिन फिल्म गये थे। दूसरे दिन सुबह से ही अखिलेश अत्याधिक व्यस्त थे। उसको हिदायतों पर हिदायतें दे रहे थे, कैसे क्या करना है, आफिस में कैसा व्यवहार करना है। वह बहुत ही घबरा रही थी। रह-रह कर बस वाली वह घटना भी इसकी घबराहट को बढ़ावा दे रही थी। कहां तो वह अपने जाने से बचती रही थी, पर अब रोज ही दो बार सफर करना पड़ेगा। चिंता मुख पर झलक रही थी, अखिलेश थे कि उसको समझाए जा रहे थे, जैसे एक ही दिन में पूरी तरह पारंगत कर देंगे।

ऑफिस के वातावरण में वह धीरे-धीरे अपने को ढाल रही थी। अपना कार्य ठीक से करने का प्रयत्न करती। बाथरूम जाने के बहाने यहां-वहां नहीं टहलती। ऑफिस के सहकर्मी पुरुष, महिलाएं उसको लेकर कभी-कभी फुसफुसाते अवश्य थे, पर क्या, वह जान न पाई। पर उसकी नियुक्ति उन विषयों में एक विषय था, यह तय था।

एक दिन अचानक संचालक का बुलावा आने पर वह चौंक गई। लगा, कोई गलती कर बैठी है, अब नौकरी समाप्त, अखिलेश क्या कहेंगे। कई तरह की आशंकाएं, कुशंकाएं उसे कचोटने लगीं। जरूर चेतावनी जैसी कोई बात होगी, अन्यथा एक दैनिक वेतन भोगी लिपिक को सीधे क्यों बुलाया जाता। माथे का पसीना पोंछती वह संचालक के कमरे तक पहुंच गई। उसकी हालत देखकर चपरासी ने उसको पानी का गिलास देते हुए मुस्कराकर कहा, ''मैडम, घबराइये नहीं, हमारे संचालक महोदय बड़े ही नर्म प्रकृति के हैं, उनको बस खुश होना चाहिए।'' चपरासी की बात उसकी समझ में नहीं आ सकी।

उसके कमरे में प्रविष्ट होकर वह ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। कमरे की साज-सज्जा का प्रभाव भी मनोवैज्ञानिक रूप से उसके ऊपर असर कर रहा था। संचालक ने उसको उसके लिखे हुए पत्र, नोटशीट दिखाकर पूछा था कि उसने लिखे हैं। वे वही पत्र थे, जो उसने काफी लगन और सोच सोचकर तैयार किये थे। कुछ अधिक गल्तियां हो गई हैं। यह सोच उसके पैरों में कंपन हो रहा था। पर संचालक ने उसकी लिखावट की प्रशंसा करते हुए कहा था कि वह यदि टाइपिंग परीक्षा उत्तीर्ण कर ले तो वह तदर्थ नियुक्ति दे देगा। नियमित भी कर सकते हैं। जाते-जाते संचालक ने उसको अच्छी तरह ड्रेसअप होकर आने को भी कहा था।

जाने का संकेत पाकर 'जी' कहती हुई वह बाहर आ गई।

अपनी सीट पर लौटते हुए उसने महसूस किया, कई जोड़ी आंखें उस पर टिकी हैं। उसके पास बैठने वाली लड़कियों, महिलाओं में उत्सुकता अधिक थी। वह चुपचाप आकर काम करने लगी। उन लोगों ने आपस में एक दूसरे की तरफ देखकर मुंह बिचका दिये।

घर आकर उसने यह समाचार अखिलेश को सुनाया तो वह प्रसन्नता से भर उठे। परंतु यह भी बताया कि उसे संचालक का घूरना कतई अच्छा नहीं लगा था।

अखिलेश ने बताया, ''सख्त आदमी है न, इसलिए अपने अधीनस्थों को ऐसे घूरता है, तुम्हें अतिरिक्त नहीं सोचना चाहिए।''

उसके मन की दुविधा गई नहीं थी। अखिलेश ने उसे टाइपिंग केंद्र में दाखिला दिला दिया था, नियमित रूप से वह दो घंटे सीखने लगी थी। अखिलेश ने किसी तरह प्रयत्न कर उसे दो माह बाद परीक्षा दिला दी थी, वह उत्तीर्ण हो गई थी।

वह दिन उसके लिए नहीं तो अखिलेश के लिए विशेष था। इस अवसर के लिए अखिलेश ने विशेष रूप से अच्छी साड़ी खरीदी थी, शहर के फैशनेबल टेलर से नये फैशन का लो कट ब्लाऊज सिलवाया था। केश विन्यास पर भी मेहतन की थी। हल्का सा स्प्रे किया था। उसे यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। वैसे संचालक के पास से उस दिन आने के बाद ही अखिलेश के कहने पर वह थोड़ा-थोड़ा बदलने का प्रयत्न करती रही थी, रहन-सहन का तरीका, कपड़ों का चयन आदि बदला था। उसे कभी-कभी सुनकर आफिस में कह दिया जाता था, ''अरे भाई, संचालक तो जादूगर है, एक बार में ही लोगों को बदल देता है।'' कोई दुष्टता से कहता ''बार-बार में'' और खिलखिलाहट उसको चीर जाती।

आज का यह बनाव सिंगार देखकर तो वे लोग धज्जियां ही उड़ा देंगे। वह अखिलेश को समझा रही थी। उन पर कोई असर नहीं हो रहा था। कह रहे थे, ''लोग किसी की तरक्की देख ही नहीं सकते, जलते हैं।'' उसने पूरी तरह अपने आपको अखिलेश के हाथों सौंप दिया था। अखिलेश की योजनानुसार आज उसको अपना आवेदन पत्र सभी प्रमाणपत्रों-टाइपिंग आदि के साथ लेकर संचालक के पास जाना था। अखिलेश का विचार था, जब उसने स्वयं ही टाइपिंग परीक्षा उत्तीर्ण करने को कहा है, तो निश्चित ही आज वह तदर्थ नियुक्ति दे देगा, क्योंकि यह उसके अधिकार क्षेत्र की बात थी।

वह संचालक के सामने खड़ी थी। वह ऊपर से नीचे तक उसका निरीक्षण कर रहा था। आवेदन पत्र उसके पास था।

''गुड'' उसके मुंह से अचानक निकला। चेहरे पर कई तरह से भाव आते जाते रहे। आंखें फैलती सिकुड़ती रहीं, मुस्कान गहरी

होती रही।

''तुम ठीक समय पर पहुंची, संचालक मंडल की बैठक होने वाली है, कुछ नियमित नियुक्तियां भी होना है, तुम्हारे आवेदन पत्र पर भी विभागीय कर्मचारियों के साथ उसी रूप में विचार हो सकता है।... आई होप, यू विल बी क्लीयर्ड।'' संचालक उत्साहित था।

''थैंक्यू, थैंक्यू सर... सो..सो.. काइंड आफ यू।''

अखिलेश द्वारा रटाये वाक्य उसने दुहरा दिये थे। हालांकि वह इतनी अच्छी तरह नहीं बोल पाई थी, जिस तरह अखिलेश ने रिहर्सल करवाई थी।

वह चलने का उपक्रम करने लगी।

संचालक की आवाज उसके कानों में तीर सी चुभ गई, ''मिसेज पंड्या, आज शाम फ्री हो तो कंपनी देना।''

''जी...।'' वह कुछ समझ न पाई, क्या बोले, यदि ना कहती है तो इतनी अच्छी नौकरी हाथ से जाने का डर है और हां कहना उसके संस्कार उसे स्वीकृति नहीं दे रहे थे। ऊहापोह की ऐसी स्थिति आ सकेगी, उसने सोचा ही न था, नहीं तो अखिलेश से चर्चा करती। अखिलेश पर उसे क्रोध आ रहा था, कहां फंसा दिया। पहले ही दिन उसे संचालक की नीयत ठीक नहीं लगी थी। तब अखिलेश ने सख्त आदमी कहकर उड़ा दिया था, अब देखो आकर कैसा सख्त है।

''आप कुछ बोली नहीं।'' संचालक का लहजा नर्म था।

''जी, मुझे आज कुछ आवश्यक कार्य है, जल्दी जाना है और फिर मेरे पति भी यह पसंद न करें।'' वह जाने कैसे इतना बोल गई थी।

''देख लीजिये, यदि आपके पति समझदार हैं, तो उन्हें आपत्ति नहीं होगी। आप जा सकती हैं।''

वह कुछ देर खड़ी रही थी फिर धीरे-धीरे चलती हुई दरवाजे तक आई थी। इस बीच उसका चेहरा विभिन्न कोणों से बदल रहा था। चाल भी सहज नहीं थी। दरवाजे के पास ठिठक कर संचालक पर नजर गई तो देखा कुछ देर पहले उसकी आंखों की चमक जो गायब हो गई थी, फिर आ गई है।

''नेवर माइंड, मिसेज पंड्या, बी, इजी।'' संचालक की आवाज उसे चिड़िया के पैरों को, धागे से फंसाकर, उड़ने को पंख फड़फड़ाने पर पुचकारने जैसा लगा।

घर लौटने पर अखिलेश पर एकदम फट पड़ी थी। अखिलेश भी स्तब्ध थे, ऐसी नौबत की उन्होंने कल्पना न की थी। वे तो उसके नियमित हो जाने की कल्पना कर रहे थे और अब तो यह डेलीवेजेज की नौकरी भी जा रही थी। वे सिर पर पकड़कर बैठ गये और खाली-खाली आंखों से आशी को देखने लगे। आशी को अलिखेश पर दया आने लगी। इसमें बेचारे उसका क्या दोष, उन्हें क्या मालूम था, संचालक ऐसा आदमी होगा। वे तो महानगरीय संस्कृति में दूसरी औरतों को सर्विस करते देख, उसे भी प्रोत्साहित कर रहे थे।

उसने चुपचाप अखिलेश के कंधे पर हाथ रख दिया। अखिलेश उसकी तरफ देख रहे थे, सिर्फ देख रहे थे। कहीं कुछ नहीं। सिर्फ चुप्पी। यह रात उनकी बिल्कुल चुप गुजरी थी। दूसरे दिन की सुबह भी चुप थी। यंत्रवत दैनिक कार्य होने लगे थे। स्थिति यथावत थी। समय धीरे-धीरे बिल्कुल मुंह खोले पास आता जा रहा था। कुछ न कुछ निर्णय तो लेना ही था। आशी ने सब कुछ अखिलेश की इच्छा पर छोड़ दिया था। अखिलेश तो लगता है, रातभर सोये नहीं थे। आंखें भारी-भारी हो रही थीं। वे दोनों चाय पी रहे थे।

चाय पीते-पीते अखिलेश बोले ''ऐसा करना आशी, आफिस तो जाओ। जहां तक हो सके, अपने हाथ के लिखे कागज, ड्रॉफ्ट आदि संचालक तक न पहुंच सके, प्रयत्न करना। संचालक एक तो आज बुलाएगा नहीं, यदि बुलाए और फिर कहे तो तबियत खराब होने का बहाना बनाकर दो चार दिन के लिए टाल देना। तब तक कोई विकल्प तो निकलेगा ही।''

चाय के प्यालों की भाप उन दोनों के चेहरों के बीच फैल गई थी।

आशी कुछ न बोली थी। चुपचाप नहाने चल दी थी। नहाते वक्त बहुत दिनों बाद उसने भगवान को स्मरण किया था। जितने भी मंदिर याद थे, सब पर उसने प्रसाद बोल दिया था। जाने कितने व्रत बोल दिये थे। नहाकर भगवान की तस्वीर के सामने अगरबत्ती जलाई थी और इस स्थिति से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना करती रही थी।

आफिस में उसका मन नहीं लग रहा था। कभी भी थोड़ी सी आहट होती, ऐसा लगता, संचालक का बुलावा आ गया है। तभी वह चौंक सी गई और प्रसन्नता उसके पूरे शरीर को उल्लासित कर गई। जब पता चला, संचालक आज आया ही नहीं। संचालक मंडल की बैठक की तैयारी हेतु गया है, सात दिन बाहर रहेगा। उसको भगवान पर बहुत-बहुत विश्वास होने लगा था। जाते ही सब जगह प्रसाद चढ़ाएगी। अखिलेश सुनकर खुश होंगे। पर उनकी तरफ से थोड़ी चुभन उसे थी कि उन्होंने तो उसे ज़िबह होते बकरे के समान प्रस्तुत कर ही दिया था। क्या उसकी तबियत खराब होने के बहाने से संचालक मान जाता। यदि मान जाता तो उसकी स्वयं की चालाकी होती, अखिलेश खुश हो जाते। यदि नहीं मानता तो यही बात अखिलेश के बारे में झकझोर रही थी।

बहरहाल अभी तो वह प्रसन्न थी। आई मुसीबत बिना कोई प्रयत्न के अपने आप टल गई थी। अखिलेश बजाय खुश होने के

सोच में पड़ गये थे। खोदने पर बोले थे, ''संचालक बैठक में तुम्हारा नाम प्रस्तावित करता है या नहीं।''

''करे या न करे, सात दिन तो आराम से कट जाएंगे।''

वह अपने प्रसन्नता के आवेग में बोल गई और अखिलेश के कंधे पर सिर रख दिया। सिर रखते ही पता नहीं क्या हुआ, वह फफक-फफक कर रो पड़ी। अखिलेश अवाक रह गये। उसके सिर पर हाथ फेरकर चुप करने लगे।

आठ-दस दिन के बाद उसको प्रसन्नता के दो समाचार एक साथ ही मिले। उसकी नियमित नियुक्ति के आदेश हो गये थे। संचालक का स्थानांतरण हो गया था।

उसने उपस्थिति सूचना के बाद अखिलेश के कहने पर अवकाश ले लिया था। इसी बीच संचालक कार्य मुक्त होकर स्थानांतरित जगह चला गया था। उसकी नियुक्ति प्रबंध संचालक के निजी प्रकोष्ठ में हुई थी। नई नियुक्ति में ऐसा होना संभव नहीं था, परंतु पूर्व संचालक की संस्तुति अत्याधिक वजनदार होने के कारण ऐसा हुआ था। उसकी व्यस्तताएं बहुत बढ़ गई थीं। वह काफी परिश्रम और लगन से कार्य कर रही थी। वह अपना प्रभाव प्रबंध संचालक के ऊपर अच्छा छोड़ना चाहती थी, क्योंकि कार्य अच्छा होने पर निजी प्रकोष्ठ के कर्मचारियों को पदोन्नति के अवसर जल्दी मिल जाते थे। यहां के सभी सहकर्मी अच्छे थे। परस्पर सहयोग की भावना रखते हुए एक-दूसरे की प्रगति से ईर्ष्या नहीं करते थे। आपस में छींटाकशी भी नहीं करते थे। कार्यालय समय के बाद कार्य करते रहते थे। वह तो चली आती थी। वरिष्ठ लोग कार्य निपटाते रहते। अखिलेश भी आजकल काफी प्रसन्न रहते थे। जीवन बंधे-बंधाये ढंग से अच्छी तरह चल रहा था। इस बीच राजू भी आ गया था। उनके जीवन में प्रसन्नताएं ही प्रसन्नताएं थीं। राजू का प्रबंध नर्सरी में करना पड़ा था, जहां कार्यकारी महिलाओं के बच्चों को कार्यालय समय में रखा जाता है। सरकारी क्वार्टर भी मिल गया था। घरेलू सामान भी काफी जुड़ गया था। घर भी पैसे नियमित जा रहे थे।

पर उसकी एक और प्रसन्नता तथा मनमुटाव की शुरूआत भी एक साथ हुई थी। उनकी पदोन्नति वरिष्ठ ग्रेड में हो गई थी। उसको जो सीट मिली थी, उस पर कार्य बहुत था। वह कार्यालय समय में ही भरसक निपटाने का प्रयत्न करती। शाम तक सिर में खिंचाव सा महसूस हो जाता था।

एक दिन प्रबंध संचालक ने बुलाकर उसे समझाया था कि वह उसके कार्य से, कार्य करने के ढंग से संतुष्ट है, परंतु उसे थोड़ी देर और बैठकर पूरा कार्य निपटाना चाहिए। आवश्यक होने पर शाम को उसको अगले दिन के लिए निर्देश भी मिल सकते हैं। अखिलेश को उसने बताया था। वह अपनी तरफ से तो सहमत थी, पर अखिलेश को बताना भी आवश्यक था। वे कोई विरोध नहीं करेंगे। वह जानती थी। संचालक के साथ हुई घटना इसका उदाहरण थी। परंतु उसे चौंक जाना पड़ा था।

अखिलेश को जब उसने बताया था, बोले, ''सतर्क रहना, कहीं बुजुर्ग महाशय का और कोई इरादा तो नहीं है।'' और हो... हो...करके हंस पड़े थे।

उसे काफी बुरा लगा था, जबकि बात बहुत ही सहज ढंग से मजाक में कही गई थी। 'परंतु उससे रहा नहीं गया, बोल उठी, ''छि...छि..., तुम भी कहां से कहां सोच जाते हो, हर आदमी एक सा नहीं होता। वे तो बहुत ही भले हैं, कभी-कभी लाड़ से बेटी कहकर भी पुकारते हैं।''

बात आई गई हो गई थी। प्राय: रोज रुक जाना पड़ता था। इस लिए व्यस्तता बढ़ती जा रही थी। चाहती तो वह न थी, पर उत्तरदायित्व व बोध उसे रुकने पर विवश कर देता था।

सहयोगी कहते भी थे, मिसेज पंड्या, रोज-रोज इतनी देर तक रुकना तो मुश्किल है, ''आखिर हमारा भी परिवार है, जिम्मदारियां हैं।''

वह भी यही सोचती थी। राजू का चेहरा बार-बार उसकी नजरों के सामने झूलने लगता। उसे लगता, वह राजू के साथ न्याय नहीं कर पा रही है। उसे जितना समय देना चाहिए, नहीं दे पाती।

एक दिन तो बहुत देर हो गई। पूरे समय कोसती रही थी अपने को, सोच रही थी, जाते ही अखिलेश से क्षमा-याचना करेगी, कोई हल पूछेगी इसका, जिससे रोज-रोज रुकना बंद हो जाये। घर आकर देखा, अखिलेश मुंह फुलाए बैठे हैं, स्वाभाविक भी था, परंतु परिस्थिति इस तरह हो जायेगी, उसने न सोचा था। उसने अपनी तरफ से अखिलेश को मनाने का हर संभव प्रयास किया था। वे ढंग से बोल ही नहीं रहे थे। उसकी भी सहन शक्ति बोल गई। दिनभर ऑफिस में थक जाने के बाद दोषी न होने पर भी देरी से लिए अपनी गलती महसूसना, क्षमा मांगना, उस पर भी इस तरह की प्रताड़ना, वह सह न पाई। असहायता की सीमा पार होती ही आंसू विकल्प बन जाते हैं। रोकर कुछ हल्की हुई तो खाने पर फिर उसने अखिलेश को छुआ।

अखिलेश फट जैसे पड़े, उसे ऐसे बज्रपात की आशा न थी, ''क्या कहें, अब तो तुम्हारा भी मन लगने लगा है। एक-दो दिन की बात हो, ठीक है, पर समय कम होने के बजाय बढ़ता ही जाय, तो

नहीं लगता, क्या तुम भी चाहती हो।''

''मेरी भी तो सुनो।'' उसने सफाई देना चाही थी। फंसे-फंसे से शब्द उसके गले से निकले थे।

''क्या सुनें। आखिर प्रबंध संचालक जैसे अधिकारी का सामीप्य...।''

''अखिलेश...।'' आशी को अपनी चिल्लाहट पर आश्चर्य हुआ। अखिलेश का वाक्य अधूरा रह गया था।

फिर उससे खाना नहीं खाया गया था। अखिलेश भी बीच में ही छोड़कर उठ गये थे। एक ही बिस्तर पर दोनों विपरीत दिशा में मुंह किये रहे। कौन कितनी देर जागता रहा, नहीं कहा जा सकता। आशी सोच रही थी, कितना बड़ा अभियोग अखिलेश ने लगा दिया है, जरा तो सोचा होता। वह तो नौकरी करने के पक्ष में ही नहीं थी। उसी के विवश करने पर तो राजी हुई थी। कितनी-कितनी मानसिक यंत्रणाएं नहीं झेली उसने, ठीक-ठाक चलता रहे इसलिए राजू को भी लेकर कितनी उलझन हुई। अखिलेश नहीं चाहते थे अभी बच्चा हो, पर मातृत्व के बिना उसे अपना होना अपूर्ण सा लगता। वह नहीं मानी थी। काफी तकरार हुई थी। अखिलेश के तर्क भी अपनी जगह सही थे। पर वह अपनी ममता का गला इस तरह नहीं घोटना चाहती, उस पर से पहला। उसने अखिलेश को आश्वस्त किया था, वह उसको कोई परेशानी नहीं आने देगी और उसके बाद उनके कहने पर ही दूसरे की तैयारी करेगी। राजू के आने से जहां वह उल्लासित थी, वहीं रह-रह कर उसे उसका ठीक से पालन-पोषण न कर पाना भी कोंच जाता था। विवशता में नर्सरी में डालना पड़ा था। राजू के प्रति वह अपराध बोध से ग्रसित रहती। बढ़ते हुए दायित्वों को लेकर नौकरी भी अनिवार्य हो गई थी। अकेले अखिलेश के ऊपर ही नहीं थोपा जा सकता था। सोचती वह, राजू को प्रशासनिक सेवा में भेजेगी या कुशल इंजीनियर, डॉक्टर बनायेगी। पर अब यह आरोप सुनकर क्या नौकरी की जा सकती है, उसे असंभव लगने लगा, उनके परस्पर विश्वास की नोंक पर तो हरगिज नहीं। सब सह लेगी, पर चरित्र पर कोई लांछन नहीं सह पायेगी। इसी उधेड़बुन में कब नींद लग गई, याद नहीं, पर जब तक जागती रही, यह बोध अवश्य होता रहा कि अलिखेश भी सोये नहीं है।

अगली सुबह मरियल पीली उदास धूप लेकर आई थी, जैसी आशी के गम में साझीदार हो गई हो। मौन यथावत् था। साढ़े नौ बजे तक जब उसके तैयार होने के आसार नजर नहीं आये, तो अखिलेश ने ही टोका,

''आफिस नहीं जाना, क्या ?''

''अब भी गुंजाइश है, क्या।''

''क्या मतलब।''

''मतलब स्पष्ट है।''

''क्या यही, तुम कुछ भी करती रहो और कुछ कहा भी न जाए।''

''इसीलिए तो कहने सुनने की बात समाप्त कर रही हूं।''

''कैसे''

''ऐसे।'' उसने टेबिल पर से उठाकर अपना त्यागपत्र अखिलेश को पकड़ा दिया।

''आफिस देते जाना।''

''ये क्या पागलपन है ?''

''इसके अलावा कोई और रास्ता भी तो नहीं।'' आशी की आंखें भर आई थीं। ''जब आपस का परस्पर विश्वास इस तरह समाप्त होने लगे तो बजाए कारण ढूढ़ने, मिटाने के, उसे जड़ से ही उखाड़ देना चाहिए।'' ''आशी, तुम सोचो तो सही, जब तुम रोज-रोज देर से आओगी, आफिस में अकेली प्रबंध-संचालक के साथ रहोगी तो लोग कुछ कहेंगे नहीं। रोज-रोज की फुसफुसाहटें सुनते-सुनते तंग आ गया था और फिर कल तो बहुत ही देर हो गई थी, बस पूरी तरह मस्तिष्क में लोगों की कही हुई बातें घूमती रहीं। लोगों के दिये शब्दों में, 'नपुंसकता' शब्द हथौड़े बरसाता रहा। आखिर आदमी हूं, कैसे कहूं, कब तक सहूं।''अखिलेश की आवाज भर्रा गई थी।

नया रहस्योद्घाटन सुनकर आशी जड़वत् हो गई थी। अखिलेश पर अब उसे क्रोध के स्थान पर दया आने लगी थी। उसे पहले तो बताना था सब बातें। कब दोनों एक दूसरे के गले लगे, नहीं मालूम, पर वह हिचक-हिचक कर रोती रही। अखिलेश दुलराते रहे।

''आज छुट्टी ले लो, तबियत ठीक नहीं है तुम्हारी। प्रयत्न करेंगे, तुम्हारा स्थानांतर वहां से हो जाय।'' अखिलेश ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

प्रयुत्तर में उसने उसे भी छुट्टी लेने पर विवश कर दिया। दोनों उस दिन एक दूसरे को बहुत-बहुत आत्मीय लगते रहे। लगा, शादी के बाद के दिन लौट आए हैं। राजू भी खुश था, सिस्टर के औपचारिक प्यार के स्थान पर मम्मी-पापा का स्वाभाविक दुलार मिल रहा था।

क्रम फिर शुरू हो गया था, पर अब वह उतनी देर नहीं लगाती थी। कभी कभार देर हो जाए सो बात अलग। कार्यालय समय में ही वह पूरा कार्य निपटाने का प्रयत्न करती। एक मिनिट के लिए भी

बाहर नहीं जाती, लंच टाइम में भी नहीं। उसकी मेहनत रंग लाई और चंद वर्षों में एक और पदोन्नति। वैसे पदोन्नति के नाम से उसे अब डर लगने लगा था, पिछली पदोन्नति की कड़वाहट जब-तब उभर आती थी। अखिलेश से उसने व्यस्तताएं बढ़ जाने तथा समय असमय हो जाने के भय से पदोन्नति छोड़ने के बारे में चर्चा की थी, फिर इस पद पर तो बाहर यात्रा भी जाना पड़ सकता है, कभी अकेले, कभी प्रबंध संचालक के साथ। अखिलेश ने पदोन्नति नहीं छोड़ने की सलाह दी थी, शुरू में तकलीफ होगी, परंतु छोटे कार्यालय में स्थानांतरित हो जाने से यह सब नहीं होगा। आशी ने इस तरह का जॉब होने के कारण लोगों की चर्चा के बारे में भय व्यक्त किया था, परंतु अखिलेश पदोन्नति छोड़ने के पक्ष में नहीं थे।

नया पद मानसिक-रूप से उसे बहुत महंगा पड़ा था। कभी-कभी तो सोचती, पदोन्नति नहीं लेती तो अच्छा रहता। अधीनस्थों के कारण उस दिन वह अत्याधिक तनावग्रस्त थी, सिर तड़क रहा था। इसी मानसिक अवस्था में घर पहुंचते ही राजू उसके गले में बांह लपेटकर लटक गया। उसने बिल्कुल भी प्यार नहीं किया, चुपचाप बिस्तर पर लेट गई, बिना कपड़े बदले सिर पर हाथ रखकर। राजू अपनी धुन में था। अपने स्कूल की दिनभर की रिपोर्ट हमेशा की तरह दे रहा था। वह हल्के से हां...हूं... करती जा रही थी। जब राजू को यह लगा, उसकी बात ढंग से नहीं सुनी जा रही है तो आशी का हाथ सिर पर से हटाकर मुंह अपनी तरफ खींचने लगा। आशी ने एक चपत उसके गालों पर लगा दी और चिल्लाकर डांट दिया, ''क्या फाल्तू चाट रहा है। कितना सिर दुख रहा है।'' और करवट बदल कर लेट गई।

राजू की फुसकने की आवाज आती रही थी। थोड़ी देर में उसने राजू की आवाज सुनी थी, ''उठिए मम्मी, बाम लगा दूं, अब कभी आपको तंग नहीं करूँगा। आप आफिस में बहुत थक जाती हैं ना।'' उसे ऐसी बड़प्पन की बात सुनकर राजू पर बड़ा प्यार आया था। उसने उसे सीने से चिपका लिया था। उसके बाद तो राजू ने उसे कभी तंग नहीं किया था। कभी-कभी वह आती तो घर पर भी न मिलता। सोचती, यहीं कहीं होगा और बेडरूम में बंद हो जाती। कुछ देर लेटकर ही घर के कार्यों में लग पाती, तब तक अखिलेश भी बाजार से सामान आदि लेकर लौटते।

उसकी दिन-ब-दिन की गिरती हालत देखकर अखिलेश के अत्याधिक आग्रह पर वह डॉक्टर को दिखलाने को तैयार हुई। वह जानती थी, उसका उपचार डॉक्टर के पास नहीं है, फिर भी अखिलेश के बार-बार चिंतित चेहरे को देखकर और उसमें छिपा अपने प्रति प्रेम देखकर वह तैयार हो गई थी। डॉक्टर ने भी बताया था कि बीमारी कुछ भी नहीं है, परंतु यही स्थिति रही तो नर्वस ब्रेक डाउन की हालत आ सकती है। अत: मानसिक चिंता बिल्कुल नहीं और शारीरिक श्रम इससे कम। अखिलेश बार-बार उससे मानसिक चिंता के बारे में पूछते पर वह कैसे बताती, वह धीरे-धीरे कैसे घुल रही है। राजू की शिकायतें धीरे-धीरे आने लगी है। उसकी बिगड़ती स्थिति के प्रति वह कुछ नहीं कर पा रही है। क्या यही उसका मातृत्व भरा सपना था, उसे खूब बड़ा आफिसर देखने का। अखिलेश से इस बारे में क्या कहती। उसका चेहरा भी अब पहले जैसा रौनक भरा नहीं रहता। न कहीं कोई विशेष उल्लास न ही कोई डांट-फटकार, बस एक निर्विकार चेहरा। उसके देर हो जाने पर भी नहीं डांटते। बस देखते रहते हैं, पथराया चेहरा लिए। वह प्रयत्न करती कि डांटकर हल्का हो ले, पर सब असफल। और तो और एक बार तो वह बिल्कुल टूट सी गई थी, तब अखिलेश ने हल्के से दूसरे के लिए इशारा किया था। वह टाल गई थी, अपनी नजरों में वह स्वयं ही गिर गई थी कि वह राजू के समय कितना व्याकुल थी और अखिलेश को दोष देती थी और अब स्वयं ही मना कर रही है। पर अब वह नहीं सम्हाल पायेगी, यह जानती थी। इस घटना के बाद तो वे बिल्कुल तटस्थ हो गये थे।

तभी यह घटना घट गई थी।

अखिलेश के खर्राटे गूंज रहे थे। उसने सोचा कि अखिलेश ने आज उसके इस तरह पड़े रहने को हमेशा ही तरह नर्वस ब्रेक डाउन का ही अटैक समझा होगा और धीरे से आराम से लिटा दिया होगा कि नींद से सुबह तक ठीक हो जायेगी, पर यह ठीक होने वाला ब्रेक डाउन न था। अखिलेश को क्या मालूम, उसके ऊपर क्या गुजर रही थी।

सुबह के चार बजने वाले थे। बाहर पानी जारों से गिरने लगा था। टैरिस से आती फुहार उसे पूरी तरह गीला कर गई थी, फिर भी हटने को मन नहीं हो रहा था। बाहर की ठंडक उसके भीतर प्रविष्ट नहीं हो पा रही थी। वह आंगन में निकल आई और खुलकर भींगने लगी। सिर पर गिरता पानी, बिजली की चमक कुछ भी उसके मस्तिष्क में उठे विचारों को रोक नहीं पा रहे थे और वह थी कि भींगती जा रही थी खड़े-खड़े पर तभी उसे लगा, वह चल रही है बाहर सड़क पर चली जा रही है कहां, पता नहीं उसे, बस चला रही है, अंतहीन...शुरूआत की तरह।

- संपादक- प्रेरणा
ए-74, पैलेस आरचर्ड फेज-3, सर्वधर्म के पीछे,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) 462042, मो.9617489616

■

वह बरसों बाद हुई आत्मीय आवाज के चेहरे से मुलाकात

संदीप राशिनकर

यूं तो जीवन एक मिलने का सतत सिलसिला है। जन्म से मृत्यु तक चलने वाले इस अटूट सिलसिले में जन्म के साथ अपनी माँ से पहली मुलाकात से लेकर मृत्यु से अपनी आखिरी मुलाकात के बीच जन्मभर हम अपने आत्मीय, परिचितों व अपरिचितों से निरंतर मिलते है, उन्हें निहारते हैं, उनसे बतियाते है! मुलाकातों की इस लंबी यात्रा में कुछ ही चेहरे याद रहते हैं, कुछ धुंधलाते है तो कई विस्मृति की गर्द में खो जाते है। कईयों से हम व्यक्तिगत मिलते हैं और कई से हम पत्रों, दूरभाष के माध्यम से परिचित होते है।

जीवन में मुलाकातों की इसी लंबी कड़ी में संभवत: दो दशक पूर्व श्रद्धेय चंद्रसेन विराट जी द्वारा दिए श्री अरुण तिवारी जी के संपर्क के माध्यम से हुई, उनसे यह मुलाकात इतनी आत्मीयता व घनिष्टता में बदल जाएगी यह मालूम न था। प्रेरणा पत्रिका के माध्यम से अनवरत साहित्य साधना में रत तिवारी जी से दूरभाष पर हुई यह मुलाकात आगे वर्षों तक दूरभाष पर ही परवान चढ़ती रही और घनिष्ठतम होती गयी। उनके जैसे वरिष्ठ रचनाकर्मी, चिंतक और आत्मीय व्यक्तित्व से चर्चा में मिलते रचनात्मक सुझाव, मार्गदर्शन, स्नेह के चलते मेरी कलात्मकता और प्रेरणा की रचनात्मकता कब एक दूसरे का सहचर बनते हुए एक दूसरे का पर्याय बन गयी पता ही नहीं चला।

बरसों बरस हम बस दूरभाष पर ही मिलते रहे, प्रेरणा, कला, लेखन के समकालीन परिदृश्य पर, रचनात्मक विषयों पर, पत्रिका के आवरण कलाकृतियों पर, पत्रिका के सकारात्मक प्रयासों की योजनाओं पर और न जाने किन-किन बातों पर घन्टों बतियाते रहे। हर बार मुझे उत्सुकता बनी रहती थी कि जिस आत्मीय आवाज से मैं इतने लंबे समय से चर्चारत रहा हूँ उस आवाज का चेहरा कैसा है या उसका व्यक्तित्व कैसा है! हालांकि इंदौर और भोपाल इतना दूर भी नहीं कि मिलने में बरसों लग जाये, पर नियति देखिए कि साहित्यिक समागमों में सतत आवाजाही के बावजूद हमें मिलने में बरसों लग गए। हालांकि श्री तिवारी जी की साहित्यिक सक्रियता, उनके अभिनव सोच व समर्पण का चेहरा 'प्रेरणा' के हर अंकों में अपनी वृद्धिगत होती आभा के साथ उभरता रहा। उनके सामाजिक सरोकारों और उसके प्रति उनकी तड़फ को प्रेरणा पत्रिका के अलावा प्रेरणा के सकारात्मक प्रकाशनों, सीनियर सिटीजन्स पर केंद्रित उनके समाचार पत्रों, पत्रिका में कैंसर संबंधित स्वास्थ्य उपयोगी सामग्री और भावी पीढ़ी के लिए संपादित और प्रकाशित उनकी कृतियों में महसूस किया जा सकता है। एक कलाकार के नाते मैं यहां यह उल्लेख करना चाहूंगा कि कला को लेकर उनकी जो समर्पण दृष्टि है उसके चलते वे अपनी पत्रिका, समाचार पत्र और पुस्तकों के प्रकाशन में कला पक्ष को जो अहमियत देते हैं वह अन्यत्र बिरली ही मिल पाती है।

मेरी कलाकृतियों पर उनके इस असीम स्नेह की बदौलत बरसों से न सिर्फ प्रेरणा का आमुख बनने का मुझे सौभाग्य मिलता रहा है वरन मेरे चित्रों के कल्पकता और कला दृष्टि से संपृक्त उपयोग से प्रेरणा के आवरण, आवरणों के परिदृश्य में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराते है।

आवाज के पीछे के चेहरे से मुलाकात का हमारा योग इस दो दशक की आत्मीयता में दो-तीन साल पहले ही बना जब भोपाल के एक साहित्यिक कार्यक्रम में हम एक दूसरे से रूबरू हुए! इतनी दीर्घ आत्मियता के बाद जब हम मिल पाते हैं तो उस क्षण की अनुभूति तो अलहदा होती ही है पर यह भी सच है कि निरन्तर आत्मीय संवादों से निर्मित रिश्तों के चेहरों के आगे व्यक्तिगत चेहरे गौण हो जाते है।

बहरहाल श्री अरुण तिवारीजी के इस अमृत महोत्सवी प्रसंग पर उनके दीर्घ रचनात्मक आयु और ऊर्जा भरे स्वास्थ्य की मंगलकामना! साहित्य के माध्यम से उनकी इस महती समाज सेवा की यह यात्रा यूं ही निर्बाध चलती रहे। जय हो.....

- लेखक वरिष्ठ चित्रकार एवं साहित्यकार हैं।
11- बी, मेन रोड, राजेंद्रनगर, इंदौर - 452012
मो.95253 14422, 80853 59770

'प्रेरणा' प्रदाता – अरुण जी

हरेराम वाजपेयी

''ब्रह्माण्ड में बहुत कुछ है, लेकिन उसके केन्द्र में मानव है, वह मानव जिसके कारण निर्माण पहचाना जाता है। मानव भले देवताओं की तरह दैहिक रूप से अमर न हो, लेकिन वह अमृत के सच्चे भाव का संरक्षक और संवाहक है।'' (यह मैंने सुविख्यात ललित निबन्ध लेखक श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय के लेख 'कुम्भ' में से उद्धृत कर अपनी बात की शुरूआत की है, जो मुझे, अरुण तिवारी के संदर्भ में कुछ लिखने के पूर्व प्रसंगवश समीचीन लगी, और ऐसे ही संवाहक–संरक्षक प्रेरणा प्रदाता हैं अरुण जी)

साहित्य जगत विशेष कर हिन्दी जगत में अब के काल में (जो भी नाम दे दो..) आलोचना, चाटुकारिता, दम्भ और मैं.... का बोलबाला है पर सभी नहीं है, कुछ ऐसे भी साहित्यकार हैं, जो शान्त स्वरूपी है पर उनका लेखन औरों को भी प्रेरणा प्रदान करता है जैसे श्री अरूण तिवारी – संपादक प्रेरणा (त्रैमासिक भोपाल)

मेरा अधिक परिचय तिवारी जी से नहीं था जितना कि मेरे साथियों/साहित्यकारों का है। संभवत: 2018 की बात है, हम लोग – सर्व श्री सदाशिव कौतुक, प्रभु त्रिवेदी, डॉ. शरद पगारे, प्रदीप नवीन और मैं स्वयं भोपाल किसी साहित्यिक कार्यक्रम में गए थे। तिवारीजी से मिलने का कार्यक्रम बनाया गया और पहुंच गए सीधे प्रेरणा कार्यालय। बहुत ही आत्मीयता से मिले, साहित्यिक चर्चाऐं हुई, चाय–पान प्रेम से हुआ, सामूहिक फोटो भी लिए, मैं संकोचवश बस एक तरफ बैठा था पर अरूणजी ने कहा कि वाजपेयीजी मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ। समिति, वीणा व हिन्दी परिवार के माध्यम से। मुझे खुशी हुयी कि जिस साहित्यकार से पहलीबार मिल रहा हूँ वो इतने आदर–प्रेम से मिल रहा है। तिवारीजी के इस आत्मीय व्यवहार से मेरे जैसे व्यक्ति ने प्रेरणा प्राप्त की। उस दिन कैंसर एवं स्मृति शेष श्रीमती उर्मिला तिवारी पर भी चचाऐं हुई। वातावरण स्वाभाविक रूप से अवसाद पूर्ण हो गया पर अरूण जी ने अपने प्रेरणा दायक वक्तव्य से माहौल में बदलाव किया।

जुलाई 2019 में मेरी आत्मकथा ''पांच से पचहत्तर'' मुद्रित होकर आ गई, मेरे अग्रज श्री सत्यनारायण सत्तनजी ने अध्यक्षता स्वीकार की। मैंने तिवारी जी को बतौर मुख्य अतिथि लाने का विचार किया और सीधे फोन पर प्रसंग तथा इंदौर आने का अनुरोध किया, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि व्यस्तता के बाद भी अरूणजी ने आने की स्वीकृति दी और कहा कि मुझे आप सभी से मिलकर आनंद ही होगा। मैंने आवागमन व्यवस्था संदर्भ

बात की तो कहा आप चिन्ता न करें मैं समय पर इंदौर समिति के कार्यक्रम में पहुंच जाऊँगा। उन्होंने वादा निभाया, मेरी आत्म कथा के लोकार्पण संदर्भ कार्यक्रम को उनकी उपस्थिति से चार चांद लग गए। तिवारी जी का प्रेरणादायी वक्तव्य खूब सराहा गया। समाचार पत्रों ने प्रमुखता से जगह दी। मेरे लिए तो अनुपम यादगार बन गया। मैंने संकोचवश मानदेय आवागमन देना चाहा तो बोले आप मेरे बड़े भाई से हैं, तो छोटा भाई क्या आने जाने का किराया लेगा जो मान सम्मान दिया वह मानदेय से लाखगुना अधिक है। अरूण भाई की सहजता, सहृदयता और विद्वत्ता से भी प्रभावित हुए। लोकार्पण समाचार को प्रेरणा में जगह देकर उदारता का परिचय दिया।

मैं प्रेरणा पत्रिका पढ़ता हूँ। तिवारीजी के लिखे संपादकीय समयानुकूल, साहित्य–सृजन के लिये प्रकाश का काम करते हैं।

उनकी कृति ''सृजन का समकालीन परिदृश्य'' हिन्दी साहित्य के लिए धरोहर है। प्रेरणा के हर अंक में कैंसर जैसी महाभयानक बीमारी से संबंधित आलेख व बचाव संबंधी आलेख मिलते हैं। एक आकर्षक व्यक्तित्व, सृजन धर्मी, प्रेरणा प्रदाता – साहित्यकार अरूण तिवारी जीवन के 75 वें सोपान पर आ गए जानकर बहुत प्रसन्नता हुयी। आनंद का विषय है। वह स्वस्थ रहें प्रसन्न रहें और अपने सृजन से साहित्य समृद्ध करते रहें। इन्हीं मनोकामनाओं के साथ – हिन्दी परिवार इन्दौर की भी तरफसे शुभकामनाएं।

मैं 4 पंक्तियां प्रसंगवश कि पहले मुझे बनाया पचहत्तर का और अब स्वयं–

मुझको आगे भेजकर, पीछे आए मित्र,
प्रेम–प्रेरणा की सुगंध है, जैसे महके इत्र।।
मुझे पचहत्तर पार कर अब पहुंचे उस ठौर
सृजन प्रेरणादाताओं में अरुण जी सिरमौर।।

– लेखक वरिष्ठ रचनाकार हैं।
अध्यक्ष, हिन्दी परिवार, इन्दौर
81, बैराठी कालोनी नं. 2, इंदौर – 452014
मो.: 9229466225

अरुण तिवारी : सादगी का प्रतिरूप

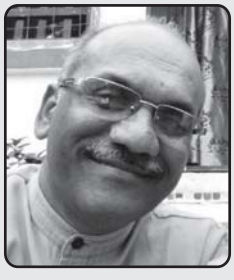

राजुरकर राज

सादगी का कोई प्रमाण देखना हो तो अरुण तिवारी जी को देखा जा सकता है। मृदुभाषी और मितभाषी व्यक्ति। सहयोग के लिए सदैव तत्पर। सहयोग भी पूरे निस्वार्थ भाव से। उसका कोई प्रतिदान नहीं, कहीं कोई ज़िक्र नहीं। तिवारी जी से मैं कोई तीस साल से जुड़ा हूँ। बहुत स्मित मुस्कान के साथ मिलते हैं। पूरी आत्मीयता के साथ। कोई दिखावा या आडंबर नहीं।

मैं पत्रिका 'शब्दशिल्पियों के आसपास' का सम्पादन–प्रकाशन करता था। अब स्वास्थ्यगत कारणों से विगत तीन साल से बंद है। उसी सिलसिले ने तिवारी जी से मुलाक़ात करवाई। वे भी 'प्रेरणा' का सम्पादन–प्रकाशन करते हैं। उनका काम अनवरत जारी है। मैं थक गया हूँ। वे उम्र के इस पड़ाव मे भी पूरे उत्साह के साथ लगे हुये हैं। किसी से कोई शिकायत नहीं। सबको साथ लेकर चलते हैं, पर 'एकला चलो' की तरह किसी की परवाह किए बिना निरंतर चलते रहते हैं। अद्भुत व्यक्ति हैं।

कभी शुरू में मुझे लगता था कि बहुत कम बोलते हैं, मित्रमंडली भी सीमित ही होगी, लेकिन मैं गलत साबित हो गया। मुझे मालूम हुआ उनकी मित्रमंडली भी बहुत बड़ी है। सच्चे मित्रों की। बिना लाग–लपेट जुड़े हैं सब। कई बार देखा है मैंने। उनके अमृत उत्सव में तो जिस तरह लोग जुड़े, मैं तो दंग रह गया। साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी, नाते–रिश्ते के लोग, मुहल्ले–पड़ोस के लोग। कितनी आत्मीयता और अपनापन सबके मन मे तिवारी जी के प्रति। गर्व हो उठा मुझे कि मैं भी उनका एक स्नेहपात्र हूँ।

उनके सम्पादन मे निकालने वाली 'प्रेरणा' की प्रतिष्ठा सर्वविदित है। अपने तरह की स्तरीय पत्रिका है। 'प्रेरणा' मे छपना आज भी साहित्यकारों के लिए प्रतिष्ठा की बात मानी जाती है। नियमित रूप से यह पत्रिका पाठकों के पास अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती है। अमृत महोत्सव के समय ही मुझे मालूम हुआ कि तिवारी जी वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी अखबार का प्रकाशन करते हैं और उनके कल्याण के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं।

तिवारी जी भाग्यशाली हैं कि उनका पूरा परिवार भी उनका बहुत आदर करता है और ध्यान रखता है। ऐसी संतान और ऐसा परिवार नसीब वालों को मिलता है और इस मायने में तिवारी जी बहुत नसीब वाले है।

तिवारी जी के मंगल भविष्य की कामना करते हुये यह प्रार्थना करता हूँ कि वे दीर्घायु हों और हम सबको उनका स्नेहाशीष निरंतर मिलता रहे।

– लेखक प्रतिष्ठित रचनाकार एवं निदेशक, दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय, ई 115/21, शिवाजी नगर, भोपाल–462016
मो.: 8319379126, 7692026871

अरुण तिवारी के 75वें जन्म दिवस पर....

सतत् सक्रियता और संवेदनशीलता का सागर समेटे अरुण तिवारी

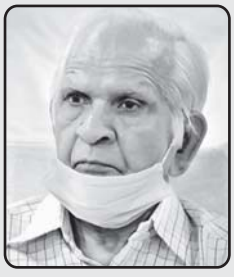

युगेश शर्मा

किसी अथवा किन्हीं कर्म-क्षेत्र या क्षेत्रों में अच्छा मुकाम हासिल कर लेने और अपने-जीवन के खाते में विशिष्ट उल्लेखनीय उपलब्धियों की पूंजी जमा करने के बाद भी कोई व्यक्ति एकदम सहज-सरल और अभिमान से परे रह जाए, आज के दौर में यह बहुत बड़ी बात है। यह स्थिति प्राय: आश्चर्यचकित भी करती है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति अब विरल होते जा रहे हैं। काफी कोशिशों के बाद ही वे मिल पाते हैं। मिल भी जाते हैं, तो अकिंचन बने रहते हैं और अपने हावभाव और विचारों से यह जाहिर करते हैं कि वे तो सामान्य व्यक्ति हैं और उन्होंने जीवन में ऐसा कुछ भी तो नहीं किया है, जिसका खासतौर पर संज्ञान लिया जाए। ये बातें मैने समकालीन लेखन को मजबूत आधार और प्रोत्साहन प्रदान करने वाले संपादक, वरिष्ठ साहित्यकार और समाज के मंगल के लिए सदैव चिंतित एवं प्रयत्नशील रहने वाले श्री अरुण तिवारी के संदर्भ में कही हैं। श्री तिवारी अपने जीवन में 75 वर्ष के उस पड़ाव पर पहुंच रहे हैं जहां पहुंचने वाले जातक को देवत्व की प्राप्ति हो जाती है अर्थात वह देवताओं की पांत में खड़े होने की पात्रता प्राप्त कर लेता है, यह जीवन का एक ऐसा पड़ाव है जो ढेर सारी उपलब्धियों की बुनियाद के साथ जुड़ा हुआ है हमें इस बात का गर्व है कि अरुण जी ने 75 वर्ष की अपनी जीवन यात्रा में जो भी काम हाथ में लिया है- उसको सफलता की मंजिल तक पहुंचाया है। सफलता भी ऐसी कि जो न तो आभासी है और न ही जो शब्दों के द्वारा बयान किये जाने पर मालूम पड़े। श्री अरुण तिवारी जी की जो भी उपलब्धियाँ हैं, वे आंखों से देखी जा सकती हैं और मन की गहराई से महसूस भी की जा सकती है।

मैंने पिछले कुछ वर्षों से श्री अरुण तिवारी के व्यक्तित्व और कृतित्व को सहज भाव से जानने-समझने की कोशिश की है। मेरे सामने उनके जीवन के चार पक्ष उभर कर सामने आते हैं, एक- साहित्यिक पत्रिका के संपादक, दो, एक संवेदनशील और जागरूक साहित्यकार तथा तीन समाज के कुशलक्षेम की चिंता करने वाला नागरिक एवं चार श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध प्रकाशक। वे कर्म को एक साधना मानकर अंजाम देने वाले ऐसे व्यक्ति हैं जो कर्म पथ पर सतत चलते तो हैं, लेकिन पीछे मुड़कर अपने पांवों के निशानों की गिनती नहीं करते। जो कर दिया उसका बढ़कर बखान करना, उसकी नुमाइश लगाना उनकी प्रकृति में नहीं है। दूसरी बात यह है कि वे जो काम करने की ठान लेते हैं, किसी काम को करने का संकल्प कर लेते हैं, तो उसको अंतिम परिणति तक पहुंचाकर ही दम लेते हैं, फिर चाहे मार्ग में कितनी ही बाधाएं और निरुसाहित करने वाली स्थितियां क्यों न उपस्थित हो जाएं। जब वे महसूस कर लेते हैं कि काम मंगलकारी और सर्वजन हिताय हैं, तो वे उसको अंजाम देने में ज्यादा सोच-विचार नहीं करते। आपके व्यक्तित्व की एक बड़ी खूबी यह भी है कि उन्होंने अपने चिंतन और लेखन को विचारधारा और खेमांबंदी की संकीर्ण सीमाओं में कैद होने से बचाया है। साहित्य लेखन हों या साहित्यिक पत्रकारिता दोनों में निष्पक्षता, स्पष्टवादिता और खुले मन से अपना दायित्व उन्होंने निभाया है। वे वर्तमान की जमीन पर भविष्य के लिए सपने देखते हैं और उनको हरसंभव प्रयास करके साकार भी करते हैं। उन्होंने विवादों और अप्रिय प्रसंगों में स्वयं को उलझाने की बजाय सृजन और संपादन के काम में स्वयं को एक निष्ठा के साथ जुटाए रखा है। मैं आश्वस्ति भाव से कह सकता हूं कि अरुण तिवारी जी ने अपनी लकीर को लंबी करने में कोई कमी नहीं रहने दी। दूसरी तरफ दूसरों की लकीर को छोटी करने की प्रवृत्ति से उन्होंने स्वयं को सख्ती से बचाये रखा है। उनका यह गुण उनके व्यक्तित्व में साफ झलकता है। उनकी सौम्यता प्रणम्य है।

साहित्यिक पत्रिका 'प्रेरणा' ने श्री अरुण तिवारी को पहचान दी है। समकालीन लेखन के लिए समर्पित इस पत्रिका ने अपनी प्रकाशन-यात्रा के 23 वर्ष पूर्ण कर 24वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। मुझे तो यह पत्रिका एक नियतकालिक साहित्यिक प्रकाशन की बजाय समकालीन लेखन का एक सशक्त आंदोलन लग

रहा है। अरुण जी बहुत मनोयोगपूर्वक पत्रिका के हर अंक का संपादन करते हैं। पत्रिका के हर अंक में संपादकीय के रूप में आप जो 'अपनी बात....' लिखते हैं, वह वर्तमान स्थितियों, परिस्थितियों और चुनौतियों की बात तो करती ही है, साथ ही भविष्य के संबंध में सकारात्मक संदेश एवं संकेत भी देती है। इस बात का मैं विशेष तौर पर उल्लेख करना चाहूंगा कि 'प्रेरणा' के संपादकीयों में कुछ ऐसे सार्वजनिक हित के महत्वूर्ण मुद्दे भी उठाये गए हैं। जिनकी साहित्येत्तर पृष्ठभूमि होते हुए भी उस समय उनको उठाना समाज, प्रदेश और देश के हित में था। इस तरह यह साबित किया गया है कि देश, प्रदेश और समाज के व्यापक हितों की चिंता करना, वैसे मुद्दों को उठाना केवल साहित्यकारों का ही नहीं, साहित्यिक पत्रिकाओं का भी दायित्व है। 'प्रेरणा' में हर विचारधारा के रचनाकारों के श्रेष्ठ लेखन को स्थान मिलता है। पत्रिका में प्रकाशित होने वाले साक्षात्कार अपनी समग्रता और विचार चेतना के लिए बखूबी जाने जाते हैं और उनमें साक्षात्कार देने वाले मूर्धन्य साहित्यकार का समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व उभरकर सामने आ जाता है। 'प्रेरणा' की एक विशेषता यह भी है कि उसमें पाठकों के पत्र संपूर्णत: प्रकाशित होते हैं और वे साहित्य के जीवंत अंग के रूप में पाठकों तक पहुंचते हैं। पाठकों की प्रतिक्रिया को इतना उदार सम्मान कम ही साहित्यिक पत्रिकाएं दे पाती हैं।

श्री अरुण तिवारी की रचनात्मक सक्रियता का एक अन्य आयाम है- प्रेरणा पब्लिकेशन। इस प्रकाशन संस्थान के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधिाओं की श्रेष्ठ कृतियों का प्रकाशन हो रहा है, जो 21वीं सदी के पाठकों की पठन आवश्यकता और अभिरुचियों की पूर्ति करती हैं। यह एक ऐसा प्रकाशन संस्थान है, जो लाभ की बजाय पाठकों को स्तरीय सत्साहित्य उपलब्ध कराने के मूल उद्देश्य को सामने रखकर संचालित है। इस प्रकाशन से जो पुस्तकें अब तक प्रकाशित हुई हैं, उनके आधार पर मेरे इस निष्कर्ष की पुष्टि होती है।

श्री तिवारी की सृजनात्मक सक्रियता का एक अन्य आयाम साहित्यिक लेखन और पुस्तकों का संपादन है। अब तक आपकी जो पांच पुस्तकें, प्रकाशित हो चुकी हैं, वे हैं, साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य, स्मृति के शिलालेख, अपनी बात, पहाड़ियों की पगडंडियों से शहर में (कविता संग्रह) तथा सृजन का समकालीन परिदृश्य।

इन पुस्तकों में अरुणजी की लेखन, संपादन एवं काव्य सृजन-प्रतिभा का अच्छा परिचय मिलता है। वे अपनी रचनाओं में जो भी कहते हैं- वह बिना लाग लपेट और 'किंतु-परंतु' से मुक्त रहता होता है। जो सच है, अनुभूत है और उद्वेलित करता है वह आपकी कविताओं में अभिव्यक्ति पाता है। साहित्य का सच देखने के लिए उनकी पुस्तकें पढ़ी जाना चाहिए। 'अपनी बात' पुस्तक में वे संपादकीय शामिल किये गये हैं, जो प्रेरणा पत्रिका के पिछले अंकों में छपे हैं। हर संपादकीय समय की आवाज को अभिव्यक्त करता है। इन संपादकीयों में जो शासन स्तर पर विचारणीय बिंदु थे, उन पर यथोचित कार्यवाही भी यथासंभव हुई है। ये संपादकीय साबित करते हैं कि समय की नब्ज पर अरुण जी की पकड़ कितनी सटीक है।

यह अनुभूत सच है कि जीवन की हमसफर (पत्नी) के असामायिक निधन से मनवांचित गुणों वाले पुरुष टूट जाते हैं और उनकी सामान्य सक्रियता की गाड़ी के सामने बड़ा अवरोध खड़ा हो जाता है। ऐसा लगने लगता है-जैसे उनके जीवन के सारे रस को निचोड़ दिया गया है और जीवन का सारा आनंद समाप्त हो गया है। 24 सितंबर 2016 को श्री अरुण तिवारी की जीवनसंगिनी श्रीमती उर्मिला तिवारी कैंसर से संघर्ष करते हुए हमेशा के लिए विदा हो गईं, तो निश्चित ही उन्हें बड़ा झटका लगा था, किंतु उन्होंने अपने आत्मबल को अक्षुण्ण रखा और अपनी व्यक्तिगत क्षति को कैंसर के खिलाफ जागरूकता आंदोलन में तब्दील कर दिया। 'प्रेरणा पत्रिका को उन्होंने इस आंदोलन का माध्यम बनाया है। 2016 के बाद पत्रिका के जो अंक निकले हैं, उनमें कैसर से बचाव और तत्संबंधी जागरूकता के बारे में सामग्री अवश्य रही है। इसके अलावा चिकित्सकों के आलेख भी कैंसर से बचाव और निदान के बारे में छपे हैं और छप रहे हैं, अरुण जी के इस विषयक निर्णय का हम इस कारण सम्मान करते हैं कि वे साहित्यिक पत्रिका में समाज कल्याण संबंधी सामग्री वे छाप रहे हैं। साहित्यिक पत्रिकाएं तो ऐसी सामग्री से प्राय: दूर ही रहती हैं।

स्व. उर्मिला जी की स्मृति में श्री अरुण तिवारी ने मप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन भोपाल के अंतर्गत साहित्यिक पुरस्कारों की स्थापना भी की है। जो हर साल प्रदान किये जाते हैं। इस तरह वे एक आदर्श पति के रूप में भी हमारे सामने प्रस्तुत हो रहे हैं। एक बुद्धिजीवी के जीवन का यह एक अनूठा और प्रेरक पक्ष है। व्यक्ति की जीवन-यात्रा में 75 वर्ष बहुत मायने रखते हैं। मैं श्री अरुण तिवारी को इस अमृत प्रसंग में बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन की कामना करता हूं।

- लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार थे।

अरुण तिवारी : एक स्वच्छंद व्यक्तित्व

के.सी. बघेल

भोपाल जिसे झीलों की नगरी भी कहा जाता है। यह शहर चारों तरफ से हरियाली से घिरा और सौंदर्य से भरपूर है। जो भी व्यक्ति इस शहर में एक बार आता है, वह यहीं का होकर रह जाता है। धरा के इस छोटे से टुकड़े पर ही बसा है हमारा छोटा सा है रहवासी परिसर 'पैलेस ऑर्चर्ड'।

लगभग 400 डुप्लेक्सेस का यह परिसर, स्वच्छ हरे भरे उद्यानों से समृद्ध है। उद्यानों में उचित प्रकाश, बैठने के लिए कुर्सियां, बच्चों के लिए झूले और फिसल पट्टी आदि सभी की व्यवस्था है। इन सब का रख रखाव रहवासी समिति के द्वारा ही किया जाता है। यहां एक बहुत ही सुंदर विशाल मंदिर, खेल प्रांगण, क्लब हाउस एवं स्विमिंग पूल की सुविधा भी उपलब्ध है। परिसर के रह वासियों का एक बड़ा तबका वरिष्ठ नागरिकों का भी है जिन की संतानें देश विदेश के अलग-अलग हिस्सों में रहती हैं। ऐसे में इन वरिष्ठ नागरिकों के लिए अपने जीवन को एकाकी एवं निरस्त होने से बचाना एक बड़ी चुनौती थी।

शुरू शुरू में सभी लोग चहल कदमी करते हुए या पार्क में आराम करते हुए एक दूसरे से मिला करते थे। समय के साथ ही लोगों का एक दूसरे से परिचय एवम मेलजोल बढ़ने लगा। फिर एक दिन श्री अरुण तिवारी जी ने सभी उपस्थित वरिष्ठ जनों के लिए एक मंच बनाने का सुझाव रखा। श्री तिवारी जी सेवानिवृत्त अभियंता, लेखक एवं संपादक भी हैं। सभी वरिष्ठ जनों ने इस विचार के लिए सहमति एवं प्रसन्नता जताई और इस तरह यह मंच अस्तित्व में आया।

प्रारंभ में नाममात्र की सदस्यता शुल्क के साथ सदस्य बनाए गए। वरिष्ठ जन एकत्र होकर विभिन्न प्रकार की क्रियाकलापों में सहभागी होने लगे। कभी हल्की फुल्की चर्चा, कभी गंभीर मंत्रणा और कभी मनोरंजन के कार्य भी होने लगे। सदस्यों की संख्या भी बढ़ने लगी। दूसरे परिसरों के लोग भी इस मंच से जुड़ने लगे और यह मंच वरिष्ठ जनों के लिए स्वर्ग बन गया। इसके उचित संचालन का भार श्री आजाद जी एवं श्री अरुण तिवारी जी को सौंपा गया। सभी के सहयोग से उत्तरोत्तर प्रगति एवं प्रशंसा इस मंच को प्राप्त होने लगी।

संगठन में शक्ति होती है, मंच के आग्रह करने पर रहवासी समिति ने इस मंच के लिए एक भवन उपलब्ध करवा दिया। अब सभी वरिष्ठ जन प्रतिदिन इस भवन में आपस में मिलने लगे। आरंभ में तिवारी जी ने अपने निजी स्तर पर भवन में 40 कुर्सियों की व्यवस्था की। इसके पश्चात पैलेस ऑर्चर्ड रहवासी समिति द्वारा इस मंच की लिए टेबल, फैन, कूलर, इन्वर्टर, ऑडियो सिस्टम लाइब्रेरी के लिए अलमारियों की व्यवस्था की। इसके पश्चात फोरम एक पुस्तकालय, इनडोर खेल सामग्री, कैरम और शतरंज की व्यवस्था भी की गई। अब नित्य प्रतिदिन गीत संगीत, कविता पाठ, हास्य व्यंग के कार्यक्रम संपन्न होने लगे और समय-समय पर प्रतियोगिताएं भी आयोजित होने लगी।

हाथों से हाथ और दिलों से दिल मिलने लगे तो हर माह वरिष्ठ जनों का जन्म दिवस भी मनाया जाने लगा। भारतीय परंपरा के अनुरूप तिलक, स्वस्तिवाचन एवं छोटी-मोटी पार्टियां भी होने लगी। इसके उपरांत महिला सदस्यों को भी जोड़ा गया एवं उनकी अलग से एक साप्ताहिक बैठक भी होने लगी और इस प्रकार एक बहुत ही खुशनुमा वातावरण बन गया। श्री अरुण तिवारी जी के मार्गदर्शन में यह फोरम 'हेल्पेज इंडिया' नाम की एक संस्था के संपर्क में आया और फिर सभी सदस्यों का एक कार्ड भी बनवाया गया जिसके उपरांत समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण एवं वक्तव्य संगोष्ठियाँ भी आयोजित होने लगी। जन्मोत्सव तो अब एक बहुत ही आकर्षक कार्यक्रम होने लगा, जिसमें सभी लोग अपनी प्रतिभाओं का बेझिझक प्रदर्शन करने लगे। इसमें श्री तिवारी जी की तरफ से शुभकामना कार्ड भी दिया जाने लगा।

अब इस फोरम को अन्य मंचों से भी आमंत्रण आने लगा और इतने कम समय में इतना विकास करने पर एक उदाहरण के रूप में प्रशंसा मिलने लगी। इसके पश्चात इस फोरम का अपना एक अलग व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया। दिन प्रतिदिन लोग इसमें अपने विचार एवं संदेश व्यक्त करने लगे।

लॉकडाउन के इस कठिन समय में भी इस व्हाट्सएप ग्रुप के द्वारा सभी सदस्य आपस में जुड़े रहें। सारे नियमों का पालन करते हुए भौतिक रूप से दूर रहकर भी संपर्क में बने रहे। एक दूसरे का

हालचाल लेना, एक दूसरे को स्वास्थ्यवर्धक जानकारी देना और जरूरत पड़ने पर यथासंभव सहयोग करना जारी रहा ताकि हाथ से हाथ जुड़े रहें।

श्री तिवारी जी द्वारा वरिष्ठ जनों के लिए एक पाक्षिक समाचार पत्र भी प्रकाशित किया जाता है। जो वरिष्ठ जनों की समस्याओं और विचारों को सबके संज्ञान में लाता है एवं विभिन्न जानकारियां भी प्रदान करता है। इसे ही कहते हैं 'वसुधैव कुटुंबकम', हम दो और हमारे सब। हमने अंधाश्रम एवं वृद्धाश्रम के साथियों को भी अपना परिवार बनाया है और उनको भी समय-समय पर सहयोग प्रदान करते हैं। हमारे लिए यह फोरम एक स्वर्ग है और हमारी ऊर्जा का स्त्रोत है। जब यह करोना कॉल समाप्त होगा हम सभी दुगनी ऊर्जा के साथ फिर से एक बार फिर साथ होंगे। श्री तिवारी जी के अमृत प्रसंग पर हम मंच की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देते हैं।

- प्रतिष्ठित सदस्य, सीनियर सिटीजन्स फोरम,
बी-66, पैलेस आर्चर्ड, फेज़-3, कोलार रोड, भोपाल-462042

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

अरुण तिवारी : एक प्रेरणा का अभिनंदन

सच्चे साधु वे नहीं हैं जो केवल अपने वेश से साधु हैं। साधु का आशय उस व्यक्तित्व से है जो साध ले। संतुलन, साधुता का अनिवार्य अंग है। इन अर्थों में अरुण तिवारीजी सच्चे साधु हैं। उन्होंने दो भिन्न ध्रुवों को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में साध लिया। एक ओर तो उन्होंने अपना कौशल एक सफल इन्जीनियर के रूप में सिद्ध किया और दूसरी ओर वे एक समर्पित साहित्य साधक और सम्पादक के रूप में समकालीन साहित्य जगत में स्थापित हैं।

मैं उनसे दशकों से परिचित हूं और मैंने पाया है कि वे एक समर्पित साधक हैं साहित्य, कला और संस्कृति के। उनकी आरम्भ से ही रुचि साहित्य में रही तथा साहित्य विशारद,साहित्य रत्न एम.ए. तथा संस्कृत की अनेक परीक्षाओं को उन्होंने उत्तीर्ण किया। उन्होंने 'आकण्ठ' और 'प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स' जैसी पत्रिका का सम्पादन किया और अभी वे पिछले 23 वर्षों से 'प्रेरणा का सम्पादन कर रहे हैं। पिछले 6 वर्षों से वे 'इंटेलीजेली' नामक अंग्रेज़ी पत्रिका का भी सम्पादन कर रहे हैं।

उनका सृजनात्मक क्षितिज भी बहुत विस्तृत है। साठ और सत्तर के दशक से वे कविताएं तथा कहानियां लिख रहे हैं तथा समीक्षा व आलोचना के क्षेत्र में भी वे सक्रिय हैं। उनकी प्रमुख कृतियां हैं साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य, सृजन का समकालीन परिदृश्य, स्मृतियोँ के शिलालेख और पहाड़ों की पगडंडियों के शहर में। उनकी तींन गद्य व गज़ल केन्द्रित कृतियां प्रकाशनाधीन हैं।

साहित्य गौरव सम्मान,काव्य केशव सम्मान तथा अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार सहित अनेक सम्मानों और पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित और पुरुस्कृत किया गया है।

आकाशवाणी और दूरदर्शन से उनके अनेक कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं।भारत महोत्सव के अन्तर्गत उन्होंने मास्को, ताशकन्द, उक्रेन आदि स्थानों की सौजन्य यात्राएं भी की हैं।

प्रेरणा अपने समय की विशिष्ट पत्रिका है जिसने आम पाठकों के बीच अपनी पहिचान स्थापित की है। इसमें साहित्य केन्द्रित आलेखों के साथ अनेक शोधपरक आलेख भी प्रकाशित हुए हैं जैसे चंद्रशेखर आज़ाद की जन्मस्थली को लेकर जो विवाद चल रहा था उस विषय पर प्रेरणा में प्रकाशित आलेख पूरे देश में चर्चित हुआ और अन्तत: भारत सरकार ने विस्तृत परीक्षण कर मध्यप्रदेश के भाभरा को उनकी जन्मस्थली के रूप में मान्यता दी।

श्री तिवारी विशेष रूप से वरिष्ठ जनों के प्रति संवेदनशील हैं। हमारे बुज़ुर्ग अपने जीवन के संध्याकाल में निराश न हों,उनकी परिपक्व सर्जनात्मकता का लाभ समाज को मिले और वे अपने जीवन से संतुष्ट रहें इन्हीं उद्देश्यों के लिये वे प्रतिबद्ध हैं।वे मेरे मत में परम्परागत रूप से अपने सर्जनात्मक दायित्व का निर्वाह करने वाले सर्जक नहीं हैं अपितु उनकी आकांक्षा है कि परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव आए। ऐसा बदलाव जो कहीं हमारे मानस को आन्दोलित करे और हमारे समाज और देश की सूरत स्थायी तौर पर बदले। तिवारीजी के सृजनकर्म का यही उद्देश्य है और उनकी साहित्यिक पत्रकारिता की पहिली प्रतिबद्धता भी यही है। वे ऐसे अनथक यात्री हैं जिनके पांव कभी विराम नहीं लेते।उनका ध्येय गन्तव्य तक पहुंचना नहीं है बल्कि यह है कि पांवों के द्वारा की जाने वाली इस यात्रा को कभी विराम न मिले। ऐसे अनथक यात्री की अहिर्निश यात्रा का हार्दिक अभिनंदन करना वास्तव में उस प्रेरणा का अभिनंदन करना है जो निष्कंप दीपशिखा की भांति अनवरत प्रज्ज्वलित रहती है और जिसके आलोक में पांव कभी थमते नहीं।

- लेखक वरिष्ठ ललित निबंधकार एवं कथाकार हैं।
85, इंदिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ. कार्यालय के पास,
केसरबाग रोड, इन्दौर (म.प्र.)

परिवार की दृष्टि में अरुण तिवारी :

यादों का क़िस्सा खोलो तो यादें बहुत दूर तक ले जाती हैं

अभिनव तिवारी
बड़ा बेटा

मुझे सबसे पहले याद आती है तवानगर की वो कॉलोनी, तवा बांध और पापाजी का वो हमेशा मेहनत करना। कहते हैं कि बाल मन पर कई बातें गहरी छाप छोड़ जाती हैं और सम्भवतया हमारे अंदर मेहनत करते जाने का गुण तवानगर से ही पड़ गया था।

समय चलता रहा और हम भी पापाजी के साथ विभिन्न शहरों में जाते रहे। एक शहर से दूसरे शहर में जाना उस समय उत्सव सा होता था। सामान पैक होना, ट्रक में जाना, मामाजी लोगों का साथ होना, वाक़ई में वो सब उत्सव सा ही होता था।

जैसा कि अमूमन सभी घरों में उस समय होता था, पापाजी हमारे लिए सुख सुविधाओं का इंतेजाम करते थे तो मम्मीजी हमारी पढ़ाई पर तीखी नज़र।

फिर आया वो समय जब बच्चे स्कूल से कॉलेज को जाते हैं। दुर्भाग्यवश उस साल पी. ई. टी. में चयन नहीं होने के कारण जब मैं मायूस होकर बैठा था, पापाजी मेरे एडमिशन की कोशिशों में लगे थे। ये वो समय था जब उनका कभी हार न मानने का रूप हमारे सामने आया। अंततः मेरा एडमिशन हुआ और आज मैं जो कुछ भी हूँ वो उनकी उसी जिजीविषा का परिणाम है।

और एक बात, बचपन से ही हम लोग पापाजी से प्रायः हर विषय पर चर्चा करते थे उसमें राजनीति, सम सामयिक घटनायें, खेल, फ़िल्में, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण इत्यादि जिसने आगे चलकर हमको एक पूर्ण व्यक्तित्व बनाने में मदद करी।

नौकरी लगी, शादी हुई, बच्चे हुए पर जो नहीं बदला वो था हमेशा हम लोगों को प्रगति के लिए प्रोत्साहित करते रहना। पापाजी प्रोत्साहित करते रहे और मम्मीजी और पापाजी के आशीर्वाद से हम आगे बढ़ते रहे।

फिर आया 2016 का वो दर्द भरा वर्ष जब मम्मीजी को पहली बार कैन्सर का पता चला। तमाम इलाज़ के बाद भी नियति

Our family is a circle of strength and love. Papaji has always played a pivotal role in our journey. It is because of his blessings that we continue to grow and prosper.
आपका आशीर्वाद हमेशा बने रहे।

– **सपना**, बड़ी बहू

Baba has never failed to inspire me, in any aspect of life, making me stronger each time. His words have always made me feel at ease and have boosted my morale. With a kind heart and the charisma that he exudes, he's someone I constantly look up to every step of the way. Proud to have you as a guiding light.

- Tanima, पोती, बड़े बेटे की बड़ी बेटी

I feel proud to say that I am your granddaughter, Baba. I always remember listening with rapt attention and excitement hearing your experiences, the hurdles you faced, your adventures, your journey, and seeing how far you have come despite all that stood in your way. A trailblazer in every sense of the word, you have ingrained a sense of perseverance in all of us and continue to inspire us each day. Thank you for being wonderful and our one-man army, Baba!

- Tanisha, पोती, बड़े बेटे की छोटी बेटी

को कुछ और ही मंज़ूर था और भगवान ने उन्हें अपने पास बुला लिया। हम सब दु:खी तो थे ही पर इस बात से हैरान थे कि अब क्या ? मम्मीजी ही थीं जो हमारे हिसाब से सूत्रधार की तरह सबको एक किए हुई थीं। कुछ दिनों में जब पापाजी ने वो भूमिका में अपने को दिखाया तो हमें महसूस होने लगा कि शायद वो हमेशा से ही उन सब बातों में शामिल थे, हम महसूस नहीं कर पा रहे थे। तो अब वो माँ की भूमिका में ज़्यादा हैं, स्नेहिल पहले से ज़्यादा, घर पर बुलाने को उत्साहित, क्या खाना पीना है और ऐसी बहुत सी बातें जो मम्मीजी किया करती थीं।

लोग कहते हैं, पति पत्नी का सात जन्मों का साथ होता है, भगवान से दुआ है कि हमें सात जनम यही माँ पिताजी मिलें और ये पहला जनम हो।

हमारे मार्गदर्शक व प्रोत्साहक

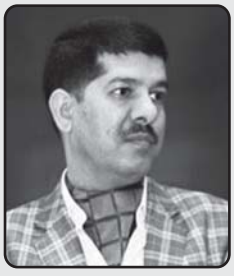

आराध्य तिवारी
मंझला बेटा

पापा जी के बारे में क्या लिखूं और कितना लिखूं, समझ नहीं पा रहा हूँ। एक ही प्वाइंट लिख रहा हूँ जो कि मेरे जीवन का टर्निंग प्वाइंट है।आज भी मेरे को अच्छी तरह से याद है, झबुआ के वो दिन, जब मैंने Enginnering छोड़ने का डिसाइड किया था और मैंने माताजी को convince भी कर लिया था क्योंकि मेरे को Engineering बहुत tough लग रही थी।

Papaji ने मेरा idea suna कि मैं BSC करना चाहता हूँ। वो बोले, किससे भाग रहे हो और कब तक भागोगे, आज कोई परेशानी है कल दूसरी आएँगी। उनसे फ़ाइट करो और बोले, तुम पता नहीं क्यों कॉन्फ़िडेन्स नहीं रख पा रहे हो, हमें पूरा कॉन्फ़िडेन्स है कि तुम बहुत अच्छे मार्क्स से पास करोगे, Engineering तो करना ही है। थोड़ा रोया, थोड़ा confident हुआ, माताजी ने ट्विस्ट मार दिया कि बेटा पापाजी ठीक ही बोल रहे हैं। एक बार फिर से पूरी मेहनत से ट्राई करो फिर देखते हैं क्या होता है। और आज यहाँ तक आ गए कि टेलीकॉम सेक्टर में कुछ हद तक पहचान बना ली है ।यही आत्मविश्वास हम लोग बनाए रखना चाहते हैं।

दक्ष्य

I am influenced by my grandfather as he works hard and he is very kind in nature and he is very caring and for me he also play a role of a friend at times when I get upset on a topic he makes me feel good.

– **दक्ष,** पोता, मंझले बेटे का बड़ा बेटा

मम्मी जी के जाने के बाद पापाजी ने अपने को ही नहीं सम्हाला बल्कि पूरे परिवार को जोड़े हुए हैं। हम लोगों के भोपाल जाने पर खाने से लेकर हर चीज़ का वैसे ही ध्यान रखते हैं,जैसा मम्मी जी रखती थीं। जब भी कोई समस्या आती है या मदद की आवश्यकता होती है, इस उम्र में भी पूरे उत्साह के साथ मदद करते हैं व समस्या सुलझाते हैं। केअरिंग तो शुरू से ही हैं, सब की मदद के लिए भी तैयार रहते हैं। मेरे मम्मी पापा भी भोपाल में रहते हैं, उन्हें किसी प्रकार की मदद की ज़रूरत होती है,पापा जी हमेशा साथ देते हैं ।पापा जी का बिल पावर बहुत स्ट्रॉग है और हम लोगों का मनोबल बढ़ाते रहते हैं। हम सब लोग यही चाहते हैं कि पापा जी इसी तरह साथ रहें।

– **श्वेता तिवारी,** मंझली बहू

अविक

My grandfather did a lot things in his life but what I am proud of him is raising our family and keeping it unite and one no doubt there are fight in every single family but my grandfather is always trying to make it a peaceful family He is the person who inspires me the most give me knowledge and wisdom of life an how to face this life I am thankful to God for providing me such a different grandfather.

– **अविक,** पोता, मंझले बेटे का छोटा बेटा

दूरदर्शिता एवं इच्छा शक्ति की मिसाल

अनिमेष तिवारी
छोटा बेटा

दूरदर्शिता के चलते कोई सपना देखना और इच्छा शक्ति का भरपूर उपयोग करते हुए उस सपने को फलीभूत कर लेना– ये पापाजी का हुनर कब उनकी जीवन शैली बन गया, कुछ धुंधला–धुंधला सा भी याद नहीं। इस हुनर के चलते वे एक सधे हुए धातुकार की तरह चोट करते जाते और हम भाई लाचार घड़ों की तरह आकार लेते जाते।

समय–बेसमय बुरे अहसासों का दौर भी चलता जो शनैः–शनैः कृतज्ञता में परिवर्तित हुआ, और गौरवान्वित भी. हुआ यूँ कि तेईस साल तक टेलीकॉम जगत में, तक़रीबन अट्ठारह देशों में हवाई यात्राओं और आठ देशों में निरंतर अपनी सेवाएं देने के बाद मुझे लगा कि मेरी दुनिया कुछ और है, वो जो मैं हर दिन करना चाहता हूँ– शायरी, पढ़ना, लिखना और बच्चों को हँसाना।

'तुम इंटेलिजेली को भारत की सबसे अच्छी बाल–पत्रिका बनाने की सामर्थ्य रखते हो, कौशल भी। बहुत खालीपन है इस वर्ग में', पापाजी ने कुछेक दिनों में ही ये सपना देखा भी और मुझे विश्वास भी दिया।

कुछ समय निकला, इंटेलिजेली ने नए आयाम छुए, बाल–पाठकों की चहेती बनते गई और साथ ही पालकों की विश्वसनीय भी। दिल्ली सरकार द्वारा चलित 'हैप्पीनेस पाठ्यक्रम' में चयनित हुई जहाँ तक़रीबन बारह लाख बच्चे इससे लाभान्वित होते हैं। अमिताभ बच्चन जैसी हस्तियों ने मुझे सराहा तो रिचर्ड ब्रैंसन जैसे उद्योगपतियों ने भी मेरी पीठ ठोक दी। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो अब भी ये एक सपने जैसा ही प्रतीत होता है।

ये चमत्कार पापाजी की जीवनशैली का सबसे ताज़ा उदाहरण है। उनका पुत्र होकर ज़िंदगी हमेशा आसान लगी है। उनके विश्वास और दूरदर्शिता की सूची मेरी शब्द–सीमा से बहुत लम्बी है, बहुत ही लम्बी।

अनु तिवारी
छोटी बहू

Determined, Strong, Hardworking yet very Caring & Emotional are few words that define papaji. Papaji's rock-solid support within our family is the backbone of our success.

हम सब के ऊपर उनका आशीर्वाद हमेशा बना रहे।

अथर्व तिवारी

I thank you for your infinite love and wisdom. I cherish the time we spend together. Please know you are loved forever and always! You have shown me what it means to live a life of fun, kindness, and generosity.

You are one of a kind, thank you for being you! I love your endless memories and stories and the time we spend together. Baba, thank you for being my hero, someone to lean on, and my best friend.

You have ears that truly listen, arms that always hold, love that's never-ending, hair that's silver and a heart that's made of gold. And i know i can look up to you no matter how tall i grow! I LOVE YOU !!

– पोता, छोटे बेटे का बड़ा बेटा

आरवी

I love Baba because he is caring and never scolds me. Why I just love him more than any one else because he allows us to watch endless TV. He is a very kind person. Most importantly, he can be miles away but always very close in my heart.

– पोती, छोटे बेटे की छोटी बेटी

'प्रेरणा'-स्मृति-संकलन

सूर्यकांत शर्मा
पत्नी के छोटे भाई

जब हम किसी व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। तो मन में इस कार्य को अंजाम देने की ''प्रेरणा'' जागती है। फिर हम उन स्मृतियों को समेट कर प्रत्येक विचार का संकलन कर लेखनी कर पाते हैं। इसी कड़ी में सूर्यकाँत शर्मा जिसे माननीय श्री अरुण तिवारी जी साले का ओहदा प्राप्त है। अपने शब्दों की माला से आपके हृदय को छूने का प्रयास करूंगा। लोगों में यह धारणा सी बन बैठी है, कि हमारे परिवार का सदस्य यदि नहीं रहा, तो रिश्तों में दूरी सी बन जाती है। किन्तु यहाँ पर स्थिति ठीक विपरीत है। हमारी बहिना श्रीमति उर्मिला तिवारी जो मान. अरुण तिवारी जी की धर्मपत्नि के रूप में जानी जाती थी। बीमारी की वजह से इस दुनिया में नहीं रहीं। मुझे उस बहिना के प्रति सम्पूर्ण तिवारी परिवार का समर्पण की मिसाल ने नया अनुभव कराया, क्या कुछ नहीं किया जीजा जी एवं सभी बच्चों ने ?

किन्तु बहिन के जाने के बाद भी रिश्तों में वही पूर्णता, स्नेह और समन्वय का अद्‌भुत मिश्रण देखने में आया, जिससे रिश्तों की अहमियत को और गहरा कर दिया। आईये आज इस लेखनी के माध्यम से हमारी बहिना श्रीमति उर्मिला तिवारी उर्फ उर्मि की ओर से पूज्य जीजा श्री अरुण तिवारी को चंद लाइन जो मेरी स्वयं की रचना है, प्रस्तुत करता हूँ। जो जीजा को समर्पित है। इन लाइनों में मेरी बहिन की उम्र से शिकायत का ब्यौरा है और इन्सान के उम्र के तीनों रूप की व्याख्या है।

ये उम्र मैंने तुझ से दोस्ती क्या खता दी,
जब तू बचपन लाई तो गोदी में खिलाया
कंधे पर झुलाया
पर ये उम्र तू बड़ी बेईमान निकली।
और तू जब जवानी लाई
तो हर पल, हर पहर तेरा इंतजार किया।
किन्तु तू बड़ी बेईमान निकली।
न जाने कब होले-होले
मेरे इतने करीब आकर खड़ी हो गई
कि जब उधार की आँखें, यानी चश्मा लगाकर देखा
तो तू मुझ पर मुस्करा रही है।
आ आज मैं आपकी ''उर्मि'' तुम्हें बता दूँ।
कि मैंने तुमसे यानी अरुण तिवारी जी से
क्या चुरा लिया तो सुनिये।
मैंने आपसे दो तीर याने
''अनुभव और धैर्य'' रूपी तीर चुना लिये।
और हाँ मैं ये बताना भूल गई तिवारी साहब
कि आप तो खड़े-खड़े मुस्कराते रहोगे
और मैं न जाने आपसे दूर बड़ी दूर
चली जाऊँगी।

इन चंद लाईन में बहिन ने तीर बना आपको अहसास कराया कि मैंने आपसे बहुत सीखा, किन्तु सत्य कह कर उम्र भर का उम्र भर के लिये एक उलाहना दे गई। माननीय तिवारी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना कठिन है, क्योंकि बहुआयामी तिवारी साहब का हर क्षेत्र में अपनी में अनूठी पकड़ है। आपने अपने उम्र में कर्तव्य को भली भांति निभाया। एक अनुशासित पिता, एक समाज में अपनी मजबूत पकड़ के साथ-साथ उच्चकोटि की राजनीति में दखल होना इनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाता है। अपने जीवन में आज तक सिद्धान्तों से समझौता करते नहीं देखा।

आपके तीनों पुत्र जो जीवन की अच्छी उचाईयों पर सुशोभित हैं। उन्हें बहिन उर्मिला का स्नेह, तिवारी साहब का अनुशासित जीवन शैली ने एक हीरे की तरह चमका दिया। उन्हें समय-समय पर मार्ग प्रर्दक होना बच्चों की प्रगति का एक अनुठा नमूना है। आपकी ब्यूरोक्रेट से करीबी अपने आप में आपके बहु आयामी होने की ओर इंगित करती है। आपका हर उम्र में रहन सहन का सलीका ने मेरे जीवन में एक गहरी छाप छोड़ी है। मैं आपको इसी तरह स्वस्थ एवं मिलनसार रहने के लिये ईश्वर का धन्यवाद प्रदान करता हूँ। साथ ही आप सदैव जीवन भर अपने अनूठे अनुभव से हम सबको लाभान्वित करते रहें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

- पूर्व-रेरा अधिकारी, भोपाल (म.प्र.)
165, फाइन एवेन्यु, फेज-1, कोलार रोड, भोपाल - 462042

■

अरुण तिवारी : मध्य प्रदेश और इसके समाज के लिए समर्पित एक स्व अनुशासित मानव व्यक्तित्व

प्रमोद वैद्य

सामान्यत: व्यवहार कुशलता और दृढ़ता एक साथ संभव नहीं होती है। यह दोनों गुण एक साथ जिस व्यक्तित्व में समाहित हैं वह हैं श्री अरुण तिवारी जी भोपाल से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'प्रेरणा' समकालीन लेखन के लिए के संपादक। यह परिचय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आदरणीय तिवारी जी एक ऐसे बौद्धिक समृद्धि से परिपूर्ण हस्ताक्षर हैं जिसके भीतर एक अत्यंत संवेदनशील, सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण एवं राजनीतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय हित के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र में चल रही गतिविधियों पर पैनी दृष्टि के साथ प्रिंट मीडिया में अपनी उपस्थिति बनाए रखने की क्षमता समाहित है। वर्तमान काल जिसमें प्रिंट मीडिया विशेष रूप से पत्र-पत्रिकाओं के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और मोबाइल द्वारा पूरी तरह से अतिक्रमण किया जा चुका है। रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और बस स्टैंड के अलावा पत्र-पत्रिकाओं के स्टाल ढूंढने से भी नहीं मिलते। ऐसे समय में साहित्यिक पत्रिका का संचालन करना अत्यंत दुष्कर कार्य है यह तो अरुण तिवारी जी की जिजीविषा का कमाल है कि पत्रिका 23 से अधिक वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही है।

जहां तक व्यक्ति अथवा व्यक्तित्व का प्रश्न है विशेष रूप से ऐसे व्यक्ति जो मध्यप्रदेश शासन और उसकी व्यवस्था के अंग हैं उनके व्यक्तित्व और कार्यशैली में पद और प्रतिष्ठा के अनुरूप दंभ का प्रादुर्भाव आ ही जाता है। ऐसे अधिकारी विरले ही मिलते हैं जो मध्य प्रदेश की माटी से बने हुए मध्य प्रदेश की जनहित की परियोजनाओं का तृणमूल स्तर पर क्रियान्वयन और वह भी गुणवत्ता के साथ समय सीमा के पूर्व पूर्ण करने के लिए कटिबद्ध हों और ऐसा तभी संभव हो पाता है जब बुद्धि, ज्ञान और अनुभव एवं जिजीविषा के साथ समर्पित भावना भी व्यक्ति में निहित हो।

तिवारी जी से हमारा परिचय तब हुआ जब वे मंत्रालय से स्थानांतरित होकर हमारे कार्यालय में पदस्थ हुए। वे अपना कार्य चुपचाप करते एवं उन्होंने कई लंबित प्रकरणों का निराकरण भी किया जिसमें मुख्य अभियंता की दृष्टि में एक अलग तरह की छवि बनी।

मुझे उनके साथ उनके सानिध्य में कार्य करते हुए मध्यप्रदेश की सेवा करने का अवसर मिला इसका श्रेय भी उन्हीं को जाता है। ऐसे स्व अनुशासित सजग एवं जनहित के कार्यों के लिए समर्पित व्यक्ति का कृपापात्र होना भी सौभाग्य की बात है।

पार्टिसिपेटरी इरीगेशन मैनेजमेंट, एक्ट (सिंचाई प्रबंधन में कृषकों की भागीदारी अधिनियम) का प्रारूप बनाने का कार्य पिछले एक-डेढ साल से शासन स्तर पर लंबित था तथा इस कार्य में कोई रुचि भी नहीं ले रहा था तब यह कार्य हमारे मुख्यअभियंता को सौंपा गया और उनके द्वारा अरुण तिवारी को यह कार्य सौंपा गया चूंकि इस कार्य में विधि का भी समावेश होना था अत: विधि स्नातक होने के कारण मुझे भी इस कार्य हेतु शामिल किया गया और 3 माह की अवधि में इस कार्य को पूर्ण करने का लक्ष्य दिया गया। तब मुख्य अभियंता से कहा गया कि हम यह कार्य 1 माह में कर लेंगे। इस पर सुखद आश्चर्य के साथ मुख्य अभियंता ने शासन को दो माह में पूर्ण करने हेतु आश्वस्त कर दिया। हमारी दृढ़ संकल्प शक्ति और दिन रात लगातार कार्य करने के कारण 1 माह के पूर्व ही यह कार्य पूर्ण कर दिया गया। साथ में हिंदीकरण भी कर दिया जिससे भाषा विभाग में अतिरिक्त समय न लगे।

इस प्रारूप को केंद्रीय सरकार की समिति द्वारा यथावत अनुमोदित कर दिया गया और यह एक्ट शासन स्तर पर समस्त औपचारिकताएं पूर्ण कर प्रभावशील कर दिया गया। यह एक्ट इतना सटीक एवं व्यवहारिक था कि 19 वर्ष तक उसमें उसमें कोई संशोधन नहीं हुआ इसके बाद 1-2 लघु संशोधन भर किये जा सके। इस एक्ट को लागू करने वाला मध्यप्रदेश देश का दूसरा राज्य बना।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के अंतर्गत शिवपुरी जिले की सर्वाधिक शिकायतें शासन स्तर पर प्राप्त हुईं। शिवपुरी जिले को ठीक करने के लिए शासन स्तर पर श्री अरुण तिवारी की पदस्थापना वहीं की गई। उन्होंने वहां की

वास्तविक स्थिति को एक माह में अध्ययनकर मुझे भी बुला लिया।

यहां से हमारा दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ कर्म युद्ध वह भी होम्योपैथिक पद्धति पर बिना किसी पूर्वाग्रह अथवा शोरगुल के आरंभ हुआ। यहां उल्लेखनीय है श्री अरूण तिवारी जी की कार्यशैली उनका अनुश्रवण और मन वचन कर्म से क्रियान्वयन वह भी गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में बिना किसी द्वेष एवं पक्षपात के संभव हो पाता है।

वहां की जनता एंव सरपंचों का विश्वास प्राप्त करने हेतु एक पुस्तिका हिंदी में ''जमीन पर निर्माण का सही तरीका' जिला प्रशासन एवं जिला पंचायत के सहयोग से प्रकाशित की गई। जिसमें विभाग में होने वाले कार्यों, प्रक्रिया, कार्य करने के तरीके , मापदंडों का विस्तृत विवरण दिया गया। यह पुस्तक जिला पंचायत द्वारा सरपंच स्तर तक उपलब्ध कराई गई।

लगभग एक माह तक पूरे शिवपुरी जिले का सतत एवं गहन निरीक्षण तथा अध्ययन करने के उपरांत एक कार्य योजना बनाई गई। इस कार्य योजना के क्रियान्वयन के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। शिवपुरी जिले के आठ विकास खंडों में कुल 490 निर्माण कार्य चल रहे थे। प्रत्येक विकासखंड में चल रहे समस्त कार्यों के फोटोग्राफ ,कार्य की भौतिक स्थिति और किए गए भुगतान की स्थिति और शेष कार्य की स्थिति के साथ उपलब्ध आवंटन संबंधित समस्त जानकारी एकत्रित कर एक दिवसीय कार्यशाला में आठ विकास खंडों का अलग-अलग कक्षों में प्रदर्शन एवं इनविजीलेटर की व्यवस्था की गई।

प्रत्येक विकासखंड के संबंधित जिला पंचायत सदस्य, जनपद पंचायत सदस्य, सरपंच एवं उपयंत्री और कार्य संबंधित विभागों के प्रतिनिधि सभी ने उन कार्यों की अद्यतन स्थिति पर चर्चा कर समीक्षा कर अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिस पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत एवं कलेक्टर शिवपुरी की उपस्थिति में समग्र और विस्तृत परिचर्चा की गई। इस कार्यशाला का परिणाम इतना सुखद रहा कि अधूरे पड़े हुए निर्माण कार्य, नए स्वीकृत निर्माण कार्य और आने वाले समय के लिए प्रस्तावित कार्यों हेतु कार्य योजना का क्रियान्वयन इस प्रकार हुआ कि शिवपुरी जिला मध्य प्रदेश में प्रथम आया और यह कार्यशाला मध्य प्रदेश के इतिहास में एक मिसाल बनी और शासन द्वारा इस तरह के आयोजन करने के निर्देश जारी किये गये।

शासन द्वारा पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लगभग 80 उपस्वास्थ्य केंद्रों के निर्माण 6 माह में करने की योजना बनाई गई जिसे पी.डब्ल्यू.डी द्वारा बनाया जाना था उनके द्वारा असमर्थता व्यक्त करने के कारण यह कार्य हमारे विभाग को देने हेतु सहमति मांगी गई जिसे न केवल सहर्ष स्वीकार किया अपितु 6 माह में कार्य भी पूर्ण करा दिया। जिला सरकार द्वारा समस्त कार्यों का निरीक्षण करने आये प्रमुख सचिव ने अपना प्रतिवेदन मीटिंग में मुख्यमंत्री को दिया जिस पर विभाग को प्रशस्ति पत्र जारी किया गया।

ए बी रोड से ग्राम बारा के लिए पी डब्ल्यू डी द्वारा बनाई गई सड़क पर पहाड़ी नदी पर एक काजवे बना था जो हर वर्ष क्षतिग्रस्त हो जाता था और रास्ता अवरुद्ध हो जाता था। इस काजवे को बनाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा हमारे विभाग को कहा गया तदुपरांत हमने पुर्नरुपांकन कर एक नये काजवे का निर्माण कराया गया जो 22 वर्ष बाद आज भी विद्यमान है।

विकास आयुक्त कार्यालय द्वारा दर सूची के हिंदीकरण हेतु कहा गया जिसे रिकार्ड समय में पूरा किया गया। इस तरह शासन की अन्य निर्माण विभाग की तुलना में यह विभाग हिंदीकरण के लिए प्रथम विभाग बना।

आलेख का आरंभ मैंने जहां से किया था कि अरुण तिवारी एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसे व्यवस्था एवं समाज के मध्य संतुलन, परिवार के मुखिया की हैसियत से पत्नी और पुत्र-पुत्रवधू के मध्य संतुलन, लेखन के क्षेत्र में वामपंथी एवं दक्षिणपंथी लेखकों एवं साहित्यकारों के मध्य संतुलन, दो विपरीत राजनीतिक विचारधाराओं में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों के बीच संतुलन एवं समन्वय स्थापित कर स्वीकार्यता के साथ समस्या का समाधान करने में महारत हासिल है।

भारतीय समाज व्यवस्था में सबसे अधिक कठिन होता है 'सरल' होना। हमारे चारों ओर विघ्नसंतोषियों और छिद्रान्वेशियों की भरमार रहती है। स्वाभाविक है जो कार्यशैली वहां अपनायी गई वह कुछ लोगों को नागवार गुजर रही थी और उन्हीं तत्वों द्वारा एक अखबार विशेष के संवाददाता के माध्यम से अखबार में मिथ्या समाचारों का प्रकाशन कराया गया। इस समस्या के समाधान हेतु जिला प्रशासन एवं जिला पंचायत को एक दु:साहसी सुझाव दिया गया कि जनसंपर्क अधिकारी के माध्यम से जिले के समस्त पत्रकारों को विभाग द्वारा कराये गये कार्यों की सूची सौंप कर जिन भी कार्यों को वे देखना चाहे निरीक्षण करवा देते हैं। इस प्रकार एक दिन का प्रेस टूर पूरे शिवपुरी जिले का आयोजित किया गया और वहां पत्रकारों के चाहे अनुसार कार्यों का भ्रमण कर निरीक्षण कराया गया।

यहां केवल चार घटनाक्रमों का उल्लेख ही किया गया है। यदि समग्र व्यक्तित्व एवं किए गए कार्यों का चाहे वह समाज के लिए हो साहित्य अथवा लेखन के क्षेत्र में हो अभियांत्रिकी का क्षेत्र हो अथवा समाज के हित में नीतियों के निर्धारण की बात हो पर चर्चा करना हो तो कम से कम 500 पेज की एक पूरी पुस्तक का सृजन करना होगा।

दूसरे दिन समस्त राज्य एवं राष्ट्रस्तरीय लगभग 18 हिंदी एवं अंग्रेजी समाचार पत्रों ने विभाग के कार्यों की भूरि-भूरि सराहना करते हुए लिखा कि 'कसौटी पर खरे उतरे समस्त निर्माण कार्य'।

और अंत में गजानन माधव मुक्तिबोध की पंक्तियां जो अरुण तिवारी जी के लिए प्रेरणास्रोत है

कोशिश करो
कोशिश करो
जीने की
जमीन में गड़कर भी

और दुष्यंत कुमार की पंक्तियां

कौन कहता है
आसमां में सुराख नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो,

पंडित प्रताप नारायाण मिश्र की ये पंक्तियां जिनमें उन्होंने कहा जो व्यक्ति आसमान को तीर द्वारा भेदने का लक्ष्य निर्धारित करता है, उस व्यक्ति का तीर वहां पर सबसे ऊंचे पेड़ के ऊपर तक तो निश्चित जाएगा।

उपरोक्त तीनों लेखकों की इन पंक्तियों को मूल प्रेरणा मानकर यह सभी कार्ययोजना व कार्यशैली अपना कर कार्य संपन्न कराये गये और यही है एक लेखक जो अभियंता भी है जो न केवल पात्रों की रचना करता है अपितु निर्माण हेतु भी एक अभिनव पात्र हो सकता है। यह सिद्ध कर दिया हमारे अरुण तिवारी जी ने।

- लेखक प्रतिष्ठित इंजीनियर हैं।
ई-8/391, त्रिलोचन नगर (त्रिलंगा) भोपाल-462039
मो.: 9826321607

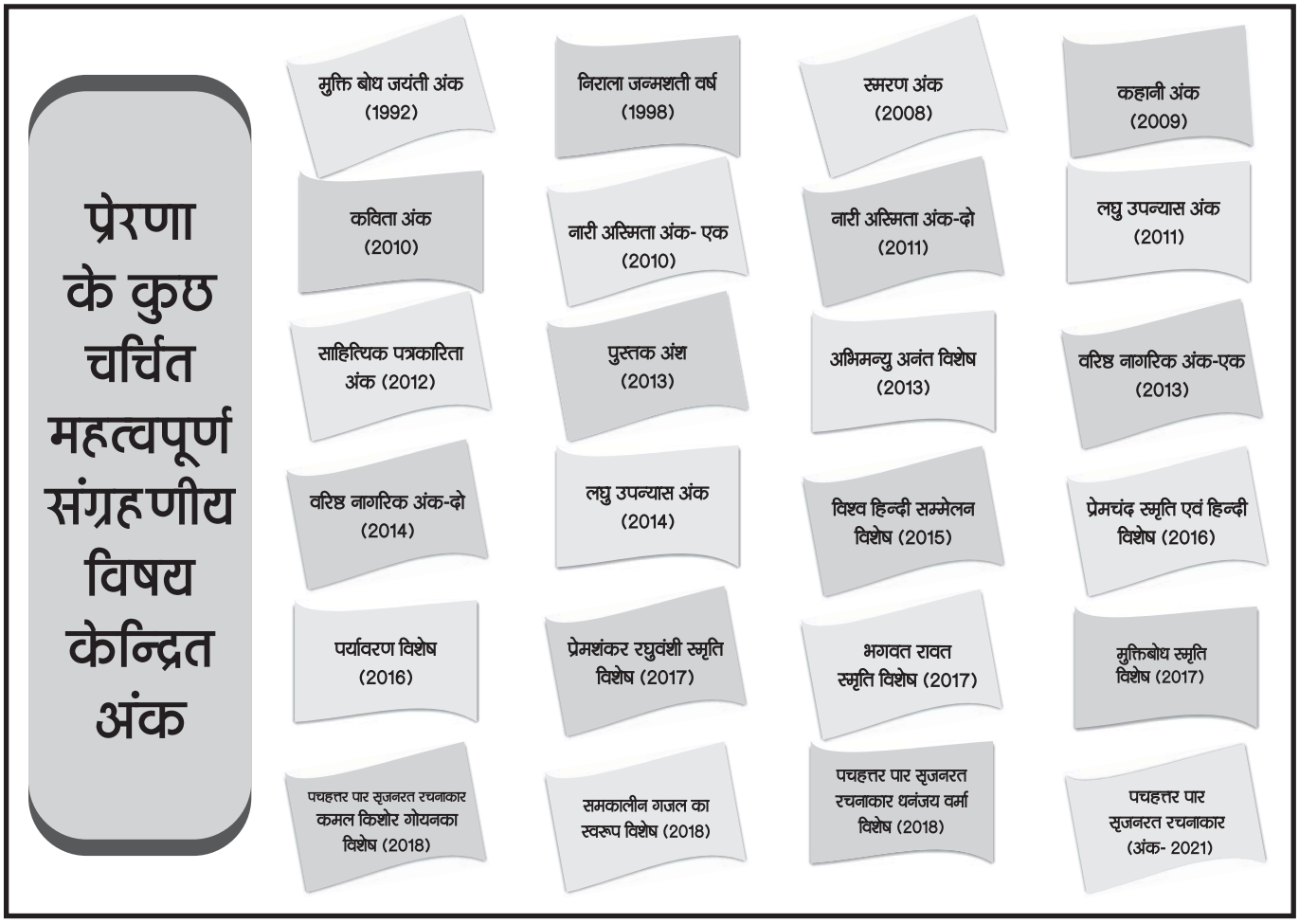

मेरे मित्र, मार्गदर्शक और गुरु

भीमसिंह मोहनिया

मैं झाबुआ जिले का रहने वाला हूं। मेरी प्रथम पोस्टिंग झाबुआ जिले में जोबट नदी पर बनने वाली जोबट परियोजना के संभागीय कार्यालय में संलग्न अधिकारी (सहायक यंत्री) के पद पर हुई थी। बांध बनने का स्थानीय आदिवासियों द्वारा विरोध किये जाने के फलस्वरूप कार्य ठीक से नहीं हो पा रहा था तभी वहां निरीक्षण पर आये वरिष्ठ अधिकारी द्वारा ज्ञात हुआ कि शासन द्वारा यहां पर अरुण तिवारी की पदस्थापना की जा रही है वे सेंट्रल स्पिल वे एक्सपर्ट हैं तथा स्थानीय समस्याओं को भी सुलझाने में निपुण हैं। वैसे तो वे बहुत ही सरल व्यक्ति हैं परंतु बिना वजह उनसे उलझने पर बहुत खुराफाती भी हैं। उनके इस कथन से वहां के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनके बारे में अलग-अलग ढंग से छवि बना ली थी। बांध बड़ा था, नदी पर सेंट्रल स्लिप वे बनना था तथा बाजू में दोनों तरफ मिट्टी का बांध बनना था। मैं वहां का स्थानीय तथा आदिवासी होने के कारण मुझे आदिवासियों को विरोध न करने के लिए समझाने को कहा गया पर वे मानने को तैयार नहीं थे कि जब तक उनकी समस्या हल नहीं हो जाती वे बांध नहीं बनने देंगे। परियोजना प्रभारी व अधिकारियों को शक था कि मैं आदिवासियों को भड़काता हूं। मेरे प्रति उन लोगों का व्यवहार भी पूर्व से ही सम्मानजनक नहीं था।

कुछ दिनों बाद अरुण तिवारी सा. ने वहां ज्वाइन किया। उत्सुकतावश मैं भी उनसे मिला, वे मुझे बहुत ही सौम्य और सरल लगे। बातचीत में भी आत्मीयता थी। उन्होंने मुझसे आदिवासियों के विरोध का वास्तविक कारण जानना चाहा। बांध के ऊपरी हिस्से में एक नाला आकर मिलता था बांध बन जाने पर उसके रिजरवायर का पानी नाले में से होते हुए कई गांवों को डुबा देता। उन्होंने इसके बारे में परियोजना प्रभारी से चर्चा की तो उन्होंने बताया कि एन.व्ही.डी.ए. (नर्मदाघाटी विकास) द्वारा नाले को मोड़ कर नदी में मिलाना है तथा नाले पर राकफिल डेम बनाना है। तिवारी सा. ने स्थल का विस्तृत निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की कि यहां राक फिल डेम बनाना उचित नहीं होगा। इसके बारे में उन्होंने विस्तृत रूप से आईएसआई कोड का संदर्भ दिया तथा लागत की दृष्टि से भी यहां मिट्टी का बांध बनाना उचित होगा, उन्होंने तुलनात्मक प्राकलन भी प्रस्तुत किये। परियोजना प्रभारी एन.व्ही डी ए के आदेश के विरुद्ध जाने में हिचकिचा रहे थे तब तिवारी सा. ने इंदौर आकर मुख्य अभियंता को पूरा प्रकरण दिखाया। मु.अ. द्वारा प्रकरण एन.व्ही.डी.ए. भेजा गया तथा वहां से मिट्टी का बांध बनाये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई। वहां की मिट्टी का परीक्षण भी कराया गया जो उपयुक्त पाया गया। तिवारी सा. ने इसी बीच आदिवासियों से संपर्क करने की योजना बनाई। स्टॉफ ने इसको रिस्की बताया पर उन्होंने आत्मविश्वास से मेरे साथ जाकर आदिवासियों के गांव, टोलों, मजरों में जाकर उनसे व्यक्तिगत संपर्क किया। उनसे व्यक्तिगत उनके सभी मामलों पर चर्चा के साथ-साथ उपबांध के बारे में भी बताया। सभी लोग उनके वहां पहुंचने से ही गद्‌गद थे तथा उनकी बातों से और प्रभावित हो गये और सभी सहर्ष तैयार हो गये।

इसके बाद इस उप बांध का स्थायित्व विश्लेषण (Stability Analysis) करने की समस्या आई। ये मध्यप्रदेश छत्तीसगढ में चौथा बांध था जिसमें दोनों तरफ पानी रहना था। समान्यतया बांध में एक तरफ ही पानी रहता है। कोई भी अधिकारी इस विश्लेषण के लिए तैयार नहीं हुआ। सी.डब्ल्यू.सी. (केंद्रीय जल आयोग) ने भी इसके लिए समय मांगा।

तिवारी जी धुन के पक्के थे। उन्होंने अपने स्टाफ से इस बारे में चर्चा की तो सब सहर्ष तैयार हो गये। मेरे से भी कहा कि मप्र में दो-चार लोग ही ये विश्लेषण कर पाते हैं, आप भी इसमें रुचि लें। मैं भी उसे करने में उनके साथ जुट गया। हम लोग सुबह से लेकर रात के एक-डेढ़ बजे तक बैठते और काम में जुट जाते। उप बांध की ऊंचाई 11 मीटर थी, उन्होंने 11.50 मीटर तक विश्लेषण किया और सुरक्षित पाया। पूरे पेपर सहित प्रतिवेदन मु.अ. को प्रस्तुत कर निवेदन किया कि इसको सी.डब्ल्यू.सी तथा बड़ौदा में भी चेक करा

लें। दोनों जगह से अनुमोदन आ गया। इसके बाद तिवारी सा. ने प्राकलन, स्वीकृति, निविदा आदि की औपचाकिताएं पूर्ण कर कार्य शुरू करा दिया इससे आदिवासियों का विश्वास उन पर जमने लगा था।

यहां सेंट्रल स्पिल वे कार्य में भी कुछ Geological समस्याएं आ रहीं थीं जिसे Geological Survey of India से आई टीम ने इंगित किया था। तिवारी सा. ने उनको दूर कर उन्हें पुन: निरीक्षण हेतु आमंत्रित किया क्योंकि नींव भरने के लिए उनका अनुमोदन लेना आवश्यक होता था। अंतत: सभी व्यवधान दूर कर उनका अनुमोदन लिया गया और कार्य तीव्र गति से चलने लगा। यह उनकी बहुत बड़ी सफलता मानी गई। उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला जो अभी भी मेरे काम आ रहा है इसलिए मैं उनको अपना गुरु मानता हूं। जीवन में यदि पवित्र उद्देश्य के साथ पूर्ण आत्मविश्वास के साथ काम किया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है भले ही इसमें कितने व्यवधान आएं। ये मूलमंत्र मैंने उनसे ग्रहण किया।

एक दिन हम लोग मैं और उनके स्टाफ के लोग बैठे थे तो उन्होंने कहा कि पता नहीं क्यों मुझे लग रहा है कि उप बांध तो 11 मीटर ऊंचाई तक बनना था पर मुख्य मिट्टी का बांध तो लगभग 15 मीटर का बनना है यदि उसकी स्टेबिलिटी एनालिसिस की जाए तो शायद 12.5.–13 मीटर के नीचे यह फेल हो जाएगा तभी किसी ने कहा कि ये तो सी.डब्ल्यू.सी. से बन कर आया है ऐसा हो सकता है क्या ? एक ने कहा कि अपना कार्यक्षेत्र भी नहीं है तो वे बोले मानलो इसी के अनुसार बन गया और मेरी शंका सही निकली तो तीन जिले झाबुआ, धार, बड़वानी के 100 से अधिक गांव डूब में आ सकते हैं, क्या अपन लोग इसकी भी स्टेबिलिटी एनालिसिस कर लें। मेरे सहित सभी तैयार हो गये और उनकी शंका सही निकली कि 15 मीटर तक सुरक्षित नहीं था तब उन्होंने परियोजना प्रभारी से चर्चा की, उन्होंने इसको सिरे से खारिज कर दिया। अब तिवारी सा. ने रिस्क लेकर अपने समस्त पेपर व पत्र लिखकर मु.अ. से मिलने का निश्चय किया। पहले तो मु.अ. भी सकुचाये तब तिवारी सा ने कहा कि मैंने पत्र में सब लिख दिया है। मैं ये भी लिख सकता हूं कि यदि ये गलत निकला तो मैं रिजाइन कर दूंगा। उन्होंने मु.अ. से ये भी निवेदन किया कि वहां चल रहे कार्य भी तुरंत रोक दिये जाएं। मु.अ. ने पूरा प्रकरण पुन: परीक्षण हेतु सी.डब्ल्यू. सी के पास वरिष्ठ इंजीनियर की टीम के साथ भेजा। कुछ दिनों के बाद वहां से भी पत्र आया कि पहले वाली गलत है अत: काम तुरंत रोक दिया जाए। इसका पुन: परीक्षण कर नया सेक्शन भेजा जाएगा। काम तुरंत बंद होने से कई ठेकेदार व कई अधिकारी तिवारी सा. से रुष्ट हो गये पर हम सब लोग बहुत प्रसन्न थे कि हमारी मेहनत सफल हो गई और हमने एक अनर्थ होने से बचा लिया।

इसी बीच तिवारी सा. को पता चला कि अभी डूब क्षेत्र की जमीनों का मुआवजा वितरण नहीं हुआ है तब उन्होंने प्रकरण निकलवाया तो वे ये देखकर चौंक गये कि जहां जमीन मालिक आदिवासी होना था वहां वाणीयों (वहां की एक जाति)का नाम चढ़ा हुआ है जबकि उस समय आदिवासियों की जमीन कोई खरीद नहीं सकता था विशेषकर झाबुआ क्षेत्र में फिर ये नाम परिवर्तन क्यों। उन्होंने मुझसे चर्चा की तो मैं भी अचंभित रह गया कि इतना कुछ हो गया और संभागीय कार्यालय में रहते हुए भी मुझे पता नहीं लगा। उन्होंने परियोजना प्रभारी से चर्चा की तो उन्होंने कहा कि आपके समय का तो नहीं है, आप क्यों व्यर्थ इसमें रुचि ले रहे हो और उनकी बातों से लगा कि वे कुछ नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें ये भी डर था कि ये प्रकरण खुलने से पिछले सभी अधिकारी फंस जाएंगे। तब तिवारी सा. ने पुन: दु:साहस वाला निर्णय लिया और अलीराजपुर जाकर वहां के I.A.S. एस.डी.एम से मिले, उन्होंने बताया कि प्रकरण यहां से कलेक्ट्रेट चला गया है पर वे भी यह सब सुनकर विचलित हो गये क्योंकि मुख्य उत्तरदायित्व तो राजस्व विभाग का है जिसमें मूल रिकॉर्ड रहता है और राजस्व विभाग की अनुशंसा पर ही प्रकरण आगे भेजा जाता है। उन्होंने पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। अब समस्या ये भी थी कि प्रकरण कलेक्ट्रेट से कैसे और किस बना पर वापिस लाया जाए तो हम लोगों ने सोचा कि इसमें क्षेत्रीय विधायक का सहयोग लिया जाए वे पिछले 35 वर्षों से लगातार वहां के विधायक थे, बहुत ही सज्जन व बुजुर्ग थे। उनसे मिलकर उनको पूरी स्थिति बताई तो वे भी आश्चर्यचकित हो गये। तिवारी सा. ने उन्हें सलाह दी कि यदि वे एक पत्र कलेक्टर को दें कि वहां के कृषकों की कुछ शिकायतें प्राप्त हुई हैं अत: प्रकरण का पुर्नपरीक्षण किया जाए। दूसरे दिन विधायक जी पूरा प्रकरण वापिस लेकर आए और तिवारी जी को उपलब्ध कराया। तब उन्होंने परियोजना प्रभारी से डूब क्षेत्र का पुन: सर्वेक्षण हेतु स्वीकृति मांगी। उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया कि अब इसके लिए फंड नहीं है। तब तिवारी जी ने मु. अ. से संपर्क किया और पूरी स्थिति बताई। मु.अ. की चिंता भी यही थी कि पुराने प्रभारी एवं सभी अधिकारियों पर कठोर कार्यवाही होना सुनिश्चित है। तिवारी सा. ने उन्हें आवश्स्त किया कि वे अपने विभाग के किसी पर भी कोई कार्यवाही नहीं होने देंगे। मेरे पास एक योजना हैकि प्रकरण पुन: परीक्षण के लिए आया है तो फिर से डूब क्षेत्र का सर्वेक्षण कराया जाए और नया प्रकरण बनाकर भेजा जाए जिसमें वास्तविक जमीन मालिक के नाम हो, जहां तक पुराना प्रकरण है, अपने पास है उसका कहीं जिक्र ही

नहीं किया जाए। मु.अ. को योजना पसंद आ गई तो उनसे स्वीकृति एवं फंड के लिए निवेदन किया गया जिसे उन्होंने प्रदान कर दिया। सर्वेक्षण कर नया प्रकरण बनाया गया और राजस्व विभाग से रिकॉर्ड लेकर मूल जमीन मालिक का नाम दिया गया। वह भू अर्जन प्रकरण स्वीकृत हो गया और इस तरह वहां के आदिवासियों को उनका हक ही नहीं मिला, पर्याप्त मुआवजा भी मिला पर इस पूरे प्रकरण में कई राजस्व अधिकारियों पर कठोर कार्रवाई हुई। एन.व्ही.डी.ए. के किसी भी अधिकारी पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस प्रकरण से तो तिवारी सा. आदिवासियों के हीरो बन गये थे और वे उन्हें बहुत मानने लगे थे।

तिवारी जी ने परियोजना के कार्य के अतिरिक्त नानपुर में साहित्यिक गतिविधियां प्रारंभ कराईं जहां गोष्ठियां आदि होने लगी और कई नई प्रतिभाएं सामने आईं। वहीं पर उन्हें पता चला कि वहां पर हायरसेकंडरी स्कूल नहीं है। परियोजना में प्रोजेक्ट स्थल या उसके पास के गांव में हायरसेकंडरी स्कूल बनाने का प्रावधान था जिसके अनुसार स्कूल एक छोटे से गांव फाटा में बनना था। उन्होंने प्रयास कर उसे नानपुर स्थानांतरित करा लिया जिससे समस्त ग्रामवासियों ने तिवारी जी का सम्मान किया।

परियोजना स्थल पर वृक्षारोपण का प्रावधान था। उन्होंने वहां तो वृक्षारोपण कराया ही, आसपास की सूखी पहाड़ियों पर वन विभाग के सहयोग से छोटे-छोटे चेक डेम बनवाकर वृक्षारोपण कराया जो आज एक जंगल जैसा हो गया है। बांध पूर्ण होने के पश्चात तथा आसपास का क्षेत्र विकसित तथा हराभरा हो जाने के कारण वह एक पिकनिक स्पॉट बन गया है।

इस बीच उन्हें उनके साहित्यिक परिचित से ज्ञात हुआ कि चंद्रशेखर आजाद का जन्मदिन बदरका (उन्नाव) में मनाया जाता है जबकि उनका जन्म झाबुआ के ग्राम भामरा में हुआ था, बाद में उनका लालन पालन बदरका में हुआ था। उन्होंने एक स्थानीय पत्रकार व इतिहास के प्रोफेसर के साथ भामरा में इसकी छानबीन की तो प्रमाण भी मिल गये। आजाद का जन्म कराने वाली दाई उस समय जीवित थी व एक टेलर भी। उन्होंने अपने बयान लिखकर दिये। इसके अतिरिक्त अन्य प्रमाण भी मिले। इसकी पूरी रिपोर्ट बनाकर समस्त दस्तावेज सहित कलेक्टर झाबुआ को दी, एक प्रति सीधे केंद्र सरकार व प्रदेश सरकार को भेजी। 'प्रेरणा' पत्रिका के अंक में भी पूरा प्रतिवेदन प्रकाशित हुआ। उसका नोटिस लेकर यूनीवार्ता ने समस्त समाचार पत्रों को ये समाचार भेजा जिसके फलस्वरूप प्राय: सभी समाचार पत्रों में ये समाचार प्रकाशित हुआ, कुछ ने 'प्रेरणा' का नाम भी दिया। आकाशवाणी से भी प्रसारित हुआ। केंद्र सरकार ने एक परीक्षण दल इसकी जांच के लिए भेजा, उन्होंने भी इसकी पुष्टि की तब इसको घोषित करने के लिए उपराष्ट्रपति व मप्र के मुख्यमंत्री सहित अन्य मंत्रीगण भी भामरा आए और एक कार्यक्रम में इसकी घोषणा की गई तब से आजाद का जन्मदिन भामरा में मनाया जाने लगा, सरकार ने वहां इस संबंध में काफी कार्य भी किये हैं। जोबट परियोजना का नामकरण भी शहीद चंद्रशेखर आजाद परियोजना किया गया। ये महत्वपूर्ण कार्य भी तिवारी जी के प्रयासों से ही संभव हो सके। हालांकि उस समय तक तिवारी जी ने अपना स्थानांतरण करा लिया था अत: वे उस समय उपस्थित नहीं हो सके। इससे मैंने ये सीखा कि अपने कार्य के अलावा अन्य सामाजिक कार्य भी किये जा सकते हैं।

तिवारी सा. ने बच्चों के कारण वहां से स्थानांतरण करा लिया था हालांकि कोई भी आदिवासी व आसपास के ग्रामवासी ये नहीं चाहते थे पर उन्होंने अपनी विवशता प्रकट की तो लोग सहमत हो गये।

इन्हीं सब के कारण झाबुआ के पत्रकार संघ ने झाबुआ में उनका सम्मान कर नागरिक अभिनंदन किया।

उनका विदाई समारोह झाबुआ, धार, के आदिवासियों, आसपास के ग्रामीणों तथा पत्रकार संघ ने बहुत ही भव्य स्तर पर आयोजित किया जो दिन भर चला। उनको आदिवासियों की परंपरागत पोशाक पहनाई गई धालिया, फालिया, तीर कमान आदि भेंट किये गये। परंपरागत नृत्य भी प्रस्तुत किये गये। दाल बाफले व अन्य स्थानीय व्यंजनों के साथ भव्य लंच की व्यवस्था की गई थी।

आज भी वहां के लोग तिवारी सर का स्मरण करते हैं व उनको वहां आने के लिए आमंत्रित करते रहते हैं। मैं भी तभी से उनसे जुड़ा हुआ हूं। आज भी वे उसी गर्मजोशी से मिलते हैं। मैंने उनसे जो कुछ सीखा उसके कारण आज तक असफल नहीं हुआ हूं। अभी भी उसी स्वाभिमान और आत्मविश्वास के साथ सर्विस कर रहा हूं और आगे भी करता रहूंगा। कभी-कभी सोचता हूं कि अपने लिए सोचने वाले अधिकारी तो बहुत देखे हैं पर समाज व वहां के स्थानीय निवासियों के लिए कुछ करने वाले अपवाद ही कहे जायेंगे। मैं भी प्रयास करता हूं कि मैं भी ऐसा कर सकूं जिससे लोग हमेशा याद रखें और सफल भी हो रहा हूं। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि वे इसी तरह स्वस्थ रहें।

- लेखक वरिष्ठ इंजीनियर हैं।
वर्तमान पता- कार्यपालन यंत्री
सिंध परियोजना आरबीसी
नहर संभाग, करेरा, जिला-शिवपुरी (म.प्र.)
स्थायी पता - सिविल इंजीनियर
ग्राम-भोमरा, पोस्ट-झाबुआ, जिला-झाबुआ (म.प्र.)

■

आलेख

मुक्तिबोध : यथार्थ के लेखक

अरुण तिवारी

मुक्तिबोध पर उनके जाने के पश्चात जितनी चर्चाएं हो रही हैं शायद उनके जीवित रहने पर नहीं होतीं। इस आत्म विज्ञापन के युग में भी मुक्तिबोध चुप रहे और उन्होंने कभी भी किसी तरह का सहारा नहीं लिया। आजकल का लेखक अपनी रचनाओं की अपेक्षा प्रचार से ज्यादा जाना जाता है। आज हर आदमी अपनी-अपनी बात कहने में व्यस्त है। वह यह भूल जाता है कि दूसरे भी उनकी बातों को सुनने के बजाय अपनी कहने में लगे हैं। इससे गुटबंदी को प्रश्रय मिला है। अभी तक राजनीति की गुटबंदी प्रसिद्ध थी पर साहित्य में भी निचली राजनीति और गुटबंदी हो गई है। निश्चय ही ऐसे समय में मुक्तिबोध ने तटस्थ रहकर अपनी महानता का परिचय दिया है। उनके बाद उनके नाम को लेकर जितनी चर्चाएं हुई हैं वह भी एक साहित्यक स्टंट कहा जा सकता है।

मुक्तिबोध ने गद्य और पद्य दोनों में समान रूप से लिखा है और दोनों में ही उसकी दृष्टि बिल्कुल निष्पक्ष और यथार्थवादी रही है। वैसे तो जीवन के यथार्थ को पकड़ने की बात तो हर साहित्यकार करता है और हर साहित्यकार यही कोशिश करता है कि साहित्य को जीवन के पास लाए और सच्चाई को उजागर कर रख दें। हालांकि ऐसे में लेखक का निष्पक्ष होना अत्यंत कठिन होता है, वह किसी न किसी रूप में किसी तरह किसी विशेष दृष्टिकोण से प्रभावित हो जाता है और उसके प्रति झुकता जाता है। यहां वह न्याय नहीं कर पाता। परंतु मुक्तिबोध ऐसे में भी अपने को साफ बचा गये हैं।

मुक्तिबोध की कहानियां अक्सर पाठक के मस्तिष्क में सीधी धंसती चली जाती हैं और वह सोचने पर विवश हो जाता है। मुक्तिबोध की कहानियां कहानी कम डायरी अधिक होती हैं। डायरी से तात्पर्य व्यक्तिगत डायरी नहीं है बल्कि वे होने वाली साधारण घटनाएं हैं जो कहानियों में अक्सर छोड़ दी जाती हैं पर वे मुक्तिबोध की कहानियों में पायी जाती हैं। मुक्तिबोध की कहानियों में अक्सर बहस अधिक दिखाई देती है। 'विपात्र' को ही लें। सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को वे बड़े साधारण ढंग से कह गये हैं। व्यक्ति की स्वतंत्रता का आज के स्वातंत्र्ययुग में क्या मूल्य रह गया है। लिखते हैं-

'सवाल लिखित कानून का नहीं है, लिखित नियम तो यह है कि व्यक्ति स्वतंत्र है। किंतु वास्तविकता यह है कि व्यक्ति को खरीदने और बेचने की खरीदे जाने और बेचे जाने की, दूसरों की स्वतंत्रता को खरीदने की या अपनी स्वतंत्रता बेचने की आजादी है। लिखित नियम और चीज है। वास्तविकता दूसरी बात है।' कितनी बड़ी बात उन्होंने कही है कि 'सच है कि हम श्रम बेचकर पैसा कमाते हैं। लेकिन श्रम के साथ ही साथ हम न केवल श्रम के घंटों में वरन उसके बाद भी अपना संघर्ष स्वातंत्र्य और लिखित अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य को भी बेच देते हैं और यदि हम अपने इस स्वातन्त्र्य का प्रयोग करते कराते हैं तो पेट पर लात मार दी जाती है। यह यथार्थ है। इस यथार्थ के नियमों को ध्यान में रखकर ही पेट पाला जा सकता है, अपना और बाल बच्चों का।'

इस तरह देखते हैं कि मुक्तिबोध की कहानियों में नग्न सच्चाई के दर्शन हो जाते हैं। मुक्तिबोध को अपनी जिंदगी में कुछ विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है और वह उनकी रचनाओं में कहीं-कहीं झलक गया है। उनकी कहानियों में जो सच्चाई है वह इसीलिये है कि उन्होंने सुख-सुविधाओं के बीच जीते हुए नहीं बल्कि भोगते हुए लिखा है।

'लेकिन अब मैं इस प्रकार के कल्पना विकास की सुविधा भी नहीं उठा सकता। मुझे इन जलते रेगिस्तानों पर पैर रखते हुए ही चलना है।'

मुक्तिबोध ने प्रतीकों और बिंबों का जो उपयोग किया है उससे उसकी बात और स्पष्टतर होती चली जाती है।

'क्या मेरी अपनी उन्नति के लिए समाज में मेरी बढ़ती के लिए मुझे भी उसी तरह पूंछ हिलाना पड़ेगी। वास्तविकता यह है कि अलग-अलग लोग अलग-अलग ढंग से पूंछ हिलाते हैं। मेरी भी पूंछ हिलाने का अपना तरीका है। मैं पहले अपने पैसे मालिक की गोद में रख दूंगा और फिर दांत निकालकर मालिक के मुंह की तरफ

देखते हुए पूंछ हिलाऊंगा। दूसरे कुत्ते दरवाजे में खड़े होकर पूंछ हिलाते हैं। कुछ कुत्ते पास आने की लगन बताते हुए बीच-बीच में भौंकते हैं, गुर्राते हैं और पूंछ हिलाते रहते हैं। मतलब यह है कि स्थिति भेद और स्वभाव भेद के अनुसार पूंछ हिलाने की अलग-अलग शैलियां हैं।'

इस तरह देखते हैं कि प्रतीक और बिंब किस तरह अपनी बात को और स्पष्ट और साफ बनाने के लिए उपयोग में लाये गये हैं।

मुक्तिबोध की कहानियां इन्हीं कारणों से दूसरी सामान्य कहानियों से अलग रखी जा सकती हैं। उनकी कहानियों को पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे हम स्वयं को मुक्तिबोध के कहानी रूपी आइने में देख रहे हैं। मुक्तिबोध की कहानियों में जो संघर्ष दिखाई पड़ता है, वह किसी व्यक्ति विशेष का संघर्ष नहीं पूरे मध्यमवर्ग का संघर्ष है जो उन्हें सालता है।

मुक्तिबोध के गद्य का साहित्य में जो स्थान है, उससे अधिक पद्य का है और वे कवि के रूप में काफी लोकप्रिय हुए हैं।

मुक्तिबोध कहीं-कहीं अपनी कविताओं में आध्यात्म और दर्शन के भी काफी निकट हैं।

कोशिश करो
कोशिश करो
जीने की
जमीन में गड़कर भी

एक अदम्य इच्छा, अंतिम क्षण तक सतत प्रयत्न एवं संघर्ष करते रहने का लगातार धैर्य एवं साहस, यह पर्याय है कवि, लेखक, विचारक एवं व्यक्ति मुक्तिबोध का जिसने जीवन के हर मोड़ पर, हर पहलू पर संघर्ष किया। यह अनवरत संघर्ष उन्हें और मांजता चला गया पर कभी-कभी यह कचोट कविता बनकर बाहर निकली-

ओ मेरे आदर्शवादी मन
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन
अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया
उदरम्भरि
बन अनात्म बन गये
भूतों की शादी में
कनात से तन गये
किसी व्यभिचारी के बन गये बिस्तर
अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया

क्योंकि मुक्तिबोध की नजरों में जीवन भोग की वस्तु नहीं बल्कि एक लक्ष्यपूर्ण गति है जो हर-क्षण का मूल्य आंकती है।

बताओ तो किस किसके लिए तुम दौड़ गये
करुणा के दृश्यों से हाय। मुंह मोड़ गये
बन गये पत्थर
बहुत-बहुत ज्यादा लिया
दिया बहुत-बहुत कम
मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम।
यही नहीं
लो-हित पिता को घर से निकाल दिया
जन-मन-करुणा सी मां को हकाल दिया
स्वार्थों के टेरियार कुत्तों को पाल लिया
भावना के कर्त्तव्य त्याग दिये
हृदय के मन्तव्य मार डाले
बुद्धि का भाल ही फोड़ दिया
तर्कों के हाथ उखाड़ दिये
जम गये, जाम हुए फंस गये
अपने ही कीचड़ में धंस गये!!
विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में
आदर्श खा गये
अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया
ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम
मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम...।

यह छटपटाहट उनकी कविताओं में ही नहीं, हर विधा में विद्यमान है। मुक्तिबोध मूलत: कवि हैं पर हर विधा पर उनका समान अधिकार है परंतु कविता के बारे में उन्होंने स्वयं कहा है

'कविताएं मेरा पिंड नहीं छोड़ती, प्रेत की तरह मेरे पीछे लगी हुई हैं।'

दर्शन की गहराइयों में डूबते हुए समस्त आत्म-परीक्षण के पश्चात् वे स्वीकारते हैं कि गद्य लिखना उनकी एक विवशता भी रही है कि क्योंकि उन्हीं के शब्दों में -''मैंने बार-बार सोचा है कि गद्य लिखूंगा ताकि कुछ पैसा पा सकूं, यश कमा सकूं।''

परंतु चाहे जो भी विवशता रही हो मुक्तिबोध की कहानियां भी काफी चर्चित रही हैं जिनमें जिंदगी की कतरन, अंधेरे में नयी जिंदगी, पक्षी और दीमक, सतह से उठता आदमी, चाबुक प्रमुख हैं। कहानी के साथ-साथ लेख भी उन्होंने उसी अधिकार के साथ लिखे

हैं जिनमें तीसरा क्षण, एक लंबी कविता का अंत प्रमुख हैं। इन्हीं लेखों, कहानियों तथा कुछ कविताओं को मिलाकर सतह से उठता आदमी फिल्म का निर्माण हुआ है जो उनके प्रशंसकों का उनके प्रति लगाव और श्रद्धा का प्रतिफलन है।

मुक्तिबोध की सृजन के बारे में स्पष्ट दृष्टि है। कला का पहला क्षण जीवन का उत्कट तीव्र अनुभव क्षण। दूसरा क्षण है इस अनुभव का अपने कसकते-दुखते हुए मूलों से पृथक हो जाना और एक ऐसी फेंटेसी का रूप धारण कर लेना मानो वह फेंटेसी अपनी आंखों के सामने ही खड़ी हो। तीसरा और अंतिम क्षण है इस फेंटेसी के शब्द-बद्ध होने की प्रक्रिया का आरंभ और उस प्रक्रिया की परिपूर्णावस्था तक की गतिमानता। यही कारण है उनकी रचनाओं में फेंटेंसी अपनी चरम सीमा तक है, जिन्हें पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम मंजिल के अनेक सोपान पार कर बढ़ते जा रहे हों और आगे एक के बाद एक इमेज अपने क्रमागत चढ़ाव में सामने से होकर निकलती जाती है और पाठक भी इस निरंतर भाषा में प्रवृत होते जाते हैं।

'जिंदगी के....
कमरों में अंधेरे
लगाता है चक्कर
कोई एक लगातार
आवाज पैरों को देती है सुनाई
बार-बार...बार-बार
वह नहीं दीखता....नहीं ही दीखता
किंतु वह रहा घूम
तिलिस्मी खोह में गिरफ्तार कोई एक
भीत पार आती हुई पास से
गहन रहस्यमय अंधकार ध्वनि सा
अस्तित्व जनाता
अनिवार कोई एक
और मेरे हृदय की धक-धक
पूंछती है-वह कौन
सुनाई जो देता, पर नहीं देता दिखाई ?'

यह है एक पूरी यात्रा झाड़ झंखाड़ों से भरी, प्रतीकों के सहारे-सहारे, प्रतिबिंबों के बीच झूलती आगे अनवरत जारी रहती है जिसका प्रारंभ एक गंभीरता से होकर, रहस्यात्मकता की ओर जा पहुंचता है, जो एक भय उत्पन्न कराकर प्रश्न उछाल देता है अपनी अस्मिता को पहचानने का, दंभहीन परंतु आत्मविश्वास से परिपूर्ण एक गहराई की ओर लेता चलता है।

वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है
पूर्ण अवस्था वह
निज संभावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिमाओं को
मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव
हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह
आत्मा की प्रतिमा।
प्रश्न थे गंभीर, शायद खतरनाक भी
इसीलिए बाहर के गुंजान
जंगलों से आती हुई हवा ने
फूंक मार एकाएक मशाल बुझा दी-
कि मुझको यों अंधेरे में पकड़कर
मौत की सजा दी।
पार करो पर्वत संधि के गव्हर
रस्सी के पुल पर चलकर
दूर उस शिखर कगार पर स्वयं ही पहुंचो।

इस फेंटेंसी की दुनिया को आरोप के रूप में भी मुक्तिबोध के ऊपर गढ़ा गया है पर उनका स्पष्ट मत है कि कलाकार का वास्तविक अनुभव और अनुभव की संवेदनाओं द्वारा प्रेरित फेंटेंसी इन दोनों के बीच कल्पना की एक सृजनशील भूमिका है।

वैसे भी किसी भी कलाकार के लिए यह प्रतीत होना कि उसकी बात सभी के लिए महत्वपूर्ण है, अप्रसांगिक नहीं है- महत्व की बात यह है कि कलर के तीसरे क्षण में मूल फेंटेंसी का मर्म जो सिकुड़ा हुआ एक दर्द था, अब फैलकर एक पर्सपेक्टिव का रूप धारण करने लगता है और उसमें नये मनस्तत्व आ जाते हैं। शब्दबद्ध होने की प्रक्रिया के दौरान मैं जब तक उस मर्म में ओज और बल कायम है, तब तक वह नये तत्व समेटता रहेगा किंतु जब वह चुक जायेगा तब गति बंद हो जायगी, उद्देश्य समाप्त हो जायेगा। शब्दबद्ध होने की प्रक्रिया में फेंटेसी बदलने लगती है। यह दो कारणों से होता है जो एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कला का तीसरा क्षण, कला का अत्यंत महत्वपूर्ण और पूर्ण क्षण है। भाषा एक सामाजिक निधि है शब्द के पीछे एक अर्थ परंपरा है। ये अर्थ जीवन अनुभवों से जुड़े हुए हैं। शब्दों के पीछे की अर्थ परंपरा फेंटेंसी के मूल-रंगों को छांट देती है, उसके आधार में परिवर्तन कर देती है, उसकी मौलिक गहनता अर्थात व्यक्तिगत संदर्भ भी तराश देती है, कई कवि शब्दों की अर्थ परंपरा से आच्छन्न होकर, भाषा की सफाई

और चमक के निर्वाह के लिए प्रकटीकरण हेतु आतुर भावतत्वों को ही काट देते हैं। इस प्रकार कला के तीसरे क्षण में मूल द्वंद्व है, भाषा तथा भाव के बीच। भाषा, भावों पर हावी होती रहती है इसीलिए कलाकार को महसूस होता रहता है कि जो उसे कहना था, उसे पूर्ण रूप से नहीं कह सका और ऐसा बहुत कुछ हो गया जो शुरू में उसे मालूम नहीं था कि कह जायगा। यह भावना हर कलाकार में महसूस होती है।

मुक्तिबोध की चिंतना एक स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जीवन में भोगा हुआ यथार्थ है, उन्हीं के अनुसार जिंदा घटनाओं से कहानी नहीं बनती, वह तो इतिहास है, उनका चिंतन राजनीति की मीमांसा करने से भी नहीं चूकता।

मुक्तिबोध का चिंतन आधुनिक परिवेश से पूरी तरह जुड़ा हुआ है इसलिए आज भी प्रासंगिक है और सदैव भविष्य में भी रहेगा क्योंकि स्थितियां कितनी भी परिवर्तित हों, मूल प्रवृत्ति कहीं न कहीं वही होती है।

और सही अर्थों में कहा जाय तो मुक्तिबोध जीवन यथार्थ के अत्यंत निकट रहे हैं और जीवन की वास्तविकता के लेखक कहे जा सकते हैं।

- संपादक- प्रेरणा, ए-74, पैलेस आरचर्ड फेज-3, सर्वधर्म के पीछे, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) 462042, मो.9617489616

प्रेरणा पब्लिकेशन की बच्चों की मासिक अंग्रेजी पत्रिका

What if reading was too much fun ??
Intelligent Reading is Fun

SALES:
iNTELLYJELLY Prerna Publication, Regus, IX Floor, Spaze i-Tech Park, Sohana Road, Gurgaon-122018
facebook.com/iNTELLYJELLY/ | instagram.com/iNTELLYJELLY_ij/ | twitter.com/iNTELLYJELLY_iJ

iNTELLYJELLY.com | info@iNTELLYJELLY.com | +91 9540441441 (Only Whatsapp) | Toll Free : 1800-270-1-250

Publication : Prerna Publication, 26-B, Deshbandhu Bhawan, 1st Floor, Press Complex, Zone-I, M.P. Nagar, Bhopal, MP, Tel.:0755-2575451, e-mail:prernapublicationbpl@gmail.com

Subscription Form

On subscribing, your copy of iNTELLYJELLY will be delivered to your doorstep every month.

Complete, click &WhatsApp to: +919540441441

Name _____
Guardian's Name _____
Contact Number _____
Address _____
_____
City _____
State _____ Pin _____

Subscription For:
6 Months ☐ Rs. 810 | 12 Months ☐ Rs. 1220
(*Includes shipping ₹ 360/-)

Payment Mode: ☐ paytm ☐ NEFT ☐ Cheque ☐ Cash Deposite

How to Pay

paytm: 9540-441-441 OR

Bank Detail: Prerna Publication,ICICI Bank, Bhopal
Account no.: 119005500177
IFSC code: ICIC0001190

वरिष्ठजनों के लिए देश का पहला समाचार

प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स

वरिष्ठजनों द्वारा, वरिष्ठजनों का,
वरिष्ठजनों के लिए मुखपत्र

वरिष्ठजनों द्वारा लिखित
रचनाएँ जैसे -
आलेख, कहानी, लघुकथा,
कविता, ग़ज़ल, व्यंग्य तथा
वरिष्ठजनों से संबंधित समाचार,
उनकी समस्या प्रकाशनार्थ
आमंत्रित है।

संपादक
अरुण तिवारी

पृष्ठ संख्या
8 (बहुरंगीय पाक्षिक)

कार्यालय :
प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स
26-बी, देशबंधु भवन, प्रेस कॉम्प्लेक्स,
एम.पी. नगर, जोन-1, भोपाल-462001
फोन: 0755-4940788
ई-मेल : prernasctimes@gmail.com

साहित्य की मशाल उठाए अरुण तिवारी

नरेश कुमार 'उदास'

श्री अरुण तिवारी का जन्म 4 फरवरी 1946 को सागर मध्यप्रदेश में हुआ ता। इन्होंने सिविल इंजीनियर के साथ एम.ए. (हिन्दी), साहित्य विशारद, साहित्य रत्न, एम.बी.ए. (आंशिक) तथा 'रामायण' की पाँच परीक्षाओं में से 'संस्कृत' की चार परीक्षाओं में से दो तक पढ़ाई की।

अरुण तिवारी जी पिछले 23 वर्षों से ''प्रेरणा'' पत्रिका का सफल संपादन कर रहे है। पिछले दो वर्षों से वरिष्ठ नागरिकों पर केन्द्रित देश के पहले समाचार पत्र (हिन्दी) का ''प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स'' शीर्षक से प्रकाशित कर इसका संपादन कर रहे है। इसके साथ-साथ पिछले छः वर्षों से बच्चों की अंग्रेजी पत्रिका ''इंटेलीजेली'' का प्रकाशन भी करते हैं, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु पत्रिका है।

अरुण तिवारी, कुशल इंजीनियर के साथ-साथ एक सफल सम्पादक तो हैं ही तथा एक कथाकार-कवि भी रहे है। साठ-सत्तर के दशक में इनकी एक चर्चित कहानी ''मुखौशे'' शीर्षस्थ पत्रिका ''लहर'' में छपी थी। इन्होंने इसके साथ-साथ समीक्षाएँ तथा आलोचनाएँ भी लिखीं तथा वह प्रकाशित भी हुई। इनके कई कार्यक्रम आकाशवाणी तथा दूरदर्शन (भोपाल) से प्रसारित हो चुके हैं। इनकी कुछ पुस्तकें भी बाद में छपी भी।

लेकिन इनका बहुधा समय पत्रिकाओं के सम्पादन में बीतता है। ''प्रेरणा'' की शुरुआत 1992 में हुई थी। फिर लगभग पाँच वर्ष यह पत्रिका नहीं छपी। 1997 में पुनः इसका प्रकाशन तिवारी जी ने शुरू किया, जो आज तक बना हुआ है तथा भविष्य में भी यूँही बना रहेगा। अभी तक इस पत्रिका के लगभग 51 अंक प्रकाशित हो चुके है। इन अंकों में से 24 अंक विशेषाँक के रूप में छपे हैं। मेरे पास जो उपलब्ध अंक हैं इस पत्रिका के मैं उनमें कुछ विशेषाकों का यहाँ उल्लेख करना चाहूँगा। मैं इस पत्रिका से 1999 में जुड़ा था। उन दिनों मैं हिमालय जैव सम्पदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में सेवारत था।

तब से आज तक मैं इनसे जुड़ा हुआ हूँ। वैसे तो प्रेरणा के सभी अंक संग्रहणीय हैं, लेकिन समस्त अंक एक (कबीर से कमलेश्वर तक) अक्टूबर-जून 2008, नारी अस्मिता अंक जुलाई-सितंबर 2010, प्रेरणा के लघु उपन्यास तथा पत्रकारिता पर विशिष्ट अंक जनवरी-मार्च 2012, अभिमन्यु अनंत (कथाकार/कवि) पर केन्द्रित अंक, अप्रैल-जून 2013, पुस्तक अंश अंक जनवरी-मार्च 2913, वरिष्ठ नागरिक अंक-एक (2015), वरिष्ठ नागरिक अंक-दो (2015, अंक जुलाई), सितंबर 2016 का अंक प्रेमचंद विषयक सामग्री लिए हुए है, किन्तु इस अंक का सम्पादकीय भी महत्वपूर्ण है।

गजानन माधव मुक्तिबोध आधारित विशेषाँक अक्टूबर-दिसम्बर 2017, पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकार, धनंजय वर्मा पर विशेष अंक जुलाई-सितंबर 2018, समकालीन ग़जलकार केन्द्रित अंक अप्रैल-जून 2018, पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकार, कमल किशोर गोयनका विशेष, जनवरी-मार्च 2018 रहे हैं।

इस पत्रिका का मात्र स्तरीय रचनाएं छापना ही उद्देश्य नहीं हैं, इसके साथ-साथ भारत की एकमात्र यह ऐसी पत्रिका हैं, जिमसे बहुत सारे पाठकों के लम्बे-लम्बे पत्र प्रकाशित होते रहते हैं। कविता-कहानी का बहस स्तम्भ भी जारी रही, जिसमें बहुत सारे नवोदित तथा स्थापित रचनाकारों ने अपने-अपने मत रखे। लघु पत्रिका अभियान के संदर्भ में भी इस पत्रिका की महत्ती भूमिका रही हैं। यह नई-नई पत्रिकाओं के पते छापती है तथा रचनाकारों के उनसे जोड़ती है। पुस्तकों की समीक्षा भी इस पत्रिका में नियमित होती है।

''प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स'' समाचार पत्र में सीनियर सिटीजनों के मुद्दों को समकालीन विसंगतियों -तकलीफों, उनकी दुःख-दर्द भरी कहानियों को छापा जाता है। इस समाचार पत्र में वरिष्ठजनों (साहित्यकारों) द्वारा सृजित कविता-कहानी, लघु कथाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। यह समाचार पत्र वृद्धजनों का पक्षधर, हमदर्द के रूप में उभरा है।

बच्चों की अंग्रेजी पत्रिका ''इंटेलीजेली'' बच्चों के समस्त

विकास को लेकर उत्साहित है तथा उनके उन्नयन हेतु छपती है। बच्चों को समर्पित एक स्तरीय पत्रिका है।

अरुण तिवारी जी साहित्य के पारखी हैं तथा साथ ही एक खुशमिजाज, गंभीर तथा मितभाषी व्यक्तित्व के धनी हैं। इनके सम्पादकीय में हर बार नया चेहरा बराबर मुस्कुरता दिखता है। यह एक प्रखर पत्रकार तथा एक कुशल सम्पादक है। साहित्य के प्रति इनका असीम श्रद्धाभाव भरा है। एक निस्वार्थ भाव से ओत-प्रोत होकर यह साहित्य की मशाल उठाए हुए हैं। इस कारणवश ही अब असंख्य नवोदित साहित्यकार, जो आज स्थापित तथा चर्चित भी हुए हैं। यह प्रेरणा पत्रिका के माध्यम से भी सम्भव हो पाया है। तिवारी जी में एक विशिष्ठता यह रही है कि वह लेखक का नाम नहीं, काम देखते हैं। रचना में दम है तो वह जरूर छपेगी। यह बिना किसी लाग-लपेट के तथा बिना खेमेबाजी के साफ-सुथरा काम करते हैं। यह किसी भी लालच या प्रलोभन में नहीं आते। यह सच्चे, सरल, धैर्यशील, कर्मठ, साहित्य के पुजारी हैं। न जाने कितने नाम साहित्य आकाश में तिवारी जी के कारण ही चमक फैला रहे हैं। तिवारी जी को इस बात का कोई लोभ या अहंकार नहीं है। वह अपनी साहित्य यात्रा को तपस्या की भाँति लेते हैं। स्वाभिमान, सहजता, मानवता, अहिंसा इनमें खूब भरी है। साधारण तथा श्रेष्ठ जीवन इनकी पहचान है।

प्रेरण पत्रिका के सभी शीर्षक चित्र (मुख्य पृष्ठ पर छपे चित्र) प्रसिद्ध रंगकर्मी संदीप रशिनकर द्वारा बनाए गए हैं, जो पत्रिका की साज-सज्जा बढ़ाते हैं। पत्रिका की छपाई तथा प्रयुक्त कागज भी बढ़िया क्वालिटी का होता है तथा पत्रिका मुद्रण की त्रुटियों से मुक्त रहती हैं। कोरोनाकाल में भी तिवारी ने इस पत्रिका का अंक निकाला था। यही उनका जुझारुपन तथा जिजीविषा है।

अरुण तिवारी जी को कई बार सम्मानित भी किया गया। इन्हें माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, हरियाणा साहित्य अकादमी सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, काव्य केशव सम्मान, डॉ. विजय शिरोडकर सम्मान, मालवा अंचल पत्रकार संघ (झाबुआ, धार, शाजापुर, देवास, इंदौर) एवं राजगढ़ जिला पत्रकार संघ तथा विभिन्न शहरों की अनेक सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा अभिनंदन एवं सम्मान दिये गए।

इन्होंने भारत महोत्सव के अंतर्गत ताशकंद, मास्को, लेलिनग्राम, सोची, कीव तथा यूक्रेन की सौजन्य यात्राएं भी की।

इनका विवाहित जीवन सफल रहा। इनके तीनों पुत्र अंतर्राष्ट्रीय नामी संस्थाओं में कार्यशील हैं तथा श्रेष्ठ जीवन बिता रहे हैं। इनके बड़े बेटे की पुत्री यानी इनकी पोती तनिमा राज्यभर में श्रेष्ठ दस विद्यार्थियों में शामिल रही। आजकल बी.ई. के बाद उच्च अध्ययन के लिए ऑस्ट्रेलिया से विशेष स्कॉलरशिप उसे प्राप्त है तथा वह इस दिशा में अग्रसर है।

अपने 46 वर्षों के दाम्पत्य जीवन का सुख भोगते अरुण तिवारी जी जीवन को सही अर्थों में जी रहे थे तभी 24 सितंबर 2016 को इनकी प्राणप्रिया पत्नी उर्मिला तिवारी का कैंसर की बीमारी से निधन हो गया। पत्नी का यूँ चला जाना, इनके कलेजे पर एक असहनीय चोट थी, लेकिन इन्होंने इतने बड़े सदमे को झेला तथा 'Show must go on' की तर्ज पर 'प्रेरणा' को रोका नहीं छपने से। यही इनकी विशालता का परिचायक है।

मैं तो इनके साथ 1999 से जुड़ा था। एक साहित्यकार कवि/कथाकार के रूप में। लेकिन मैं इनके निकट 2016 के वर्ष में आया जब इनकी पत्नी का निधन हो चुका था। मैं अधिकतर इनसे फोन पर खूब बतियाता हूँ)। अब तो मैं इनको अपना अग्रज (भाई सम्मत समझता हूँ)। कभी इनसे आज तक मिला तो नहीं।

अभी पिछले दिनों मेरे लिखे संस्मरण ''आकाशदीप लौटकर नहीं आता।'' जो मेरी दिवंगत एक मात्र बेटे पर आधारित था। जिसे पढ़कर अरुण तिवारी जी की भी आंखों से आंसु झर-झर झरे थे। कई लोगों/साहित्यकारों ने उसे प्रेरणा में पढ़ा तथा कईओं ने मुझ संग दूरभाष से सम्पर्क साधकर संवेदनाएं भी प्रकट की थी। मैं तिवारी जी की साफगोई स्पष्टवादिता का कायल हूँ तथा इनके जीवटपन को श्रेष्ठ समझता हूँ। मैं यह मानता हूँ। कई लोगों ने तिवारी जी के जीवन से सबक लेकर बहुत कुछ सीखा होगा। इनके सभी सम्पादकीयों में नई ऊर्जा भरी रहती है।

अरुण तिवारी जी उर्मिला जी के निधन के पश्चात प्रेरणा पत्रिका में बराबर लोगों को कैंसर की बीमारी के विषय में आलेख देकर सचेत कर रहे हैं, सजगता ला रहे है उन में। पर्यावरण मुद्दों पर भी आलेख देते रहते हैं। तिवारी जी मानव जाति के उत्थान हेतु स्तुतियोग्य महत्वपूर्ण कार्य करते आ रहे है। यह अब 75 वर्ष के हो जाएंगे। मैं इनकी लम्बी उम्र तथा स्वास्थ्यमय जीवन की कामना करता हूँ तथा चाहता हूँ यह प्रसन्नचित रहें तथा यूँ ही साहित्य सागर को लोगों के मन में प्रवाहित करके उनको ऊष्मा, श्रेष्ठ विचारों से ओतप्रोत करते रहें। ऐसे श्लाका पुरुष उच्चकोटी के सम्पादक, सहृदय व्यक्तित्व के धनी को मेरा शत-शत नमन।

- लेखक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं।
आकाश-कविता निवास, मकान नं. 54, लेन नं. 3, लक्ष्मीपुरम, सेक्टर वी-1, पोस्ट वनतालाब, जिला- जम्मू- 181123 (जम्मू), मो.: 9682566419

■

75 के पार अरुण तिवारी

सौम्यता के साढ़े सात दशक

दिनेश प्रभात
संपादक- गीत गागर

सबसे कठिन है आज के दौर में शालीनता और सौम्यता के साथ जीना। यदि कोई अपने स्वाभिमान में खरोंच आए बिना शान के साथ 75 पार कर जाता है। तो उसे 'योद्धा' से कम नहीं आँका जा सकता। जी हाँ, यह सन्दर्भ हम श्री अरुण तिवारी जी के बारे में ही दे रहे हैं। जैसे ही जीवन का यह संघर्षपूर्ण पड़ाव 'प्रेरणा' के यशस्वी सम्पादक, कुशल लेखक व संवेदनशील हृदय के स्वामी श्री अरुण तिवारी जी ने पूरा किया, सम्पूर्ण सभागार फूलों की खुशबुओं व तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया। कोरोना काल से जूझते हुए सैकड़ों कण्ठ 'तुम जियो हजारों साल' जैसे गीत गाकर मन ही मन थिरकने लगे। इस भाव-प्रवण दृश्य का गवाह बना भोपाल का डी बी मॉल स्थित कोटयार्ड मेरिएट होटल और साक्षी बने उनके वे सारे साथीगण व आत्मीय परिवार, जिनके साथ रहकर वह शतक के तीन चौथाई हिस्से को मुस्कुरा कर पार कर गए। इनमें साहित्यकार, पत्रकार, पड़ोसी, परिजन, स्टाफकर्मी और शहर की सभी सम्मानित हस्तियों के साथ कालोनी वासियों की अच्छी-खासी उपस्थिति थी। खुशी से भरा यह माहौल उस समय अत्यंत भावपूर्ण हो उठा जब अपने उद्‌गार व्यक्त करते-करते श्री अरुण तिवारी अपनी दिवगंत पत्नी

श्रीमती उर्मिला तिवारी जी को याद करके भावुक हो उठे और उनका गला रुँध गया। कोरोना काल का यह सबसे अनुशासित, संयमित, गरिमामय व सादगी-भरा भव्यतम आयोजन था। 4 फरवरी 2021 की शाम आयोजित इस समारोह में मंच पर आसीन थे- श्री मुकेश वर्मा, श्री शशांक व श्री युगेश शर्मा। संचालन का दायित्व निभा रहे थे श्री बलराम गुमास्ता। आत्मीय उद्‌गार, धीमा-धीमा संगीत, खुशियों भरे नृत्य और स्वाद भरा भोजन, जन्मदिवस के इस महासमारोह को अविस्मरणीय बना गए। सच कहा जाए तो यह आयोजन पूर्ण रूप से पारिवारिक था। अरुण जी के तीनों बेटे व बहुओं ने जिस आत्मीयता व आदरभाव से अतिथियों का स्वागत किया, यह उनकी सुसंस्कृत पारिवारिक पृष्ठभूमि का अनुपम उदाहरण है।

मुझे याद आता है वर्ष 2014, जब 'गीत गागर' के एक वर्ष पूर्ण हो जाने पर आयोजित समारोह में श्री अरुण तिवारी जी मुख्य अतिथि के रूप में मंच पर विराजमान थे। अपने संबोधन में उन्होंने जिस तरह प्रभावित किया, वह आज भी राजधानी के श्रोताओं के मानस-पटल पर अंकित है. बरसों से वे 'प्रेरणा' पत्रिका का संपादन कर रहे हैं. उनके एक-एक शब्द से अनुभव बोल रहा था, स्पष्टता टपक रही थी, विद्वत्ता झलक रही थी। सामान्यत: वे सार्वजानिक समारोहों व मंचीय मोहों से बचते रहे हैं. लेकिन उस दिन उनके धारा प्रवाह और सुलझे हुए उद्बोधन ने अहसास कराया कि झीलों का शहर साहित्यिक विभूतियों से भी भरपूर शहर है. हर उत्कृष्ट मंच को श्री

शालीनता के पिचहत्तर वर्ष

बहुत मुश्किल होता है उस व्यक्ति पर लिखना, जो अधिकतर मौन रहता है या बहुत कम बोलता है और जब बोलता है तो ओठों से कम, आँखों से ज्यादा बोलता है। अरुण तिवारी जी 75 पार कर रहे हैं और कठिनाई से मैं गुजर रहा हूँ। मुझे उन पर कुछ लिखने के लिए कहा गया है। वे वाचाल होते, तेज तर्राट होते, अहंकारी होते, पैंतरेबाज होते, गुटबाज होते तो मेरी कलम उतनी ही रफ्तार से दौड़ती जितनी रफ्तार से एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर की उँगलियाँ लैपटॉप के कीबोर्ड पर दौड़ती हैं। साहित्यकारों में यदि कोई साधु हो, संपादकों में यदि कोई विश्वामित्र हो और बरसों-बरस से जो तपस्या में लीन होकर 'प्रेरणा' जैसी शुद्ध साहित्यिक पत्रिका का मंत्र फूँकता हो, ऐसे प्रबुद्ध मनीषी पर लिखना निश्चित ही मुझ जैसे अदने रचनाकार के लिए चुनौतीपूर्ण है।

परिचय उनसे मेरा बरसों से है लेकिन लगभग 6 वर्षों से मैं उनके बहुत निकट हूँ। मेरी पत्रिका 'गीत गागर' उन्हीं के निर्देशन में, उन्हीं के कार्यालय से सज-सँवर रही है. कभी-कभी सोचता हूँ एक बड़े पद से सेवानिवृत्त होने वाला सरकारी अधिकारी भला इतना अधिक रचनात्मक और साहित्यिक कैसे हो सकता है? उनके पास घण्टों बैठने पर मैं जिन चर्चाओं व मंत्रणाओं से गुजरता हूँ वे मेरे जीवन के बेहद खूबसूरत पल होते हैं। उनकी विनम्रता, उनकी शालीनता, उनकी सहजता, उनकी सौम्यता इस सदी के आचरण से तो बिल्कुल मेल नहीं खाती। उनका मितभाषी और मृदुभाषी होना उन संस्कारों का जीवित होना है जो हमारी भारतीयता की पहचान है। आज वे शतक का तीन चौथाई हिस्सा (75 वर्ष) पार कर रहे हैं. लोग इसे 'अमृत महोत्सव' नाम दे सकते हैं लेकिन इस जीवट समय में उम्र का यह पड़ाव हिमगिर के शिखर छूने से कम नहीं है। वे बरसों हम पर प्यार लुटाते रहें और शतक को पीछा छोड़ते हुए आगे बढ़े, इन्हीं कामनाओं के साथ मैं उन्हें ऐतिहासिक जन्मदिन की हार्दिक बधाई देता हूँ।

अरुण तिवारी जी की मेधा व वक्तव्य शैली का लाभ उठाना चाहिए. मेरे मंच का गौरव बढ़ाने के लिए मैं आज भी उनका कृतज्ञ हूँ, हमेशा रहूंगा।

ज़िदगी का बहुत खूबसूरत, महत्वपूर्ण और रोमांचक पड़ाव होता है 75 वर्ष पूरा कर लेना. कठिन समय की इस दुर्लभ उपलब्धि के लिए मैं श्री तिवारी जी को दिल की गहराइयों से बधाई देता हूँ और उनके शतायु होने के साथ-साथ, उनके स्वस्थ व सार्थक जीवन की कामना करता हूँ।

- लेखक वरिष्ठ कवि हैं। 'काव्यधारा' 56, सम्राट नगर, अशोका गार्डन, भोपाल-462023, मो.: 09926340108

■

सृजन का समकालीन परिदृश्य और अरुण तिवारी

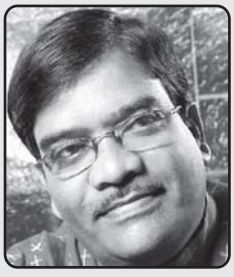

लक्ष्मीनारायण पयोधि

एक चिंतक अपने समकालीन सृजन-परिदृश्य को देखना चाहता है।वह दृष्टा की भूमिका में है।दृष्टा,जो गतिमान समय का साक्षी है।वह परिदृश्य में उपस्थित प्रत्येक वैचारिक क्रिया-कलाप और सर्जना की गतिविधियों को साक्षीभाव से देखता भी है।एक सर्जक के अलावा प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'प्रेरणा' के संपादक की भूमिका में अरुण तिवारी जी दृष्टा की तरह ही सामने आते हैं।

अध्यात्म में जाग्रत चेतना को दृष्टा माना जाता है।सुप्त चेतना वहाँ विचारक है। विचारक ही मन है।दृष्टा निर्विकार यानी विचार उत्पन्न करने की अवस्था से परे होता है। विचार चेतना का वह अंश है,जो विचारक से अलग नहीं। दृष्टाभाव विचार से परे है और वह इन सबको देख सकता है। अब मैं इस आध्यात्मिक सिद्धांत के आलोक में 'प्रेरणा' को चेतना के सुप्त अंश,यानी विचार और विचारक तथा अरुण जी को चेतना के शेष जाग्रत अंश,यानी दृष्टा की भूमिका में देख रहा हूँ और उसका आधार है, सद्य: प्रकाशित उनकी पुस्तक 'सृजन का समकालीन परिदृश्य'।

मैंने अरुण जी को दृष्टा के रूप में इसलिये प्रस्तुत किया है कि स्वयं विचारक और सर्जक होने के बावजूद उन्होंने न केवल 'प्रेरणा' के रूप में एक सशक्त विचार-मंच की स्थापना की,बल्कि उसके माध्यम से वे समकालीन सृजन-परिदृश्य को साक्षीभाव से देखते-सहेजते भी रहे। इस पुस्तक में 'प्रेरणा' में प्रकाशित वे साक्षात्कार संकलित हैं,जिनके माध्यम से हमारे समय के दिग्गज शब्द-साधक श्री नरेश मेहता, श्री कमलेश्वर, डॉ. धनंजय वर्मा, प्रो. कमला प्रसाद और श्री राजेश जोशी के समकालीन साहित्यिक परिदृश्य पर बेलाग मंतव्य सामने आये हैं। ये पाँचों हिन्दी साहित्य के ऐसे रत्न हैं,जिनकी चमक का उल्लेख किये बिना स्वातंत्र्योत्तर कविता, कहानी और आलोचना साहित्य का प्रामाणिक इतिहास नहीं लिखा जा सकेगा।

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि यह पूर्व निर्धारित प्रश्नोत्तर पर आधारित नियोजित विचारों का संकलन नहीं है। सभी प्रश्न उत्तरदाता विद्वान की रचना-प्रकृति को केन्द्र में रखकर अनायास पूछे गये हैं और वैचारिक अनुष्ठान में शामिल विद्वानों द्वारा भी अपने स्वभाव,व्यक्तित्व और चिंतन के अनुरूप त्वरित उत्तर दिये गये हैं। बातचीत की इसी पद्धति और विशेषता के कारण ये साक्षात्कार समकालीन सृजन-परिदृश्य के प्रामाणिक दस्तावेज़ बन गये हैं।

मैंने अरुण जी को दृष्टा इसलिये भी कहा है कि इसमें शामिल विद्वानों से उन्होंने अकेले बातचीत नहीं की। पुरोधा कथाकार कमलेश्वर जी से संवाद के अलावा वे प्राय: संयोजक की भाँति अन्य संवादकर्त्ताओं साथ रहे हैं। बातचीत प्राय: अन्य समकालीन सर्जकों ने ही की है। मसलन : प्रख्यात आलोचक डॉ. धनंजय वर्मा से बातचीत में जहाँ उनके साथ थे,प्रखर कवि श्री बलराम गुमास्ता तो ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित वरेण्य कवि श्रीनरेश मेहता से संवाद में वे डॉ. धनंजय वर्मा और कवि-कथाकार ओमप्रकाश मेहरा के साथ थे। सुप्रसिद्ध कवि श्री राजेश जोशी से विमर्श उन्होंने कवि-कथाकार श्री अमिताभ मिश्र और बलराम गुमास्ता जी के साथ मिलकर किया और प्रतिष्ठित आलोचक प्रो.कमला प्रसाद से बातचीत में उनके साथ में शामिल थे श्री बलराम गुमास्ता।

'सृजन का समकालीन परिदृश्य' अपने समय के इन मनीषियों के परस्पर वार्तालाप और विचार-विमर्श के ज़रिये साहित्य से संबंधित बहुत सारे ज्वलंत प्रश्नों के उत्तर खोजने का एक सार्थक रचनात्मक उपक्रम सिद्ध हुआ है। इसमें साहित्यिक गुटबाज़ी, विचारधाराओं का द्वन्द्व, राजनैतिक चालबाज़ियाँ, पुरस्कारों की जुगाड़, आत्ममुग्धता, आत्मप्रचार,सत्ता की चापलूसी जैसे अनेक प्रासंगिक मुद्दों पर खुलकर चर्चा की गयी है।

पिछले 23 वर्षों से निरंतर प्रकाशित होने वाली यशस्वी पत्रिका 'प्रेरणा' के संपादक अरुण तिवारी जी का योगदान एक विचारवान शब्दशिल्पी के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है,क्योंकि इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त अपने विचारों को ही प्राय: उन्होंने पुस्तकों का रूपाकार दिया है। अरुण जी के जीवन का अमृत वर्ष चल रहा है।मैं उनके स्वस्थ, सक्रिय यशस्वी दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

- लेखक वरिष्ठ कवि, गीतकार, कहानीकार एवं प्रतिष्ठित नाटककार हैं।।
स्प्रिंग वैली, कटारा हिल्स, भोपाल
मो.नं. 8319163206

छोटे बयान का बड़ा रचनाकार : अरुण तिवारी

मोहन सगोरिया

पहली मुलाक़ात अक्सर ज़ेहन में चस्पॉ हो जाती है। वह पहली मुलाक़ात अरुण तिवारी जैसी शख़्सियत से हो तो फिर ऐसे दर्ज होती है जैसे इतिहास का कोई सफ़ा हो। सन् 2004 का ऐसा ही एक सफ़ा है जब अरुण जी से भेंट हुई थी। मैं उन दिनों साहित्य अकादमी में था और साक्षात्कार के संपादन से जुड़ा था। थोक में रचनाएँ आती थी उन्हें कविता, कहानी, संस्मरण, आलोचना आदि श्रेणी में रखना होता है– फिर उनका अध्ययन। जो रचनाएँ छापने लायक नहीं होती थी उन्हें पहले ही विचाराधीन फाइल में रख दिया जाता था। इन रचनाओं में कुछ तो बड़ी मज़ेदार होती थी। लोग ट्रकों पर लिखी जाने वाली शायरी तक भेज देते थे जिनमें बगीचे में बगीचा, बगीचे में बंदर/ मेरा साजन रहता है मेरे दिल के अंदर। जैसी रचनाएँ भी आती हैं और उन्हें पढ़कर हम मनोरंजन कर लेते थे। मेरी लगभग यह दिनचर्या बन गई थी कि ऐसे मज़ेदार पन्नों को रामनिवास झा, श्री शर्मा और नरेश सिंह को पढ़कर सुनाता। खूब हास्य विनोद चलता।

एक दिन इसी तरह के हास्य विनोद वाले वातावरण में एक सुंदर्शन व्यक्ति ने प्रवेश किया। उन्होंने मेरा नाम पूछा जिस सलीके से उन्होंने मेरा नाम पूछा वह पूरी तवज्जो और इज़्ज़त की बख्शीश थी। मैं उन्हें अपने चेम्बर में ले गया। उन्होंने अपना नाम बताया– अरुण तिवारी। यह भी बताया कि कवि बलराम गुमास्ता के मार्फत आए हैं। मैं आश्चर्यजनक खुशी से भर गया। गुमास्ता जी से इनके विषय में बात हुई थी और तय यह था कि मैं तिवारी जी से मिलूंगा। मेरे लिए यह सरप्राइज बहुत बड़ा था।

अरुण तिवारी जी 'प्रेरणा' का संपादन और प्रकाशन करते हैं, यह बात गुमास्ता जी ने बताई थी और यह भी कहा था कि मैं कुछ सहयोग करूं। जाहिर है यह सहयोग संपादन संबंधी था पत्रिका में कुछ लिए, प्रूफ और रिव्यू करना। प्रेरणा तब तक मैंने देखी नहीं थी। अरुण जी दो अंक अपने साथ लाए थे। मैंने जब वे अंक देखे तो पहले राय यही बनी कि एक अकेला आदमी कितनी मेहनत करता है। कविता, कहानी संस्मरण, समीक्षा, लेख और पुस्तक–प्राप्ति तक के कॉलम उसमें थे। पाठकीय–पत्रों का स्पेस अधिक था। कुछ स्तंभ ऐसे थे जिसमें सामग्री अधिक होने की वज़ह से फोंट साइज छोटे कर दिए गए थे ताकि सीमित पृष्ठों में सब प्रकाशित हो जाए। यही समावेशी दृष्टि जिसने मुझे पहली मुलाक़ात में प्रभावित किया।

'प्रेरणा' को नियमित देखने पर मैंने जाना कि अरुण जी का संपादन बहुत मुखर नहीं है। वे मंथर गति और पर्याप्त धैर्य से कार्य करते हैं। संपादक का 'स्टेमना' जिसे कहते हैं वह उनके बढ़ चढ़कर है। लेखक के साथ वे पाठक को अधिक तरजीह देते हैं। मैं पाया कि प्रेरणा के हर अंक में जो पुस्तक परिचय वाला स्तंभ है उसमें प्रकाशक और पुस्तक की तस्वीर जरूर होती है। अपनी ओर से वे चर्चा भी कराते हैं– इस तरह नए लोगों को 'प्रमोट' करने का एक बड़ा काम तो वे सहज ही करते हैं। अपने संपादन में उन्होंने कई महत्वपूर्ण अंक निकाले जिनमें साहित्य ही नहीं इतिहास और चिकित्सा जैसे विषयों को भी पर्याप्त स्थान दिया।

अरुण जी का संपादक व्यक्तित्व बड़ा है किंतु उन्होंने कभी स्वयं को प्रचारित नहीं किया। उनमें संकोच इतना है कि बीसों वर्ष तक मुझ जैसे टोह लेने वाले और जिज्ञासु व्यक्ति को भी पता नहीं लगा कि वे कविता–कहानी लिखते हैं। पिछले दिनों उनकी दो कहानियाँ पढ़ी। मुझे हैरत हुई कि किसी पत्रिका ने उन्हें रेखांकित क्यों नहीं किया। उनकी कहानी 'अंतहीन..... शुरुआत' और 'मुखौशे' पढ़कर लगा कि वे कुछ अर्थों में बिलकुल अलग कथाकार हैं। उनकी कहानी पर बात करना चुनौती पैदा करना है। उनकी कहानियों में जो शिल्पगत अनुशासन और वैचारिक आवारगी है वह उन्हें अपने समकालीन कथाकारों बरक्श खड़ा करती है। कहानियों में जो पैटर्न की सादगी है उससे उन्हें ख्याति पाने में कोई दिक्कत नहीं किंतु वे ऐसा करते नहीं हैं। कहा जा सकता है कि अपने अलक्षित और अचर्चित रहे आने का रोना वे नहीं रोते जबकि सर्वहारा जीवन की विद्रूपता, संस्कार संघर्ष उनकी रचनाओं

में संस्थान्वेषक की तरह झलकता है। संयोग और दुर्योग में वे तटस्थ रहते हैं इसलिए आत्मगत सत्य और भोगे जन यथार्थ का तरतीब यहाँ देखा जा सकता है। उनका शिल्प इतनी नवीनता लिए है कि जीवन और मृत्यु के संदर्भ में वे नश्वरता की उपेक्षा करते हैं। उनकी कहानियों में वैचारिक प्रतिबद्धता दीखती है किंतु उसका वर्गीकरण नहीं है। वे विश्व रूपों का कोलाज न बनाकर सीधी सच्ची बात करते हैं। उनकी कहानी में गृहस्थ जीवन और संबंधों का एक चित्र देखें–

''उसको अखिलेश शादी के बाद पहली बार कुछ अपरिचित लगे थे। इस घटना के बाद घूमना–फिरना प्राय: बंद–सा हो गया था। एक कारण और भी था इसके पीछे। उसके आने के बाद यहाँ के खर्चे काफी बढ़ गए थे और अखिलेश हमेशा की तरह घर पैसे नहीं भेज पा रहे थे। हालाँकि दोनों ही इस बारे में सोचते थे, कुछ न कुछ भेजने का प्रयत्न करते। घर से पहले सामान्य ढंग से पत्र आते रहे थे। घर की आवश्यकताओं को बनाकर उसकी जिम्मेदारी बताई जाती थी। पर पिछले तीन चार पत्र व्यंग्य से, कुछ गुस्से से आए थे, पैसा न भेजने का कारण आशी को ठहराया जाने लगा।'' यह स्थिति भारतीय मानस या परिवार की स्थायी स्थिति है। अब पत्र नहीं लिखे जाते। किंतु जब पत्र लिखे जाते थे– तब ऐसी ही परिस्थितियां होती थीं। अरुण जी की कहानी में जो समय दर्ज होता है वह जड़ न होकर गतिशील है। यही मूल भाव है कि हम समय को रोक नहीं सकते वह निरन्तर है, रहेगा। अरुण जी कहानी शैली में अपनी बात करते हैं, नाटकीय और कहानीयत उनके गल्प की मूल शर्त है।

फेसबुकिये लेखकों की तरह टी आर पी बढ़ाने को आमादा इस युग में अरुण तिवारी जैसे संपादक, कथाकार कवि गुपचुप अपना सृजन कर रहे हैं। यह हैरत में डालता है और सुखद अनुभूति भी देता है। उन्होंने अपनी ओर से अपने कामों के लिए कोई बयान नहीं दिया जो किया वही उनका बयान है। उनका जो बयान है वह कहे गए रूप में बहुत छोटा है, लेकिन बात बहुत दूर तक जाती है।

– लेखक प्रतिष्ठित कवि एवं संपादक– इलेक्ट्रॉनिकी हैं।
404, ए–7 फॉरच्यून सौम्या हेरिटेज, होशंगाबाद रोड, भोपाल–462 033
मो. 9630725033

प्रेरणा पब्लिकेशन

प्रेरणा पब्लिकेशन से प्रकाशित पुस्तकें यहां पर भी उपलब्ध हैं –

amazon Flipkart mysubs

प्रेरणा पब्लिकेशन की ई–बुक्स (e-Books) पर उपलब्ध हैं –

Google books Google Play Books MAGZTER

आत्मप्रशंसा से विमुख सर्जक : अरुण तिवारी

डॉ. राजेन्द्र परदेसी

आज के आत्म प्रचार के युग में कोई साहित्य सर्जक जो एक चर्चित पत्रिका का संपादक भी है। वह अपने लेखन की चर्चा करने के स्थान पर प्रेरणा जैसी त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से नये से नये रचनाकार के प्रोत्साहन हेतु उसे सम्मानजनक स्थान पत्रिका में देने के साथ ही वरिष्ठतम साहित्यकारों की स्तरीय रचनाओं को पत्रिका में स्थान देकर उसके स्तर के साथ कभी कोई समझौता नहीं किया है।

प्रिंट मीडिया के समानान्तर सोशल मीडिया के उदय के साथ आत्म प्रशंसा से पीड़ित सर्जकों की सोच में बहुत बड़ा परिवर्तन दृष्टि गोचर होता है। जहाँ प्रिंट मीडिया में जाने के पहले कहीं कुछ छपता था तो वह एक सम्पादन प्रक्रिया से होकर अवश्य गुजरता था। तब पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत होता था।

वही सोशल मीडिया ने सम्पादन प्रक्रिया को ही समाप्त कर दिया। परिणाम हुआ, आज का लेखक स्वयं ही हर रचना का सर्जक, आलोचक और प्रशंसक बन गया है। ऐसे नयी पीढ़ी के सामने वास्तविक और छद्म लेखक की पहचान करना मुश्किल हो गया। कौन मौलिक सर्जक है और कौन कट-पेस्ट के सहारे लेखक दिखने का प्रयास कर रहा है।

ऐसे में आत्म प्रचार के युग में अरुण तिवारी जैसे साहित्य के मौन साधक तक नयी पीढ़ी कैसे पहुँच सके आज के युग में एक समस्या अवश्य बनती जा रही है। मेरे जैसे उनके अपने को भी उनकी गम्भीरता और महानता को सहजता से जानने और परखने में कई बार संकट हो जाता है। जो प्रेरणा जैसी राष्ट्रीय स्तर के पत्रिका का सालों से सम्पादन के साथ-साथ कहानी जैसी विधा के एक सशक्त हस्ताक्षर भी हैं। यह बात मेरे ऐसे उनके खास दोस्तों को सालों बाद पता चली। वह भी एक संयोग था कि जब मैं भारत-नेपाल के कथाकारों को लेकर एक संकलन निकाल रहा था। उसी संदर्भ में अरुण तिवारी से भी चर्चा हुई तब उन्होंने ही बताया कि वह भी कहानी लिखते हैं और उनकी एक कहानी संग्रह भी आ चुका है। अपने संकलन में उनकी कहानी को भी लेने का मुझे सौभाग्य मिला।

अरुण तिवारी से परिचय तो सालों से रहा, पत्र और फोन से आपस में वार्ता भी होती रही, पर मुलाकात नहीं हुई थी। संयोग ही था एक बार हम दिल्ली में थे और वहीं अरुण जी का फोन आया तो मालूम पड़ा कि वह भी दिल्ली के पास ही गुड़गाँव में बेटे के पास आये हैं। उसी समय हिसार के हमारे मित्र और वरिष्ठ साहित्यकार ओम प्रकाश कादयान गुड़गाँव में ही मेरे सम्मान में एक आयोजन किया था।

अवसर का लाभ उठाते हुए अरुण जी को भी उसमें सम्मिलित होने का अनुरोध किया तथा कादयान को मेरे साथ अरुण तिवारी को भी सम्मानित करने का प्रस्ताव दिया। जब सब अपने ही थे तो कहीं रुकावट की बात ही नहीं। कार्यक्रम में अरुण जी आये वहीं उनका साक्षात्कार भी हुआ। मेरे संग गुड़गाँव के साहित्यकारों से उनका परिचय हुआ। साहित्यकारों का यह मिलन समारोह एक यादगार बन गया है।

आज जब भी अव्यवसायिक पत्रिकाओं का कहीं चर्चा होती है तो प्रेरणा और उसके सम्पादक अरुण तिवारी की चर्चा अवश्य करता हूँ। इसका मेरे पास ठोस कारण है। प्रेरणा के किसी अंक को देखे आप तो यह बिल्कुल आभास नहीं होता कि इसका सम्पादक एक चर्चित रचनाकार भी है। क्योंकि रचनाओं के चयन और उनके प्रकाशन के बीच उसका रचनाकार रूप कहीं नहीं। झलकता, दिखता है तो एक गम्भीर और निष्पक्ष चिंतन के रूप में सम्पादक का रूप, जबकि अधिकांश ऐसी पत्रिकाओं में पक्षपात और आत्म प्रशंसा की बीमारी का लक्षण साफ दिख जाता है।

अरुण तिवारी उन श्रेणी के साहित्य सर्जक और सम्पादक हैं जिनके लिए आत्मप्रशंसा से अधिक सृजन को सम्मान देने की होती है : नयी पीढ़ी के लिए वह मात्र प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी हैं। वह शतायु हों यही कामना है।

- लेखक वरिष्ठ रचनाकार हैं।
136, मयूर रेजिडेन्सी, फरीदी नगर, लखनऊ-226015, मो. 9415045584

■

अरुण तिवारी : अप्रतिम व्यक्तित्व

विवेक सत्यांशु

'प्रेरणा समकालीन लेखन के लिए' के संपादक श्री अरुण तिवारी जी उन थोड़े से लोगों में एक हैं जो कुछ भी होने से पहले एक अच्छे मनुष्य हैं। एक भला मानुष जिसे हम कह सकते हैं। एक उदात्त शालीनता और गरिमा आपके व्यक्तित्व का विशिष्ट अंग है।

'प्रेरणा' के माध्यम से अरुण तिवारी जी ने साहित्यिक पत्रकारिता को नया आयाम दिया, जिसके लिए आप सम्मानित भी हो चुके हैं। प्रेरणा पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय का डॉ. विजय शिरोढोणकर सम्मान अरुण तिवारी जी को दिया गया। इसके पूर्व भी ब्रजलाल द्विवेदी अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता स्मृति सम्मान भी आपको मिल चुका है।

श्री अरुण तिवारी जी की हीरक जयंती 4 फरवरी 2021 को थी। उनका जन्म 4/2/1946 को सागर में हुआ था। अरुण तिवारी जी श्रेष्ठ कहानीकार, कवि, लेखक, विचारक और गम्भीर समीक्षक हैं। तिवारी जी की कहानियाँ 'लहर' जैसी अपने समय की श्रेष्ठ पत्रिका में छपती रही हैं। ये बिना किसी शोर शराबे और आत्म-विज्ञापन कराये चुपचाप अपना सृजनात्मक कार्य करते रहे। 'प्रेरणा' पत्रिका के माध्यम से भी आपने महत्वपूर्ण काम किया है। इस पत्रिका में स्थापित रचनाकारों की अपेक्षा नये हस्ताक्षर को आपने प्रमुखता से छापा। इसके कई दुर्लभ विशेषांक भी आपने निकाला है। जैसे प्रेरणा के कुछ चर्चित एवं स्मरणीय विषय केन्द्रित अंक आपने निकाला है जैसे (1998) निराला जन्मशती वर्ष्ज स्मरण अंक (2009) कहानी अंक (2009) कविता अंक (210) नारी अस्मिता अंक-एक (2010) नारी अस्मिता अंक (2011) मुक्तिबोध जयंती अंक (2012) पुस्तक अंश (2013) अभिमन्यु अनंत (2013) वरिष्ठ नागरिक अंक-9 (2013), वरिष्ठ नागरिक अंक-2 (2014) प्रेमचंद स्मृति अंक (2016) लघु उपन्यास अंक (2014), विश्व हिन्दी सम्मेलन (2015), पर्यावरण विशेष (2016), प्रेमशंकर रघुवंशी स्मृति (2017), मुक्तिबोध स्मृति अंक (2017), भगवत रावत (2017), समकालीन ग़ज़ल का स्वरूप (2018), पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकार धनंजय शर्मा (2018), कमल किशोर गोयनका (2018), पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकार (जनवरी-मार्च 2021) नवीनतम अंक

मृत्यु के बाद तो रचनाकारों पर बहुत से अंक निकलते हैं, किंतु जीते जी पचहत्तर पार सृजनरत रचनाकारों पर आपने 'प्रेरणा समकालीन लेखन के लिए' अंक (जनवरी-मार्च 2021) निकाला है जिसमें रामदरश मिश्र, रमेश कुंतल मेघ, सूर्यकांत नागर, रमेश दवे, कृष्णा अग्निहोत्री, रामनिहाल गुंजन, राधेलाल विजघावने, रमेशचन्द्र शाह, विजय बहादुर सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रदीप पंत, प्रमोद त्रिवेदी,ख सूर्यवाला, रूपदेव गुण, चित्रा मुदगल। रचे हुए रचनाकारों पर भी दूसरे खण्ड में निकालने की तिवारी जी की योजना है। इसकी संपादकीय में आपने लिखा है- ''अध्ययन में आए आंकड़ों से इतर भी ऐसे व्यक्ति हैं जो 60 वर्ष की उम्र ही नहीं बल्कि 75 वर्ष की उम्र पार कर भी सक्रिय हैं व सृजनात्मक कार्य कर रहे हैं। उनकी जिजीविषा को साधुवाद देते हुए यही कहा जा सकता है कि सकारात्मक सोच और कुछ कर गुजरने की तमन्ना उनमें नया जोश ही उत्पन्न नहीं करती वरन एक ऐसी ऊर्जा का प्रादुर्भाव करती है जो उन्हें सृजनात्मक कार्य करने को प्रेरित करती है और वे तन्मयता से कर रहे हैं। यह अंक उन्हीं ऊर्जावान रचनाकारों को समर्पित है जिन्होंने अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण कर लिये हैं और अभी भी लेखन कार्य में सक्रिय हैं।''

कोरोना काल में जबकि बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों की पत्रिकायें बंद हो गयीं, या आनलाइन हो गयीं, वैसे चुनौतीपूर्ण समय में भी आप 'प्रेरणा' निकालते रहे। आपकी संपादकीय स्वतंत्र सर्जनात्मक लेख जैसे होते हैं। आपकी संपादकीय के संग्रह भी किताब रूप में प्रकाशित है। वास्तव में यह सामान्य संपादकीय नहीं है, पिछले 23 वर्षों में समय-काल के अनुसार लिखे गये ये सर्जनात्मक लेख की तरह है। इन संपादकीयों से अरुण तिवारी जी की जागरूकता और अध्ययनशीलता का भी पता चलता है, एवं इनकी साहित्यिक

पत्रकारिता का भी पता चलता है।

श्री अरुण तिवारी जी की अभी प्रकाशित पुस्तक- 'सृजन का समकालीन परिदृश्य' में समकालीन पाँच लेखकों से लिए गये साक्षात्कारों का संकलन है। ये लेखक हैं- धनंजय वर्मा, कमलेश्वर, नरेश मेहता, राजेश जोशी और कमला प्रसाद। लेखक के अनुसार यह नितांत अनौपचारिक रूप से हुई बातचीत है जिसके लिए पूर्व में कोई तैयारी नहीं की गई। इस ग्रंथ में पाँचों लेखक प्रतिष्ठित हैं तथा अपनी पहचान रखते हैं। ये सभी प्रगतिशील लेखक संघ के सदस्य रहे हैं यद्यपि इनमें से कुछ ने मोह भंग होने के बाद 'प्रगतिशील लेखक संघ' से स्वयं को अलग कर लिया था। सबसे पहले धनंजय वर्मा से लिया साक्षात्कार है और बहुत ही साफगोई से सवाल-जवाब हुए हैं। वे मानते हैं कि वे आज भी मार्क्सवादी हैं, लेकिन उन्होंने माना कि उनका 'प्रगतिशील लेखक संघ' से मोह भंग हुआ, क्योंकि वहाँ लेखन, लेखन की प्रतिष्ठा या लेखन की इज्जत, उसका मूल्य और लेखक के व्यक्तित्व का सम्मान दोयम दर्जे का है और अन्य बातें महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के समकालीन परिदृश्य से पाँच लेखकों के जीवन, अंतर्मन, रचना संसार तथा सर्जनात्मक चिंताएँ एवं सरोकारों से हमारा परिचय करा कर हमारे ज्ञान के परिदृश्य को विस्तृत किया है और लेखकों की आत्म स्वीकृतियों से उनके अज्ञात तथ्यों की जानकारी पाते हैं।

'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य' संग्रह में अरुण तिवारी ने साहित्यिक पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास को प्रस्तुत किया है जो महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, निराला, प्रसाद तथा बाद के साहित्यकारों ने स्थापित किया है।

'पहाड़ियों की पगडंडियों से शहर में' अरुण तिवारी की कविताएँ गहरे अर्थबोध से संपृक्त हैं। इनकी कविताएँ गहरे समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति रही है। इनकी कविताएँ यथार्थ और संवेदना से संपृक्त हैं, जिनमें मानवीय-बोध की गरिमा है। अरुण तिवारी जी की कहानियों में आसपास का सामाजिक संसार उसकी धड़कनें और सच्चाई है। इनमें जिजीविषा, आस्था और सुख-दुख है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री अरुण तिवारी जी के व्यक्तित्व के अनेक आयाम हैं, जो उनके साहित्य में उद्घाटित होते हैं। 'प्रेरणा समकालीन लेखन के लिए' हिंदी की एक अनिवार्य पत्रिका है जो वे सीमित साधनों से निकाल रहे हैं।

श्री अरुण तिवारी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरण करते हुए मैं उन्हें 'शतं जीवेति' की शुभकामनाओं के साथ सृजनशील बने रहने की शुभकामना इस भाव से करता हूँ-

'मैं न अभी मरने वाला हूँ
मर-मर कर जीने वाला हूँ

- लेखक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं।
14/12, शिवनगर कालोनी, अल्लापुर, इलाहाबाद-21100
मो.: 7068327987

दरख्त पर चिड़िया

(कविता संग्रह)

राधेलाल विजघावने
ई-8/73, भरत नगर, शाहपुरा, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462039, मो.09826559989

पृष्ठ : 180
मूल्य : 190/-
प्रकाशक : प्रेरणा पब्लिकेशन, देशबंधु भवन, प्रथमतल,
26-बी, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-1,
भोपाल (म.प्र.) 462011, टेलीफोन : 0755-4940788
ई-मेल : prernapublicationbpl@gmail.com

75वें सोपान पर कदम ! अरुण तिवारी

भँवरलाल श्रीवास

भोपाल शहर से प्रकाशित अपने तरह की देश की प्रतिष्ठित पत्रिका ''प्रेरणा समकालीन लेखन के लिए'' और ''प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स'' के प्रधान सम्पादक श्रद्धेय श्री अरुण तिवारी जी का जन्म 4 फरवरी 1946 को सागर में हुआ आपने अपने जीवन के 75 सुखद बसंत का आनंद और गौरवपूर्ण जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त करा आज हम सब इस उत्सव पुरुष का अमृत–महोत्सव मना रहे हैं। ''साधौ शबद साधना कीजै'' ऐसे अक्षर पुरुष तिवारीजी ने हिन्दी को ही अपनी पत्रकारिता का शब्द सृजनशीलता का गौरवशाली माध्यम बनाया तथा पत्रिका 'प्रेरणा' के द्वारा आपने 23 वर्षों की शब्द साधना की। हिन्दी में जिन विधाओं पर गंभीरता से कार्य किया और पत्रिका में स्थान दिया उसमें आलेख, कहानी, उपन्यास अंश, लघुकथा, कविता, गजल, विज्ञान, फिल्म पुस्तक चर्चा, रपट, चिकित्सा, संस्मरण, अपनी बात में प्रेरणादायी निष्पक्ष संपादकीय सहित साक्षात्कार के साथ 'कला समय' जैसी तमाम दर्जनों लघु पत्रिकाओं को 'प्रेरणा' में सचित्र परिचय के साथ प्रकाशित कर पाठकों तक, राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने का पुण्यदायी कार्य करके, पत्रिकाओं का साक्षात्कार कराना, विशेष सराहनीय कार्य मैं मानता हूँ जो शायद प्रेरणा इस कार्य को करने वाली इकलौती पत्रिका कहूं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

इसके अलावा तिवारी जी की प्रकाशित पुस्तकों में साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य, स्मृतियों के शिलालेख, अपनी बात, सृजन का समकालीन परिदृश्य, पहाड़ों की पगडंडियों से शहर में (कविता संग्रह) हैं। इसके साथ ही प्रकाशनाधीन पुस्तकें हैं मुखौशे, स्मृतियों के झरोखे से समकालीन गजल का स्वरूप इत्यादि। आपको कई सम्मानों से भी नवाज़ा गया जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, साहित्य गौरव सम्मान, अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार के साथ ही कई संस्थाओं द्वारा आपका अभिनंदन एवं सम्मान किया गया।

यह हिन्दी भाषा के प्रति किया गया सम्मान है। भाषा मनुष्य के बीच संवाद का जरिया है। भाषा और उसमें अन्तर्निहित शब्दों को बहुत लम्बी यात्रा से गुजरना होता है। तब वह भाषा अभिव्यक्तिक्षम हो पाती है। स्वभावत: मनुष्य का संस्कार उसकी मातृभाषा से ही पोषित एवं विकसित होता है। इसलिये मातृभाषा को मनुष्य के बुनियादी सोच की भाषा माना जाता है। संभवत: इसीलिए इस विषय पर सहमति है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए।

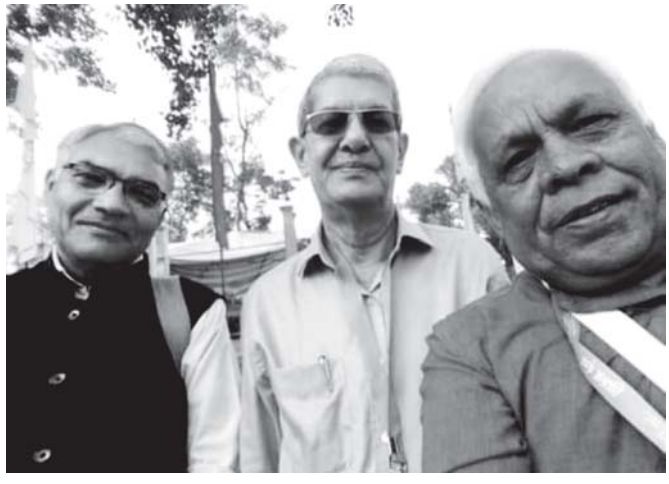

माला में चाहे मोती गुम्फित हो चाहें फूल उन्हें संभालने का कार्य सूत्र ही करता है, जिसके टूटने पर बहुमूल्य और सुन्दर सब धूल में बिखर जाता है। यह सूत्र वाक्य महादेवी वर्मा का यह संदेश देता है कि सूत्र रूपी 'प्रेरणा' पत्रिका एक माला का काम लेखक और पाठक के बीच की कड़ी बनकर कर रही है इस कार्य के लिये वे साहित्य जगत में सबके प्रिय लेखक, संपादक और अच्छे व्यक्तित्व साबित होने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं ।

आज अवसर है जब हम शब्द सृजनशीलता के सर्जकों को स्मरण करें तो याद आते हैं। डॉ. प्रभाकर माचवे, रामनारायण उपाध्याय, श्रीकृष्ण सरल, गिरिजा कुमार माथुर, नरेश मेहता, हरिशंकर परसाई, हरिनारायण व्यास, मुकुट बिहारी सरोज, आचार्य

राममूर्ति त्रिपाठी, विद्यानिवास मिश्र, श्रीकान्त जोशी, श्रीकान्त वर्मा, शरद जोशी, दुष्यंत कुमार, नईम, राजेन्द्र माथुर, प्रभाष जोशी, मदनमोहन जोशी, भगवत रावत जैसे साहित्यकार, पत्रकार, संपादकों की लम्बी श्रृंखला प्रेरणादायी वरिष्ठ पीढ़ियों की रही है, अरुण तिवारी जी को मैं उसी श्रृंखला उसी माला का बहुमूल्य हिस्सा मानता हूं। साहित्य सेवा, पत्रकारिता में आपकी 35–40 वर्षों की दीर्घ साधना को देखते हुए। वरिष्ठ सर्जकों में सृजन की धारा में प्रेरणा के विशेषांकों के माध्यम से आपने समाज और पाठक की सोच को पुष्ट किया है। जो प्रणम्य है। आपके संपादन में प्रेरणा के प्रेरणादायी चर्चित स्मरणीय अंकों को देखें तो मुक्तिबोध, निराला, कहानी, नारी अस्मिता, कविता, गजल साहित्यिक पत्रकारिता, विश्व हिन्दी सम्मेलन, वरिष्ठ नागरिक प्रेमचन्द, पर्यावरण, पचहत्तर पार सृजनरत जैसे दर्जनों विशेषांकों की समृद्ध सूची है।

इस अवदान को हमेशा–हमेशा याद रखा जायेगा। तिवारी जी ने अपने संपादन के माध्यम से, सृजन के माध्यम से न केवल हिन्दी की सेवा की बल्कि साहित्य जगत में एक मील के पत्थर साबित हुए हैं ऐसे व्यक्ति ने अपने 75 सालों की यात्रा में समाज और पाठकों को ऐसे संग्रहणीय दस्तावेज दिये जिनके माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई है। हम बहुत ही सम्मान के साथ उनके हिन्दी के प्रति अनुराग को कोटिश: प्रणाम करते हैं।

आज 'कला समय' पत्रिका जिस कलेवर में निकल रही है वह गणेश ग्राफिक्स अर्थात प्रेरणा प्रकाशन के आंगन में ही पुष्पित और पल्लवित हो रही है आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो पिता जैसा साया हमेशा मेरे साथ तिवारीजी का रहता है मैं उन्हें पिता कहूं, गुरु कहूं, मार्गदर्शक कहूं, सबके सब कमतर हैं। वे हमेशा मेरी बांह थामें मुझे संबल देते हुए मेरे उत्साह को बढ़ाते हैं। उनके जैसे वटवृक्ष की छाया में 'कला समय' आश्वस्ति की गहरी सांस ले रही है। वे जितने अच्छे व्यक्ति हैं, उतने ही अच्छे मित्र, पिता, शुभ चिंतक और मार्गदर्शक हैं, प्रेरणा पत्रिका कार्यालय, गणेश ग्राफिक्स, अनुराग ऑफसेट के साथ ही कला समय को अपने साथ जोड़ना, मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूँ। आज सुरेन्द्र जी, दीक्षित जी, मनोज जी, अनुराग जी, विक्की जी, लक्की जी, सीताराम जी, राजेन्द्र जी, मनोज पालीवाल जी, आमिर जी साथ में भँवरलाल श्रीवास सब एक परिवार है। उसी तरह सबका सम्मान, अनुशासन, सुख–दुख को आपस में बांटते हुए तथा कठिन डगर को आसान बनाते हुए अरुण तिवारी जी जैसे पिता के सानिध्य में सब अपना–अपना काम जवाबदारी, मेहनत, समय सीमा तथा स्तरीय वर्क के लिये, यह संस्थान एक मिसाल है। ईश्वर से विनती है इस हरे भरे संयुक्त परिवार रूपी बगीचे को ईश्वर बुरी नजर से दूर रखें। मैंने कभी नहीं देखा मनमुटाव या लड़ाई अथवा तेज आवाज में बात करते हुए किसी का अगर समय सीमा का तकाजा है तो वे स्टाफ रात–रात भर काम करके, समय पर काम निपटाने की धुन, जुनून सारी युवा टीम खुशी मन से काम को कर्तव्य, पूजा भाव से करते हुए कभी बोझ का हिस्सा अथवा मानसिक तनाव को करीब नहीं आने दिया। ऐसा समभाव, जो मैंने देखा, वह मात्र तिवारी जी जैसे कुशल नेतृत्व के कारण ही संभव है। गलतियों पर भी किसी को उन्होंने कभी पेट की मार नहीं मारी, बल्कि पूरे स्टाफ की मीटिंग लेकर उनका मार्गदर्शन हौंसला अफजाई करते हुए देखे गये, ईश्वर इन्हें खूब यश दे ताकत दे।

''तुम समय की रेत पर छोड़ते चलो निशां
देखती उन्हें जमीं देखता आसमां.....''

आदरणीय तिवारी जी को 75वें जन्मदिन पर बहुत बधाई और हार्दिक मंगलमय शुभकामनाएं। आपका आने वाला प्रत्येक नवदिवस आपके जीवन पथ में असंख्य सफलताएं एवं अपार प्रसन्नता लेकर आए। इस पावन अमृत–महोत्सव पर ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह वैभव, ऐश्वर्य, उन्नति, प्रगति, प्रसिद्धि, समृद्धि, स्वास्थ्य के साथ सम्पूर्ण जीवन आपको जीवन पथ पर इसी तरह गतिमान रखे..... आप उत्तरोत्तर समृद्ध बनते रहें। शुभकामनाओं सहित आपका अनुज ।

'शतं जीवेत शरद:', भूयश्च शरद: शतात् ।'

– संपादक : 'कला समय' पत्रिका, मो.: 9425678058

Anurag Offset
complete printing solution
OFFSET PRINTING : Books, Magazine, Brochure, Poster, Leaflet, CD/ DVD Cover, File, Pumplate etc.
26-B, Deshbandhu Parisar, Press Complex, M.P. Nagar, Zone-I,
Bhopal (M.P.) Mob.: 9993044828 | e-mail: anurag.offset@gmail.com

प्रेरणा परिवार के सदस्यों के आत्मीय उद्‌गार :

'प्रेरणा' वाले सर अरुण तिवारी

सुरेन्द्र डांगे

इस नाम के साथ मैं तिवारी सर से जुड़ा और आज भी जुड़ा हुआ हूं। प्रेरणा पत्रिका की कम्पोजिंग का कार्य करते हुए ही मैंने गणेश ग्राफिक्स की शुरूआत की थी या ये कहना भी अतिश्योक्ति नही होगा कि इसी प्रेरणा से प्रेरित होकर गणेश ग्राफिक्स की स्थापना हुई। 2006 से आज तक तिवारी सर ने मुझे हमेशा समय प्रबंधन के बारे में बताया, लेकिन शायद यह बहुत ही कठिन कार्य है जो आज तक मेरे द्वारा नहीं हो पाया है। तिवारी सर के बारे में मुझे जितना पता है उन्होंने हमेशा अनुशासित जीवन व्यतित किया है।

2014 से तिवारी सर के साथ मैं व्यवसायिक रूप से जुड़ा। उसी समय से तीनों भैया श्री अभिनव तिवारी, श्री आराध्य तिवारी एवं श्री अनिमेष तिवारी जी से भी मुलाकात हुई। इतने बड़े पदो पर कार्यरत होने के बाद भी मुझे इतनी अहमियत दी गई। यह शायद तिवारी सर की परवरिश ही है। अपने अनुभवों के उदाहरणों को बताते हुए हमें अपने कार्य को मेहनत और लगन से करने साथ ही हमेशा नया सीखने के लिए प्रेरित करते रहे है। तिवारी के जीवन में जो घटनाएं हुई है वह वाकई प्रेरणा लेने लायक ही है। 75 वीं वर्षगांठ के अमृत महोत्सव के अवसर पर सर के व्यक्तित्व का सही परिचय हो पाया था।

– लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

आत्मविश्वास और दृढ़ता की अनूठी मिसाल

मनोज माकोड़े

आदरणीय अरुण तिवारी जी से मेरा परिचय एक दशक पुराना है। शासकीय सेवा में होने के बावजूद भी हिन्दी साहित्य की ओर उनकी रुचि हमेशा से ही रही है। उनके आलेख और अनेक स्तंभ उनकी साहित्य साधना का जीवंत प्रमाण है, जो हमेशा लाजवाब व शिक्षाप्रद होते है।

पिछले कुछ वर्षों से मैं उनकी छत्रछाया में कार्यरत हूँ और इस बात का मुझे गर्व है। अगर हमें सकारात्मकता और दृढ़ता का कोई उदाहरण चाहिए तो अरुण जी का जीवन एक अच्छे उदाहरण के रूप में ले सकते है। उनके द्वारा सिखाई गई बातें हमें हमेशा उन्नती की ओर अग्रसर करती हैं। वे हमेशा हमें आत्मसम्मान के साथ जीना सिखाते हैं।

उनका सानिध्य प्रेरणा से भरपूर है। उनके द्वारा कही गई एक बात मुझे हमेशा याद रहेगी कि हमारा जीवन सीखने के लिए बना है। इसलिए हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहिए। जो आपके जीवन में हमेशा काम आएगा।

इतनी बड़ी हस्ती होने के बावजूद भी घमंड या आत्ममुग्धता का कोई अंश नहीं है। अपने से बड़ों के प्रति आदर और छोटों से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार उन्हें एक आदर्श व्यक्तित्व बनाता है। उनके बारे में जितना भी लिखा जाए उतना कम है।

आपका आशीर्वाद हम पर ऐसे ही बना रहे।

– लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

कोरे कागज की तरह साफ-सुथरा व्यक्तित्व - अरुण तिवारी

सुशील दीक्षित

भारत की आजादी के बाद चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया सशक्त रूप में सत्ता एवं आम जनता के मध्य जागरूकता एवं सरकार पर अंकुश लगाने का माध्यम रहा है। इसमें कई बड़े समाचार पत्र, चैनल, इलेक्ट्रॉनिक चैनल, पत्र-पत्रिकाएं उभर कर सामने आए एवं इसी माध्यम से कई बड़े समूहों ने उद्योग का रूप लिया। जो अपने निर्भीकता के दायित्व को छोड़ते हुए, अपने निजी स्वार्थों के लिए सत्ता से हम कदम या चाटुकारिता करते रहे। इसी समय एक नया व्यक्तित्व सामने आया जिनका नाम श्री अरुण तिवारी जी। जिन्होंने विवेक और कौशल के बल पर अपने निजी स्वार्थों को दरकिनार करते हुए लेखन प्रकाशन एवं संपादन शुरू किया। श्री तिवारी जी द्वारा सालों पहले लिखे गये अपनी संपादकीय जो 'अपनी बात' के नाम से लिखी जाती है, उसमें कई मुद्दों को उठाया था। जो आज केंद्र सरकार या राज्य उन्हीं मुद्दों को लागू कर रही हैं और अपनी सरकारें चला रही हैं। श्री तिवारी जी का व्यक्तित्व एक कोरे कागज की तरह साफ-सुथरा है। श्री तिवारी 76 वर्ष के होने बाद भी वे किसी युवा से कम नहीं। चाहे लेखन में या पाठन में। साहित्य जगत में कोई ऐसा साहित्यकार नहीं होगा जो हमारे तिवारी जी को नहीं जानता हो। साहित्य जगत में उन्हें कई बड़े-बड़े पुरस्कारों से नवाजा भी गया है। जिस समय श्री तिवारी जी की लेखनी निर्भीकता के साथ गंगा की तरह अविरल बह रही थी, उसी समय विधाता ने उन्हें उनके साथ बड़ा अन्याय व कुठाराघात किया। उनकी प्रेरणा स्रोत रही जीवनसंगिनी श्रीमती उर्मिला तिवारी जी को उनसे छीन लिया। इस सदमें से उभरने में थोड़ा समय लगा।

मैं सर से एक दशक से ज्यादा समय से जुड़ा हूं। हमारे सर के पास हर समस्या का समाधान रहता है। वो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को एक परिवार की तरह ही रखते हैं। अभी जब कोरोना वायरस का प्रकोप था उस समय भी हमारे सर ने वो मिशाल पेश जो बड़े-बड़े अखबार के मालिक नहीं कर सकते। उन्होंने काम न होते हुए भी किसी भी कर्मचारी का वेतन नहीं काटा और बराबर संपर्क में रहे एवं हौसला बढ़ाते रहे, ऐसे हैं हमारे सर। मुझे तो साहित्य के बारे में कोई जानकारी भी नहीं थी, लेकिन सर के सान्निध्य में बहुत कुछ सीखने को मिला। हमारे सर पास बिठा कर समझाते बड़े-बड़े साहित्यकारों के बारे बताते। यदि कोई साहित्यकार ऑफिस में आता तो मुझे जरूर बुलाते हैं। मैं उन्हें पिता तुल्य ही मानता हूं। सर के बारे में जितना लिखूं उतना कम है। अंत में मेरा तो बस एक ही कहना है-

सब धरती कागज करूँ, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, तब भी 'सर' गुण लिखा न जाय॥

- लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

शिक्षा और साहित्य का अद्भुत संगम

नीरज राय

शिक्षा और साहित्य महान भारतीय संस्कृति के दो आधार स्तम्भ हैं और यदि मैं कहूँ कि आदरणीय अरुण तिवारी जी इन दोनों का संगम हैं तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शासकीय सेवा में रहकर साहित्य की साधना करना, साथ ही अपनी सन्ततियों को शिक्षित व संस्कारवान बनाकर गृहस्थ धर्म का पालन करना अनुकरणीय है। आपके अवतरण दिवस पर पहली बार आपके ओजस्वी व्यक्तित्व से परिचय हुआ। आपकी चरण वंदना कर एक सुखद अनुभूति प्राप्त हुई, ऐसा लगा मानो आपके आभामण्डल के सम्पर्क में आकर मेरा तुच्छ व्यक्तित्व भी प्रकाशमान हो गया हो।

आप हमारे समाज की धरोहर हैं। निश्चित ही आने वाली पीढ़ियाँ आप पर गर्व करेंगी। एक लेखक के रूप में आप हमेशा अपनी कृतियों में जीवित रहेंगे और इस समाज को दिशा देते रहेंगे, शायद इसी को ही अमरत्व कहते हैं।

कोटि-कोटि नमन अपने ज्ञान, अनुभव, कौशल और बुद्धिमत्ता से हम सबको 'प्रेरणा' देने के लिए।

- लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

मेरे प्रेरणास्त्रोत

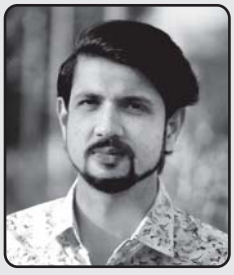

मनोज पालीवाल

आदरणीय श्री अरुण तिवारी जी के बारे में जितना लिखा जाए उतना ही कम है। वह पहले ही दिन से मेरे दिल और दिमाग पर छा गए हैं और मेरे प्रेरणास्रोत बन गए। अपनी पूरी जीवन शैली में अनुशासन के साथ स्वाभिमान से जीने वाले पहले व्यक्ति हैं जिनसे मैं इतनी अच्छी तरह रूबरू हुआ हूँ। हर व्यक्ति कहीं न कहीं, किसी न किसी समय समझौता कर लेता है। परंतु श्री अरुण तिवारी जी ने कभी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं किया। इतने ऊँचे पद पर रहकर भी कभी अहंकार नहीं किया और कई व्यक्तियों को समय-समय पर अनेक प्रकार से सहायता की। हर कार्य को व्यवस्थित रूप से और कठिन कार्य सरल रूप से कर देना मैंने आप ही से सीखा है। आपके द्वारा कहा गया एक शब्द जो मैं अपने जीवन में कभी नहीं भूल सकता वो शब्द है सकारात्मकता, जब से इस शब्द पर मैंने अमल किया है मैं कभी असफल नहीं हुआ। मैंने आपसे बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ सीखना बाकी है और आपकी 'प्रेरणा' पत्रिका समाज, लोगों में बहुत अच्छी जगह बना चुकी है। आपका एक उद्देश्य जो मुझे बहुत अच्छा लगता है जिसका आप हमेशा से पालन करते आए, अपने प्रेरणा पत्रिका के द्वारा समाज में सुधार जो कि निरंतर आ रहा है। आपके शतायु होने की कामना करता हूँ।

- लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

मेरे सच्चे गुरु

सोहन मालवीय

श्री अरुण तिवारी जी एक वरिष्ठ साहित्यकार होने के साथ-साथ ज्ञान के राजा भी हैं। हमेशा सभी को अच्छी शिक्षा देकर हमेशा आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं और सफलता भी मिलती है। वह सभी को एक अच्छा इंसान बनाना चाहते हैं। उनकी डिक्शनरी में सिर्फ सकारात्मकता ही सकारात्मकता है। नकारात्मकता शब्द पैदा ही नहीं हुआ और मेरे लिए तो वे एक अच्छे गुरु हैं, उनकी दी हुई शिक्षा से मैं बहुत आगे बढ़ गया हूँ मुझे लोगों से बात करना भी नहीं आता था, उनकी बातों से मैं लोगों से बात करना सीखा हूँ। कहां पर किस समय किस इन्सान से कैसी व किस तरह बात करनी है ये भी उनकी दी हुई सीख है। वे सच में मेरे गुरु हैं मैंने उनके लिए कुछ लाईने -

सारे जहां को सुगंधमय कर दे, ऐसा कोई फूल खिले
सदा-सदा के लिए अमर रहें वह गुरु, जिनका हमें आशीर्वाद मिले।

उनका हर एक विचार, उनकी सोच बहुत ही ताकतवर है। वे हमेशा हम लोगों को बुराइयों से दूर और अच्छाईयों के करीब जाने की शिक्षा देते हैं। उनके हर विचार जल की तरह होते हैं, अगर हम इनमें गंदगी मिला देंगे तो वह गंदी नाली बन जाएंगे, अगर हम इसमें सुगंध मिला दें तो यह गंगाजल की तरह पवित्र हो जाएंगे।

- लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

मुझे सही राह दिखाने वाले गुरु

सीताराम मालवीय

1 मार्च 2016 से बड़े सर (अरुण तिवारी जी) के छत्रछाया में कार्य कर रहा हूँ। सर से एक ऐसी शिक्षा प्राप्त हुई, उसकी व्याख्या भी नहीं कर सकता। वो मेरे एक आदर्श गुरु हैं जो भी उनके बताये रास्ते पर चला है हमेशा सफलता प्राप्त की है। मुझे उन्होंने हमेशा सकारात्मक रास्ते दिखाये है। मुझे एक बात बताई काम कितना भी मुश्किल हो उसका समाधान निकालने से हल हो ही जाता है और हर काम मुश्किल होता है पर नामुमकिन नहीं। यही बात मेरे जीवन शिक्षा है। मैं उनके लिये जितना लिखूं कम है, उनकी तस्वीर दिल में हमेशा रहेगी और आगे मैं उनके हर काम को सफल बनाने की कोशिश करूंगा। मुझे गर्व है कि एक ऐसी संस्थान में काम करने का मौका मिला, मैं हमेशा उनकी सेवा में उपस्थित रहूँगा। दो लाईनें मुझे याद आ रही है-

''कोई आज छाया में इसलिए बैठा हुआ है,
क्योंकि किसी ने काफी समय पहले एक पौधा लगाया था''

- लेखक प्रेरणा परिवार के सदस्य हैं।

कविता

कलम हथेली पर लेकर

प्रदीप नवीन

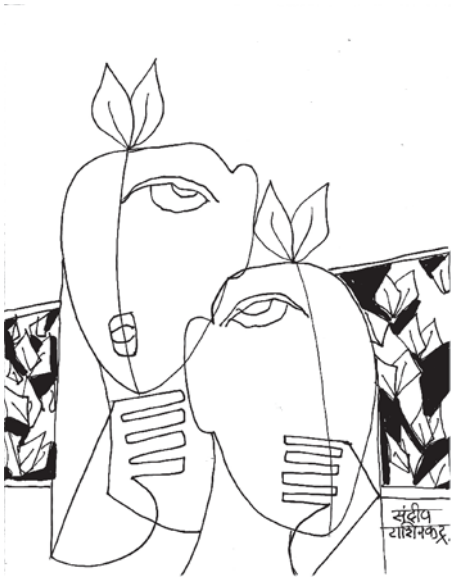

देते हुए शुभकामना
बहुत हो रहा हर्ष ,
अमृत महोत्सव प्रसंग का
क्या अच्छा निष्कर्ष।
सबको मिलती प्रेरणा
सक्रिय सब हो जाते
वे भी जाग्रत हो जाते
जो निष्क्रिय सदा कहाते।

परिदृश्य साहित्य का
रखता है कुछ अर्थ
बदले से परिवेश में
कुछ न जाता व्यर्थ।
पाठक श्रोता बंध जाएं
वो होता साहित्य,
चन्द्रमा भी खुश होता
मुस्काता आदित्य।

बड़ी या छोटी पत्रिका
उसका भी इतिहास,
वर्तमान में भविष्य का
देती है आभास।
पत्रकारिता सहज नहीं
जोखिम का है पेशा,
सत्य बात का हो जाता
बिल्कुल, रेशा रेशा।

लेखक संपादक का रिश्ता
होता सदा अटूट,
दोनों सच को सच कहें
और झूठ को झूठ।
सब लिखते संपादकीय
विविध विषय के तत्व
उसमें ही तो मिलता है
सामग्री का सत्व।

कलम हथेली पर लेकर
पत्रकार चलते,
कुछ को लगते भले-भले
कुछ को वे हैं खलते।
हर लेखक के शब्दों से
होता है कायाकल्प
लिखने पढ़ने के सिवाय
बचता कहाँ विकल्प ?
बाजी सबने जीती हारी
कौन यहाँ किसका आभारी ?
प्रभू से बिनती यही हमारी
खूब जियें, श्री अरुण तिवारी।

– लेखक प्रतिष्ठित कवि हैं।

■

आलेख

मध्यभारत की कुछ अचीन्हीं चित्र शैलियां: अछूते दृष्टि उत्सव

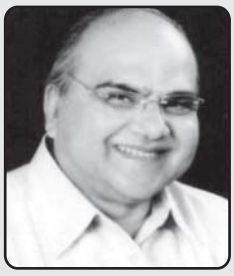

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

भारतीय कला की मूल अवधारणा समन्वय, साझीदारी और समग्रता की है तथा हमारी मुख्य रूप से मध्यकालीन चित्रशैलियां इसी अवधारणा का उद्घोष करती हैं। लेकिन कुछेक अपवादों को छोड़ दिया जाए तो ज़्यादातर पश्चिम और पश्चिम की विचारधारा से प्रभावित हमारे देश के कतिपय विद्वानों ने हमारी कला की इस महान अवधारणा के अखण्डित स्वरूप को नहीं पहचाना है। उन्होंने भारतीय लघुचित्रों को शैलीगत रूप से, क्षेत्रगत रूप से, तकनीकी विशेषताओं के आधार पर विभाजित कर दिया है। यह विभाजन हमारे चितेरों की प्रतिभा और हमारी सांस्कृतिक परंपरा के बहुआयामी स्वरूप को उद्घाटित करने की दृष्टि से तो उचित है किन्तु इस विभाजन के रहते हुए भी हमारे पुरखों की जो अखण्डित दृष्टि रही, उसका समग्रता में रेखांकन होना अभी शेष है।

यह अखण्डित दृष्टि विभिन्न शैलियों के अंकनों में तो दिखाई देती है लेकिन उसका स्वरूप अधूरा है और उसका बड़ा कारण यह है कि सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी के बीच जो मुग़ल क़लम के शानदार दरबारी चित्र बनें और राजस्थान तथा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न अंचलों में जो विशेष रूप से राग-रागनियों तथा राधा-माधव की मनमोहक लीलाओं के मनोहारी अंकन हुए, उनके अध्ययन तक दृष्टि सिमटी रही। इस कारण पुनरावृत्तियाँ होती रहीं और आज भी हो रही हैं। कांगड़ा, गुलेर, किशनगढ़ और मेवाड़ क़लम के चित्र बार-बार लघुचित्रों की पुस्तकों में दिखाई देते हैं जबकि भण्डार तो अपार हैं। इस अवधि में और इसके बाद के काल में भी अनेकों शैलियों में उत्कृष्ट चित्रांकन विभिन्न अंचलों में हुए हैं किन्तु उनका अध्ययन नहीं हो पाया। वह हो पाए तो भारतीय कला की समग्र दृष्टि का वह रूप अपनी पूर्णता में उभर कर सामने आए, जिसे हमारे कला चिन्तकों ने अपनी अर्न्तदृष्टि से देखा है। यदि प्रख्यात संस्कृतिविद् डॉ. विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में कहें तो यह कहा जा सकता है कि भारतीय कला के चन्द्रमा ने अभी तक पन्द्रह कलाऐं पार कीं हैं, उस सोलहवीं कला को जिसे अमृता कह सकते हैं, उसका अभी दर्शन करना शेष है। जब तक भारतीय कला की इस अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में हमारे उस अछूते और अचीन्हें सृजन क्षेत्र का परिशीलन नहीं होगा जो अभी तक हमारे कला मनीषियों की आंखों की परिधि में नहीं आ पाया, तब तक हमारे इन मनोहारी अंकनों का सच्चा मूल्यांकन नहीं हो पाएगा। भारतीय लघुचित्रों की प्रविधि राग और रस से बनी है, रूप और रंग तो बाद के उपादान हैं। इसलिए भारतीय कला अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में इन अंकनों का समग्रता में और उस अटूट क्रम में अध्ययन होना चाहिए, जिस निरन्तरता को आत्मसात करते इन्हें हमारे महान चितेरों ने बनाया।

मध्यकालीन लघुचित्रों के अध्ययन के संदर्भ बहुत ज़्यादा पुराने नहीं हैं। डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने वर्ष 1916 ई. से इस अध्ययन को एक दृष्टि दी। सिलसिलेवार इन भारतीय लघुचित्रों का अध्ययन शुरू हुआ लेकिन आरंभ से ही यह अध्ययन तकनीकी बारीकियों में उलझ गया। जिस भाव से और जिन महान काव्य ग्रंथों के आधार पर ये लघुचित्र बनें थे, उन चित्रों में बसी आत्मा की पहचान नहीं हो पाई। पहचान हो पाई तो रंगों की, रेखाओं की, दैहिक सौन्दर्य की और यदि नहीं पहचान हो पाई तो सच्चे रूप की, रागबोध की, रसबोध की और उस सौन्दर्य की, जो आंखों के मार्फत नहीं देखा जा सकता, जिसके दर्शन सिर्फ अन्तर की दृष्टि ही कर सकती है। दूसरी चूक यह भी हुई कि यह विभाजन बहुत ज़्यादा अकादमिक होता चला गया, जिसके कारण इन चित्रों में जो स्वर समाए थे, वे बिखर गए। ये चित्र अकादमिक दृष्टि से देखे जाने लगे, जबकि इन्हें लोकदृष्टि से देखा जाना था, क्योंकि ये लोक आस्था की ही देन थे। भारतीय कला की इस अवधारणा को पुष्ट करने के लिए स्व. रायकृष्णदास तथा डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे अपवाद मनीषी ही सामने आए। इनकी संख्या बहुत कम थी। फिर भी इन्होंने अपना समूचा जीवन इस अनमोल विरासत को सामने लाने और उसके दर्शन की व्याख्या करने में लगा दिया।

मध्यकालीन लघुचित्रों के विद्वानों ने जब शैलीगत विभाजन शुरू किया तो उसमें भी अनेकों विसंगतियां सामने आईं। विशेष रूप से 16वीं से 18वीं सदी के बीच राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की विभिन्न रियासतों और छोटे-छोटे ठिकाणों में जो लघुचित्र विभिन्न कालखण्डों में बनें उनका अध्ययन बड़ी बारीकी के साथ

किया गया। देवगढ़, नागौर, रियाँ और बेगूं जैसे छोटे ठिकाणों में हुए अंकन राजस्थान की किशनगढ़, मेवाड़, जोधपुर और जयपुर जैसी प्रख्यात् शैलियों में हुए अंकनों के साथ याद किये जाते हैं। इसी तरह हिमाचल प्रदेश में नहान तथा बाहु जैसे छोटे स्थानों की शैलियों का स्मरण भी कांगड़ा, गुलेर, बसोहली और चम्बा जैसी शैलियों के साथ किया जाता है।

एक ओर तो यह स्थिति है तो दूसरी ओर पूरे मध्यभारत में जो विभिन्न शैलियां मध्यकाल और उत्तर-मध्यकाल में जन्मीं और विकसित हुईं, उनके बारे में ऐसे कोई शैलीगत विभाजन उपलब्ध नहीं हैं, जबकि यहां हुए अंकन राजस्थान और पहाड़ की अनेकों शैलियों के मुक़ाबले कमतर नहीं आंके जा सकते। 'सेन्ट्रल इण्डियन पेंटिंग' नाम के अन्तर्गत मालवा, बुन्देलखण्ड और खानदेश से लेकर विदर्भ तक का वह पूरा क्षेत्र आता है, जहां समय-समय पर अपनी मौलिक विशेषताओं के साथ विभिन्न चित्रशैलियों ने जन्म लिया। मालवा शैली के बारे में स्व. रायकृष्णदास तथा उनके सुपुत्र प्रख्यात् कलाविद् डॉ. राय आनन्दकृष्ण ने ज़रूर गहराई से विचार किया। उनके अलावा कुछ और विद्वानों ने भी ध्यान दिया। वर्ष 1926 में स्व. एन.सी. मेहता ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पनपी शैली पर विचार किया लेकिन यह परंपरा आगे नहीं बढ़ पाई। हाल ही में अमेरिका के वर्जीनिया म्यूज़ियम ऑफ फाईन आर्ट्स के वरिष्ठ संग्राहक जोसफ एम. डाई- ।।। ने मालवा क़लम के संबंध में जो शोध प्रस्तुत किया है, उसमें भी उस प्रकार का अध्ययन नहीं है, जैसा अध्ययन राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की विभिन्न शैलियों का है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि मध्यभारत का एक बहुत बड़ा क्षेत्र अभी भी अपने अंचल के विभिन्न स्थानों में पल्लवित हुई चित्रांकन शैलियों के अध्ययन के संदर्भ में निर्धन ही है।

जहां तक मालवा का संबंध है, यहां की चित्रांकन परंपरा काफी पुरानी है। मालवा में प्राचीन कला परंपरा मौर्य, शुंग, शक तथा सातवाहन कालों में बहुत पल्लवित हुई। स्तूप, चैत्य, विहार, शैलकृत गुफाएं तथा देवालय निर्मित किए गए। परमारकालीन शासकों की रचनात्मक प्रतिभा उदयपुर, ग्यारसपुर, नेमावर, बदनावर, विदिशा, ऊन, भोजपुर तथा उज्जैन में मिलती है। यहां लक्ष्मी को यक्षी के रूप में उकेरा गया है तथा श्रीवृक्ष भी उत्कीर्ण किया गया है। दशपुर, जिसे वर्तमान में मंदसौर के नाम से जाना जाता है, वहां शिल्पांकन तथा चित्रांकन की समृद्ध परंपरा विद्यमान रही। यहां की सातवीं-आठवीं शताब्दी के मूर्ति शिल्प में औलिकरों की परंपरा तथा दक्षिण के राष्ट्रकूटों की कला परंपरा का समन्वय है। इस क्षेत्र में मूर्तिकला का आरंभ ताम्राश्वयुगीन मिट्टी की मूर्तियों से होता है और उसके बाद इस कला का नैरन्तर्य टूटता नहीं। मोढ़ी मन्दिर (तहसील भानपुरा) के तोरणद्वारों पर आज भी नटराज शिव की सुन्दर नृत्य मुद्राऐं उत्कीर्ण हैं। इस क्षेत्र में दशावतार के अंकन भी मिले हैं और लोटरखेड़ी नामक ग्राम से प्राप्त वराह पर विभिन्न देवी-देवताओं के 206 अंकन हैं। संधारा नामक स्थान पर रामायण के विभिन्न दृश्य उत्कीर्ण हैं। बाघ की चित्रकला (5वीं-6टीं शताब्दी) मालवा के संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है। कालिदास, बाणभट्ट और शूद्रक आदि के ग्रंथों में मालवा तथा विशेषकर उज्जयिनी की समृद्ध चित्रांकन परंपरा के संदर्भ मिलते हैं। परमार काल में इस क्षेत्र में चित्रकला का काफी विकास हुआ और बाद में गौरी और खिलजी सुल्तानों के आधिपत्य में जब यह क्षेत्र आया और माण्डू राजधानी बनी, तब चित्रकला का बहुत विकास हुआ। 1439 में बना विश्व प्रसिद्ध माण्डू 'कल्पसूत्र' यहां की चित्रांकन परंपरा की कहानी कहता है। माण्डू में ही नियामतनामा के चित्र बनाए गए। 17वीं शताब्दी में (1634 ई. में) रसिकप्रिया के चित्र बनें। सन् 1680 में माधोदास नामक चितेरे ने नरसिंहगढ़ में एक रागमाला चित्रावली तैयार की, जिसके कुछ चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नईदिल्ली में हैं। मालवा शैली के अमरूकशतक के चित्र भी बड़े विशिष्ट हैं, जो वर्तमान में छत्रपति शिवाजी म्यूज़ियम मुम्बई में संग्रहीत हैं।

इस परंपरा का नैरन्तर्य टूटा नहीं और नरसिंहगढ़ के कंवरानी मन्दिर और चंपावती मन्दिर में अभी भी माधोदास की परंपरा के चित्र भित्तियों पर बनें दिखाई देते हैं। ये भित्तिचित्र 18वीं शताब्दी के उत्तरवर्ती दशकों के हैं। मालवा की इस मौलिक शैली का समन्वय जब ब्रिटिश प्रभाव और लोक प्रभाव से हुआ तो उन्होंने नया स्वरूप पाया जिसके उदाहरण नरसिंहगढ़ से 12 कि.मी. दूर साखा श्यामजी में बनें वे सुन्दर कृष्णलीला के चित्र हैं, जिन्हें देखकर कुतूहल भी होता है और आश्चर्य भी। 17वीं और 18वीं शताब्दी के बीच नरसिंहगढ़ से लगे राघोगढ़ नामक स्थान पर एक सुन्दर शैली जन्मीं, जिसके चित्र विश्व के विभिन्न संग्रहालयों तथा व्यक्तिगत संग्रहों में बिखरे हैं। राजा धीरजसिंह (1695-1725) के समय में राघोगढ़ क़लम ने अपना उत्कर्ष पाया।

मालवा अंचल के उज्जैन, मंदसौर, इन्दौर, धार, रतलाम जैसे स्थानों में 18वीं-19वीं शताब्दी में मालवा क़लम ने अपना विकास पाया। एकचश्म चेहरें, सुडौल शरीर, सरल आकृति तथा पतली-मोटी रेखाओं से उरेहे गए ये चित्र बड़े महत्वपूर्ण है। मराठों के समय में बनें चित्रों पर मराठा प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उज्जैन, इन्दौर, देवास, रतलाम और मंदसौर के विभिन्न मंदिरों और हवेलियों की भित्तियों पर मालवा शैली के वे चित्र विद्यमान हैं, जिनकी ओर कला मनीषियों की दृष्टि नहीं जा पाई। धार के वैष्णव मंदिरों में सुन्दर व कलात्मक नाथद्वारा शैली से प्रभावित मराठा शैली के अनेकों

लघुचित्र रखे हैं। इसी तरह सिंधिया प्राच्य विद्या शोध संस्थान उज्जैन में 17 सचित्र ग्रंथ ऐसे संरक्षित हैं, जो मध्यभारत और विदर्भ के विभिन्न क्षेत्रों में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 19वीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में बनें। इनमें कल्पसूत्र, भागवत तथा मधुमालती की सचित्र पोथियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त गीत गोविन्द, विष्णुसहस्त्रनाम, स्तोत्र संग्रह, गजेन्द्र मोक्ष, भीष्मस्तवराज तथा अनुस्मृति, रामविजय, अश्वफलप्रकाश, शालिहोत्र तथा सत्यनारायण कथा नामक सचित्र ग्रंथ भी उपलब्ध हैं। ये समस्त सचित्र ग्रंथ अपने आप में अत्यन्त विशिष्ट हैं, क्योंकि इनमें उत्तर-मध्यकाल की चित्रांकन प्रवृत्तियां बड़े स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। इनमें मालवा की लोक शैली में बनाए गए वे गीतगोविन्द के अंकन अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, जो मालवा क़लम के बहुआयामी स्वरूप को प्रकट करते हैं।

मालवा शैली के चित्र ज़्यादातर बनारस कला भवन, गोपी कृष्ण कनोरिया संग्रह, जगदीश एवं कमला मित्तल संग्रह, लखनऊ संग्रहालय, एन.सी. मेहता गैलरी, राष्ट्रीय संग्रहालय, विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूज़ियम, ब्रिटिश म्यूज़ियम, लॉस एंजेलिस काउंटी म्यूज़ियम, फाईन आर्ट म्यूज़ियम बोस्टन में रखे हैं, जिनका कालक्रम के आधार पर अध्ययन करने पर मालवा क़लम के नैरन्तर्य की झांकी स्पष्ट रूप से मिलती है। इनके अलावा भी अनेकों व्यक्तिगत संग्रहों तथा विश्व के विभिन्न संग्रहालयों तथा कलावीथियों में मालवा क़लम के बेजोड़ लघुचित्र संरक्षित हैं।

16वीं से 19वीं शताब्दी के बीच बनें मालवा क़लम के इन मनोरम रूपांकनों में एकचश्म चेहरे और डेढ़चश्म वक्ष की रचना की गई है। मालवी पहनावा और अलंकरण विशेष रूप से दर्शनीय हैं। इन चित्रों के विषयों की परिधि में जीवन के सामान्य व्यवहार, कृष्ण लीला, राम, रामायण, महाभारत, भागवत, मध्यकालीन काव्य प्रसंग, दरबार, आखेट, मंत्रणा, नायक-नायिका भेद और राग-रागिनी आदि आते हैं। मुग़ल क़लम का प्रभाव बड़ा स्पष्ट है। लाल, नीले, हल्के और सुनहरी रंगों का प्रयोग हुआ है लेकिन लाल रंग और रामरज की भूमिका महत्वपूर्ण है। मालवा क़लम पर गुजरात और मेवाड़ क़लम का विशेष प्रभाव है।

यहां यह तथ्य भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ज्यादातर कलाविद बुन्देलखण्ड और मालवा के चित्रों में भेद नहीं कर पाते। बुन्देलखण्ड के ओरछा व दतिया क़लम के चित्रों को सहज ही मालवा क़लम के चित्रों से पृथक किया जा सकता है। यह भी एक सुखद आश्चर्यजनक तथ्य है कि बुन्देलखण्ड की छोटी-छोटी रियासतों जैसे चरखारी व अजयगढ़ में भी बुन्देलखण्डी शैली में लोकतत्व को समाविष्ट करते हुए सुन्दर रूपांकन हुए, जिन्हें बड़ी सहजता से मालवा क़लम के चित्रों से अलग किया जा सकता है।

इसी तरह राजस्थान की कोटा व बूंदी शैली के चित्रों से राघोगढ़ व नरसिंहगढ़ के चित्रों को पृथक से पहचाना जा सकता है। मेवाड़ तथा उदयपुर क़लम के चित्रों से मंदसौर तथा जावद में बनें चित्रों की भिन्नता स्पष्ट हो सकती है। इसी तरह माण्डू, चन्देरी, मंदसौर और रतलाम में जैन विषयों पर हुए अंकनों को अलग से पहचाना जा सकता है। उज्जैन में धार्मिक विषयों पर तथा ज्योतिष को केन्द्र में रखते हुए जो चित्र बनें तथा देवास और इन्दौर में जो शबीहें बनीं, उन्हें मराठा प्रभाव के आधार पर पृथक से पहचाना जा सकता है।

विदर्भ अंचल के चित्रकारों ने यद्यपि अपने स्थानीय मराठा प्रभाव को अंकित तो किया लेकिन वे राजस्थान की परंपरागत शैलियों के दबाव में रहे तथा एक बड़ी सीमा तक उन्होंने उन शैलियों का अनुकरण करने का प्रयास किया।

महाराष्ट्र के खानदेश अंचल के दोनों पूर्वी और पश्चिमी छोरों पर चित्रकला की एक विलक्षण परंपरा पनपी। नासिक और धूलिया से लगे क्षेत्र में जो अठारहवीं सदी में चित्रांकन परंपरा पल्लवित हुई, उस पर खानदेशी प्रभाव होने के साथ-साथ राजस्थान की विभिन्न शैलियों का प्रभाव था जबकि हैदराबाद से लगा हुआ वह क्षेत्र जिसके केन्द्र में बुरहानपुर था, वहां की अपनी चित्रांकन परंपरा थी। इसी तरह शोरापुर में बनें अनेकों कृष्ण लीला के चित्र बड़े मनमोहक हैं, जिनका अध्ययन नहीं हुआ। श्री जगदीश मित्तल, मार्क जेब्रॉवस्की तथा जोसफएम. डाई ।।। जैसे कुछ विद्वानों ने मध्यभारत की इन अछूती चित्र शैलियों पर कार्य किया है किन्तु यह नहीं के बराबर है। मध्यभारत की इन चित्र शैलियों के अंकनों का अध्ययन हमारे कला इतिहास की पहली आवश्यकता इसलिए बन गई है, क्योंकि इस अध्ययन के बिना न तो भारतीय चित्रांकन परंपरा की अटूट परंपरा की पहचान स्थापित हो सकेगी और न ही उस कला अवधारणा की पुष्टि हो सकेगी, जो निजस्व के विसर्जन का आव्हान करती है।

मनोहारी अंकन हमारी आंखों के उत्सव होते हैं। आंखों की पुतलियां जिस ओर घूमें, वहीं वे इन समस्त उत्सवों को अपने आपमें आत्मसात कर लें। ऐसा न हो कि इन आंखों की परिधि में आने से कुछ ऐसे उत्सव छूट जाऐं, जो मनते रहे सदियों तक लेकिन जिन्हें देखा नहीं जा सका। दिशाऐं हैं ही इसलिए कि उनके कोने-कोने को दृष्टि अपने आपमें आत्मसात कर सके।

- लेखक, प्रख्यात ललित निबंधकार तथा कथाविद है।
85, इन्दिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ. कार्यालय के पास, केशरबाग रोड,
इंदौर (म.प्र.) 452001, मो.: 9485992593

■

आदि शंकराचार्य : अद्वैत दर्शन की महाविभूति

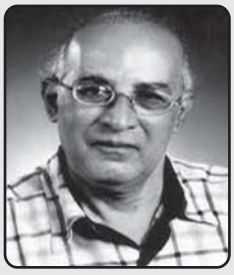

रमेश दवे

आदि शंकराचार्य अद्वैत दर्शन के महानतम गुरु हैं। मात्र 25-26 वर्ष में शिक्षा, ज्ञान, दर्शन, अध्यात्म में जो कुछ उन्होंने पाया, वह अपने साहित्य की रचना से हमें दे दिया। वेदान्त दर्शन भारतीय धर्म-चेतना का जीवित स्वरूप है। डॉ. राधाकृष्णन् ने वेदान्त शब्द का यौगिक अर्थ किया है। वेदान्त शब्द की व्याख्या करते हुए वे कहते हैं कि 'वेदान्त अर्थात् वेद का अन्त, अथवा वे सिद्धान्त जो वेदों के अंतिम अध्यायों में प्रतिपादित किये गये हैं, और वे ही उपनिषद हैं। उपनिषदों का विचार भी वही है जो वेद का अंतिम लक्ष्य अथवा वेदों का सार है। 'तिलेषु तैलवद् वेदे वेदान्ता: सुप्रतिष्ठिता: ।' (मुक्तिकोपनिषद्)

डॉ. राजबली पाण्डेय देदान्त शब्द की व्याख्या करते हुए स्पष्ट करते हैं कि 'यह शब्द 'वेद' और 'अन्त' इन दो शब्दों के मेल से बना है। अत: इसका वाक्यार्थ वेद अथवा वेदों का अंतिम भाग है। वैदिक साहित्य मुख्यत: तीन भागों में विभक्त है, पहले का नाम है-कर्मकाण्ड, दूसरे का नाम है-ज्ञानकाण्ड और तीसरे का नाम है-उपासनाकाण्ड। कर्मकाण्ड वेद का वह भाग है जो ब्राह्मण भाग कहलाता है एवं जिसमें यज्ञकार्य प्रमुख हैं। उपनिषद वेद के ज्ञानकाण्ड के रूप में मान्य है और इसी में उपासनाकाण्ड भी समाहित है। अन्त शब्द की व्याख्या भी विद्वानों ने अलग-अलग प्रकार से की है। अन्त से जो अर्थ प्रकट हुए हैं, वे क्रमश: तात्पर्य, सिद्धान्त, आन्तरिक अभिप्राय एवं मन्तव्य हैं। उपनिषदों के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उन ऋषियों ने जिनके नाम तथा जिनका मत इनमें पाया जाता है, अन्त शब्द का अर्थ इसी रूप में किया है। उनके अनुसार वेद या ज्ञान का अन्त अर्थात् पर्यवसान ब्रह्मज्ञान में है।' डॉ. राजबली पाण्डेय अपने इस अर्थ की पुष्टि में उपनिषदों के गूढार्थों तक भी पहुंचे हैं। देवी-देव, मनुष्य, पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम, सारा विश्वप्रपंच, नाम-रूपात्मक जगत ब्रह्म से भिन्न नहीं है-यही वेदान्त अर्थात् वेद-सिद्धान्त है। जो कुछ दृश्य है, जो कुछ नामरूप से सम्बोध्य है, उसकी सत्ता ब्रह्म-सत्ता से भिन्न हो ही नहीं सकती। मनुष्य की एकमात्र उच्चतम महत्त्वाकांक्षा ब्रह्म ज्ञान-प्राप्ति के कर्तव्य में निहित है जिसके माध्यम से वह ब्रह्ममय या ब्रह्मस्वरूप होता है। यही एक बात वेदों का मौलिक सिद्धान्त है, अन्तिम तात्पर्य है तथा सर्वोच्च एवं सर्वमान्य अभिप्राय है। वेदान्त शब्द का मूलार्थ भी यही है। इस अर्थ में वेदान्त शब्द से उपनिषद ग्रन्थों का साक्षात् बोध होता है। आगे चल कर वेदान्त का तात्पर्य वह दार्शनिक सम्प्रदाय हो गया जो उपनिषदों के आधार पर केवल ब्रह्म की ही एकमात्र सत्ता मानता है। कई सूक्ष्म भेदों के आधार पर उसके कई उप-सम्प्रदाय भी हैं, जैसे-अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत एवं शुद्धाद्वैत आदि।

वेदान्त, दर्शन के साथ-साथ भारतीय मानस में कर्म, ज्ञान और भक्ति की एक अजस्र धारा के रूप में प्रवहमान हुआ एवं आद्य शंकराचार्य की प्रामाणिक तर्कपूर्ण एवं विश्वसनीय स्थापनाओं को जहाँ एक ओर व्यापक लोक-समर्थन मिला, वहीं वेदान्त-अध्ययन के माध्यम से अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की सृष्टि हुई। शंकर द्वारा की गई ब्रह्मसूत्र एवं उसकी परवर्ती व्याख्याओं को पृथक् रख कर देखा जाए तो भी यह मानना होगा कि भारतीय-दर्शन में वेदान्त-दर्शन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था और इसीलिये उस पर इतनी टीकाएँ एवं व्याख्याओं की रचना हुई। वैसे तो आद्य शंकराचार्य के जन्म को लेकर ईसा पूर्व और पश्चात् की अनेक धारणाएँ हैं और आचार्य-पीठ परम्परा को लेकर कतिपय विद्वान उन्हें ईसा पूर्व स्थापित भी करते हैं, लेकिन ऐतिहासिक आधार पर जो मत सर्वाधिक मान्य हैं, उसके आधार पर यही कहा जा सकता है कि शंकर का अवतरण ईसा पश्चात् हुआ था। तेलंग के अनुसार शंकर ईसा के पश्चात् छठी शताब्दी के मध्य भाग में अथवा अंतिम भाग में प्रकट हुए। डॉ. आर. जे. भाण्डारकर के अनुसार शंकर का जन्म 680 ई. में हुआ। मैक्समूलर तथा मेकडानल के अनुसार शंकर 788 ई. में उत्पन्न हुए और 820 ई. में वे ब्रह्म में विलीन हुए। प्रसिद्ध विद्वान कीथ ने भी उनका जन्मकाल नवीं शताब्दी ई. ही माना है।

आद्य शंकराचार्य एक युग-पुरुष की ब्रह्मसत्ता से युक्त महापुरुष थे। वे एक साथ दार्शनिक, कवि, ज्ञानी, पण्डित, तर्कशास्त्री, सन्त, वैरागी एवं धर्म-सुधारक थे। उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के इतने दिव्य गुण विद्यमान थे कि वे दर्शन की हर धारा के साथ बातचीत करते, तर्क करते, उसे स्पष्ट करते और सत्य को

स्थापित करते प्रतीत होते हैं। कुछ विद्वान तो उन्हें तेजस्वी राजनैतिक प्रतिभा से सम्पन्न भी मानते थे, क्योंकि उन्होंने दार्शनिक आधार पर जनता को एकता के सूत्र में बाँध कर कश्मीर से कन्याकुमारी तक के एक भारत की पहचान कराई थी।

शंकर की पूर्ववर्ती एवं अनुवर्ती वेदान्त परम्परा -

वेदान्त को सार्वजनिक दार्शनिक सत्ता के रूप में तो आद्य शंकराचार्य एवं उनके अनुवर्ती आचार्यों एवं अद्वैत-दर्शनशास्त्रियों ने स्थापित किया, लेकिन शंकर के पूर्व ही वेदान्त भारतीय साधकों का दिव्य-दर्शन बन चुका था। शंकराचार्य के पूर्व ब्रह्मदत्त नामक एक अति प्रसिद्ध वेदान्ती हो चुके थे। इनकी दृष्टि से उपनिषदों का यथार्थ तात्पर्य 'तत्त्वमसि' आदि वाक्यों में नहीं है, किन्तु 'आत्मा वा अरे द्रष्टव्य:' आदि नियोग-वाक्यों में है। शंकराचार्य ने बृहदारण्यक के भाष्य में ब्रह्मदत्त के मत का उल्लेख किया है। वेदान्तशास्त्र अथवा उत्तर मीमांसा का आधार ग्रंथ है ब्रह्मसूत्र। इसके रचयिता बादरायण कहे जाते हैं। इनसे पहले भी वेदान्त के सात आचार्य हो चुके थे। ब्रह्मसूत्र वेदान्त का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रंथ है एवं इस पर अनेक भाष्य एवं टीकाएँ लिखीं गईं। स्वयं शंकर ने भी इसका प्रामाणिक भाष्य प्रस्तुत कर बादरायण की स्थापनाओं को लोकव्यापी बनाया। इसके पश्चात् अनुभाष्य शुद्वाद्वैतवाद के प्रतिष्ठापक वल्लभाचार्य ने किया, ब्रह्मसूत्रदीपिका महात्मा शंकरानंद ने 14वीं शताब्दी में की। इसके पश्चात् विशिष्ट-अद्वैतवादी रामानुज ने इस पर श्रीभाष्य लिखा। आचार्य माध्न अथवा अनन्ततीर्थ ने द्वैतवादी भाष्य की रचना की। विष्णुस्वामी का भी एक भाष्य माना जाता है जो आगे चलकर वल्लभाचार्य के ही अनुभाष्य में समाहित मान लिया गया। वेदान्त पारिजात सौरभ के नाम से द्वैताद्वैतवादी आचार्य निम्बार्क का सूक्ष्म भाष्य है। भेदाभेद मत के अनुसार भाष्कराचार्य ने 900 ई. में ब्रह्मसूत्र भाष्य रचा। बलदेव विद्याभूषण ने गौड़ीय अथवा चैतन्य सम्प्रदाय का अचिन्त्य भेदाभेदवादी भाष्य लिखा। रामानन्दी वैष्णव सम्प्रदाय ने आनन्द भाष्य की रचना की एवं उसके बाद जानकी भाष्य रचा गया। शैव मत के अनुयायी आचार्यों ने श्रीकाण्ड भाष्य मध्यकाल में लिखा और इसके पश्चात् पं. प्रमथनाथ तर्कभूषण ने शक्ति भाष्य की रचना की।

अद्वैत वेदान्त के अनेक व्याख्याता शंकर के पूर्व एवं पश्चात् हुए। लेकिन इन सब में गौड़पाद का नाम सर्वाधिक प्रमुख है। अद्वैत वेदान्त पर क्रमबद्ध भाष्य सबसे पहले गौड़पाद ने ही लिखा। कहा जाता है कि शंकर के ये गुरु गोविन्द के नाम से प्रसिद्ध हैं। वैसे कुछ विद्वान इन्हें वे गौड़पाद नहीं मानते जिन्होंने सांख्य-दर्शन का भाष्य लिखा था। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ कारिका में अद्वैत दर्शन के सिद्धान्तों का क्रमबद्ध और प्रामाणिक विवरण गौड़पाद ने किया है। यद्यपि अद्वैत वेदान्त पर अनेक ग्रन्थों की रचना की गई, किन्तु वे शंकर के गांभीर्य की अगाधता तक नहीं पहुँचते। मण्डन अथवा सूरेश्वर, वाचस्पति, पदापाद, श्रीहर्ष विद्यारण्य चित्सुख, सर्वज्ञात्ममुनि, मधुसूदन सरस्वती, अप्पयदीक्षित ये सभी एक ही प्रणाली के वेदान्त दर्शन शास्त्री हैं तथा निरपेक्ष आदर्शवाद की सार्थकता के किसी-न-किसी पक्ष पर प्रकाश डालते हैं, लेकिन इन सबसे शंकर का वेदान्त एवं अद्वैत प्रतिपादन इसलिये अधिक ग्राह्य हुआ कि उसमें लोकमानस को स्पर्श करने के व्यावहारिक तत्त्वों का शंकर ने लोकदृष्टि से समन्वय किया था।

गौड़पाद ऐसे समय में हुए थे जब बौद्ध-धर्म व्यापक रूप से प्रचलित था। बौद्ध-धर्मियों को गौड़पाद ने ही बताया था कि कोई भी धर्मग्रन्थ दैवीय वाणी नहीं है। सनातनी हिन्दू को गौड़पाद ने श्रुति-प्रमाण से मान्यता प्राप्त कहा था। अपने उदार दार्शनिक विचारों के कारण गौड़पाद को बौद्ध-धर्म के सिद्धान्तों को अद्वैत की शैली के अनुकूल बनाने का भी अवसर मिला। जहाँ बौद्ध-दर्शन के कुछ रूपों का अपने दर्शन के साथ साम्य गौड़पाद ने प्रकट किया, वहाँ गौड़पाद ने यह भी स्पष्ट किया कि यह बुद्ध ने नहीं कहा था। शंकर ने तो आगे चल कर यह भी कहा कि बौद्ध-धर्म का सिद्धान्त अद्वैत के साथ सादृश्य रखता है, किन्तु बौद्ध-धर्म वैसा निरपेक्षवाद नहीं है जो अद्वैत-दर्शन का प्रधान आधार है। गौड़पाद के ग्रंथ कारिका में बौद्ध-दर्शन के वे चिह्न मिलते हैं जिन्हें विज्ञानवाद अथवा माध्यमिक सम्प्रदाय कहा जाता है।

शंकर के एक अन्य पूर्ववर्ती भर्तृहरि थे, जिनकी मृत्यु 650 ई. में हुई। उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वाक्यदीप' है, जिसका झुकाव भी बौद्ध-धर्म के प्रति है। ईत्सिंग लिखता है कि भर्तृहरि कई बार बौद्ध भिक्षु बना और कई बार बदल भी गया।

शंकर-उपनिषद एवं ब्रह्मसूत्र-

शंकर ने अपने समय के दार्शनिक उत्तराधिकार में प्रवेश किया और अपने समय की विशेष आवश्यकताओं को दृष्टि में रख कर उसकी नये सिरे से व्याख्या की। यद्यपि हिन्दू विचारधारा ने बौद्धमत के ऊपर क्रियात्मक रूप से विजय प्राप्त कर ली थी, लेकिन फिर भी बौद्धमत ने जन-साधारण में अपनी शक्ति का गुप्त प्रवेश करा दिया था। हिन्दू जाति के लिये यह एक संकट का काल था, जबकि आपसी कलह में पड़े सम्प्रदायों के कारण जनता में धर्म से थकावट का भाव आ गया था। शकर ने ऐसे में अद्वैत वेदान्त की धार्मिक एकता को सम्पन्न कराने वाले एक समान आधार के रूप में घोषणा की। शंकर का दर्शन प्राचीन शिक्षा का अनुबन्ध है अथवा उसकी पुनर्व्यवस्था है। शंकर ने उपनिषदों की सुसंगत व्याख्या की और ब्रह्म, जीव, ज्ञान आदि का निर्विरोध एवं उपनिषद्-सम्मत स्वरूप

उद्घाटित किया। शंकर ने निर्गुण, सगुण, पराविद्या और अपराविधा का सम्यक् समन्वय प्रस्तुत किया।

जब हम वेदान्त-सूत्र का प्रश्न उठाते हैं तो वहाँ भाष्यों की सहायता आवश्यक है। हिन्दू धर्म की व्याख्या के लिये छः विख्यात कसौटियाँ हमें इन्हीं भाष्यों में मिलती हैं

1. उपक्रम (प्रारम्भ) और उपसंहार, 2. अभ्यास, 3. अपूर्वता, 4. फल, 5. अर्थवाद और 6. उपपत्ति या दृष्टान्त। उक्त कसौटियों के बारे में शंकर का विश्वास है कि बादरायण की दृष्टि से यह उसी प्रकार का वेदान्त था जिस प्रकार के वेदान्त का प्रतिपादन उन्होंने स्वयं किया है। वेदान्त-विद्वान थिबौत ने भी शंकर के इस मत का समर्थन किया है, जबकि रामानुज शंकर से पृथक् अद्वैत दृष्टि स्थापित करते हैं। शंकर अपनी मान्यताओं में ब्रह्मसूत्र और बादरायण के सर्वाधिक निकट हैं।

शंकर तथा अन्य सम्प्रदाय-

प्रायः यह माना जाता है कि ब्रह्मण-धर्म ने एक भ्रातृभावपूर्ण स्नेह के द्वारा बौद्ध-धर्म का नाश किया। इसका एक कारण तो यह भी था कि ब्राह्मण-धर्म ने गुपचुप बौद्ध-धर्म की अनेक प्रक्रियाओं को अपना लिया था-पशुबलि को दूषित और बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में मान लिया था, यद्यपि बौद्धमत की प्रारम्भिक एवं तात्कालिक रूप की अप्रत्याशित घटनाएँ तो विलुप्त हो गईं, मगर बौद्धमत शंकर के प्रभाव से देश के जीवन में एक जीवनप्रद शक्ति अवश्य बन गया। शंकर विरोधियों ने शंकर मत को प्रच्छन्न रूप से बौद्धमत का ही रूप बताया है। रामानुज के आध्यात्मिक पितामह यामुनाचार्य शंकर के मायावाद को प्रच्छन्न मायावाद ठहराते हैं। सांख्य-दर्शन का टीकाकार विज्ञानभिक्षु बौद्धमत को वेदान्त के बराबर रखते हुए उसे बौद्धों के विषयी विज्ञानवाद का ही रूप बताता है। बौद्धमत के अतिरिक्त शंकर के समक्ष वैदिक पवित्रतावादियों की ललकार भी थी, कर्मकाण्डियों के परलोक दृश्य थे, पुनर्जन्म से मुक्ति की निःश्रेयस स्थापना थी, ब्रह्मविषयक यथार्थ सत्ता थी, भागवत-दर्शन की स्थापनाएँ थीं। श्रुति-स्मृतियों के आधार और आपत्तियाँ उन्हें झकझोर रहे थे और इन सबके साथ शंकर सांख्य विचारकों की क्रमविहीन, शिथिल और विवेकरहित समीक्षाओं से भी जूझे और न्यायवैशेषिक की प्रतीतिपरक अनुभव प्रवृत्तियों का भी उन्होंने समीक्षण किया।

शंकर के ज्ञान-विषयक सिद्धान्त की तुलना प्रायः काण्ट के सिद्धान्त से की जाती है। पाश्चात्य विचारों में इसलिये शंकर पहुँच सके कि पाश्चात्यों के पास भी ब्रह्म के सम्बन्ध में कतिपय शांकरिक धारणाएँ थीं। काण्ट भी शंकर के समान ज्ञान की सम्भावनात्मक समस्या को व्यवस्थित बनाते हैं। जहाँ-जहाँ भी काण्ट आनुभविक और समीक्षात्मक विधि से भटके हैं वहाँ गलत हुए हैं, शंकर ने ऐसी गलती से अपने को बचाया है। शंकर काण्ट की भाँति भाव तथा बोधग्रहण के बीच कोई स्पष्ट विभाजन रेखा नहीं खींचते। कहीं-कहीं शंकर की तुलना एम. बर्गसां से भी की जाती है, जिसके अनुसार अमीबा के आद्यजीवन से उठ कर मनुष्य में चैतन्य का विकास हुआ है। पाश्चात्य दार्शनिक ड्रडले शंकर के अधिक निकट हैं। ब्रैडले अपने 'अपीयरन्स एण्ड रियेलिटी' नामक ग्रंथ में ज्ञान की अवधियों के सिद्धान्त मुख्य और गौण, द्रव्य तथा गुण आदि की शंकर की ही तरह सूक्ष्म व्याख्या करता है। साक्षात् बोधग्रहण को शंकर की तरह ब्रैडले ने भी स्वीकार किया है। शंकर के तर्कशास्त्र में अज्ञेयवाद तथा ब्रह्मसाक्षात्कारवाद दोनों ही के अंश पाये जाते हैं।

शंकर अपने अद्वैत की पुष्टि में विषयनिष्ठ होते हुए देश-काल और कारण में भी प्रवेश करते हैं। शंकर मानते थे कि मुख्य समस्या का सम्बन्ध अस्तित्त्ववादी सत्ता के विरुद्ध यथार्थ सत्ता से है। वह वस्तु जो अस्तिरूप नहीं है यथार्थ हो सकती है, किन्तु वह जो विद्यमान है यथार्थ नहीं भी हो सकती। यथार्थ सत्ता के लिये अस्तित्त्व का भाव असम्भव है। शंकर का यह प्रतिपाद्य भेद ही अन्य दार्शनिक विचारधाराओं में भी मिलता है। मायलेशियन्स की प्रकृति, एम्पिडोक्लीज तथा अनाक्सागोरस के तत्त्व, पाइथागोरस की संख्याएँ, ल्यूसिपस तथा डेमोक्रिट्स के परमाणु, प्लेटो के विचार और अरस्तू की आत्मानुभूति-क्रियाएँ आदि सब इस प्रतीतरूप जगत की पृष्ठभूमि में जो यथार्थसत्ता है उसकी खोज के अंतिम परिणाम हैं। मध्यकालीन विद्वान सारतत्त्व तथा अस्तित्त्व-रूप सत्ता की समस्या को हल करने में शंकर ही की तरह तत्पर थे। डेस्कार्ट तथा स्पिनोजा एकमात्र इसी समस्या में व्यग्र थे। वोल्फ और काण्ट ने परिभाषाओं में परिवर्तन किया और प्रतीति-रूप जगत के विरोध में सद्बुद्धि द्वारा प्राप्त प्रकृति-तत्त्व का प्रतिपादन किया। हीगल ने सत् तथा अस्तित्त्व में भेद किया। शंकर के दृष्टिकोण से यथार्थ सत्ता के नित्य-स्वरूप की व्याख्या कर इन सब दर्शनों का एक उत्तर ब्रह्म में और उसके अन्तस्तम सारतत्त्व में खोजा और स्थापित किया। यही उनके अद्वैत की उपलब्धि है।

शंकर ने अद्वैत वेदान्त को अपने दर्शन का आधार बनाया था। अतः उनकी दृष्टि इसके प्रतिपादन पर ही केन्द्रित थी। बादरायण व गौड़पाद के वेदान्त की व्याख्या होते हुए भी शंकर संतुष्ट नहीं थे, वेदान्त के उस प्रभाव से जो नागार्जुन, चन्द्रकीर्ति आदि बौद्धों के प्रभावों को निरस्त नहीं कर पा रहा था। अतः उन्होंने प्रमुख उपनिषदों, भगवतगीता और वेदान्तसूत्र पर भाष्यों की रचना की। उपदेश सहस्री और विवेकचूड़ामणि के माध्यम से शंकर की सामान्य स्थिति हमारे समक्ष स्पष्ट होती है। उन्होंने जिन स्त्रोतों का प्रणयन

किया वे भारत की प्रार्थना परम्परा बन गये। दक्षिणामूर्ति स्त्रोत, हरिमीड़े स्त्रोत, आनन्दलहरी और सौन्दर्यलहरी इनमें प्रमुख हैं। आत्मवज्र सूची, आत्मबोध, महामुदगर, दशश्लोकी और अपरोक्षानुभूति तथा विष्णुसहस्त्रनाम एवं सनत् सुजाती के भाष्य आदि रचनाएँ भी शंकर की ही हैं। शंकर के पूर्व से वेदान्त की जो परम्परा प्रारम्भ हुई थी वह शंकर में आकर अपने सर्वोच्च और सर्व-व्यापक रूप में स्थापित हुई एवं शंकर के भाष्यों के अतिरिक्त अद्वैत के अनेक ग्रन्थों और दर्शनशास्त्री व्याख्यानों ने वेदान्त की सत्ता को प्रभावात्मक बनाया। वेदान्त-कल्पतरु की रचना सन् 1260 ई. में अमलानन्द ने की, जिसमें ब्रह्मसूत्र भाष्य एवं वाचस्पति मिश्र की भामती टीका की व्याख्या है। इसके पश्चात् अप्पयदीक्षित ने भामती व्याख्या एवं वेदान्त-कल्पतरु व्याख्या के लिये वेदान्त कल्पतरु परिमल लिखा। स्वामी मधुसूदन सरस्वती ने 1550 ई. में वेदान्त-कल्पलतिका की रचना की। वेदान्त-कारिकावली की रचना विशिष्ट द्वैतवादी वेदान्ती बुच्चि वेंकटाचार्य ने की जिसमें रामानुज सम्मत पदार्थ और सिद्धान्तों का सारांश है। वेदान्त-कौस्तुभ की रचना निम्बार्क सम्प्रदाय के द्वितीय आचार्य श्रीनिवास ने की। यह एक तार्किक भाष्य है। अब तो वेदान्त का एक लम्बा सिलसिला ही चल पड़ा और अद्वैत की यह वेदान्त परम्परा वेदान्त-कौस्तुभप्रभा, वेदान्त-जाह्नवी, वेदान्त-तत्त्व-बोध, वेदान्त-तत्त्व-विवेक, वेदान्त-दर्शन, वेदान्त-देशिक, वेदान्त परिभाषा, वेदान्त-पारिजात सौरभ, वेदान्त-प्रदीप, वेदान्त-रत्न, वेदान्त-रत्नमंजूषा, वेदान्त-विजय, वेदान्त-सार, वेदान्त-सिद्धान्तमुक्तावली, वेदान्त-सूत्र, वेदान्त-सूत्र भाष्य आदि के माध्यम से लोकमानस में व्याप्त हुई। बादरायण के पूर्व के वेदान्ताचार्य जिनमें बादरि, कार्णाजिनि, आत्रेय, ओडुलोमि, आश्मरथ्य, काशकृत्स्न, जैमिनी, काश्यप एवं बादरायणि के नाम हैं, आद्य शंकर के प्रेरक-स्त्रोत थे। बादरायण के पश्चात शंकर ने अपने भाष्य में इनकी चर्चा की तथा भर्तृप्रपंच, ब्रह्मनन्दी, टंक, गुहदेव, भारुचि, कपर्दी, उपवर्ष, बोधायन, भर्तृहरि, सुन्दर पाण्डय, द्रभिडाचार्य, ब्रह्मदत्त आदि के कार्य को भी आद्य शंकर ने स्वीकारा है। शंकर के पश्चात्वर्ती वेदान्ताचार्य दो भागों में विभक्त हैं- शंकरमतानुयायी और रामानुजमतानुयायी।

अद्वैत एवं आद्य शंकराचार्य-अद्वैत शब्द 'अ' व 'द्वैत' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है द्वैत का अभाव। इसका प्रयोग मूलसत्ता के निर्देश के लिये हुआ है। इसके अनुसार वस्तुत: एक ही सत्ता ब्रह्म है। अद्वैत की इस परम्परा को भिन्न-भिन्न दार्शनिकों एवं आचार्यों ने भिन्न-भिन्न रूप से प्रतिपादित किया। अंतिम विश्लेषण में शंकर ने आत्मा और ब्रह्म की एक सत्ता निरूपित कर वेदान्त की अद्वैत सत्ता की स्थापना की। इसके पश्चात् अद्वैत पर अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। अद्वैत-चिन्ताकौस्तुभ महादेव सरस्वती ने तत्त्वानुसन्धन के आधार पर लिखा। अद्वैत-दीपिका नृसिंहाश्रम सरस्वती ने सोलहवीं शती के उत्तरार्द्ध में लिखा। अद्वैत-ब्रह्मसिद्ध कश्मीरी सदानन्द यति ने 17वीं शती में लिखा और एक ब्रह्मवाद की वेदान्ती व्याख्या की ! अद्वैत-रत्न भल्लनारायण ने सोलहवीं शती में तत्त्वदीपन को टीका के रूप में लिखा। अद्वैत-रत्नलक्षण मधुसूदन सरस्वती ने 17वीं शती में लिखा। अद्वैत-रसमंजरी सदाशिवेन्द्र सरस्वती ने अठारहवीं शती में लिखा। अद्वैतवाद को सत्, असत्, भावात्मक, अभावात्मक, अनेकत्ववादी, बहुत्ववादी, वैपुल्यवादी एवं नैति-नैति की मान्यताओं से निकाल कर ब्रह्म की एकात्मक सत्ता के रूप में स्थापित शंकर ने ही किया। नैति-नैति का यह दर्शन माध्यमिक बौद्धों के पास शून्य या विज्ञानवादी दर्शन के रूप में था, उसी समय शब्दाद्वैतवादी भी हुए और इन वैयाकरणों ने स्फोट अथवा शब्द, शैव, शिव, शाक्त, शक्ति आदि को अद्वैत का आत्मतत्त्व कहा। इन सभी से ऊपर शंकर का आत्माद्वैत अथवा ब्रह्मद्वैत है जहाँ ब्रह्म एवं आत्मा की एकमात्र एक सत्ता है। शंकर-अद्वैत रामानुज के विशिष्टाद्वैत और वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत से अलग है। शंकर ने इसे वेदों से भी प्राप्त किया है। ऋग्वेद नारदीय सूक्त में सत् और असत् का विलक्षण सत्तारूप प्राप्त हुआ जिसे शंकर ने उपनिषदों में और अधिक व्यापक रूप में प्राप्त किया। अत: शंकर ने तीनों प्रस्थान अर्थात् उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और गीता पर भाष्य लिखा। बह्मसूत्र का भाष्य शंकर का शारीरिक भाष्य है जो अद्वैतवाद का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रंथ है। इसके पश्चात् अद्वैत-विद्या-मुकर रंगासजाध्वरी ने न्याय-वैशेषिक एवं सांख्यादि के खण्डन पर लिखा। अद्वैत-विद्या-विजय द्रोणाचार्य ने 26वीं शती में लिखा। अद्वैत-विद्या-विलास सदाशिव ब्रोन्द्र ने लिखा। अद्वैत-सिद्धि मधुसूदन सरस्वती ने 17वीं शती में रचा।

शंकर के समय में भारत बौद्ध, जैन एवं कापालिकों के प्रभाव से पूर्णतया प्रभावित था। वैदिक धर्म लुप्तप्राय था। इस कठिन समय में शंकर ने वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। उन्होंने वेदान्त की विरल परम्परा में अद्वैत-दर्शन की एक ऐसी सर्वमान्य व्याख्या की जो उनके पूर्व एवं पश्चात् के सभी वेदान्ती अद्वैतवादियों की व्याख्या से अधिक ग्राह्य हुई। इस प्रकार शंकर एक ओर वेदान्त परम्परा के दार्शनिक थे, तो दूसरी ओर अद्वैत परम्परा के महान साधक संत एवं भक्त। आज भी उनकी ज्योतिर्मय परम्परा के रूप में उनके द्वारा स्थापित चारों मठ विद्यमान हैं, जहाँ उनके वेदान्त और अद्वैत की अक्षुण्ण ज्योति सतत् जल रही है।

- लेखक वरिष्ठ कवि, कथाकार, आलोचक एवं संपादक मंडल समावर्तन के प्रतिष्ठित सदस्य हैं। एस.एच. 8/19 सहयाद्रि परिसर, भदभद रोड, भोपाल - 462003, फोन : 94065 28243

■

पंडित रविशंकर पर एकाग्र 'संगना'

मंजरी सिन्हा

अपने जीते-जी किंवदंती बन चुके पंडित रवि शंकर की एक सर्वतोमुखी संगीतज्ञ, उदार गुरु, संगीत-चिंतक एवं नव-सर्जक के रूप में जिस कोटि की ख्याति रही है यह हम सभी जानते हैं। अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भारतीय संगीत को स्वीकृति और प्रतिष्ठा दिलाने की पहल हो अथवा यहूदी मेनुहिन, जॉर्ज हैरिसन, ज़्याँ पियरे रामफल, ज़ूबिन मेहता और फ़िलिप ग्लास जैसे विश्व-विख्यात संगीतज्ञों के साथ उनके सांगीतिक प्रयोग हों, देश-विदेश की फ़िल्मों, बैले, थिएटर, वाद्यवृंद के लिए सिरजा उनका अनूठा संगीत संयोजन हो अथवा देश-विदेश में उनके सितारवादन के यादगार कंसर्ट; सभी जगह उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी।

उनके जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में संगीत नाटक अकादमी ने अपनी प्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिका 'संगना' का पंडित रवि शंकर पर एकाग्र एक वृहत विशेषांक प्रकाशित किया है। अपने प्रकाशकीय वक्तव्य में 'संगना' के इस ताज़ातरीन अंक की प्रकाशक एवं अकादमी सचिव सुश्री ऋतास्वामी चौधरी का कहना है 'पंडित रविशंकर के जन्मशताब्दी वर्ष में उनका स्मरण भारत के समुन्नत सांस्कृतिक जयघोष का स्मरण है', और इस विशेषांक की अतिथि संपादक एवं दिल्ली विश्व-विद्यालय के संगीत संकाय की भूतपूर्व डीन (संकाय-प्रमुख) प्रोफ़ेसर सुनीरा कासलीवाल अपने सम्पादकीय में 'पंडित जी के वृहद् कृतित्व और विराट व्यक्तित्व को इस छोटी सी पुस्तिका में बांधने के प्रयत्न को 'माँ गंगा के निर्मल और पवित्र जल को एक छोटी सी गंगाजली में संजोने का प्रयास' मानती हैं।

ऋता जी की बात से सहमति सहज-स्वाभाविक है लेकिन सुनीरा जी का कथन काफ़ी-कुछ ख़ाकसारी (विनम्र-संकोच) जैसा ध्वनित होता है, क्योंकि असामान्य रूप से बृहदाकार संगना के इन दोसौ पचहत्तर (275) पृष्ठों में संकलित सामग्री का वैविध्य भरा विस्तार पंडित जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के अनुरूप ही बहुआयामी है जिसका प्रमाण है इस विशेषांक में प्रकाशित लेखों की संख्या, उनकी विविधता, गुणवत्ता, और तारतम्य, जिसमें चित्रवीथिका सहित उन्हें प्रदत्त उपाधियों एवं अलंकरणों, उनके नवसृजित रागों, उनके संगीत से सजी फ़िल्मों, विविध रचना-प्रकल्पों, उनके साथी तबला-वादकों व शिष्यों की फ़ेहरिस्त तक शामिल है। पत्रिका के प्रेस में जाते जाते तक जिन संगीतज्ञों के विचार प्राप्त हुए उन्हें परिशिष्ट में समाविष्ट करके पंडित जी के बहुरंगी व्यक्तित्व और कृतित्व के तमाम पहलुओं को समेट लेने वाली सुनीरा जी की यह 'गंगाजली' इतनी 'छोटी सी' भी नहीं लगती!

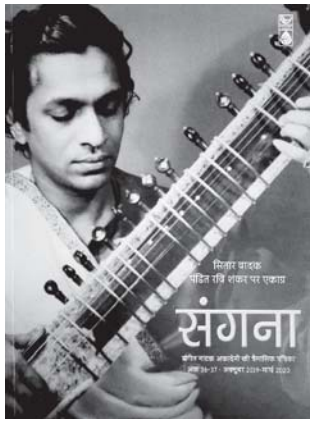

संगना का यह विशेषांक विविध घरानों के वरिष्ठ कलाकारों, कलमर्मज्ञों और पंडित रवि शंकर के शिष्य-प्रशिष्यों की उनसे जुड़ी यादों का एक वृहत कोलाज है जिसमें उन सबने उनको लेकर अपने अपने मन की बात कही है। प्रकाशित सामग्री को विषयवस्तु के अनुसार दो भागों में विभक्त किया गया है, और दोनों के मध्य है पंडित रवि शंकर की कला-यात्रा के विरल चित्रों वाली चित्रवीथि, जो इन लेखों को एक साँस में पढ़ जाने की अधीरता के बीच पाठकों को मानों सुस्ताने का क्षणिक अवकाश देती है।

पहले भाग की शुरुआत होती है श्रीमती सुकन्या शंकर के लेख से, जो अपने पति और दो प्रतिभा-संपन्न बेटियों के पिता पंडित रविशंकर के सम्पूर्ण जीवन और उनके समस्त सांगीतिक अवदान का सुविस्तृत आकलन आत्मीय दृष्टि से करती हैं। पंडित जी की जन्मजात प्रतिभा, माता-पिता से पाए धार्मिक/सांस्कृतिक संस्कारों, विदेश में बिताए बचपन के चलते पश्चिमी संगीत के प्रति रुझान, मैहर में की गई साधना, चूँकि गुरु सितार नहीं बजाते थे अत: उनसे पाई तालीम को अमली जामा पहनाने के लिए 'ट्रायल एंड एरर' के श्रमसाध्य रास्ते से खोजी उपयुक्त तकनीक, सितार की बनावट और ध्वनि पर किए उनके प्रयोग, भारतीय संगीत को वैश्विक मानचित्र पर

स्थापित करने की पहल, मोंटेरा और वुडस्टाक जैसे अविस्मरणीय कार्यक्रमों से निर्मित उनकी 'रॉक-स्टार' छवि और उसके बरक्स भारतीय संगीत की आध्ययात्मिकता की सुवास और उनके बनाए रागों, फ़िल्मों, अवार्डों से लेकर उनके लिखे अंतिम ओपेरा सुकन्या तक को अपने लेख में सुकन्या जी ने समाहित कर लिया है।

इतने व्यापक विस्तार के बाद इस भाग के अन्य लेखों में दुहराव को बचाते हुए, विषय वैविध्य का जिस तरह ध्यान रखा गया है वह भी बरबस ध्यान खींचता है। वरिष्ठ कलाकारों की स्मृति-मंजूषा में सहेजी पुरानी यादों से जुटाई सामग्री में रामपुर सहसवान घराने की विदुषी शन्नो खुराना, दिल्ली घराने की विदुषी कृष्णा बिष्ट के लेखों से यदि पंडित जी के दिल्ली में बिताए उन दिनों की झलक मिलती है जब यहाँ शास्त्रीय संगीत के अनुकूल वातावरण तैयार हो रहा था या आल इंडिया रेडियो में नेशनल ऑर्कस्ट्रा की स्थापना और उसमें पंडितजी की महती भूमिका की बात है तो ग्वालियर घराने के पंडित विद्याधर व्यास उनके संगीत की बारीकियों के साथ ही उनके बम्बई प्रवास वाले उस क़िस्से का भी ज़िक्र करते हैं जब टाइम्स ऑफ़ इंडिया में अपनी आलोचना के सुरीले प्रत्युत्तर से उन्होंने पत्रकारों की बोलती बंद कर दी थी।

वर्तमान पीढ़ी के बांसुरी वादक रोनू मजूमदार दाक्षिणात्य रागों को लेने के पीछे की उनकी सोच को रेखांकित करते हैं तो पंडित विजय शंकर मिश्र ताल तत्व पर उनकी विलक्षण पकड़ और परम्परागत मसीतखानी, रज़ाखानी गतों के साथ ही अलग अलग तालों में उनकी स्वरचित गतों से तबला-वादकों के कान खड़े हो जाने का उल्लेख करते हैं। उनके संगतकार तबला-वादकों में किशन महाराज और ज़ाकिर हुसैन के बारे में आलोक पराड़कर, उनकी डिस्कोग्राफ़ी के बारे में सुरेश चाँदवणकर और आकाशवाणी वाद्यवृंद के बारे में वीणा पहाड़ी के लेख अच्छी जानकारी देते हैं तो असित राय बांग्लादेश में पंडित रविशंकर के पैतृक घर और पूर्वजों की।

कुशाल गोपालका ने फ़िल्मों में उनके संगीत निर्देशन का बेहद बारीक और प्रतीकात्मक विवेचन किया है, उदाहरण के लिए अनुराधा फ़िल्म का 'साँवरे, काहे मोसे करो जोरजोरी का समीक्षात्मक विवरण देखिए 'क्या कल्पना है पंडित जी की! भैरवी बंदिश की शुरुआत, पूरे जोश में स्टेशन से छूटती रेलगाड़ी के समान हुई है जिसमें वे तंत्री वाद्य और सितार के साथ वे लक्ष्मीकान्त की नन्ही मैंडोलिन को भी जोड़ लेते हैं। पर ये क्या गाड़ी तो थमी जा रही है। चेलो शांत हो गए हैं। अब सारंगी और तानपुरा सवार होते हैं, हार्प संकेत देता है और लता जी का आलाप बंदिश की घोषणा करता है- 'साँवरे साँवरे ...'! ट्रेन तबले के मज़बूत पहियों पर फिर से भागने नहीं, उड़ने लगती है। सितार, मैंडोलिन और तबले की द्रूत लय तिहाई ले कर लता जी को मैदान सौंपती हैं, तो वे स्थायी परोसती हैं। साँवरे को डाँट में मैंडोलिन भी छोटी सी फटकार सुना देती है। बिना ज़्यादा अंतराल अंतरा आ जाता है जहां डगर रोकने में श्याम को पखावज और सितार मदद कर रहे हैं। छैल पर विनती का असर नहीं हो रहा है और लता जी अपनी बैयाँ छुड़ाती हुई आधे आवर्तनों की एक से बढ़कर एक तानें कसे जा रही हैं। सारे गोकुल की मदद के रूप में समस्त ओरकेस्ट्रा उन्हीं की तानों को दुहरा रहा है, साँवरे से कोई जीत पाया है भला?' इसके बाद कुशाल जी उनके सिने संगीत की बखूबी व्याख्या करते हैं 'निश्चित रूप से पंडित जी की दृष्टि बॉक्स अफ़िस पर नहीं रही। वे सारे चमक-धमक वाले तत्व और व्यवस्थाएँ जिनसे अन्य फ़िल्मी गाने जोड़े-बनाए जाते हैं, पंडित जी के फ़िल्मी गानों से ग़ायब हैं। न ही भारी ओर्केस्ट्रेशन का दिखावा, न ही धुनों की चोरी। उनके सिने-संगीत में उनका अपना चमत्कार नज़र आता है।

पंडित जी के साज़ और सितार-निर्माताओं पर सोमजित दासगुप्त के लेख में पंडित जी के सात बरस की उम्र से लेकर अस्सी बरस की उम्र तक बजाए अलग अलग सितारों और उनके 'सितार-मेकर्स' के बारे में पता चलता है, मसलन 1927 से 1932 के श्वेत-श्याम चित्रों में उनके हाथ में जो सितार दिखाई देता है वो कन्हाई लाल के प्रारम्भिक सितारों में है।उसके बाद विष्णुपुर घराने वाला छोटा सितार उनके हाथों में दिखा जो उदयशंकर के तत्कालीन संगीत निर्देशक और विष्णुपुर घराने के मशहूर सितारवादक पंडित गोकुल नाग के प्रभाव से आया। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के पास रहते हुए सुरबहार के चरित्र वाला सितार बना तो ढाँचे में अंतर हुआ। हीरेन बाबू के बनाए इस सितार की जवारी से वे संतुष्ट नहीं थे तभी एक सितार-मेकर नोंदू मालिक से उनकी मुलाक़ात हुई और उनके जवारी के काम से वे इतने खुश हुए कि उन्हें अपने साथ विदेश भी ले जाने लगे। उनका अंतिम सितार दिल्ली के बिशन दास जी का बनाया हुआ था। पंडित जी अपनी अपेक्षा के अनुरूप सितार की आवाज़ मिले इसके लिए ज़िंदगी भर वाद्ययंत्र बनाने वाले कारीगरों के साथ इक्स्पेरिमेंट करते रहे।

दूसरे भाग में बारी आती है साक्षात्कारों की, जिसमें मैहर घराने से इतर सितार के अन्य धरानों के मूर्धन्य प्रतिनिधियों से भी बातचीत की गयी है। घरानेदारी के रणक्षेत्र में सतत जारी उठा-पटक, दांव-पेंच, राजनीति और गुटबंदी के बावजूद यहाँ ऐसे कलुष और संताप की छाया तक नहीं दिखती और सम्पादक की ईमानदारी और मंशा में भी किसी को कोई शक नहीं होता। इन साक्षात्कारों ने

एक ऐसी खिड़की खोली है जहां सामान्य पाठक की नज़र कभी नहीं पहुँचती। इटावा इमदादखानी घराने के मूर्धन्य संगीतज्ञ और उस्ताद विलायत खाँ के वरिष्ठ शिष्य पंडित अरविंद पारीख का बेबाक़ साक्षात्कार सुनीरा जी ने स्वयं लिया है जहां पारीख जी कहते हैं रविशंकर जी ध्रूपद अंग का सितार बजाते थे, विलायत खाँ साहेब ख़याल अंग का! ध्रूपद अंग में वह जो बजाते थे उसका उन्होंने 'हॉरिज़ॉंटल एक्सपैन्शन' बहुत किया। उन्होंने बहुत से राग और ताल बजाए, फ़िल्मों में संगीत दिया, रेडियो में आरकेस्ट्रा कंडक्ट किया, दूसरे शब्दों में उनका कार्य विस्तार बहुआयामी था। उस्ताद विलायत खाँ साहब का 'वर्टिकल एक्सपैन्शन' ज़्यादा था। उन्होंने कम राग और ताल बजाए लेकिन जो भी काम किया, गहराई में जाकर किया। ऐसा नहीं है कि रविशंकर जी गहराई में नहीं जाते थे लेकिन विस्तार की उनकी जो प्रवृत्ति थी उसमें हॉरिज़ॉंटल एक्सपेंशन ज़्यादा दिखता है!

सितार के सेनिया घराने के पंडित देबू चौधरी अपने साक्षात्कार में कहते हैं 'उनके सितार में ग़ज़ब का ग्लैमर और आकर्षण था। मेरे गुरु उस्ताद मुश्ताक़ अली खाँ तानसेन और मसीत खाँ की परंपरा से थे जो सत्रह पर्दों के सितार का ही वादन करते रहे, और मुर्कियों का प्रयोग कभी नहीं किया। मैं और मेरे शिष्य भी ईमानदारी से इस परम्परा का निर्वहन कर रहे हैं। दूसरी ओर रोबू दा हर क्षण नए प्रयोग कर रहे थे।

मेरे उस्ताद और रवि शंकर जी सितार के दो विपरीत ध्रूव थे लेकिन एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर था। पंडित लक्ष्मण कृष्णाराव पंडित सुनीरा जी द्वारा लिए साक्षात्कार में कहते हैं उस्ताद विलायत खाँ और रविशंकर जी ऐसे हैं जैसे एक गुलाब का फूल तो दूसरा चमेली का। दोनों की वादन शैलियाँ भिन्न होते हुए भी मनमोहक थीं। उन दोनों प्रतिभा-संपन्न कलाकारों के सितारवादन की कोई तुलना नहीं हो सकती।

अन्य साक्षात्कारों में भी पंडित जी से जुड़े कतिपय ऐसे पक्षों की जानकारी मिलती है जिनसे पाठक शायद अनभिज्ञ रहे हों। उनके शिष्यों में विनय भरतरम कहते हैं पंडित जी और आडियेंस के बीच कोई बैरियर नहीं था तो विश्व मोहन भट्ट कहते हैं 'वे इस संसार में सांगीतिक सिद्धियाँ ले कर आए थे।' शहनाई वादक दयाशंकर के अनुसार 'उन्हें ज़िंदगी के हर मौक़े को यादगार बनाना आता था' तो मंजु मेहता के हृदय में 'उनकी छवि भगवान जैसी' है। गायक-बंधु राजन-साजन मिश्र विश्व संगीत समारोह का एक वाक़या बताते हैं जहां दस हज़ार लोग थे लेकिन कोई सिगरेट पी रहा था तो कोई बियर। पंडित जी माइक लेकर बोले 'मैं आपके दादा की तरह हूँ, अगर आप सिगरेट या अल्कोहल पिएँगे तो मैं नहीं बजाऊँगा। लोग पांडाल से बाहर गए और उसे फेंक कर शांतिपूर्वक बैठे, उन्हें सुना और सराहा। ये करिश्मा हमने अपनी आँखों से देखा है।' प्रसिद्ध तबला वादक कुमार बोस उन्हें भारतीय संगीत आ आधुनिक चेहरा मानते हैं तो गायक असित देसाई के अनुसार वे महान संगीतज्ञ से पहले एक महान मनुष्य थे। शुभेंद्र राव अपने गुरु को अनूठी दिव्यता औत तेजस्विता के स्वामी मानते हैं। जनसत्ता में प्रकाशित पंडित जी के पचहत्तरवें जन्मदिन पर रवींद्र त्रिपाठी एवं सुनीरा कासलीवाल का लिया साक्षात्कार विशेष है।

संगना के पहले लेख में सुकन्या जी ने लोगों को जिन दो पुस्तकों 'पंडित रवि शंकर की आत्मकथा-रागमाला तथा ऑलिवर क्रास्क द्वारा लिखित 'इंडियन सन, द लाइफ़ एंड म्यूज़िक आफ़ रवि शंकर को अवश्य पढ़ने का साग्रह निवेदन किया है उन दोनों की ही समीक्षा संगना के अंतिम लेख में छाप कर सम्पादक ने पाणिनि के सूत्र 'आदिरंत्येन सहेत:' को चरितार्थ कर दिया है, जहां लगता है कि आदि और अंत जुड़ कर संगना को सम्पूर्ण बना रहे हैं। पंडित जी की जन्मशती के उपलक्ष्य में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित 'रागमाला' का हरि किशोर पांडेय द्वारा किया गया हिंदी अनुवाद, तथा वर्ष 2020 में फेबर एंड फेबर लिमिटेड, लंदन से प्रकाशित ऑलिवर क्रास्क की छ: सौ अट्ठावन पृष्ठों की अंग्रेज़ी पुस्तक की समीक्षा भी इस समीक्षा की लेखिका मंजरी सिन्हा अर्थात् मैंने ही की है।

इतने जतन से परिकल्पित और संपादित संगना के पहले ही लेख में 'क्रास्क' को उसकी गुमराह करने वाली अंग्रेज़ी वर्तनी के चलते 'क्रास्के' लिख जाना तो क्षम्य है लेकिन सुकन्या जी के लेख का शीर्षक 'रविशंकर - भारत का सूर्य जैसा अंग्रेज़ी का शब्दश: अनुवाद अटपटा लगता है। हमारे यहाँ 'आदरार्थे बहुवचनम' की मर्यादा रही है, जिसके अनुसार 'रविशंकर - भारत के सूर्य अधिक उपयुक्त लगता। सम्पादन की दृष्टि से 'द रविशंकर सेंटर अभिलेखागार की प्रदर्शन मंजूषा' शीर्षक इरफ़ान जुबेरी के लेख का पूर्वार्ध अनावश्यक लगता है, जिसका पंडित रवि शंकर के उक्त अभिलेखागार से कुछ लेना देना ही नहीं हैं। शायद सम्पादक की सौम्यता ने इसे नज़रंदाज़ कर दिया हो। बहरहाल पंडित रवि शंकर पर एकाग्र संगना का यह सरस विशेषांक निश्चय ही संग्रहणीय है!

पत्रिका : त्रैमासिक 'संगना', **संपादक** : सुनीरा कासलीवाल व्यास, **प्रकाशक:** सचिव, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, **मूल्य :** 100रू.

- लेखिका वरिष्ठ कला समीक्षक हैं।
ई-181, रिचमंड पार्क, डीएलएफ फेज़-4, गुड़गाँव-122009
मो.: 9811253341

■

स्मृति शेष

साधो ऐसा ही गुरु ध्यावे

पद्म भूषण से सम्मानित पंडित राजन मिश्र को शिष्यों की आदरांजलि

25 अप्रैल 2021 की शाम को दिवंगत हुए बनारस घराने के लब्ध प्रतिष्ठित गायक , पद्म भूषण से सम्मानित पण्डित राजन मिश्र जी जितने बड़े गायक थे उतने ही विचारवान गुरु भी। उनके दर्जनों शिष्य देश विदेश के मंचों पर सक्रिय हैं। पंडित राजन मिश्र की गायकी पर बहुत कुछ लिखा और कहा जा चुका है। यहाँ उन्हें एक अन्य कोण से, देखने का, उनके यशस्वी शिष्यों की दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं और जानने की कोशिश करते हैं कि उनके शिष्य उनके लिए क्या कहते और सोचते हैं ?

दूरदर्शन के दिल्ली केन्द्र की वरिष्ठ पदाधिकारी डॉक्टर गुंजन भटनागर भावपूर्ण शब्दों में कहती हैं कि 'साधो ऐसा ही गुरु ध्यावे'

पंडित राजन मिश्रा जी को शत शत नमन जब मैंने यह जाना कि शास्त्रीय संगीत क्या होता है उन्हीं दिनों मैंने एक नवभारत टाइम्स में पंडित राजन एवं साजन मिश्र जी पर लेख पढ़ा और जाना कि वह बनारस घराने से संबंधित हैं तभी मैंने अपने पिता पंडित जोई श्रीवास्तव जो कि इलाहाबाद के हैं उनसे कहा कि पापा मैं इन्हीं से गायन सीखूंगी किंतु उस समय में बहुत छोटी थी बहुत समय बाद संयोग से हमारी मुलाकात पापा के मित्र पंडित घासीराम निर्मल से

हुई उन्होंने हमें पंडित राजन-साजन जी से मिलवाया और गुरु जी ने मुझे गंडा बांध के अपना शागिर्द बना लिया उस समय उन्होंने मेरी गायन शिक्षा का प्रारंभ राग यमन से किया कुछ दिनों बाद मेरी दूरदर्शन में नौकरी लग गई नौकरी की जिम्मेदारियों के कारण मेरा गुरु जी के यहां रेगुलर जाना कम हो गया था लेकिन गुरु जी मुझे बार-बार जोर देते थे कि तुम आओ और गाना सीखो गुरुजी उदार हृदय के दयावान गुरु रहे हैं वह अपने शिष्यों की साइकॉलजी को समझ कर उनको शिक्षा प्रदान करते थे यह उनकी एक खासियत थी उनका यह मानना था की संगीत को महसूस करके गाया या बजाया जाए उनका मानना है कि संगीत से स्वरों से प्रेम करोगे तभी संगीत भी आपसे प्रेम करेगा और समस्त ब्रह्मांड में सामंजस्य बना रहेगा उनका संगीत तो सभी को पसंद था पर मेरे हिसाब से मैं यह कहना चाहती हूं कि गुरु जी जैसा सा लगाने का ढंग कहीं नहीं दिखता उनके इस सा लगाने के ढंग में ही संपूर्ण राग सामने खड़ा हो जाता है गुरु पंडित राजन मिश्र जी का संगीत अलौकिक है जो जो इस लोक में सुनते समय ही ईश्वर के

दर्शन कराता है संगीत के माध्यम से उन्होंने पहले ही ईश्वर की प्राप्ति कर ली थी ऐसा नहीं है कि आज ईश्वर में लीन है वह पहले से ही ईश्वर में लीन रहे वह एक दयावान गुरु है और गुरु हमेशा जीवंत रहते हैं पंडित राजन जी को कोटि-कोटि प्रणाम।

लास्ट ईयर लॉकडाउन में गुरु जी ने ऑनलाइन क्लासेज ली थी और गुरु पूर्णिमा का भी ऑनलाइन आयोजन किया था और वह बहुत सफल गया था उस समय गुरुजी पता नहीं क्यों बार-बार हमेशा यही कहते थे कि जो मेरे शिष्य हैं वह आकर क्लासेज अटेंड करें मुझसे जितना हो सकता है मुझसे ले ले पता नहीं कल क्या हो जो लेना है वह इसी पल ले ले।

- डॉ. गुंजन भटनागर

मैं ईश्वर के इस निर्णय से सहमत नहीं हूँ

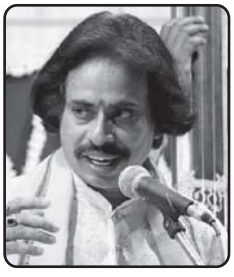

पंडित भोलानाथ मिश्र कहते हैं कि राजन भैया मेरे गुरु होने के साथ साथ मेरे बड़े भाई भी थे। उनके या उनकी कला के विषय में कुछ भी कहने के लिए मैं बहुत छोटा हूँ, मेरे पास शब्द नहीं हैं। लेकिन इतना जरूर कहूँगा कि अपने जीवन में ऐसा कलाकार, ऐसा व्यक्ति मैं ने नहीं देखा। पूरे परिवार, समाज, नाते रिश्तेदार और शिष्यों को एक साथ लेकर चलने की अद्भुत क्षमता थी उनमें।

सबके साथ इतनी आत्मीयता से मिलते थे कि उनसे मिलने वाला हर व्यक्ति उनका मुरीद हो जाता था। विद्वता ऐसी की बखान न हो। मै ने कितनी ही बार देखा है कि वे ग्रीन रूम में कुछ और गा रहे हैं लेकिन मंच पर आने के बाद सामने बैठे लोगों को देखकर कुछ और ही गाने लगते थे।यह बहुत बड़ी बात है। उनके अद्‌भुत गायन में सिर्फ उनका घनघोर रियाज ही नहीं उनका चिंतन-मनन और शोध भी झलकता था। ईश्वर दोनों भाईयों का व्यक्तित्व भी इतना आकर्षक बनाया था कि मंच पर चढ़ते ही महफिल जीत लेते थे। कई बार तो उन्हें अपने से वरिष्ठ कलाकारों के बाद मंच सौंपा गया, लेकिन अन्ततः महफिल उन्हीं के नाम रही। उन्हें मंच पर ज्यादा बातचीत या भाषणबाजी बिल्कुल भी नहीं पसंद था। वे अपने सुर से, बन्दिशों से, संगीत से लोगों का मन मोह लेते थे। उन्हें एक राग में कई तरह की कई बंदिशें याद थीं। इन दोनों भाईयों-पंडित राजन-साजन मिश्र ने लोगों को बनारस घराने का लोहा मानने के लिए विवश कर दिया। क्या खयाल, क्या ठुमरी, क्या भजन- जो भी गाया दिल को मोहित कर दिया। एक से एक कठिन बन्दिशों को भी एकदम सुगम अंदाज में पेश करने की महारत हासिल थी दोनों भाईयों को। सदियों में एक बार ऐसे लोग पैदा होते हैं। बचपन से ही सुनता आ रहा हूँ कि ईश्वर जो कुछ भी करते हैं अच्छा करते हैं।लेकिन ईश्वर के इस निर्णय से मैं सहमत नहीं हूँ। जिस तरह से चिकित्सा सुविधा के अभाव में वे गये वह तो और भी दुखद है। अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वे उन्हें मोक्ष प्रदान करे और साजन भैया सहित उनके परिवार के सभी सदस्यों को इस भीषण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

- पंडित भोलानाथ मिश्र

आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र में कार्यरत सर्वोच्च श्रेणी के गायक

मेरे कई जन्मों के पुण्य कर्मो के फलस्वरूप मुझे मेरे गुरुदेव मिले थे

सुरों के सम्राट, रागों के राजन और बन्दिशों के बादशाह, आधुनिक युग के महानतम गायक मेरे परम पूज्य गुरुदेव पंडित राजन मिश्र जी के लिए कहने को इतना कुछ है मेरे पास कि मैं उन पर एक किताब लिख सकती हूँ। उनके संगीत से मेरा प्रथम परिचय सन 1984-85 में आई संगीत प्रधान फिल्म सुर संगम के माध्यम से हुआ था। इस फिल्म में भारतीय शास्त्रीय संगीत और गुरु के महत्व को बहुत ही शानदार तरीके से समझाया गया था। तब मैं बहुत छोटी थी, लेकिन तभी, उस छोटी उम्र में ही मैं ने उन्हें अपना गुरु मान लिया था। बाद मे कई वर्षों के बाद जब मैं ने उनके साक्षात् दर्शन किये और उन्हें गुरु के रूप में पाया तो ऐसा लगा जैसे कि मेरे कई जन्मों का बहुत बड़ा सपना पूरा हो गया है। वे मुझसे अक्सर कहते औरतें कि मैं तुम में भविष्य की एक श्रेष्ठ गायिका को देख रहा हूँ। इसलिए तुम अपने संगीत का हर शब्द, हर स्वर, हर क्षण ईश्वर को समर्पित करो। इसमे करतब, कौशल या चमत्कार के लिए कोई स्थान नहीं है। यह ईश्वर की पूजा, साधना, आराधना है। इससे दूसरों को आकर्षित करने का नहीं बल्कि खुद को समर्पित करने का प्रयास करो। वे मेरे जीवन के व्यक्तिगत संघर्ष से परिचित थे। इसलिए मुझे उत्साहित करते हुए प्राय कहा करते थे कि तुम अपने दर्द, अपने आँसुओं से संगीत का एक खूबसूरत पेंटिंग बनाती हो। मैं मानती हूँ कि मेरे कई जन्मों के पुण्य कर्मों के फलस्वरूप मुझे मेरे गुरु के रूप में पंडित राजन जी मिश्र मिले थे। मेरे पास आज भी 500 रुपये का वह नोट सुरक्षित है

जो मुझे उनसे पुरस्कार स्वरुप एक कार्यक्रम में मिला था। मेरे उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वे उपस्थित थे। और कार्यक्रम के तुरंत बाद उन्होनें आशीर्वाद स्वरूप 500 रुपए का वह नोट दिया था। आज भले ही पार्थिव रूप में वे हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन एक सच्चे गुरु के रूप में वे सदैव हमारे साथ बने रहेंगे। उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम।

- **डॉक्टर नवनीता चौधरी** गौतम बुद्ध नगर

अपने गायन में हम उन्हें जिंदा रखेंगे

हम दोनों भाई सन 2000 में पहली बार गुरुजी से मिलने गए थे। गुरुजी से हम लोगों का पूर्व परिचय था। उन्हें यह भी पता था कि हम दोनों भाई गाना गाते हैं और मेरे पिताजी पंडित राम प्रकाश मिश्र बनारस घराने के ही सुविख्यात गायक हैं।अत: गुरुजी का पहला प्रश्न यही था कि तुम लोग अपने पिताजी को छोड़कर सीखने के लिए मेरे पास क्यों आये हो ? हम दोनों ने उन्हें आश्वश्त करते हुए बताया कि हम अपने पिताजी की आज्ञा से यहाँ आये हैं, और इसलिये आये हैं कि एक तो आपका गायन सम्पूर्ण है और दूसरे उसमें कलात्मकता के साथ साथ वैज्ञानित्क्ता भी है। हमारा उत्तर सुनकर गुरुजी बहुत खुश हुए और उसी समय मेरे पिताजी को फोन कर के बोले कि 'इन दोनों बच्चों को मुझे दे दीजिये।' पिताजी ने भी तत्क्षण उत्तर दिया-'ये आपके ही हैं।' और हम दोनों भाईयों की शिक्षा का क्रम शुरू हो गया। हम दोनों भाईयों ने गुरुजी को अपने जीवन में उतारने की पूरी कोशिश की है। जिस तरह से बड़े गुरुजी (पण्डित राजन मिश्र) और छोटे गुरुजी (पंडित साजन मिश्र) दो तन एक मन थे- ठीक उसी तरह की जीवन और गायन शैली हम दोनों भाइयों ने अपनाने की पूरी कोशिश की है। हमारी और उनकी अन्तिम मुलाकात गोवा के एक संगीत समारोह में हुई थी। दोनों गुरुजी का भी कार्यक्रम था और उन्हीं के आशीर्वाद से हम दोनों भाइयों का भी। हम लोगों की दृष्टि में वे इन्सान के रूप में ईश्वर थे। हमलोग ईश्वर की तरह ही उनकी पूजा करते हैं। गोवा में हम दोनों भाइयों ने उन लोगों की खूब सेवा की। गुरुजी हँसी मजाक भी खूब करते थे, चुटकुले सुनाते थे। इसके बाद उनकी मृत्यु के लगभग एक सप्ताह पूर्व हमलोगों की उनसे फोन पर बात हुई थी। वे हमारे घर के एक एक सदस्य का नाम लेकर उनका हाल चाल पूछते रहे, फिर बोले- 'संभल कर रहना बेटा। न जाने अब कब मुलाकत होगी, होगी भी या नहीं ?' सुनकर हम दोनों सन्न रह गए। फिर बोले- 'ऐसा क्यों कह रहे हैं आप गुरुजी ? जल्दी ही सबकुछ ठीक हो जायेगा। हमलोग बहुत जल्दी मिलेंगे।' लेकिन उनकी बात सच हो गई। और, वे बिना किसी भी शिष्य की सेवा लिये, किसी को भी कोई तकलीफ दिये मोक्ष मार्ग पर चले गये। लेकिन हम दोनों भाई वायदा करते हैं कि- 'गुरुजी और उनकी गायकी को हम कभी मरने नहीं देंगे,अपने गायन में उन्हें जिंदा रखेंगे।'

- **डॉक्टर प्रभाकर कश्यप (जालंधर) एवं**
डॉक्टर दिवाकर कश्यप (खैरागढ़)

उनका आशीर्वाद आज भी हमें मिल रहा है

बड़े गुरु जी सभी के लिए एक मसीहा के रूप में हैं,उनको भूतकाल नहीं बना सकते क्यों कि वो कहीं न कहीं हम सभी के बीच मे हैं,और निरंतर उनका आशीर्वाद सभी को मिल रहा है,वो एक प्रेरणा के बहुत उच्चतम श्रोत हैं,उन्होंने हमेशा अपने पूर्वजों को अति सम्माननीय दृष्टि से देखा और हम सभी को दिखाया जहां तक व्यक्तिगत रूप से उनके विषय मे अगर कुछ कहने का अवसर मिला है तो इस लायक ही नहीं कि उनके विषय मे कुछ बोल सकूं, क्यों वो एक महासागर है प्रेम के ज्ञान के और स्वरों के।

उनको देखना जैसे साक्षात ईश्वर के दर्शन आंखों को प्राप्त हो रहे हों वैभवशाली व्यक्तित्व,आकर्षक दिव्य क्षवि ओजवान उनके स्वरों का प्रताप सारा विश्व ने देखा है एवं सुना है। उन जैसा ईश्वरीय गायन सम्पूर्ण विश्व में विद्यमान था, है, और रहेगा हमारे ईश्वर को ईश्वर की प्राप्ति हुई।

- **श्री आशीष नारायण त्रिपाठी** (दिल्ली)

ऐसा ही गुरु भावे

सुना था कि ''पानी पिजै छान के, गुरु कीजै जान के'', 1990 मैं जब दिल्ली आया तो फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहा था और दिल्ली में सभी संगीत के कार्यक्रम में जाया करता था कि अचानक गुरु पंडित राजन साजन मिश्रा जी का गायन सुना,उस रात नींद ही नहीं आई इतना दिल को भाने वाली गायकी सुनी फिर क्या उनके सभी संगीत बैठक में जाया करता था अंतत: वह मुझे मेरे नाम से पुकारने लगे और मुझे अपना शिष्य बनाकर मुझे आशीर्वाद दिया, उनका संगीत सिखाना भी एकदम अलग था राग के एक ही चीजों को इतनी देर और इतना बृहद रूप मे जाना बताना यानी मस्तिष्क में घुल जाना और बंदिश की महत्ता, शब्दों के अर्थ आदि का बहुत ध्यान रखना, सुंदर, हंसमुख स्वभाव और ज्ञान के धनी थे। गुरुजी का बातें करना भी गाना जैसा था, सीखने में जब कभी तान या तेजी के प्रति ज्यादा झुकाव देखते थे तो कहते थे बेटा यह अंत में थोड़े समय की चीज है, गाने में स्थिरता लाओ, विलंबित, आलापचारी और बंदिश के साथ अच्छा व्यवहार यह पहले सीखो तेजी तो अंत की चीज है/ कहते हैं ना गुरु की कुछ बातों से जीवन ही बदल जाता है, जो पाया मैंने ? नमन।''साधो ऐसा ही गुरु भावे''

– **डॉक्टर शैलेश सिंह** (दिल्ली)

उन्होंने हमें संगीत को जीना सिखाया

गुरुजी पंडित राजन मिश्र जी के लिए कुछ भी कहना सूरज को दीया दिखाने के समान है। मेरा उनसे गन्डा बंधन 1994 में हुआ था।उनकी विद्वता के आगे मैं हर बार नत मस्तक हो जाती थी। मैं जम्मू से जाती थी उनके पास सीखने के लिए और प्राय उन्हीं के यहाँ ठहरती थी। वे जब किसी राग को सिखाना शुरु करते थे तो एक एक सुर को इतनी गहराई से खोलते थे कि लगता था कि पूरी जिन्दगी कम पड़ जायेगी इसे सीखने के लिए। 5-5, 6-6, घंटा केवल आलाप समझाते थे कि एक सुर से दूसरे सुर पर कैसे जायेंगे और किस प्रकार के राग में किस तरह से आलाप करेंगे, ? बढ़त का सिलसिला अलग-अलग रागों में कैसे होगा ?आदि। वे अपने आप में एक पूरी संस्था थे, ऐसी संस्था जिसके कई विभाग हों और हर विभाग अपने आप में सम्पूर्ण हो। दुनिया का कोई भी विषय उठा लीजिये, वे हर विषय पर घंटों सारगर्भित चर्चा कर सकते थे। क्योंकि उन्होने खुद को केवल संगीत तक ही सीमित नहीं रखा था। अच्छी अच्छी किताबें पढ़ने का जमाने के साथ चलने का हुनर था उनके अंदर। साधरण से संगीत को भी कैसे आध्यात्मिक बनाया जाता है। यह तो मैंने उन्हीं से जाना था। मेरे मानस में आध्यात्मिकता का दीप जलाने वाले वे ही थे। आध्यात्मिकता का भाव मैंने उन्हीं से सीखा था, और सच कहूँ तो जिन्दगी को जीना भी मुझे उन्होनें ही सिखाया। और आज भी उनकी वाणी मेरा मार्गदर्शन कर रही है। मैं उनकी स्मृतियों को सादर नमन करती हूँ।

– **डॉक्टर जसमीत कौर** (जम्मू)

सुगम संगीत की मैं उनकी एकमात्र शिष्या हूँ

दूरदर्शन केन्द्र मुम्बई की वरिष्ठ अधिकारी और सुगम संगीत की सुप्रसिद्ध गायिका डॉक्टर शैलेष श्रीवास्तव अपनी यादों की खिड़कियाँ खोलती हुई कहती हैं-'मेरे चाचा जी श्री नारायण जी पत्रकार और गायक हैं। एक बार रेल में यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात पंडित राजन मिश्र जी से हो गई। यह 1990 की घटना है। मेरे चाचा जी ने उनसे अनुरोध किया था कि मेरी भतीजी दिल्ली में रहती है और आपसे सीखना चाहती है। अगर आप उसे सिखा सकें तो बहुत कृपा होगी। गुरुजी ने फोन नम्बर देकर घर पर आने के लिए कहा। चाचाजी ने वह फोन नम्बर मुझे देकर उनसे मिलने के लिए कहा। उस समय मैं दिल्ली में ही कार्यरत थी। मैंने गुरुजी को फोन किया तो उन्होंने दिन और समय बताते हुए घर पर बुलाया। मैं ठीक समय पर उनके घर पहुंच गई। उन्होनें मेरा गाना सुना और बोले कि- ठीक है। तुम लाईट म्यूज़िक गाती हो तो उसे ही गाओ। क्योंकि क्लासिकल गाने के लिए कम से कम 8 घन्टे का रियाज चाहिये और चूँकि तुम नौकरी करती हो इसलिये इतना रियाज तुम नहीं कर पाओगी। मैं तुम्हें लाईट म्यूज़िक ही सिखाऊंगा। उसके बाद एक अच्छा दिन देखकर पूजा हुई और मेरी शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। लाईट म्यूज़िक की मैं शायद उनकी एकमात्र शिष्या हूँ। उनसे सीखते हुए ही मैंने जाना कि उन्हें सुगम संगीत का कितना गहरा ज्ञान था। वे मुझे समझाते थे कि शब्दों और सुरों के बीच कैसा रिश्ता होना चाहिए ? शब्दों की अदायगी कैसी हो

कि भाव स्पष्ट हों ? साँस कहाँ और कैसे लेनी चाहिए ? मैं इस मामले में खुद को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे उन्होनें अपने परिवार के सदस्य की तरह का स्नेह दिया।घर के मामलों में वे भी और गुरु माँ भी राय लेती थीं। मेरा विवाह भी उनकी सलाह और सुझाव पर हुआ था।

– **डॉक्टर शैलेष श्रीवास्तव** (मुम्बई)

मैंने अपना सब कुछ खो दिया है

गुरुजी पण्डित राजन मिश्रा जी के जाने के बाद सिर्फ मेरा गायन ही नहीं, सब कुछ थम सा गया है।मेरी जिंदगी रुक गई है। वे अक्सर कहते थे कि अपने रियाज का प्रदर्शन करने के लिए नहीं, बल्कि अपने और ईश्वर के बीच की दूरी को पाटने के लिए गाओ। लेकिन मेरे ईश्वर तो वे ही थे, अब जब वे ही नहीं रहे तो फिर मैं क्यों गाऊँ? किसके लिए गाऊं ?

उनकी शिक्षा का एक सबल पक्ष यह था कि वे कहते थे कि मेरा गाना मत गाओ। मेरी नकल मत करो। मेरी सोच को पकड़ो और उसे अपनी तरह से गाओ। मेरा उनसे पिछ्ले 30 वर्षों से भी अधिक का रिश्ता है और एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब हमारी बातें न होती हो। लेकिन अब तो कुछ भी नहीं बचा मेरे जीवन में। मैंने अपना सब कुछ खो दिया है, खुद को भी खो दिया है गुरुजी के असामयिक और आकस्मिक अवसान के बाद।

– **डॉक्टर विराज अमर** (अहमदाबाद)

संकलन: पं. विजय शंकर मिश्र

कला समय

आगामी अंक
अगस्त-सितम्बर 2021

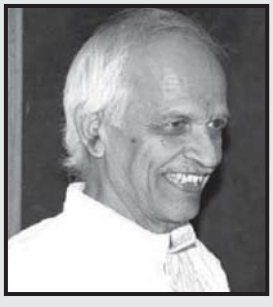

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कला समीक्षक, प्रख्यात चित्रकार
आर्ट फोकस के संपादक, सप्तवर्णी शोध संस्थान के संस्थापक

प्रो. राजाराम – स्मरण

केन्द्रित विशेषांक

प्रो. राजाराम दो बार भारत भवन में रूपंकर प्रमुख रहे। हमीदिया कॉलेज और एम.एल.बी. कॉलेज में कला विभाग के आचार्य और अध्यक्ष रहे। कुछ समय वल्लभ भवन में संस्कृति विभाग में ओ.एस.डी. भी रहे। एक फेलो के रूप में ग्रीस की शोध यात्रा भी की। कला जगत में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। विशेषांक अवश्य पढ़ें...

–संपादक

स्मृति-शेष

विश्वविख्यात् संगीत-मनीषी डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

हाथरस निवासी विश्वविख्यात् संगीत-लेखक, सम्पादक, अनुवादक, समीक्षक और प्रकाशक के साथ-साथ फ़िल्म निर्माता, निर्देशक व फ़िल्म संगीत निर्देशक डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग का विगत माह 30 अप्रैल 2021 को पूर्वाह्न 10:40 पर 88 वर्ष 6 माह की आयु में निधन हो गया। डॉ. गर्ग संगीत कार्यालय, हाथरस के स्वामी; विश्वविख्यात् मासिक पत्र 'संगीत' के प्रधान सम्पादक एवं काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी सहित विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध थे। भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट, मथुरा एवं नाद अनुसंधान ट्रस्ट, पटना के भी वह संरक्षक थे।

लगभग डेढ़ सौ स्तरीय पुस्तकों का लेखन, सम्पादन व अनुवाद कर चुके डॉ. गर्ग के पिताश्री विश्वविख्यात् हास्य कवि पद्मश्री काका हाथरसी (मूल नाम-प्रभूलाल गर्ग) ने सन् 1932 में प्रकाशन-संस्थान 'संगीत कार्यालय' (पूर्व नाम गर्ग एंड कम्पनी) की स्थापना की। उन्हीं ने 1935 में मासिक पत्रिका 'संगीत' का श्रीगणेश किया और जनवरी,1955 में अपने सुयोग्य पुत्र डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग को इसकी बागडोर सौंप दी। संगीत की हर विधा के उत्थान हेतु चिंतित रहने वाले डॉ. गर्ग ने 1959 में मासिक पत्रिका 'फ़िल्म संगीत' का भी सम्पादन प्रारम्भ किया जो अर्थाभाव के कारण पहले त्रैमासिक कर दी गई और उसके बाद परिस्थितियों की निरन्तर प्रतिकूलता के चलते उसका प्रकाशन सखेद बन्द कर देना पड़ा। इसी प्रकार उन्होंने 1957 में अंग्रेज़ी के पाठकों हेतु मासिक पत्रिका 'Music Mirror' का प्रकाशन व सम्पादन किया किन्तु आर्थिक संकट के चलते उसे भी कुछ समय बाद ही बन्द कर देना पड़ा। हास्यरस के अद्भुत चितेरे पिता के पुत्र डॉ. गर्ग ने 1980 में मासिक पत्रिका 'हास्यरसम्' का भी सम्पादन किया किन्तु उसका प्रकाशन भी 1995 में बन्द कर देना पड़ा। कालान्तर में अर्थाभाव के चलते भले ही इन पत्रिकाओं का प्रकाशन बन्द कर दिया गया किन्तु मासिक पत्रिका 'संगीत' का यह सौभाग्य रहा कि उसका 1935 से आज तक निर्विघ्न प्रकाशन चल रहा है। यही नहीं, ग़ुलामी के दिनों में अंग्रेज़ शासकों द्वारा बलपूर्वक जब देशभर की लगभग सभी पत्रिकाओं को या तो पूर्णरूप से बन्द करा दिया गया अथवा उनके बीच-बीच में कुछ अंक प्रकाशित ही नहीं होने दिए तब भी काका जी ने हठपूर्वक 'संगीत' का प्रकाशन अनवरत रूप से ज़ारी रखा। कभी-कभी तो उन्होंने ज़िद पर एक मास में दो अंक तक प्रकाशित किए, भले ही पृष्ठ संख्या आधी कर दी।

डॉ. गर्ग ने मासिक पत्रिका 'संगीत' और संगीत की हर विधा पर तमाम पुस्तकों सहित प्राचीन प्रमुख ग्रन्थों का संगीत कार्यालय, हाथरस के माध्यम से प्रकाशन कर संगीत को घर-घर तक पहुँचा कर इसके प्रचार और प्रसार में जो महनीय योगदान दिया है, वह किसी से छिपा नहीं है।

डॉ. गर्ग केवल एक शास्त्रकार ही नहीं थे वरन् श्रेष्ठ संगीतज्ञ भी थे और सदी के महानतम् सितार वादक भारत-रत्न पण्डित रविशंकर जी के गंडाबन्ध शिष्य थे। उन्होंने संगीत गायन, वादन एवं नृत्य की विविध विधाओं की शिक्षा अनेक विश्वविख्यात् कलाकार गुरुओं एवं उस्तादों से ग्रहण की। उनके कला-गुरुओं में पण्डित रविशंकर जी के अतिरिक्त श्रीमती अन्नपूर्णा देवी जी (पण्डित रविशंकर जी की पूर्व पत्नी), आचार्य कैलाश चन्द्र देव बृहस्पति जी और पण्डित शशिमोहन भट्ट जी के नाम प्रमुख हैं। डॉ. गर्ग ने जहाँ तबला, बाँसुरी आदि की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिताश्री काका हाथरसी से ही प्रारम्भ की वहीं वाइलिन का ज्ञान श्री डी. आर. ऋषि से लिया। गायन की उच्च शिक्षा आगरा-अतरौली घराने के उस्ताद इनायत खाँ निज़ामी 'पीतम जी' (रेडियो सिंगर) से भी ली जो समय-समय पर हाथरस जाते रहते थे। उन्होंने

कथक नृत्य की शिक्षा अपने मित्र आचार्य सुधाकर से ली।

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग जाने-माने योग-गुरु भी थे। उन्होंने स्वदेश के अतिरिक्त हांगकांग, सिंगापुर, कनाडा, अमरीका, थाईलैंड और जापान आदि अनेक देशों में रेडियो, टेलीविजन व विभिन्न विश्वविद्यालयों के माध्यम से शताधिक प्रदर्शन व कार्यशालाएँ योग व सितार के साथ कर अपनी विद्वत्ता की अमिट छाप छोड़ी।

ज्ञातव्य है कि डॉ. गर्ग का योग एवं अध्यात्म की ओर बचपन से ही रुझान था और वे अपने पिता के साथ प्रतिवर्ष एक माह तक कर्णवास (बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश) में बिताया करते थे। यहाँ बड़े-बड़े नि:स्पृह साधु-संतों का उन्हें सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनके बोधक गुरु बंगाली बाबा के नाम से प्रख्यात् संत स्वामी श्री निर्मलानन्द जी महाराज थे। इसी प्रकार शक्तिपात गुरु स्वामी कृपाल्वानन्द जी, योग-गुरु स्वामी श्री शिवप्रकाश परमहंस जी जैसे महान् संतगण थे। दंडीस्वामी बालमुकुन्दानन्द जी उनके आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक थे। वे वृन्दावन के प्रख्यात् संत उड़िया बाबा से भी बहुत प्रभावित रहे। एकाध बार वे मुझे भी उनके आश्रम ले जा चुके थे। संगीत के अतिरिक्त धर्म, अध्यात्म, योग और प्रकृति के प्रति अनन्य प्रेम के कारण ही उनको हिमालय का स्वच्छंद वातावरण भी खूब भाया। लम्बे समय तक वे जहाँ प्रतिवर्ष गर्मियाँ प्रारम्भ होते ही मसूरी चले जाया करते थे, वहीं अब काफ़ी समय से देहरादून रहने लगे थे। नैनीताल के सुरम्य वातावरण का भी उन्होंने भरपूर आनन्द लिया। होली बाद गर्मियाँ आते ही हाथरस छोड़ देना व दीपावली के कुछ दिनों पूर्व पुन: हाथरस लौट आना उनका हर वर्ष का क्रम था। वहाँ जाकर वे प्रकृति के सुरम्य व एकान्तिक वातावरण में अपनी लेखन-साधना में अहर्निश जुटे रहते थे। वे कुशल चित्रकार, नाट्य-अभिनेता, अध्यात्म, ज्योतिष-शास्त्र, हस्तरेखा-शास्त्र, तन्त्र-मन्त्र के विद्वान् होने के साथ-साथ ब्रजभाषा, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जापानी आदि भाषाओं का भी न्यूनाधिक ज्ञान रखते थे। सुरुचिपूर्ण व स्वास्थ्यवर्धक और संयत भोजन के शौक़ीन डॉ. गर्ग प्राकृतिक चिकित्सा, होमियोपैथी और आयुर्वेद के भी अच्छे ज्ञाता थे। वे विविध खेलों में भी माहिर थे। पतंगबाज़ी और नाव खेने से लेकर कैरम, क्रिकेट, फुटबॉल, बॉलीवॉल, ताश, ड्राइविंग, तैराकी, कबड्डी जैसे खेलों में वे खासे निपुण थे। संक्षेप में उनकी समग्र योग्यता के विषय में मैं बस इतना ही कहना चाहूँगा कि-

साहित्य, संगीत, काव्य, चित्र, लेखन प्रवीण,
सम्पादन अरु प्रकाशन में निपुण हे।
सिने-निर्माता, तन्त्र-मन्त्र, योग ज्ञाता तुम,
डॉक्टरी, हकीमी, वैद्यकी में हू निपुण हे।।
कैरम, क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबॉल, ताश,
तैराकी, कबड्डी, घुड़सवारी निपुण हे।
कहत 'रजक' कवि कहाँ लौं तिहारी बात,
काकपूत काका के रखत सब गुन हे।।

सादा जीवन-उच्च विचारों के पोषक डॉ. गर्ग एक ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने अपने लेखनादि किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में अवरोध नहीं आने दिया। वे बड़े-से-बड़े पुरस्कारों को लेने के लिए भी स्वयं न जाकर किसी-न-किसी को अपने प्रतिनिधि के तौर पर ही भेजने की कोशिश करते थे। अनेक बार उन्होंने मुझसे भी इन कार्यों हेतु जाने का आग्रह किया किन्तु मैं हमेशा टाल देता था। मैंने सदा यही चाहा कि वे स्वयं ही पुरस्कार ग्रहण करने जाएँ लेकिन बाद में पता चलता कि वे नहीं गए। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार मैंने देखा है। ऐसे कर्मयोगी को मैं नि:स्पृह संत कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग एक ऐसे मनीषी चिंतक थे जिन्होंने देश और दुनिया को उन दुर्लभ विषयों पर सामग्री उपलब्ध कराई जिनके बारे में कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा। उनका चिंतन विचित्र व अद्भुत था। संगीत गायन, वादन व नृत्य की हर विधा के शास्त्रीय व प्रायोगिक पक्ष के अतिरिक्त संगीत रत्नाकर (चार भाग), गीत गोविन्द और अभिनय दर्पण जैसे प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद कर उनका सम्पादन व प्रकाशन करना उनके ही बूते की बात थी। संगीत रत्नाकर के तीसरे व चौथे भाग के प्रकाशन सहित अनेक पुस्तकों का प्रकाशन होने ही जा रहा था कि वे चल बसे। यही नहीं, आवाज़ सुरीली कैसे करें, संगीत निबंध सागर, भारत के संगीतकार, संगीतज्ञ जन्म-मृत्यु कोश, संगीतकारों की हस्तरेखाएँ, संगीत द्वारा रोग-चिकित्सा, संगीत शब्दकोश, संगीत सम्बन्धी कार्टून जैसी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें अन्य कहीं से भी आज पाठकों को पढ़ने को नहीं मिलतीं। विगत कई दशकों में सम्पन्न संगीत में एम. फिल., पी-एच. डी. और डी. लिट्. का शायद ही कोई ऐसा शोध-प्रबन्ध देखने में आए जिसने डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग की पुस्तकों को उद्धृत न किया हो।

ब्रज-भूमि, ब्रजभाषा, ब्रज-संस्कृति, मल्लविद्या, खान-पान और ब्रज-संगीत व कलाओं के प्रति उनके अनन्य प्रेम ने ही उनको ब्रजभाषा फ़ीचर फ़िल्म 'जमुना किनारे' बनाने को विवश कर दिया। इस सफ़ल फ़िल्म के वे न केवल निर्माता-निर्देशक थे बल्कि संगीत-निर्देशक भी थे। यही नहीं, वह जितने समय भी मुम्बई रहे,

बॉलीवुड के अनेकानेक महान् संगीतकार, गायक-गायिकाएँ और निर्माता-निर्देशक आदि उनके सहज सौजन्य एवं कला-प्रातिभ से प्रभावित रहे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. गर्ग अनेकानेक सरकारी व ग़ैर सरकारी स्तरीय संस्थाओं के मानद सदस्य रहे, जिनमें ऑडिशन बोर्ड, ऑल इण्डिया रेडियो, नई दिल्ली (1966-68); बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़; एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई (1979-82) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में भी आप भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट, मथुरा एवं नाद अनुसंधान ट्रस्ट, पटना के विशिष्ट संरक्षक सदस्य थे।

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग संगीत-नाटक अकादमी, नई दिल्ली; सुर सिंगार संसद, मुम्बई; एशियन आर्ट एंड कल्चरल सेंटर, मुम्बई; इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ म्यूज़िक, कोलकाता; राष्ट्रीय संगीत संकल्प, दिल्ली; ऑल इंडिया रेडियो व रेडियो सीलोन आदि के परामर्शदाता भी रहे थे।

यह इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इतने प्रखर प्रतिभा-सम्पन्न और अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्त्व को, जिसने लगभग नौ दशकों की अपनी जीवन-यात्रा में 75 वर्षों तक अनवरत व अहर्निश एक मौन-सेवी की भाँति सिर्फ़ और सिर्फ़ संगीत के उत्थान के लिए जीवन जिया, वह सरकारी सुप्रतिष्ठित एक भी पद्म सम्मान तक न ले सका। अब शायद उनके जाने के बाद सरकार की आँख खुले।

भले ही वे पद्म सम्मान जैसे प्रतिष्ठित सरकारी सम्मान से वंचित रहे किन्तु अनेकानेक अति प्रतिष्ठित, सरकारी व अ-सरकारी (किन्तु असरकारी) दोनों ही प्रकार की संस्थाओं द्वारा उनको व उनकी कृतियों को दर्ज़नों पुरस्कारों, अलंकरणों व सम्मानों से नवाज़ा जा चुका था, जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं-

- 'हमारे संगीत रत्न' पुस्तक- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत (1958)
- 'कथक नृत्य' पुस्तक-उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत (1962)
- म्यूज़िक यूनिवर्सिटी, टोकियो (जापान) द्वारा 'कांस्य-पदक संगीत-सम्मान' (1973)
- शरन रानी फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 'श्रीसम्मान' (1996)
- म्यूज़िक फ़ोरम, मुम्बई द्वारा 'मीडिया एक्सीलेंस अवॉर्ड' (1996)
- कॉउंसिल फ़ॉर नैशनल डेवलपमेंट द्वारा 'भारत विकास एक्सीलेंस अवॉर्ड' (1997)
- स्वर साधना समिति, मुम्बई द्वारा 'स्वर साधना रत्न अवॉर्ड' (1998)
- भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, संस्कृति विभाग द्वारा 'सीनियर फ़ैलोशिप' (1998)
- नागरिक परिषद, देहरादून द्वारा 'श्री महाराज किशोर कपूर संगीत-साधना पुरस्कार' एवं 'दून रत्न' उपाधि (2002)
- अग्रवाल सभा, हाथरस द्वारा 'अग्रकुल भूषण' उपाधि (2006)
- पश्चिम बंगाल और केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से कोलकाता में 'टैगोर अकादमी रत्न' अवॉर्ड (2012)
- कालीकट, केरल की संस्था 'समकालिक संगीतम्' द्वारा 'ब्रज संस्कृति और लोक संगीत' पुस्तक के लिए संगीत विकास पुरस्कार (2012)
- 'संगीत निबन्ध सागर' पुस्तक पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा 'हजारी प्रसाद द्विवेदी सम्मान-2012' (2013)
- साहित्य सागर, भोपाल द्वारा राष्ट्रीय सम्मान समारोह के अन्तर्गत 'कमल सम्पादन सम्मान' (2014)
- पण्डित सीताराम चतुर्वेदी की स्मृति में अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी द्वारा 'सृजन मनीषी' अलंकरण (2016)
- कला समय, भोपाल द्वारा 'कला समय संगीत शिखर सम्मान' (2020) जिसे 'कला समय' के संस्थापक-सम्पादक श्री भँवरलाल श्रीवास जी, संरक्षक श्री सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट जी और जनसम्पर्क, भोपाल के पूर्व अपर संचालक श्री जगदीश कौशल जी (87) द्वारा हाथरस जाकर ही उन्हें सम्मान प्रदान किया गया।
- भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट, मथुरा द्वारा 'संगीत विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण एकादश स्मृति-समारोह परम्परा-2020' में 'मंजुश्री' सम्मान (दिसम्बर, 2020) जो भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट, मथुरा व डॉ. राजेन्द्र कृष्ण संगीत महाविद्यालय एवं शोध-संस्थान, A to Z Music Academy, Gurugram और बन्धु संगीत महाविद्यालय, दिल्ली जैसी अनेक सुप्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा प्रदान किया गया।

सही मायने में डॉ. गर्ग जी संगीत के एक ऐसे नि:स्पृह साधक और मौन-सेवी रहे जिन्होंने यशार्जन के उद्देश्य से तो कभी-भी कोई कार्य नहीं किया। उदाहरणार्थ यहाँ मैं एक घटना का उल्लेख अवश्य करना चाहूँगा-

विगत लगभग दो दशकों पहले मेरी एक शोध-छात्रा मुझे अपनी पी-एच. डी. की थीसिस भेंट करने मेरे घर आई। उसने शोध-कार्य संगीत कार्यालय, हाथरस पर ही किया था, जिसमें मेरा बहुत भारी योगदान था। उसके जाने के बाद मेरे मन में विचार आया कि काकाजी पर भी शोध-कार्य हो चुके हैं और संगीत कार्यालय पर भी किन्तु डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग जी जैसे महनीय व्यक्तित्त्व पर अभी तक किसी का ध्यान क्यों नहीं गया ? मन बार-बार मुझे इस बात के लिए कचोटने लगा कि मैं किसी ऐसी शोध - छात्रा की तलाश करूँ जो संगीत में पी-एच. डी. डिग्री प्राप्त करने की चाहत रखती हो। ऐसी जिज्ञासु छात्रा को खोजने में मुझे सफ़लता भी मिल गई। अब बात सिर्फ़ इतनी-सी रह गई कि डॉक्टर साहब को कैसे मनाया जाए ? यदि वे नहीं माने तो सारे प्रयास निष्फल हो जाएंगे। मैंने उनसे धीरे-धीरे आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया और जब उन्होंने कहा कि यदि छात्रा कार्य पूर्ण न कर सकी तो सारा समय भी व्यर्थ जाएगा और आपकी मेहनत भी। ख़ैर। जैसे-तैसे वे तैयार हो गए। मैं भी उस छात्रा को लेकर उनके घर चला गया। उनसे यह भी आग्रह किया कि यह आपके पास बीच-बीच में साक्षात्कार हेतु आएगी और आपको इसको कुछ समय भी देना पड़ेगा। उन्होंने छात्रा से दो मिनट बात करके ही कह दिया कि डॉ. राजेन्द्र कृष्ण जी मेरे बारे में मुझसे अधिक जानते हैं। तुम मथुरा में इनके पास जाकर ही हर बात पूछती रहना। यहाँ मैं समय भी नहीं दे पाऊँगा और मुझसे अब अपने विषय में कुछ बताया भी नहीं जाएगा। फ़िर मैंने अनमने मन से उसकी सिनोप्सिस तैयार कराई। 2001-02 में खैरागढ़ उसे भेजा भी, किन्तु वहाँ से विषय अस्वीकृत इसलिए कर दिया गया कि वहाँ के एक सज्जन डॉ. साहब से कुछ द्वेष मानते थे। मैं भी निराश नहीं हुआ और कुछ अन्तराल के पश्चात् दूसरी सिनॉप्सिस बनाकर डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय (पूर्व नाम-आगरा विश्वविद्यालय) भेजी। सौभाग्य से प्रस्तावित विषय न्यूनाधिक संशोधन के साथ स्वीकृत कर दिया गया। उन्हीं दिनों डॉ. गर्ग का अमृत महोत्सव मनाने की भी योजना भी बन रही थी। उसके लिए एक वृहद् लेख लिखने का दायित्त्व भी मुझे ही सौंपा गया। मैं बार-बार हाथरस जा नहीं सकता था, अत: तय हुआ कि कभी वे मेरे यहाँ आएँगे और कभी मैं उनके पास। डॉक्टर साहब के इस बीच लगभग 9-10 दिन मैंने कई-कई घण्टों तक मथुरा में अपने निवास 'संगीत-सदन' में और लगभग इतने ही दिन हाथरस में उनके निवास पर लम्बे-लम्बे साक्षात्कार लिए। परिणामत: आनन-फानन में ही सही, नवम्बर 2007 में डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग अमृत महोत्सव विशेषांक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो गया। कुछ वर्षों बाद पी-एच. डी. की छात्रा को भी शोध-कार्य कराने में मैं सफल हो गया। इतना सब करा देने के पश्चात् डॉ. साहब को लगा कि उनकी आत्म-कथा भी मैं ही लिखूँ। मैंने उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर यह कार्य प्रारंभ भी कर दिया। कुछ पृष्ठों का मैटर जब 26 अप्रैल को व्हाट्सऐप किया तब तक उनकी तबियत अधिक बिगड़ चली थी।

मुझे क्या पता था कि मैं उस कार्य को उनके जीवन-काल में पूर्ण नहीं कर सकूँगा। इसी प्रकार उनकी प्रबल इच्छा थी कि उनके द्वारा संकलित ब्रजभाषा के दुर्लभ छन्दों की पुस्तक का सम्पादन भी मैं करूँ। इन दोनों कार्यों के लिए उन्होंने अनेक स्पीडपोस्ट पत्र भी मुझे लिखे और हाल ही में जब उनके बुलावे पर 19 मार्च को मैं हाथरस गया तब बहुत ज़ोर देकर इन दोनों कार्यों को पूर्ण करने का आग्रह किया था। एक बार तो उनके मुँह से यह भी निकल गया कि मुझे कभी-कभी ऐसा आभास होता है कि कहीं ये दोनों कार्य और आपके व हमारे साथ-साथ वृन्दावन-वास की इच्छा अधूरी तो नहीं रह जाएगी। सम्भवतया उनको निकट भविष्य में ही अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो चुका था।

मैं ईश्वर से अब यही प्रार्थना करता हूँ कि उनके लिए और कुछ कर पाऊँ या न कर पाऊँ किन्तु उनकी यह अंतिम इच्छा अवश्य पूर्ण कर सकूँ। अभी तक तो मैं कल्पना-लोक में विचरण कर अपने आप को डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग मानकर उन पर लिखता रहा हूँ किन्तु जिस दिन से वे इस भौतिक संसार से विदा हुए हैं, मैं डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग नहीं बन पा रहा हूँ।

स्व. श्री काका हाथरसी जी जिस प्रकार 'संगीत' मासिक के संस्थापक सम्पादक के रूप में अमर रहेंगे, उसी प्रकार 'संगीत' के नवोन्मेषक के रूप में डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग जी अमर रहेंगे।

अन्त में मैं यही कहना चाहूंगा कि-

आँखों में बस अश्रु हैं, वाणी भी है मौन।
'रजक' कहे किससे व्यथा, और सुनेगा कौन ??
और सुनेगा कौन, एक तुम ही तो थे बस।
लेते थे दिन-रात ख़बर, बँधवाते ढाढस।।
खोकर निश्छल मित्र, पितृ अरु अग्रज सम अस।
मनहुँ अश्रु घर कर बैठे हों आँखों में बस।।

विनम्र श्रद्धांजलि !!!

- डॉ. राजेन्द्र कृष्ण संगीत महाविद्यालय व शोध-संस्थान
'संगीत-सदन', 94, महाविद्या कॉलोनी, द्वितीय चरण,
मथुरा-281 001 (उ.प्र.), मो. 98972 47880

■

संस्मरण

सितार के जादूगर उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ

जगदीश कौशल

जी हाँ, आज हम बात कर रहे हैं सितार के जादूगर उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ के बारे में। जिन लोगों ने उनको सुना है वे सितार पर तैरती उँगलियों के उस द्रुत कम्पन से भली-भांति परिचित हैं, जिसके द्वारा वे श्रोताओं को अपने संगीत के उच्चतम धरातल पर ले जाते थे। वर्तमान समय के वह निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ सितारवादक रहे है।

सितार वादन के तंत्र की व्याख्या करने भसीतख़ानी और रज़ाख़ानी शैलियों को कुशलतापूर्वक बजाने के अलावा आपने अपनी एक नई शैली अपनाकर सितार वादन की कला को एक नया मोड़ प्रदान किया जिससे ''बायें हाथ के शिल्प'' में संगीतमय सुधार हुए।

भारतीय संगीत की दुनियाँ में ''सितार के जादूगर'' कहे जाने वाले सुविख्यात उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ अपनी अलग चमत्कारिक सितार वादन शैली द्वारा संगीत से अनभिज्ञ श्रोताओं को भी रसमग्न कर देते थे। उनकी इस शैली को लोग ''ज़ाफरखानी बाज़'' कहने लगे थे। इस शैली में मिजराव का काम कम तथा बाएं हाथ को काम ज्यादा होता था। साथ ही कण, मुर्की, खटका आदि का काम अधिक रहता था। इस शैली ने उन्हें सितारवादकों से अलग पहचान बनाने में कामयाबी दी। ऐसा उनका भी कहना था। इस शैली को उन्होंने अपने शार्गिदों को भी सिखाया। उनके दो शार्गिद खास हैं एक उनके पुत्र जुनैन ए. खान और दूसरे कोलकाता के हरशंकर भट्टाचार्य हैं।

भारतीय संगीत के इतिहास में एक समय ऐसा था जब सितार वादन के क्षेत्र में उस्ताद विलायत खाँ, पंडित रविशंकर और उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ जैसे विश्व के सर्वश्रेष्ठ सितारवादकों की इस तिकड़ी को ''सितार त्रयी'' अर्थात् ''Sitar Triuity'' के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त थी।

जीवन परिचय

उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर का जन्म 18 फरवरी 1927 को मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के निकट स्थित जावरा कस्बे में हुआ था। आपके पिता उस्ताद ज़ाफर खाँ सितार के सिद्धहस्त कलाकार थे। बचपन में संगीत का वातावरण मिलने के कारण बालक अब्दुल हलीम का संगीत के प्रति लगाव हो जाना स्वाभाविक था। सितार वादन की प्रारम्भिक शिक्षा सुप्रसिद्ध बीनकार उस्ताद बाबू खाँ से प्राप्त करने के बाद उस्ताद मेहबूब खाँ से उच्चस्तरीय तालीम हासिल

की। पैतृक परम्परा से प्राप्त संगीत कला को आपने अपने सतत प्रयास और कठिन साधना से उस उच्चस्तर तक पहुँचा दिया जहाँ शायद ही कोई अन्य सितारवादक पहुँच सके।

सन् 1980 के दशक में भोपाल में हुई उनसे मुलाकात के दौरान उन्होंने बताया कि वह सुबह तीन-साढ़े तीन बजे उठकर रियाज़ करते हैं। उनका कहना था कि समझदारी से किया गया एक घंटे का अभ्यास नासमझी से भरे तीन-चार घंटे के रियाज़ से बेहतर होता है। पसीना बहाने भर से कुछ नहीं होता।

हिन्दुस्तानी संगीत में घरानों की चर्चा करते हुए जब मैंने उनसे कहा कि आप तो इन्दौर घराने से यह मध्यप्रदेश के लिए गर्व की बात है तब उन्होंने बहुत गंभीर मुद्रा में कहा कि कौशलजी अब घरानों का कोई अर्थ नहीं रह गया है। आज कहाँ है घरानों की

विशेषताएँ। अब तो सारे घराने आपस में मिल गये हैं। अब तो भारत के संगीत का एक ही घराना है और वह है– सामवेद घराना।

जब मैंने उन्हें बताया कि उस्ताद जी मेरा जन्मस्थान भी इंदौर ही है, तो ठहाका लगाते हुए मुझे अपने गले से लगा लिया और मुझे अपनी हृष्ट पुष्ट बाजुओं में भरकर बोले कि भई वाह कौशल जी, तब तो आप और हम सगे भाई हैं, आपको तो मुझसे बहुत पहले मिलना चाहिए था। अच्छा तो इसी बात पर एक–एक पान हो जाय, शाम होती तो मैं आपकी ख़िदमत में जाम पेश करता और वह अपने पानदान के पास जाकर पान लगाने लगे।

मैं यहाँ यह उल्लेख करना ज़रूरी समझता हूँ कि उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर साहब पान खाने के बहुत शौकीन थे और वह अपना पानदान हमेशा अपने साथ रखते थे।

आपको संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार की ओर से वर्ष 1970 में पद्मश्री, वर्ष 2006 में पद्मभूषण अलंकार से विभूषित किया गया। इसके अलावा वर्ष 1987 में संगीत नाटक अकादमी, वर्ष 1973 में मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, वर्ष 2000 में तानसेन सम्मान, वर्ष 1990 में महाराष्ट्र शासन का गौरव पुरस्कार आदि अनेक सम्मान आपको प्राप्त हुए।

देश की युवा पीढ़ी को सितारवादन के क्षेत्र में निपुण और पारंगत बनाने के उद्देश्य से जहाँ आपने वर्ष 1976 में मुम्बई में हलीम अकादमी की स्थापना की वहीं वर्ष 1970 के दशक में खैरागढ़ स्थित इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के पद पर रहते हुए अनेक प्रसिद्ध सितारवादकों को प्रशिक्षित किया। फिल्म ''मुगल–ए–आज़म'', ''झनक–झनक पायल बाजे'', ''कोहनूर'' आदि अनेक फिल्मों के संगीन में आपका अद्वितीय योगदान हमेशा याद किया जाएगा। आपके सितार वादन के अनेक रिकार्ड उपलब्ध है, इनमें पहाड़ी, मारवा, कीरवानी, केदार तथा बागेश्वरी तो आपके विमुग्धकारी संगीत के प्रतीक है।

– स्तंभकार वरिष्ठ छायाकार हैं।
संपर्क: ई–3 /320, अरेरा कॉलोनी, भोपाल
मोबाइल: 9425393429

Ganesh Graphics
designing | printing | illustration | web services

OFFSET PRINTING
Books, Magazine, Brochure, Poster, Leaflet, CD/ DVD Cover, T-Shirt, Cap

DESIGNING
Logo, Books, Magazine, Brochure, Poster, Leaflet, CD/ DVD Cover

FLEX PRINTING
Flex Banner, Vinyl, Acrylic

ILLUSTRATION
Books, Magazine and other

Office Address
26-B, 1st Floor, Deshbandhu Parisar, Press Complex, M.P. Nagar, Zone-I,
Bhopal (M.P.) Ph.:0755-4940788, Mob.:9981984888 | e-mail: ganeshgroupbpl@gmail.com

छायाकार–जगदीश कौशल

समय की धरोहर

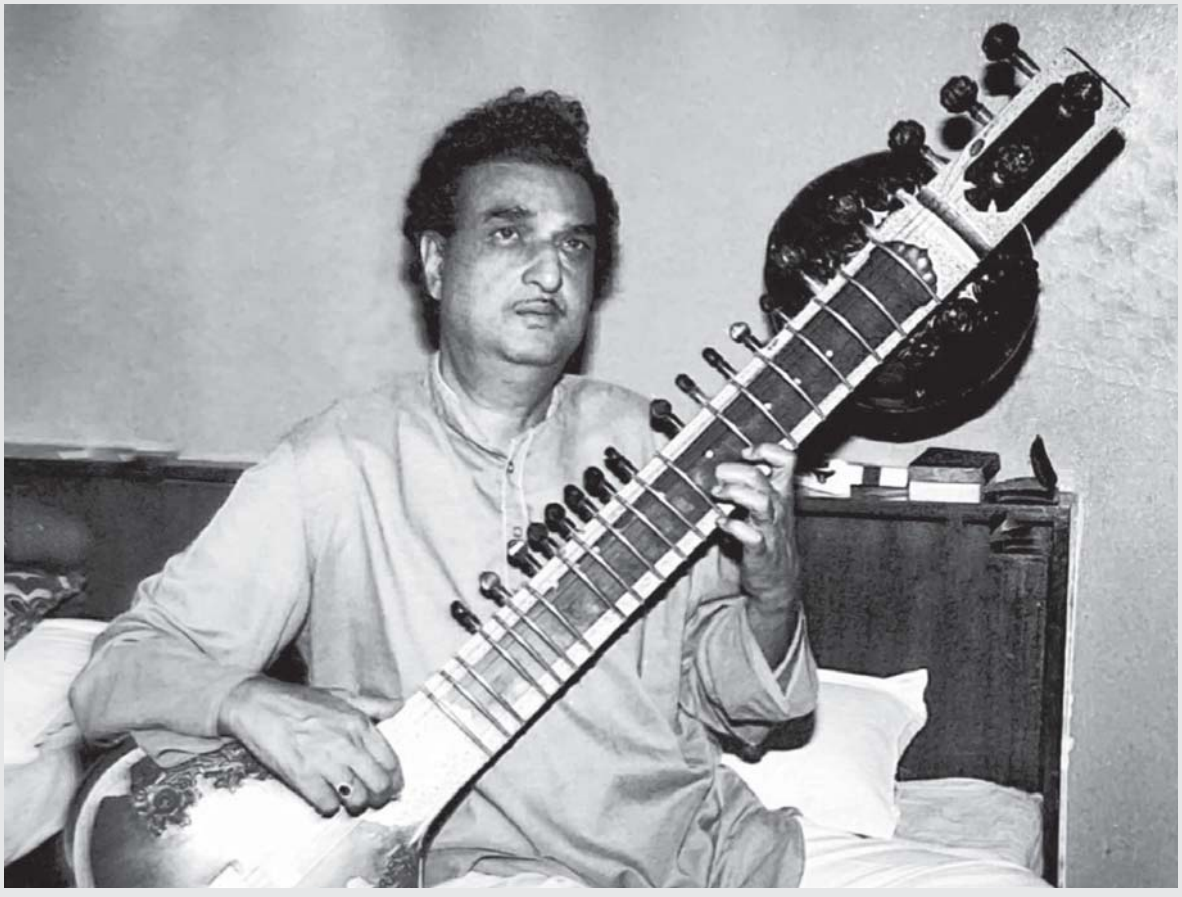

उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ

जन्म: 18 फरवरी 1927 **निधन: 4 जनवरी 2017**

भारतीय संगीत की दुनिया में ''सितार के जादूगर'' के नाम से सुविख्यात उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ की सितार वादन की अपनी अलग चमत्कारिक शैली थी। लोग इस शैली को ''ज़ाफरखानी बाज'' कहने लगे थे। उस्ताद मुश्ताक अली खान, उस्ताद विलायत खाँ, पंडित रविशंकर, पंडित निखिल बैनर्जी जैसे देश के सर्वश्रेष्ठ सितारवादकों की सूची में उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर का नाम भी स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

आपको भारत सरकार द्वारा वर्ष 1970 में पद्मश्री, वर्ष 2006 में पद्मभूषण, वर्ष 1987 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, वर्ष 2000 में मध्यप्रदेश शासन का ''तानसेन सम्मान'', वर्ष 1990 में महाराष्ट्र सरकार का पुरस्कार, इन्दिरा कला विश्वविद्यालय खैरागढ़ द्वारा डी.लिट की उपाधि के अलावा अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। फिल्म ''मुग़ल-ए-आज़म'', ''झनक-झनक पायल बाज़े'', ''कोहनूर'' के अलावा अनेक फिल्मों का संगीत आपके सितारवादन से सुसज्जित हैं। वरिष्ठ छायाकार श्री जगदीश कौशल ने उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ का यह फोटो सन् 1980 के दशक में उनके भोपाल प्रवास के अवसर पर उनसे साक्षात्कार करते समय क्लिक किया था।

स्पेनिश कवि अरनेस्तो कार्देनाल की कविताएं

फिलिस्तीनी कवि इब्राहिम नसरुल्लाह का जन्म जॉर्डन के एक शरणार्थी शिविर में वर्ष 1954 में हुआ था। अभी तक 15 से अधिक कविता संकलन और लगभग इतने ही उपन्यास लिख चुके हैं। वर्तमान में अम्मान (जॉर्डन) में निवास करते हैं।

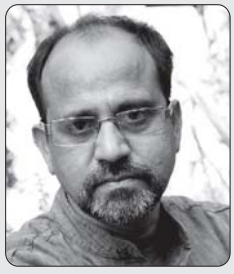

अनुवाद : मणि मोहन

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रतिः शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

मैयत

अपनी वसीयत में उसने अपनी आत्मा
घोड़ों के मस्तकों के नाम कर दी
अपने पैर ...उस नृत्य के लिए
जो धरती को हरा भरा करने के काम आये
अपनी आवाज़...सुबह के चूजों के लिए
अपने छोटे-छोटे मोहक खिलौने...
बुजुर्गों के लिए
अपने हाथ,
विवेक की वैचारिक गरिमा के साथ ...
बचपन की दु:साहसी अलमस्ती के लिए
अपना दिल ...उस स्त्री के लिए जिसने उसे
एक दिन अचानक रोका जब वह
उससे प्रेम करती थी

उसने कहा – घरेलू मत बनो,
हंडिया और कड़ाही की तरह
और चली गई ...
और इसलिए
जब हम उसकी मैयत में शामिल हुए
तो ताबूत खाली था ।

कन्फ़ैशन

जी !
यह मकान एक कब्र है जिसमे
एक दरवाजा और एक रोशनदान है
यह शयनकक्ष आधा कफ़न है
और यह पलंग आधा ताबूत
इस दृश्य को कोई और नहीं
सिर्फ़ तुम बदल सकती हो , प्रिय ।

हतप्रभ

शुरुआत में
घोड़ों ने कहा
हमें मैदान चाहिए
बाज़ों ने कहा
हमें शिखर चाहिए
और मनुष्य
देखते ही रह गए हतप्रभ।

दिन

पहले दिन
मैंने अपने उस हाथ को रोका
जो ताबूत की तस्वीर बना रहा था
तब उन्होंने मेरे लिए फूलों की माला भेजी
दूसरे दिन
मैंने किसी फूल की तस्वीर बनाते हुए
अपने हाथ को रोका
तब उन्होंने मेरे लिए एक ताबूत भेजा
तीसरे दिन मैं चीखा
मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ ...
और तब
उन्होंने मेरे लिए एक हत्यारा भेजा ।

कला समय का 'धरोहर के संग्राहक और शिल्पकार' केन्द्रित विशेषांक का लोकार्पण

पद्मश्री से सम्मानित डॉ. कपिल तिवारी के निवास पर कला समय का 'धरोहर के संग्राहक और शिल्पकार' केन्द्रित विशेषांक का लोकार्पण डॉ. कपिल तिवारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. मुकेश मिश्रा, निदेशक दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, भोपाल तथा डॉ. धर्मेंद्र पारे, निदेशक जनजातिय संग्रहालय, भोपाल, डॉ. नारायण व्यास पुरातत्ववेत्ता तथा शशिकांत लिमये एवं 'कला समय' पत्रिका के संपादक भँवरलाल श्रीवास उपस्थित थे।

डॉ.धर्मेन्द्र पारे को नानाजी देशमुख सम्मान

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड संस्कृति एवं शहीदों पर लिखी गई हिंदी पुस्तकों एवं विभिन्न भाषाओं की पत्रिकाओं को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष कृति सम्मान योजना के अंतर्गत साहित्यकारों एवं पत्रिका संपादकों को पुरस्कार प्रदान करता है। इसी शृंखला में वर्ष 2019 के चयन की घोषणा की गई है। जिसमें नानाजी देशमुख सम्मान भोपाल के डॉ.धर्मेन्द्र पारे को प्रदान किया जायेगा। नानाजी देशमुख सम्मान जनजातीय जीवन और संस्कृति पर केन्द्रित लेखक के समग्र अवदान के लिए दिया जाता है। सम्मान में डेढ़ लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाता है। ज्ञातव्य है कि डॉ. धर्मेन्द्र पारे विगत 25 वर्षो से लोक और जनजातीय संस्कृति पर कार्य कर रहे हैं। वे विगत कुछ माह पूर्व ही आदिवासी लोक कला एवं बोली अकादमी के निदेशक के पद पर नियुक्त किये गये हैं। इसके पूर्व वे शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल में प्रोफेसर रहे हैं। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (दि.प.ला.) की स्थापना वर्ष 1951 में तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा यूनेस्को से वित्तीय और तकनीकी सहायता द्वारा की गयी थी। वर्तमान में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है । दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी को यूनेस्को के पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 'पूरे भारत में और दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों में वयस्क और मौलिक शिक्षा में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं के विकास के लिए' शुरू किया गया था।

ध्रुवपद-गायिका डॉ. मधु भट्ट तैलंग की पुस्तक ''भारतीय ललित कलाएँ: समसमायिक अनुशीलन'' प्रकाशित एवं विमोचित

वरिष्ठ ध्रुवपद-गायिका, ललित कला संकाय, राज. विश्वविद्यालय की पूर्व डीन एवं संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. मधु भट्ट तैलंग द्वारा संपादित हाल ही में वर्ष 2021 में प्रकाशित पुस्तक ''**भारतीय ललित कलाएँ: समसमायिक अनुशीलन**'' दिल्ली के प्रतिष्ठित प्रकाशन कनिष्क पब्लिशिंग हाउस से रिलीज हुई है। इस पुस्तक की प्रधान सम्पादक स्वयं डॉ. भट्ट हैं एवं उनके साथ इसका सहसंपादन सेंट विल्फ्रेड कॉलेज, जयपुर के संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा एवं संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर श्री मोहन लाल ने किया है। इस पुस्तक में 38 आलेख देश-विदेश के प्रतिष्ठित संगीत प्रोफेसर्स, संगीत चिंतक एवं संगीत से जुड़े विभिन्न नामचीन महानुभावों द्वारा लिखे गये हैं। इसकी अनुशंसा पुस्तक के प्रारंभ में कुछ कला-संस्कृति एवं शिक्षा से जुड़ी नामचीन हस्तियों द्वारा की गई है जिसमें गण्यमान हैं- सुविख्यात ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग, माननीय कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, माननीय कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय, प्रो. राजीव जैन, सीनेट सदस्य अधिवक्ता डॉ. अखिल शुक्ला एवं अधिष्ठाता ललित कला संकाय राजस्थान विश्वविद्यालय डॉ. बीना जैन।

पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय **भारतीय ललित कलाएँ: समसमायिक** अनुशीलन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्ण प्रासंगिकता लिए हुए है क्योंकि इस पुस्तक में वर्तमान में संगीत के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक में होने वाले अनेक परिवर्तनों, नवीन प्रयोगों, नये सृजनों, नवीन रचनाओं एवं नवाचारों आदि को बखूबी सम्मिलित किया गया है, जो कि संगीत- क्षेत्र के हर साधक के लिए अत्यंत उपयोगी, अनुकरणीय एवं प्रेरक होंगे। यदि वस्तुत: देखा जाये तो ललित कलाओं विशेषकर संगीत की परम्परागतता और उसके प्रयोगों में आये विविध शास्त्रीय अथवा सैद्धान्तिक परिवर्तनों एवं विकासों के पीछे एकमात्र एवं सबसे अहम् कारण उसका दायरा विश्व स्तर तक फैलना एवं उसकी युगानुकूलता अथवा समसामयिकता ही है। लोक से देश एवं विदेशी संस्कृतियों एवं सभ्यताओं ने कलासाधकों को समय-समय पर अपने प्रभाव में लेकर उन्हें नयी-नयी सर्जनाओं के लिए प्रेरित किया। ''देशदेशेजनरुच्यानाम्'' के अनुसार प्रत्येक देश-काल का परिवेश एवं तत्कालीन जनरूचि ने उसे हर युग में समसामयिकता प्रदान की एवं वह मनुष्य के संवेगों की भाषा बनकर उसे प्रासंगिकता प्रदान करती रही।

इस पुस्तक का विमोचन माननीय कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय प्रो. राजीव जैन द्वारा 31 मार्च, 2021 को सीनेट हाल में संपन्न हो चुका है। इस अवसर पर राजस्थान कॉलेज के प्रिंसीपल एवं डीन समाज विज्ञान संकाय प्रो. एस.एल. शर्मा एवं रजिस्ट्रार श्री कजोडमल डूडिया उपस्थित थे। इस पुस्तक की कीमत कुल 1100 रूपये निर्धारित की गई है एवं यह अमेजोन पर भी उपलब्ध है।

रपट : डॉ. मधु भट्ट तैलंग

■

अपनी बात

अरुण तिवारी

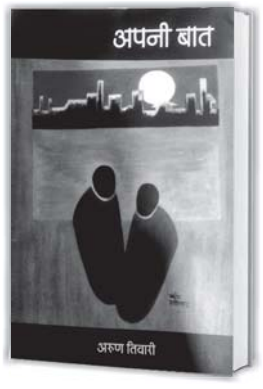

पृष्ठ : 176 मूल्य : 260/-

प्रकाशक : प्रेरणा पब्लिकेशन, देशबंधु भवन, प्रथमतल,
26-बी, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-1,
भोपाल (म.प्र.) 462011, टेलीफोन : 0755-4940788

ई-मेल : prernapublicationbpl@gmail.com

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

के सदस्य बने

मैं ..... कला समय पत्रिका का ..... एक वर्ष : 300/- रूपये, दो वर्ष : 600/- रूपये, चार वर्ष : 1000/- रूपये, आजीवन : 10000/- रूपये का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। पत्रिका का शुल्क रूपये ..... ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम : .....

पता : .....

.....

पिन : ..... मो.: .....

हस्ताक्षर

सदस्यता सहयोग राशि:

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 120/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :

'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

- कृपया सदस्यता शुल्क 'कला समय' के नाम भेजें।
- सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद अगले अंक से पत्रिका भेजना प्रारम्भ की जावेगी।
- सदस्यता शुल्क निम्न पते पर भेजे:- जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016

-प्रबंध संपादक

Best solutions for
KID'S ISSUES

Pratham Homoeopathic
Clinic & Research Centre

- Anxiety
- Bed wetting
- Recurrent allergies
- Behaviour issues
- Skin infections
- Low appetite & weight

Call and concern for
BEST HOMOEOPATHIC CURE

Dr. Sandhya Chouksey

PRATHAM HOMOEOPATHIC CLINIC & RESEARCH CENTRE
301-302,Mahasagar Corporate, Geeta Bhawan, Indore
Time : **10 am - 2 pm,** Sunday closed
97524 10846 / 98260 60636

Patients are seen under full hygienic and sanitized anti microbial set-up

मध्यप्रदेश शासन

क्या आप जानते हैं ?

उच्च जोखिम समूह के लोग जल्द कोरोना के प्रभाव में आ सकते हैं

उच्च जोखिम समूह (हाई रिस्क ग्रुप)

65 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्ति

गर्भवती महिलायें

10 साल से कम उम्र के बच्चे

- **ऐसे व्यक्ति जो गंभीर रूप से बीमार हों जैसे –** उच्च रक्त चाप, अस्थमा, हृदय रोग, मधुमेह और किडनी से संबंधित बीमारी।
- **कम रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले व्यक्ति जैसे –** कैंसर, धूम्रपान करने वाले, अंग प्रत्यारोपण करवा चुके और एच.आई.वी. रोगी।

थोड़ी सी सावधानी से होगा कोरोना संक्रमण से बचाव –

- ✓ ऐसे व्यक्ति घर से बाहर न जाएं और बाहर से आये व्यक्ति से दूरी बनाकर रखें।
- ✓ घर पर इनके भोजन का पर्याप्त ध्यान रखें तथा भोजन से पहले और शौच के बाद साबुन से हाथ धोएं।
- ✓ इनमें सर्दी, जुकाम, बुखार या सांस लेने में तकलीफ जैसे कोई भी लक्षण दिखाई देने पर तत्काल चिकित्सक से परामर्श लें।
- ✓ इनकी वर्तमान बीमारी का इलाज विशेषज्ञ की सलाह पर करें।
- ✓ घर के अंदर ही हल्के व्यायाम, योग एवं ध्यान करायें।
- ✓ घर के सदस्य खाँसते या छींकते समय रूमाल अथवा गमछे का उपयोग करें। जब आवश्यक हो तो निर्देशानुसार मास्क का उपयोग करें।

अधिक जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर 104 पर सम्पर्क करें।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सभी नियमों का पालन करेंगे और करायेंगे हम कोरोना से बचेंगे और बचायेंगे

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनहित में जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2020

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D-19113/21

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मध्यप्रदेश शासन

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

कोविड-19 संक्रमण के दौरान
मध्यप्रदेश सरकार द्वारा उठाए गए
कल्याणकारी कदम

मुख्यमंत्री कोविड-19 बाल सेवा योजना

1 मार्च, 2021 से 30 जून, 2021 के मध्य जो बच्चे इस कोविड आपदा में निराश्रित हो गए हैं, उन्हें योजना में निम्न लाभ दिए जाएंगे -

- रुपए 5000 प्रतिमाह आर्थिक सहयोग।
- निःशुल्क शिक्षा और राशन की व्यवस्था।
- आवश्यकता होने पर सुरक्षित आवासीय सुविधा।
- इस प्रकार की कोई शर्त नहीं कि माता-पिता की मृत्यु कोविड के कारण हुई हो।

मुख्यमंत्री कोविड-19 विशेष अनुग्रह योजना

- कोविड-19 के कारण शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर परिवार और सदस्यों को 5 लाख तक की वित्तीय मदद। सभी प्रकार के सरकारी कर्मचारी, संविदा, दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी भी इस योजना के पात्र होंगे। यह योजना सभी पीएसयू (सार्वजनिक उपक्रम) और अन्य सरकारी संगठनों पर भी लागू होगी।

मुख्यमंत्री कोविड-19 अनुकम्पा नियुक्ति योजना

- शासकीय कर्मचारियों की कोरोना के कारण मृत्यु होने पर उनके परिवार के किसी एक सदस्य को अनुकम्पा नियुक्ति। यह योजना सभी शासकीय कर्मचारियों सहित संविदा, दैनिक वेतनभोगी, आउटसोर्स कर्मचारियों पर भी लागू होगी। साथ ही यह योजना सभी पीएसयू (सार्वजनिक उपक्रम) और अन्य सरकारी संगठनों पर भी लागू होगी।

मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना

- कोविड-19 ड्यूटी पर तैनात फ्रंटलाईन वर्कर की मृत्यु हो जाने पर परिवार को 50 लाख रुपए की वित्तीय सहायता का प्रावधान।

मुख्यमंत्री कोविड उपचार योजना

प्रदेश में आर्थिक रूप से कमजोर समस्त परिवारों को निःशुल्क कोविड उपचार उपलब्ध कराने के लिए राज्य शासन की योजना -

- प्रदेश के समस्त शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, जिला अस्पताल, सिविल अस्पताल एवं कोविड उपचार कराने वाले सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर कोविड मरीजों को पूर्णतः निःशुल्क उपचार उपलब्ध।
- प्रदेश के 4 बड़े जिलों में 07 निजी चिकित्सा महाविद्यालयों द्वारा संचालित अस्पतालों में अनुबंधित बेड पर भर्ती होने वाले कोविड मरीजों को पूर्णतः निःशुल्क उपचार उपलब्ध।
- आयुष्मान कार्डधारी परिवारों को आयुष्मान योजना के अंतर्गत आयुष्मान संबद्ध निजी अस्पतालों में निःशुल्क उपचार उपलब्ध।
- हेल्प लाईन नंबर - 181

सार्वजनिक वितरण प्रणाली अंतर्गत पात्र परिवारों को 3 माह का मुफ्त खाद्यान्न

- माह अप्रैल, मई एवं जून-2021 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अंतर्गत 4.82 करोड़ पात्र हितग्राहियों को मुफ्त खाद्यान्न का वितरण कराया गया है। साथ ही इन हितग्रहियों को माह मई एवं जून 2021 का प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना अंतर्गत 10 किलो प्रति हितग्राही मुफ्त खाद्यान्न का वितरण किया जा रहा है। विगत माह लगभग 4.00 लाख नवीन हितग्रहियों को जोड़ा गया है एवं यह कार्य निरंतर जारी है।

शहरी पथ विक्रेताओं को वित्तीय सहायता

- शहरी पथ विक्रेता योजना (PM SVANidhi) में नामांकित लगभग 6 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को 1000 रुपए प्रति लाभार्थी के मान से कुल 61 करोड़ रुपये का भुगतान।

ग्रामीण पथ विक्रेताओं को वित्तीय सहायता

- मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता योजना में 6 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को 1000 रुपये प्रति लाभार्थी के मान से कुल 61 करोड़ रुपए का भुगतान।

किसानों के लिए

- खरीफ 2020 में लिए गए ऋण के भुगतान की अंतिम तिथि को (शून्य प्रतिशत ब्याज, फसल ऋण योजना अंतर्गत 1 मार्च से 31 मई) भारत सरकार के निर्देशानुसार 30 जून तक आगे बढ़ाया गया।
- गेहूं एवं अन्य फसलों के उपार्जन के माध्यम से किसानों के खाते में 23 हजार 422 करोड़ रुपए का भुगतान।

भवन एवं अन्य निर्माण श्रमिकों को वित्तीय सहायता

- मध्यप्रदेश भवन एवं संनिर्माण श्रमिक कल्याण योजना में अधिसूचित 11.28 लाख श्रमिकों को 1000 रुपए प्रति लाभार्थी के मान से कुल 112.81 करोड़ रुपए की सहायता।

टीकाकरण अवश्य करवाएं | **जिंदगी अनलॉक करें, कोरोना को लॉक करें** | **दो गज की दूरी, मास्क है जरूरी**

D-19113/21

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास